



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 110]

नई दिल्ली, मंगलवार, अप्रैल 29, 2014/वैशाख 9, 1936

No. 110]

NEW DELHI, TUESDAY, APRIL 29, 2014/VAISAKHA 9, 1936

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 29 अप्रैल, 2014

(अंतिम जांच परिणाम)

विषय : चीन जनगण और कोरिया आर.पी. में उदभवित अथवा वहां से निर्यातित पीएक्स-13 (6पीपीडी) के आयातों और चीन जनगण में उदभवित अथवा वहां से निर्यातित रबड़ रसायनों नामशः एमबीटी, सीबीएस टीडीक्यू, पीवीआई और टीएमटी के आयातों से संबंधित अंतिम समीक्षा पाटनरोधी जांच का अंतिम जांच परिणाम

सं.15/1/2013-डीजीएडी- समय-समय पर यथासंशोधित सीमाशुल्क प्रशुल्क अधिनियम, 1975 और उसके अंतर्गत बनी सीमाशुल्क प्रशुल्क (पारित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 को ध्यान में रखते हुए :

क. मामले की पृष्ठभूमि

1. यतः, समय-समय पर यथासंशोधित सीमाशुल्क प्रशुल्क अधिनियम, 1975 (जिसे एतदपश्चात अधिनियम कहा गया है) और समय-समय पर यथासंशोधित सीमाशुल्क प्रशुल्क (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे एतदपश्चात नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए विनिर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें एतदपश्चात प्राधिकारी कहा गया है) ने चीन जनगण में उदभवित अथवा वहां से निर्यातित रबड़ रसायनों अर्थात् एमबीटी, सीबीएस, टीडीक्यू, पीवीआई और टीएमटी और चीन जन गण एवं कोरिया आर.पी. में उदभवित अथवा वहां से निर्यातित पीएक्स-13 (6पीपीडी) के आयातों पर दिनांक 01 अक्टूबर, 2008 की अंतिम जांच परिणाम अधिसूचना सं.15/1/2013-डीजीएडी के तहत पाटनरोधी शुल्क अधिरोपित करने की सिफारिश की थी। उपर्युक्त जांच परिणाम के आधार पर चीन जन गण और कोरिया आर.पी. (जिन्हें एतदपश्चात संबद्ध देश कहा गया है) में उदभवित अथवा वहां से निर्यातित उपर्युक्त रबड़ रसायनों (जिन्हें एतदपश्चात संबद्ध वस्तु अथवा विचाराधीन उत्पाद कहा गया है) पर केंद्रीय सरकार द्वारा दिनांक 12 दिसम्बर, 2008 की अधिसूचना सं. 133/2008-सीमाशुल्क के तहत पाटनरोधी शुल्क अधिरोपित किया गया था। कोरिया आर.पी. में उदभवित अथवा वहां से निर्यातित पीएक्स-13 (6पीपीडी) के आयातों के संबंध में इन जांच परिणामों को प्राधिकारी द्वारा एक मध्यावधि समीक्षा जांच में दिनांक 05 अगस्त, 2011 की अंतिम जांच-परिणाम अधिसूचना सं. 15/21/2010-डीजीएडी के तहत संशोधित किया था और जिस पर कोरिया आर.पी. में उदभवित अथवा वहां से निर्यातित पीएक्स-13 (6पीपीडी) के आयातों पर दिनांक 20 सितम्बर, 2011 की सीमाशुल्क अधिसूचना सं.92/2011 के तहत पाटनरोधी शुल्क में संशोधन किया गया था।

2. यतः, भारत में संबद्ध वस्तु के उत्पादक मैसर्स नेशनल आर्गेनिक कैमिकल्स लिमिटेड (जिन्हें एतदपश्चात याचिकाकर्ता या आवदेक या घरेलू उद्योग कहा गया है) ने अधिनियम एवं नियमों के अनुसार प्राधिकारी के समक्ष एक विधिवत साक्ष्यांकित आवेदनपत्र यह आरोप लगाते हुए दायर किया कि चीन जन गण में उदभवित अथवा वहां से निर्यातित रबड़ रसायनों नामशः एमबीटी, सीबीएस, टीडीक्यू, पीवीआई, टीएमटी और चीन जन गण एवं कोरिया आर.पी. में उदभवित अथवा वहां से निर्यातित पीएक्स-13 (6पीपीडी) का सतत अधिरोपण हो रहा है और उन्होंने प्राधिकारी से पाटनरोधी शुल्क की समीक्षा करने, उसमें संशोधन करने तथा उसकी निरंतरता बनाए रखने का अनुरोध किया।

3. और, इस पर, प्राधिकारी ने चीन जन गण में उदभवित अथवा वहां से निर्यातित रबड़ रसायनों नामशः एमबीटी, सीबीएस, टीडीक्यू, पीवीआई, टीएमटी और चीन जन गण एवं कोरिया आर.पी. में उदभवित अथवा वहां से निर्यातित पीएक्स-13 (6पीपीडी) के आयातों पर प्रभावी शुल्क के सतत अधिरोपण की जरूरत के लिए और यह जांच करने के लिए, कि क्या इस शुल्क का अवसान कर देने से पाटन एवं क्षति की निरंतरता बने रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है, पाटनरोधी नियमावली के नियम 23 के साथ पठित अधिनियम की धारा 9क(5) के अनुरूप एक निर्णायक समीक्षा जांच प्रारंभ करते हुए भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित दिनांक 30 अप्रैल, 2013 को एक सार्वजनिक नोटिस जारी किया।

4. और यतः, केंद्रीय सरकार द्वारा दिनांक 12 दिसम्बर, 2008 को अधिसूचना सं. 133/2008-सीमाशुल्क के तहत यथा अधिरोपित पाटनरोधी शुल्क दिनांक 5 जुलाई, 2013 की अधिसूचना सं. 16/2013-सीमाशुल्क (एडीडी) के तहत अधिनियम की धारा 9(क) (5) में उल्लिखित शर्तों के अनुसार दिनांक 04 मई, 2014 तक बढ़ा दिया था और दिनांक 20 सितम्बर, 2011 की अधिसूचना सं. 92/2011-सीमाशुल्क के तहत यथा अधिसूचित पाटनरोधी शुल्क को दिनांक 05 जुलाई, 2013 की अधिसूचना सं. 17/2013-सीमाशुल्क (पाटनरोधी) के तहत दिनांक 04 मई, 2014 तक बढ़ा दिया था।

ख. प्रक्रिया

5. इस जांच के संबंध में निम्नलिखित वर्णित प्रक्रिया का अनुसरण किया गया :

- क. प्राधिकारी ने निर्णायक समीक्षा जांच प्रारंभ करते हुए भारत के राजपत्र, असाधारण में दिनांक 30 अप्रैल, 2013 को एक सार्वजनिक नोटिस सं.15/1/2013 डीजीएडी जारी किया।
- ख. प्राधिकारी ने दिनांक 30 अप्रैल, 2013 की जांच शुरूआत अधिसूचना की प्रतियां, चीन जनगण के निर्यातकों/उत्पादकों के संबंध में बाजार अर्थव्यवस्था प्रश्नावली सहित निर्यातक प्रश्नावली भारत में संबद्ध देशों के राजदूतावासों, संबद्ध देशों के ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों तथा ज्ञात आयातकों एवं अन्य हितबद्ध पक्षकारों को प्रेषित कीं। इस जांच के पक्षकारों से अनुरोध किया गया कि वे प्रश्नावली प्रत्युत्तर दायर करें और विहित समय सीमा के अंतर्गत अपने विचारों से लिखित रूप में अवगत कराएं। संबद्ध देशों के राजदूतावासों से यह अनुरोध किया गया कि वे संबद्ध देशों के अन्य निर्यातकों/उत्पादकों को विहित समय के अंदर प्रश्नावलियों के प्रत्युत्तर दायर करने का सुझाव दें।
- ग. प्राधिकारी ने आवेदनपत्र के अगोपनीय पाठ की प्रतियां मुख्य नियमावली के नियम 6(3) के अनुसार संबद्ध देशों के निर्यातकों एवं राजदूतावासों को प्रदान कराई गईं। आवेदन के अगोपनीय पाठ की प्रतियां अन्य हितबद्ध पक्षकारों को, जहां कहीं अनुरोध किया गया, प्रदान की गईं।
- घ. प्राधिकारी ने इस सार्वजनिक नोटिस की एक प्रति निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों (जिनके नाम एवं पते प्राधिकारी को आवेदनपत्र में उपलब्ध कराए गए थे) को प्रेषित की और उन्हें नियमावली 6(2) और 6(4) के अनुसार इस पत्र की तारीख से चालीस दिनों के अंदर अपने विचारों से लिखित रूप से ज्ञात कराने का अवसर प्रदान किया गया :
 - i) शैन्गडांग शांक्सी एंड कैमिकल कंपनी लिमिटेड
 - ii) जियांग्सु साइनोर्गैकैम टेक्नोलाजी कंपनी, लिमिटेड
 - iii) शैन्गडांग यांगगु हुआताई कैमिकल कंपनी लिमिटेड
 - iv) चांगडी डिंग्युआन कैमिकल इंडस्ट्रियल लिमिटेड
 - v) डोंगयिंन बो चेन कैमिकल कंपनी लिमिटेड
 - vi) जिनान रून्कौन कैमिकल कंपनी लिमिटेड
 - vii) नान्जिंग कैमिकल प्लांट (एन सी पी)
 - viii) झेजियांग यांग्जिया कैमिकल प्लांट
 - ix) हिनान कैलुन कैमिकल कंपनी, लिमिटेड
 - x) रोंगचेंग कैमिकल जनरल फैक्टरी कंपनी लिमिटेड
 - xi) डजलियांन रिकोन कैम कंपनी लिमिटेड
 - xii) झेन्जियांग नं. 2 कैमिकल फैक्टरी
 - xiii) हीबेई हौफेंग कैमिकल फैक्टरी
 - xiv) शेन्झेन हौरैन इंडस्ट्रियल कंपनी

- xv) यक्सिंग डांगफैंग फिन्क कैमिकलस
- xvi) झेजिना युइक्विंग अल्ट्राफाइन पाउडर्स एंड कैमिकल्स कंपनी लिमिटेड
- xvii) कोरिया कुम्हो पेट्रोकेमिकल्स कंपनी लिमिटेड

ड. संबद्ध देशों के संबद्ध वस्तु के निम्नलिखित उत्पादकों/निर्यातकों से निर्यातक प्रश्नावली के प्रत्युत्तर प्राप्त हुए :

- i) मैसर्स शेन्डांग सिनोर्गकेम टेक्नालोजी कंपनी लिमिटेड, चीन जन.गण.
- ii) मैसर्स सिनोर्गकेम कंपनी, ताइ आन चीन जन.गण.
- iii) मैसर्स जियांगसु सिनोर्गकेम टेक्नालोजी कंपनी लिमिटेड, चीन जन.गण.
- iv) कुम्हो पेट्रोकेमिकल्स कंपनी लिमिटेड, कोरिया आर पी
- v) डैवू इंटरनेशनल कंपनी लिमिटेड, कोरिया आर पी

च. प्राधिकारी ने भारत में संबद्ध वस्तु के निम्नलिखित ज्ञान आयातकों (जिनके नाम एवं पते प्राधिकारी को उपलब्ध कराए गए थे) को नियम 6(4) के अनुसार सार्वजनिक नोटिस की एक प्रति अग्रेषित की और उन्हें इस पत्र के जारी होने की तारीख से चालीस दिनों के अंतर अपने विचारों से लिखित रूप में अवगत कराने का सुझाव दिया :

- i) आटोमोटिव टायर मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन
- ii) दि आल इंडिया रबड़ इंडस्ट्रीज एसोसिएशन
- iii) जे के इंडस्ट्रीज लिमिटेड
- iv) मैट्रो टायर्स लिमिटेड
- v) सिएट लिमिटेड
- vi) पोद्दार टायर्स लिमिटेड
- vii) अपोलो टायर्स लिमिटेड
- viii) रायसन इंडिया लिमिटेड
- ix) बिरला टायर
- x) रबड़ उत्पाद लिमिटेड
- xi) ए आर एफ लिमिटेड

छ. आयातक प्रश्नावली के प्रत्युत्तर में सिएट लिमिटेड, अपोलो टायर्स लिमिटेड और जे.के. टायर्स एंड इंडस्ट्रीज लिमिटेड ने आयातक प्रश्नावली का प्रत्युत्तर दिया।

ज. निम्नलिखित विरोधकर्ता हितबद्ध पक्षकारों ने भी लिखित प्रस्तुतिकरण प्रस्तुत किए :

- i) मैसर्स कुम्हो पेट्रोकेमिकल्स कंपनी लिमिटेड, कोरिया आर.पी.
- ii) मैसर्स झृषिरूप पालिमर्स प्राइवेट लिमिटेड, भारत में आयातक
- iii) आटोमोटिव टायर मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन (एटीएमए)

- झ. जिन निर्यातकों, उत्पादकों तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने न तो प्राधिकारी को प्रत्युत्तर दिया और न ही इस जांच से संगत सूचना उपलब्ध कराई, उन्हें प्राधिकारी द्वारा असहयोगकर्ता हितबद्ध पक्षकार के रूप में माना गया।
- ञ. यह जांच 1 जनवरी, 2012 से प्रारंभ करके 31 दिसम्बर, 2012 (जिसे जांच की अवधि अथवा पीओआई कहा गया है) तक की अवधि के लिए की गई। क्षति विश्लेषण के संदर्भ में प्रवृत्तियों की जांच में वर्ष 2009-2010, 2010-11, 2011-12 तथा जांच की अवधि को भी शामिल किया गया है।
- ट. वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डी जी सी आई एंड एस) से पिछले तीन वर्षों की अवधि के लिए तथा जांच की अवधि के लिए संबद्ध वस्तु के आयात आंकड़ों की व्यवस्था करने का अनुरोध किया गया और उसे प्राप्त किया गया।
- ठ. संबद्ध वस्तु की भारत में उत्पादन लागत और उसको बनाने एवं उसकी बिक्री करने की लागत का निर्धारण सामान्यतः स्वीकृत लेखाकरण सिद्धांतों (डीएएपी) और आवेदक द्वारा प्रस्तुत सूचना के आधार पर करने के लिए क्या पाठन मार्जिन से न्यूनतर पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग की क्षति को दूर करने के लिए पर्याप्त होगी। गैर-क्षतिकारी कीमत का निर्धारण पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II के अनुसार किया गया।
- ड. प्राधिकारी ने संगत सूचना मौखिक रूप से प्रस्तुत करने के लिए हितबद्ध पक्षकारों के एक अवसर प्रदान करने के लिए 6 दिसम्बर, 2013 को एक सार्वजनिक सुनवाई का आयोजन किया। इस सार्वजनिक सुनवाई में भाग लेने वाले पक्षकारों से अनुरोध किया गया कि वे मौखिक रूप से अभिव्यक्त अपनी सूचना का लिखित प्रस्तुतिकरण भी करें। इस सार्वजनिक सुनवाई में विरोधकर्ता हितबद्ध पक्षकारों द्वारा अभिव्यक्त विचारों की प्रत्युक्ति प्रस्तुत करने का अवसर भी हितबद्ध पक्षकारों को प्रदान किया गया। प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त प्रस्तुतिकरणों और प्रत्युक्तियों पर इस अंतिम जांच परिणाम अधिसूचना में संगत पाई गई सीमा तक विचार किया है।
- ण. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य का अगोपनीय पाठ एक अनुरक्षित सार्वजनिक फाइल में उपलब्ध कराया और उसे नियम 6(7) के अनुरूप हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निरीक्षण के लिए खुला रखा गया।
- त. प्राधिकारी ने जांच के दौरान प्रदान कराई गई सूचना की यथार्थता से स्वयं को संतुष्ट किया। इस प्रयोजनार्थ, प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग तथा सहयोगकर्ता उत्पादकों/निर्यातकों का संगत एवं आवश्यक समझी गई सीमा तथा स्थल सत्यापन किया।
- थ. जहां कहीं किसी हितबद्ध पक्षकार से इस जांच के दौरान किसी आवश्यक सूचना तक पहुंच की मनाही की है अथवा अन्यथा आवश्यक सूचना उपलब्ध नहीं कराई है या इस जांच में

अवरोध उत्पन्न किया है, वहां प्राधिकारी ने अपने प्रेक्षण/विश्लेषण उपलब्ध तथ्यों के आधार पर दर्ज किए हैं।

- थ. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रदान कराई गई सूचना की गोपनीयता दावे की पर्याप्तता के संबंध में जांच की गई। संतुष्ट होने पर प्राधिकारी ने जहां कहीं आवश्यक हुआ गोपनीयता की अनुमति प्रदान कर दी और ऐसी सूचना को गोपनीय के रूप में माना गया और उसका अन्य हितबद्ध पक्षकारों को प्रकटन नहीं किया गया। गोपनीय आधार पर सूचना प्रदान करने वाले पक्षकारों को यह निदेश दिया गया कि वे गोपनीय आधार पर दायर की गई सूचना का, जहां कहीं संभव हो, पर्याप्त अगोपनीय पाठ भी प्रदान कराएं।
- द. इस जांच से संबंधित अनिवार्य तथ्यों युक्त एक प्रकटन विवरण, जो इस अंतिम जांच परिणाम का आधार हो सकता है, दिनांक 18.04.2014 को सभी हितबद्ध पक्षकारों को जारी किया गया। हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त प्रकटन पश्चात विवरण प्रस्तुतिकरणों पर इस अंतिम जांच परिणाम अधिसूचना में यथासंभव संगत पाई गई सीमा तक विचार किया गया है।
- ध. *** इस अंतिम जांच परिणाम अधिसूचना में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना का प्रतिनिधित्व करता है और उसे प्राधिकारी द्वारा पाटनरोधी नियमावली के अंतर्गत उसी तरह विचार किया गया है।
- न. जांच की अवधि के दौरान अमरीकी डालर को आईएनआर में परिवर्तन करने के लिए वित्त मंत्रालय के आदेश के अनुसार विनिमय दर 53.69/-रुपए विचार की गई है।

ग. विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु

6. वर्तमान में विचाराधीन उत्पाद निम्नलिखित रबड़ रसायन है :

- i) एमबीटी, जिसका रासायनिक विवरण 2 - मर्केप्टो बेंजोथायाजोल, जिसे एक्सिलनेटर एम, एक्सिलरेटर एमबीटी आदि अन्य व्यापार नामों/ब्रैंड नामों से भी जाना जाता है।
- ii) सीबीएस, जिसका रासायनिक विवरण एन साइक्लोहेक्साइल-2- बेन्जोथायाजोल सल्फेनामाइड, जिसे अन्य व्यापार नामों/ब्रैंड नामों के रूप में एक्सिलरेटर सीजेड एक्सिलरेटर एचबीएस, सीबीएस आदि नामों से जाना जाता है।
- iii) टीडीक्यू, जिसका रासायनिक विवरण पालिमराइज्ड 2,2,4- ट्राईमथायल- 1, 2 - डिहाइड्रोक्विनोलाइन है और इसे टीएमआर या एंटीआक्सीडेंट आरडी आदि जैसे अन्य नामों/ब्रैंड नामों से भी जाना जाता है।
- iv) पीवीआई, जिसका रासायनिक विवरण टेट्रामिथाइलथिउरम हाइसल्फ्यूड है और एन - (साइक्लोहेक्साइलथियो) थैलिमाइड है और एंटी स्कार्च एजेंट सीटीपी पीवीआई आदि जैसे अन्य व्यापार नामों/ब्रैंड नामों से भी जाना जाता है।
- v) टीएमटी जिसका रासायनिक विवरण टेट्रामिथाइलथिउरम हाइसल्फ्यूड है और जिसे एक्सिलरेटर टीएमटीडीथिउस सी आदि जैसे अन्य व्यापार नामों/ब्रैंड नामों से भी जाना जाता है।

- vi) पीएक्स-13 (6पीपीडी) जिसका रासायनिक विवरण एन (1, 3 डाईमिथाइल ब्यूटाइल) - एन" फिनायल - पी-एल है, जिसे 6 सी, पिल्फ्लेक्स 13 सिरान्टाक्स 4020 एंटीआक्सीडेंट 4020, कुम्होनेक्स 13 वल्कैनोक्स 4020 आदि अन्य व्यापार/ब्रैंड नामों से भी जाना जाता है।

घरेलू उद्योग के विचार

7. इस विचाराधीन उत्पाद (पीयूसी) और समान वस्तु के दायरे के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित प्रस्तुतिकरण किया गया है :

क. वर्तमान समीक्षा एक निर्णायक समीक्षा जांच होने के कारण, इसके विचाराधीन उत्पाद का दायरा वही होना चाहिए जो मूल जांच में था, अर्थात :

- i) एमबीटी, जिसका रासायनिक विवरण 2 - मर्केप्टो बेंजोथायाजोल, जिसे एक्सिलनेटर एम, एक्सिलरेटर एमबीटी आदि अन्य व्यापार नामों/ब्रैंड नामों से भी जाना जाता है।
- ii) सीबीएस, जिसका रासायनिक विवरण एन साइक्लोहेक्साइल-2- बेन्जोथायाजोल सल्फेनामाइड, जिसे अन्य व्यापार नामों/ब्रैंड नामों के रूप में एक्सिलरेटर सीजेड एक्सिलरेटर एचबीएस, सीबीएस आदि नामों से जाना जाता है।
- iii) टीडीक्यू, जिसका रासायनिक विवरण पालिमराइज्ड 2,2,4- ट्राईमथायल- 1, 2 - डिहाइड्रोक्विनोलाइन है और इसे टीएमआर या एंटीआक्सीडेंट आरडी आदि जैसे अन्य नामों/ब्रैंड नामों से भी जाना जाता है।
- iv) पीवीआई, जिसका रासायनिक विवरण टेट्रामिथाइलथिउरम हाइसल्फ्यूड है और एन - (साइक्लोहेक्साइलथियो) थैलिमाइड है और एंटी स्कार्च एजेंट सीटीपी पीवीआई आदि जैसे अन्य व्यापार नामों/ब्रैंड नामों से भी जाना जाता है।
- v) टीएमटी जिसका रासायनिक विवरण टेट्रामिथाइलथिउरम हाइसल्फ्यूड है और जिसे एक्सिलरेटर टीएमटीडीथिउस सी आदि जैसे अन्य व्यापार नामों/ब्रैंड नामों से भी जाना जाता है।
- vi) पीएक्स-13 (6पीपीडी) जिसका रासायनिक विवरण एन (1, 3 डाईमिथाइल ब्यूटाइल) - एन" फिनायल - पी-एल है, जिसे 6 सी, पिल्फ्लेक्स 13 सिरान्टाक्स 4020 एंटीआक्सीडेंट 4020, कुम्होनेक्स 13 वल्कैनोक्स 4020 आदि अन्य व्यापार/ब्रैंड नामों से भी जाना जाता है।

8. ऊपर वर्णित रबड़ रसायनों का प्रयोग प्राकृतिक रबड़ और सिन्थेटिक रबड़ आधारित यौगिकों को उपचारित करने के लिए किया जाता है। इस उत्पाद का 8 अंकीय स्तर का कोई समर्पित वर्गीकरण नहीं है। ऐसा उल्लेख किया गया है कि इस उत्पाद का आयात सीमाशुल्क प्रशुल्क अधिनियम के अध्याय 29 एवं 38 के अंतर्गत किया जाता है।

निर्यातकों/आयातकों तथा अन्य विरोधकर्ता हितबद्ध पक्षकारों के विचार

9. इस विचाराधीन उत्पाद एवं समान वस्तु के दायरे के संबंध में किसी भी अन्य हितबद्ध पक्षकार ने कोई मुद्दा नहीं उठाया है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

10. वर्तमान समीक्षा उपर्युक्त रबड़ रसायनों के आयातों पर प्राधिकारी द्वारा इससे पहले की गई सिफारिश के आधार पर पहले से प्रभावी पाटनरोधी शुल्क से संबंधित निर्णायक समीक्षा जांच है। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि इस विचाराधीन उत्पाद का दायरा वहीं रहेगा जो मूल जांच के समय था।

11. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित प्रत्येक संबद्ध वस्तु और संबद्ध देशों से आयात की गई प्रत्येक संबद्ध वस्तु के बीच कोई भारी अंतर नहीं है। भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित प्रत्येक संबद्ध वस्तु तथा संबद्ध देशों से आयातित प्रत्येक संबद्ध वस्तु उनके भौतिक एवं रासायनिक गुणधर्मों, विनिर्माण प्रक्रिया एवं प्रौद्योगिकी, प्रकार्यों एवं प्रयोगों, उत्पाद विनिर्देशनों, कीमत निर्धारण, वितरण एवं विपणन तथा प्रशुल्क वर्गीकरण के रूप में तुलनीय है। दोनों ही वस्तुएं तकनीक रूप से एवं वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं। उपभोक्तागण इन दोनों ही वस्तुओं का प्रयोग अंतःपरिवर्तनीय रूप से कर रहे हैं। किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने इस संबंध में कोई आपत्ति नहीं उठाई है। इस प्रकार याचिकाकर्ता कंपनी द्वारा उत्पादित प्रत्येक संबद्ध रबड़ रसायन को प्राधिकारी द्वारा पाटनरोधी नियमावली के अनुसार संबद्ध देशों से आयातित संबंधित संबद्ध वस्तु के समान वस्तु के रूप में माना गया है।

घ. घरेलू उद्योग एवं आधार

12. यह आवेदनपत्र भारत में विचाराधीन उत्पाद के उत्पादक मैसर्स नेशनल आर्गेनिक कैमिकल्स लिमिटेड द्वारा (एन ओ सी आई एल) दायर की गई है। एन ओ सी आई एल ने वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ सभी संगत सूचना प्रदान कराई है।

निर्यातकों/आयातकों/अन्य विरोधकर्ता हितबद्ध पक्षकारों के विचार

13. निम्नलिखित प्रस्तुतिकरण किए गए हैं :

- क) वर्तमान निर्णायक समीक्षा में आवेदक घरेलू उत्पादक मैसर्स नेशनल आर्गेनिक कैमिकल इंडस्ट्रीज लिमिटेड है। यह आवेदक "घरेलू उद्योग" की परिभाषा को संतुष्ट नहीं करता है क्योंकि आवेदक द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु का सामूहिक आउटपुट संबद्ध वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का "बड़ा भाग" नहीं बनता है।
- ख) इस तथ्य पर भरोसा किया जाता है कि मर्केम लिमिटेड, संबद्ध वस्तु के घरेलू उत्पादकों में से एक, भी, इसके द्वारा वर्ष 2010-11 की वार्षिक रिपोर्ट में किए गए उल्लेख के अनुसार, एक नई सुविधा पर 4एडीपीए का विनिर्माण भी कर रहा है और पीएक्स-13 (6पीपीडी) का निर्माण करने के लिए एक नए संयंत्र की स्थापना भी कर रहा है। इस प्रकार आवेदक को उन अन्य घरेलू उत्पादकों से कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है जो बाजार पर अपना आधिपत्य जमाना चाहते हैं। यह भी ज्ञात है कि आवेदक ने दाहेज में एक नए

विनिर्माण संयंत्र की स्थापना भी की है जिसने वित्त वर्ष 2012-13 में किसी समय उत्पादन करना प्रारंभ कर दिया है।

- ग) पीएक्स-13 (6पीपीडी) पर रक्षोपाय शुल्क की समीक्षा के संबंध में महानिदेशक रक्षोपाय द्वारा आयोजित एक सुनवाई में आवेदक ने दावा किया है कि घरेलू उत्पादकों की क्षमता निम्नलिखित थी : एन ओ सी आई एल (8500 एमटी/प्रतिवर्ष), लैनक्सेस (2000 एमटी/प्रतिवर्ष) और पीएमसी (1000 एमटी/प्रतिवर्ष)।
- घ) यह प्रस्तुत किया जाता है कि पर्याप्त क्षमता संवृद्धि के परिणामस्वरूप घरेलू बाजार में उत्पादन विवरण में भारी परिवर्तन हुआ है। आवेदक की इस समय संबद्ध वस्तु के कुल उत्पादन का 50 प्रतिशत उत्पादन करने की क्षमता नहीं है और इस बात की पूर्ण संभावना है कि यह संबद्ध वस्तु का अंततः 50 प्रतिशत उत्पादन नहीं कर पाएगा। किसी भी अन्य घरेलू उत्पादक ने आवेदक की याचिका का समर्थन नहीं किया है। जब आवेदक संबद्ध वस्तु के 50 प्रतिशत का उत्पादन नहीं कर सकता है तो यह नियम 2(ख) और अनुच्छेद 4.1 में यथा उल्लिखित "घरेलू उद्योग" की परिभाषा को संतुष्ट नहीं करता है जो यह अधिदेशित करता है कि घरेलू उद्योग का सामूहिक आउटपुट संबद्ध वस्तु का "एक बड़ा भाग" बनना चाहिए।
- ङ) पुनः यह दावा किया जाता है कि कोई आवेदक जो संबद्ध वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन के बड़े भाग का उत्पादन नहीं करता है वह "घरेलू उद्योग" नहीं बन सकता है। चीन से कतिपय लोहा एवं इस्पात फासनर्स पर निर्णायक पाटनरोधी शुल्क डब्ल्यूटी/डीएस 397/एबी/आर (28 जुलाई, 2011) यूरोपियन समुदायों में अपीलीय निकाय के निर्णय, जिसमें "एक बड़े भाग" की व्याख्या "संगत रूप से घरेलू उत्पादन के एक बड़े भाग" के रूप में की गई है, पर भरोसा किया गया है।
- च) इस प्रकार यह तर्क दिया जाता है कि आवेदक "घरेलू उद्योग" की परिभाषा को संतुष्ट नहीं करता है और इसके परिणामस्वरूप वर्तमान समीक्षा का अवसान किया जाता है।

घरेलू उद्योग के विचार

14. घरेलू उद्योग द्वारा घरेलू उद्योग और उसके आधार के दायरे के संबंध में निम्नलिखित प्रस्तुतिकरण किए गए हैं :

- क) याचिकाकर्ता, एन ओ सी आई एल, देश में इस विचाराधीन उत्पाद का एक बड़ा उत्पादक है। लैनक्सेस इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मर्कस लिमिटेड और पीएमसी रबड़ कैमिल्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड भारत में इस विचाराधीन उत्पाद के अन्य उत्पादक हैं।
- ख) याचिकाकर्ता ने संबद्ध वस्तु का आयात नहीं किया है। याचिकाकर्ता का संबद्ध देशों में संबद्ध उत्पाद के किसी निर्यातक से या भारत में किसी आयातक से लेना-देना नहीं है।

- ग) एनर ओ सी आई एल प्रत्येक संबद्ध रबड़ रसायन का देश में एक बड़ा उत्पादक है। जहां तक इस संबद्ध वस्तु के अन्य उत्पादकों का संबंध है, इस संबंध में कोई प्रकाशित सूचना उपलब्ध नहीं है। याचिकाकर्ता ने अन्य कंपनियों के उत्पादन का आकलन उनके द्वारा किए गए कच्चे माल के आयात के आधार पर किया है। याचिकाकर्ता ने व्यक्ति कंपनियों द्वारा की गई घरेलू बिक्री, आयातों और किए गए निर्यातों पर विचार करते हुए उनके उत्पादन का आकलन किया है।
- घ) याचिकाकर्ता भारतीय उत्पादन में एक बड़े भाग का उत्पादन करने का उत्तरदायी है। उसका पाटनरोधी नियमावली के अंतर्गत याचिका दायर करने का अधिकार है।
- ङ) मर्केम के संबंध में यह प्रस्तुत किया जाता है कि मर्केम द्वारा पीएक्स-13 का उत्पादन कुल भारती उत्पादन की तुलना में बहुत कम है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

15. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि यह आवेदनपत्र भारत में विचाराधीन उत्पाद के एक उत्पादक एनओसीआईएल द्वारा दायर किया गया है और एनओसीआईएल ने वर्तमान निर्णायक समीक्षा जांच के प्रयोजनार्थ सभी संगत सूचना प्रदान कराई है। याचिकाकर्ता कंपनी का उत्पादन प्रत्येक रबड़ रसायन के लिए एक बड़ा उत्पादन है, जैसा कि निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट है :

उत्पाद	एन ओ सी आई एल का उत्पादन एमटी	सहयोगी उत्पादन एमटी	कुल घरेलू उत्पादन (एन ओ सी आई एल + सहयोगी) एमटी	अन्य भारतीय उत्पादकों का उत्पादन एमटी	कुल भारतीय उत्पादन एमटी	भारतीय उत्पादन में घरेलू उद्योग का हिस्सा %	कुल भारतीय उत्पादन में घरेलू उद्योग का % रैंज
पीएक्स-13 (6पीपीडी)	***	***	***	***	***	***	60-70%
टी डी क्यू	***	***	***	***	***	***	85-95%
पी वी आई	***	***	***	***	***	***	90-100%
टी एम टी	***	***	***	***	***	***	90-100%
एम बी टी	***	***	***	***	***	***	75-85%
सी बी एस	***	***	***	***	***	***	90-100%

16. मर्केस लिमिटेड द्वारा पीएक्स-13 के उत्पादन के संबंध में घरेलू उद्योग ने प्राधिकारी को संबोधित मर्केस लिमिटेड का एक पत्र प्रदान किया है जिसमें मर्केम लिमिटेड ने निम्नलिखित क्षमता एवं क्षमता उपयोग का उल्लेख किया है।

	2010-11	2011-12	2012-13
क्षमता	***	***	***
उत्पादन	***	***	***
क्षमता उपयोग	***	***	***

17. रिकार्ड में उपलब्ध सूचना के अनुसार प्राधिकारी यह निर्धारित करते हैं कि एन ओ सी आई एल का उत्पादन प्रत्येक संबद्ध रबड़ रसायन के कुल भारतीय उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा बनता है। अतः याचिकाकर्ता नियमावली के आशय के अंतर्गत घरेलू उद्योग बनता है और उसके आधार पर संतुष्ट करता है।

ड. गोपनीयता

निर्यातकों/आयातकों/ अन्य विरोधकर्ता हितबद्ध पक्षकारों के विचार

18. गोपनीयता के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित प्रस्तुतिकरण किए गए हैं :

- i) चुनिंदा एवं बेशी गोपनीयता जो पाटनरोधी नियमावली के नियम 7 के अनुरूप नहीं है क्योंकि घरेलू उद्योग ने घरेलू बिक्री के आंकड़े उपलब्ध कराए हैं परंतु क्षमता, क्षमता उपयोग और उत्पादन संबंधी आंकड़े अभिव्यक्त नहीं किए हैं।

घरेलू उद्योग के विचार

19. गोपनीयता के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित विचार व्यक्त किए गए हैं :

- क) विरोधकर्ता हितबद्ध पक्षकारों ने अपनी निर्यातक प्रश्नावली प्रत्युत्तरों में बेशी गोपनीयता का दावा किया गया है।
 - i) मैसर्स सिनोर्गकेम टेक्नालोजी कंपनी लिमिटेड, चीन, मैसर्स सिनोर्गकेम कंपनी ताइ आन, चीन जन गण और मैसर्स जियांग्सु सिनोर्गकेम टेक्नालोजी कंपनी लिमिटेड, चीन जन गण ने शेयरधारकों, संबंधित उत्पाद में अंतर्ग्रस्त कंपनियों, लागत केंद्रों का ब्यौरा, कच्चे माल का नाम और विवरण उत्पादन प्रक्रिया और परिशिष्ट-1 के संबंध में गोपनीयता का दावा किया है। इसके अतिरिक्त, घरेलू उद्योग ने गोपनीय के रूप में दावाकृत सूचना के लिए सूचना के किसी सार या अनुक्रमित रूपांतरण प्रदान नहीं किया है और क्षमा उत्पादन और बिक्री तथा मालसूची के संबंध में कोई मात्रा सूचना प्रदान नहीं की है।
 - ii) कुम्हो कैमिकल्स ने शेयरधारकों के नाम, उपसामग्री के संबंधित प्रदायकों का विवरण, उत्पादन प्रक्रिया, फ्लो चार्ट, तृतीय देशों को कच्चे माल के लिए गए निर्यातों का नाम, उत्पादन करने की क्षमता या भारत या अन्य देशों में उत्पादन करने के लिए किसी अन्य संयंत्र, विचाराधीन का उत्पाद का उत्पादन करने से संबंधित प्रचालनों में परिवर्तन, निर्यात बाजार के पीसी पर एडीडी का महत्व और उत्पादन क्षमता में परिवर्तन के संबंध में गोपनीयता का दावा किया है। इसके अतिरिक्त एक कच्चे माल की खरीद संबद्ध कंपनी से की जाती है परंतु उसके विवरण गोपनीय रखे गए हैं। लगभग समस्त निर्णायक समीक्षा प्रश्नावली को गोपनीय रखा गया है।
 - iii) सिएट और अपोलो के आयातक प्रश्नावली प्रत्युत्तर में सभी अनुबंधों में दी गई सूचना को गोपनीय माना गया है और कोई भी सूचीकरण प्रदान नहीं किया गया है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

20. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रदान कराई गई सूचना की जांच गोपनीयता के दावे की पर्याप्तता के संबंध में की गई। जहां तक घरेलू उद्योग द्वारा कुछ सूचना का प्रकटन न किए जाने के तर्क का संबंध है, याचिकाकर्ता ने यह दावा किया कि गोपनीय व्यवसाय संवेदी सूचना है और घरेलू उद्योग ने इस सूचना का प्रकटन सार्वजनिक रूप से नहीं किया। याचिकाकर्ता द्वारा घरेलू बिक्री मात्रा के संबंध में ही प्रकटन को ही चुनने का आशय यह नहीं है कि याचिकाकर्ता अन्य सभी सूचनाओं का प्रकटन करने के लिए कर्तव्यविवश है। यह नहीं दर्शाया गया है कि याचिकाकर्ता ने कुछ सूचना की गोपनीयता का दावा किया है जिसका याचिकाकर्ता ने अन्यत्र सार्वजनिक रूप से प्रकटन कर दिया है। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि गोपनीय आधार पर सूचना प्रदान कराने वाले पक्षकारों को निदेश दिया गया कि वे गोपनीय आधार पर प्रदान कराई गई सूचना का, यथा संभव, पर्याप्त अगोपनीय पाठ प्रदान कराएं और प्राधिकारी ने संतुष्ट होने पर जहां कहीं आवश्यक हुआ, गोपनीयता के दावे को स्वीकार कर लिया और ऐसी सूचना को अगोपनीय के रूप में माना गया तथा उसका प्रकटन अन्य हितबद्ध पक्षकारों को नहीं किया गया।

च. विविध मुद्दे

निर्यातकों/आयातकों/अन्य विरोधकर्ता हितबद्ध पक्षकारों के विचार

21. निर्यातकों/आयातकों तथा अन्य विरोधकर्ता हितबद्ध पक्षकारों ने निम्नलिखित प्रस्तुतिकरण किए हैं :

- क) कतिपय प्रारंभिक आपत्तियों के कारण इस जांच को समाप्त कर दिया जाना चाहिए जैसे संबद्ध वस्तु पर पाटनरोधी शुल्क की अवधि समाप्त होना और अधिनियम की धारा 9क (5) के उल्लंघन में अवधि समाप्ति के पश्चात विस्तार, और डीजीएडी द्वारा जारी व्यापार नोटिस सं. 2/2011 और पाटनरोधी नियमावली के नियम 23(1ख) के उल्लंघन में पाटनरोधी जांच को प्रारंभ किए जाने का अनुरोध करते हुए आवेदक द्वारा याचिका दायर में विलंब।
- ख) यह प्रस्तुत किया जाता है कि दिनांक 20 सितम्बर, 2011 अधिसूचना सं. 92/2011-सीमाशुल्क की निर्णायक समीक्षा खंड के अनुसार संबद्ध वस्तु पर पाटनरोधी शुल्क दिनांक 04 मई, 2013 को समाप्त हो गया है। दिनांक 05 जुलाई, 2013 को ही अधिसूचना सं. 17/2013-सीमा शुल्क (एडीडी) के तहत शुल्क में विस्तार किया गया। इसलिए यह तर्क दिया जाता है कि चूंकि शुल्क में विस्तार किए जाने से पहले ही शुल्क समाप्त हो गया था इसलिए वर्तमान समीक्षा व्यर्थ है क्योंकि इस समीक्षा के समय पाटनरोधी शुल्क मौजूद नहीं था।
- ग) वित्त मंत्रालय द्वारा किए गए दिनांक 08.07.2011 के परिपत्र सं. 28 पर भरोसा किया गया जिसने यह स्पष्ट किया कि प्रभावी पाटनरोधी शुल्क, यदि पांच वर्षों की अवधि समाप्त होने से पहले इस शुल्क के उदग्रहण का विस्तार करते हुए अधिसूचना जारी नहीं की जाती है तो पांच वर्षों की अवधि की समाप्ति के पश्चात यह स्वयं समाप्त हो जाएगा।
- घ) इसके अतिरिक्त, यह प्रस्तुत किया जाता है कि दिनांक 6 जून, 2011 के व्यापार नोटिस सं. 2/2011 की अपेक्षाओं के अनुरूप आवेदक को पाटनरोधी शुल्क की समाप्ति से 90 दिन पहले अर्थात् 04 मार्च, 2013 से पहले निर्णायक समीक्षा प्रारंभ करने के लिए एक याचिका दायर करना अपेक्षित होता है। तथापि, आवेदक द्वारा ऐसी कोई याचिका 20 मार्च, 2013 तक दायर नहीं की गई है जैसाकि याचिका के अनुबंध 21 में उल्लेख किया गया है। इस अनिश्चितता से यह निर्णायक समीक्षा भी वैध नहीं है और उसे समाप्त कर दिया जाना चाहिए।

- ड) घरेलू उद्योग ने विभिन्न रबड़ रसायनों पर विभिन्न स्रोतों से लगभग आठ वर्षों तक पाटनरोधी शुल्क के संरक्षण का लाभ लिया है और पीएक्स-13 के आयातों पर रक्षोपाय शुल्क का लगभग सभी स्रोतों से दो वर्षों तक शुल्क का संरक्षण प्राप्त किया है।

22. घरेलू उद्योग के विचार

- क. इस तर्क के संबंध में कि घरेलू उद्योग को शुल्क का संरक्षण पहले से ही प्राप्त था, यह प्रस्तुत किया जाता है कि पाटनरोधी शुल्क केवल अनुचित व्यापार प्रक्रियाओं में सुधार करती है और उसे तब तक ही अधिरोपित करना अपेक्षित होता है जब तक कि इस बात के साक्ष्य हो कि पाटन और क्षति की निरंतरता बने रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

23. जहां तक इस प्रस्तुतिकरण का संबंध है कि घरेलू उद्योग को पहले से ही शुल्क से संरक्षण प्राप्त है, यह नोट किया जाता है कि यह प्राधिकारी को शुल्क की निरंतरता बनाए रखने से नहीं रोकता है यह वह यह उपपादित करते हैं कि पाटन एवं क्षति की निरंतरता बने रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है।

24. जहां तक इस तर्क का संबंध है वर्तमान समीक्षा निष्क्रिय है क्योंकि समीक्षा करने के लिए पाटनरोधी शुल्क तो मौजूद था ही नहीं क्योंकि दिनांक 05 जुलाई, 2013 को शुल्क का विस्तार करने से पहले ही दिनांक 04 मई, 2013 को यह शुल्क समाप्त हो गया था, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि इस संबंध में धारा 9क (5) के अंतर्गत केवल एक बाध्यता यह है कि जांच शुल्क समाप्त हो जाने से पहले शुरू की जानी चाहिए।

25. जहां तक वित्त मंत्रालय के दिनांक 08.07.2011 के परिपत्र संख्या 28 का संबंध है, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि उसका दायरा पाटनरोधी शुल्क का संग्रहण करने से है और यह विनिर्धारित करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क का संग्रहण समयावधि के पश्चात नहीं कर सकते हैं।

26. जहां तक इस तर्क का संबंध है कि आवेदक द्वारा विलंब से याचिका यह अनुरोध करते हुए दायर करना कि पाटनरोधी शुल्क की समीक्षा की शुरुआत की जाए, पाटनरोधी नियमावली के नियम 23(1ख) और पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय द्वारा जारी व्यापार नोटिस संख्या 2/2011 का उल्लंघन है, प्राधिकारी के समक्ष उपलब्ध रिकार्ड से यह नोट किया जाता है कि जनवरी-दिसम्बर 2012 को प्रस्तावित जांच की अवधि पर विचार करते हुए यह याचिका तर्कसंगत समयावधि के अंतर्गत दायर की गई थी।

छ. पाटन का आकलन ३ क्रियापद्धति एवं पैरामीटर्स

पाटन मार्जिन का निर्धारण

27. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि निम्नलिखित निर्यातकों/आयातकों ने प्रश्नावली प्रत्युत्तर दायर किया :

- (i) मैसर्स शान्दांग सिनोर्गकेम टेक्नालोजी कंपनी लिमिटेड, चीन जन.गण.
- (ii) मैसर्स सिनोर्गकेम कंपनी ताई आन, चीन जन.गण.
- (iii) मैसर्स जियांग्सु सिनोर्गकेम टेक्नोलाजी कंपनी लिमिटेड, चीन जन.गण.
- (iv) कुम्हो पेट्रोकेमिकल्स कंपनी लिमिटेड, कोरिया आर.पी.
- (v) डैवू इंटरनेशनल कारपोरेशन, कोरिया आर.पी.
- (vi) सिएट लिमिटेड (आयातक)
- (vii) जे. के. टायर्स लिमिटेड (आयातक)
- (viii) अपोलो टायर्स लिमिटेड (आयातक)

निर्यातकों/आयातकों/अन्य विरोधकर्ता हितबद्ध पक्षकारों के विचार

28. निर्यातकों/आयातकों और अन्य विरोधकर्ता हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निम्नलिखित प्रस्तुतिकरण किए गए :

- क. कुम्हो पेट्रोकेमिकल्स कंपनी लिमिटेड (केकेपीसी) और सिनोर्गकेम के बीच ऐसा कोई "विशेष संबंध" नहीं है जिसके द्वारा केकेपीसी विशेष रियायती दरों पर 4एडीपीए प्राप्त करता है।
- ख. आवेदक ने उल्लेख किया कि विगत कुछ वर्षों में केकेपीसी की घरेलू बिक्रियों में कमी आई है। यह ज्ञात नहीं है कि यह केकेपीसी और सिनोर्गकेम बीच कोई संबंध स्थापित होता है।
- ग. सिनोर्गकेम के अन्य देशों तथा यूएस को निर्यातों में कथित गिरावट और अन्य देशों तथा यूएस को केकेपीसी के निर्यातों में कथित वृद्धि विशेष संबंधों के दावे को सिद्ध नहीं करती है।
- घ. आवेदक का यह दावा कि सोलुशिया इंक, सिनोर्गकेम और केकेपीसी ने एक समझौता किया है जिसके द्वारा सोलुशिया, केकेपीसी और सिनोर्गकेम को 4एडीपीए का विनिर्माण करने की अनुमति देता है जिससे यह सिद्ध होता है कि सिनोर्गकेम द्वारा यूएस को वस्तु यह सिद्ध किए जाने पर कोई प्रतिबंध नहीं है।
- ङ. यदि केकेपीसी घाटी दरों पर 4एडीपीए का प्रापण करने और भारत में इस उत्पाद का पाटन करने, जैसाकि आरोप लगाया गया है, से इसे बिक्री अथवा इस उत्पाद के संबंध में राजस्व नहीं खोना होगा।
- च. जब कोई विशिष्ट क्रेता अन्य क्रेताओं की तुलना में भारी मात्रा में खरीद करता है तो उस विशिष्ट क्रेता के लिए निश्चिततः ही "भिन्न कीमत" उपलब्ध होगी। तथापि, ऐसा संबंध सामान्य होता है तथा यदि किसी क्रेता को खरीद की भारी मात्रा के कारण अतिरिक्त ग्रांट प्राप्त होता है तो इसका आशय यह नहीं है कि निकटतम लेनदेन कीमत की मनाही कर दी गई है।
- छ. केकेपीसी द्वारा यथा प्राविधानित 4एडीपीए की अधिप्रापण कीमत की अनदेखी नहीं की जा सकती है क्योंकि कोरिया आरपी एक बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश है। यह अन्य देशों में जांचकर्ता प्राधिकारियों के समक्ष भारतीय निर्यातकों के उपचार को विपरीत रूप से प्रभावित की है।
- ज. विधि जांचकर्ता प्राधिकारी को इनपुट कीमत की तब भी अनदेखी करने की अनुमति नहीं देता है जब उन पर पाटित के रूप में भी विचार किया जाए। 4एडीपीए पाटनरोधी जांच के

अधीन नहीं था/है और ऐसा कोई निर्धारण नहीं है कि जांच की अवधि के दौरान दक्षिण कोरिया को इसकी कीमतें पाटित थीं।

- झ. यदि प्राधिकारी केकेपीसी द्वारा 4एडीपीए की अधिप्रापण कीमतों का अस्वीकार कर देते हैं, तो उन्हें विधि के अनुरूप तृतीय देश का चयन करने के लिए विहित न्यूनतम अपेक्षाओं का अनुपालन करना चाहिए।
- ज. आवेदक यह तर्क प्रस्तुत कर रहे हैं कि सामान्य मूल्य की संगणना प्रतिवादी की कोरियाई घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु की भारित औसत बिक्री मात्रा और कोरिया में उसकी आयात कीमत के आधार पर की जानी चाहिए परंतु सीमाशुल्क प्रशुल्क अधिनियम की धारा 9क(6क) उल्लेख करती है कि सामान्य मूल्य का निर्धारण निर्यातक/उत्पादक के रिकार्डों के आधार पर किया जाना चाहिए और इसका उस देश में आयातित वस्तुओं से कोई लेना देना नहीं है।
- ट. यदि सामान्य मूल्य के लिए आयात कीमतों पर विचार कतिया जाना है तो निर्यातकों से उनके देश में समान वस्तु की आयात मात्रा और मूल्य से संबंधित आंकड़े प्रदान करने लिए निर्यातक प्रश्नावली में परिवर्तन करना चाहिए। निर्यातक ऐसे आंकड़े प्राप्त करने में असमर्थ रहेंगे और उन्हें असहयोगकर्ता के रूप में घोषित कर दिया जाएगा।
- ठ. संबद्ध देश में असत्यापित आयात आंकड़ों पर विचार करना भारी जोखिम भरा है। इसके अतिरिक्त, वस्तु के मूल्य में निर्यात के देश से कोरिया आरपी को भाड़े को भी शामिल किया जाना चाहिए।
- ड. सामान्य मूल्य की तुलना गैर-क्षतिकारी कीमत से इस आशय से नहीं की जा सकती है कि गैर-क्षतिकारी कीमत का निर्धारण प्रत्येक आवेदक घरेलू उत्पादक के विभिन्न व्ययों का भारित औसत लेकर किया जाना अपेक्षित है जबकि सामान्य मूल्य का निर्धारण प्रत्येक उत्पादक/निर्यातक के लिए अलग-अलग किया जाना अपेक्षित होता है।
- ण. आवेदक का यह तर्क साधारणतः अस्वीकार किया जाता है कि संबद्ध वस्तु के सामान्य मूल्य की संगणना घरेलू आपूर्तिकर्ताओं की ओर कोरिया आरपी में पीएक्स-13 की आयात कीमत के आधार पर की जानी चाहिए। इस तरह के अधिगम की संपूर्णता को निम्नलिखित आधार पर नामंजूर किया जाता है।
 - (i) प्रथमतः, यह तर्क दिया गया है कि यह सीमाशुल्क प्रशुल्क अधिनियम की धारा 9क(6क) के विपरीत है जो प्राधिकारी को पाटन के मार्जिन का निर्धारण निर्यात या उत्पादक द्वारा अनुरक्षित रिकार्डों और उनके द्वारा प्रदान कराई गई सूचना के आधार पर निर्धारित सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के आधार पर करने का दायित्व सौंपते हैं। अतः, यह तर्क दिया जाता है कि सामान्य मूल्य का निर्धारण उस वस्तु के निर्यातकों/उत्पादकों के रिकार्डों के आधार पर किया जाना चाहिए और इसका उस देश में आयातित वस्तुओं से कोई संदर्भ नहीं होना चाहिए। इसी सिद्धांत का अनुप्रयोग कुम्हो पेट्रोकेमिकल्स कंपनी लिमिटेड द्वारा प्रदान कराई गई उत्पादन लागत पर भी किया जाना चाहिए।
 - (ii) द्वितीयतः, यह प्रस्तुत किया जाता है कि यदि सामान्य मूल्य के लिए आयात कीमत पर विचार किया जाता है तो इसके परिणामस्वरूप एक अजीब सी स्थिति उत्पन्न हो जाएगी जिसमें प्राधिकारी को पाटनरोधी नियमावली में संगत संशोधन

करने के अतिरिक्त, निर्यातक प्रश्नावली प्ररूप में संशोधन करना अपेक्षित होगा और इसके अतिरिक्त उसे प्रत्येक निर्यातक से अपने आंकड़ों के अलावा, संबंधित देश में समान उत्पाद की आयात मात्रा एवं मूल्य से संबंधित आंकड़े प्रदान कराने का अनुरोध करना अपेक्षित होगा। चूंकि ये निर्यातक/उत्पादक ऐसे आंकड़े प्रदान कराने में अक्षम होंगे इसलिए प्राधिकारी उनको असहयोगकर्ता के रूप में घोषित करने की स्थिति में होंगे। इस तरह के सत्यापित न किए गए आंकड़ों पर भरोसा करना भी अत्यधिक जोखिमपूर्ण होगा क्योंकि (i) यह ज्ञात नहीं है कि अंगीकार किया गया मूल्य इस लेनदेन के लिए मुख्य विचार था और (ii) निर्यात के देश (यूएसए, ईयू आदि) से कोरियो आरपी के भाड़ा सहित अन्य कारकों का विनियोजन किस तरह किया गया है।

- ण. इसके अतिरिक्त, यह प्रस्तुत किया जाता है कि निर्यातक द्वारा प्रकटन की गई 4एडीपीए की अधिप्रापण कीमत को प्राधिकारी द्वारा नामंजूर नहीं किया जा सकता है इसका कारण गैर-स्वीरण से संपूर्ण विश्व में पाटनरोधी जांच का सामना कर रहे भारतीय निर्यातकों के लिए यह एक खतरनाक पूर्वोदाहरण होगा। यदि अधिप्रापण कीमत की अस्वीकृति को प्रभावी बनाया जाता है तो जहां कहीं कच्चे माल के कुछ भाग का अधिप्रापण गैर-बाजार अर्थव्यवस्था से किया गया है वहां भारतीय निर्यातकों की उत्पादन लागत को भी नामंजूर किया जा सकता है। उदाहरण के लिए भारत में कारों का विनिर्माता - निर्यातक एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश से इंजिन, स्टीयनिंग नकल्स, फ्रंट एक्सेल बीम, स्टील व्हील्स और टायरों का आयात कर सकता है और उन्हें भारत में उत्पादित अन्य पुर्जों के साथ कार में असेम्बल करता है और फिर इस तरह तैयार कार को कई अन्य देशों को निर्यात करता है। ऐसी स्थिति में, अन्य देशों में भारत से कारों के पाटन की जांच करने वाले जांच अधिकारी ऐसे निर्णय का उदधरण दे सकते हैं और भारतीय निर्यातक द्वारा यथा खुलासाकृत कारों की उत्पादन लागत को केवल इस कारण से नामंजूर कर सकते हैं कि इनपुट्स/कारों के पुर्जों की खरीद गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश से की गई है।
- त. यह भी तर्क दिया जाता है कि प्राधिकारी गैर-बाजार अर्थव्यवस्था पर लागू प्रावधानों को अनुपूरक नहीं कर सकते हैं और उस निर्यातक के लिए प्रयोग नहीं कर सकते हैं जो बाजार अर्थव्यवस्था देश अर्थात् कोरिया आरपी में आधारित है।
- थ. इसके अतिरिक्त यह प्रस्तुत किया जाता है कि आवेदक का यह दावा गलत एवं असंगत है कि आईपी अतिलंघन के संबंध में ओहियो और दक्षिण कोरिया के न्यायालयों में "विधिक मामला" चल रहा है क्योंकि 4एडीपीए और 4एडीपीए के अवकलजों का उत्पादन करने में अंतर्ग्रस्त प्रक्रिया के संबंध में पेटेंट का दावा किया गया है। विचाराधीन उत्पाद पीएक्स-13 (6पीपीडी) है न कि 4एडीपीए। द्वितीयतः, यूएस इंटरनेशनल ट्रेड कमीशन ने वर्ष 2006 में यह नियम बनाया कि कुम्हों फ्लेक्सिस अमेरिका एलपी (शिकायतकर्ता) के पेटेंट का अतिलंघन नहीं करता है। कुम्हों के विरुद्ध प्रारंभ किए गए अन्य दावों तथा ओहियो के जिला न्यायालय में शुरू की गई कार्रवाई को भी नामंजूर कर दिया गया।

घरेलू उद्योग के विचार

29. घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित प्रस्तुतिकरण किए गए हैं :

- क. सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए चीन का उत्पादकों की लागत और कीमत पर भरोसा नहीं किया जा सकता है और उसे गैर-बाजार अर्थव्यवस्था में प्रचालन करने वाले के रूप में माना जाना चाहिए।
- ख. चीन के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण बाजार अर्थव्यवस्था तृतीय देश में कीमत या विनिर्मित मूल्य के आधार पर इस कारण से नहीं किया जा सकता है कि संगत सूचना सार्वजनिक रूप से उपलब्ध नहीं है। याचिकाकर्ता ने चीन में सामान्य मूल्य का निर्धारण भारत में उत्पादन लागत का विधिवत समायोजन करके किया है।
- ग. 6पीपीडी के संबंध में कोरिया आरपी के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण आयातित उत्पाद कीमत और घरेलू आपूर्तिकर्ता की कीमत के भारित औसत के आधार पर किया जाना चाहिए। केवल कोरिया कुम्हों के आंकड़ों के आधार पर निर्धारित सामान्य मूल्य अत्यधिक विकृतिकारी होगा। उत्पादन लागत से संबंधित आंकड़े यह स्थापित नहीं करते हैं कि सामान्य मूल्य, पूरी तरह से, संबंधित विनिर्माता के घरेलू बिक्री संव्यवहारों पर आधारित हो।
- घ. केकेपीसी का पिछली जांच का प्रश्नावली प्रत्युत्तर यह दर्शाता है कि घरेलू बिक्री में वर्षों से गिरावट आई है और केकेपीसी को चीन के निर्यातों में भी कमी आई है जबकि शेष विश्व को इसके निर्यातों में वृद्धि हुई है और इस कंपनी के पास अभी भी पर्याप्त अप्रयुक्त क्षमता है। यह तथ्य इसकी वर्ष 2009 की वार्षिक रिपोर्ट से स्पष्ट है। कंपनी ने कच्चे माल के आपूर्तिकर्ताओं के साथ इसके संबंध के कारण चीन की बाजार में अपने निर्यातों को बढ़ाने की अपनी अक्षमता वञ्चक की है।
- ङ. केकेपीसी को, 1 डालर से अधिक कीमत अंतर होने के बावजूद, अपनी घरेलू बिक्री में 4-5 मिलियन डालर और उत्पाद में 15 मिलियन डालर के राजस्व में हानि हो रही है। यह स्पष्टतः दर्शाता है कि केकेपीसी को मध्यवर्ती कुछ विशेष व्यवस्था के तहत प्रदान कराई जा रही है और केकेपीसी अपनी कीमतें प्रचलित बाजार कीमतों के अनुरूप निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र नहीं है। केकेपीसी द्वारा निर्धारित कम कीमतें चीन के एक ऐसे उत्पादक की महात्वाकांक्षी का परिणाम हैं जो विश्व में इस उत्पाद का एकमात्र वैश्विक उत्पादक बनना चाहता है।
- च. साइनोर्गकेम को उपलब्ध और गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के लाभ केकेपीसी को अंतरित किए जा रहे हैं।
- छ. केकेपीसी की उत्पादन लागत को नहीं लिया जा सकता है क्योंकि लागत के ऐसे तत्व संगत रूप से, उत्पादक पर ध्यान दिए बिना, विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन और बिक्री से जुड़ी लागत को तर्कसंगत रूप से अभिव्यक्त करेंगे। पिछले मामले में निर्दिष्ट प्राधिकारी में पहले ही यह धारित किया है कि सिनोर्गकेम बाजार अर्थव्यवस्था की शर्तों पर प्रचालन नहीं कर रहा है।

- ज. कोरिया के सामान्य मूल्य का निर्धारण कोरिया में पीएक्स-13 की आयात कीमतों पर विचार करते हुए किया गया है।
- झ. निर्यात कीमत का निर्धारण प्रत्येक रबड़ रसायन की संबंधित संबद्ध देशों से भारत औसत आयात कीमत के रूप में किया गया है। समुद्री भाड़ा, सामुद्रिक बीमा, पत्तन व्यय, अंतर्देशीय भाड़ा और कमीशन के समायोजन पर भी विचार किया गया है।
- ञ. पाटन मार्जिन न्यूनतम से अधिक है और यह संबद्ध देशों से प्रत्येक रबड़ रसायन के लिए बहुत अधिक है।
- ट. सालुशिया इंक, सिनोर्गकेम और केकेपीसी के बीच करार इस तथ्य से सिद्ध हो जाता है कि (क) विगत में, सिनोर्गकेम को मुक्त बाजार पहुंच से निवारित किया गया और इसलिए केकेपीसी को उन बाजारों में बिक्री के लिए प्राक्सी के रूप में प्रयोग किया गया, और (ख) अब चूंकि केकेपीसी और सिनोर्गकेम दोनों को वैश्विक रूप से बिक्री करने की अनुमति मिल गई है इसलिए यह दोनों संयुक्त रूप से इस उत्पाद के वैश्विक रूप से अन्य सभी उत्पादकों को पिछाड़ देना चाहते हैं।
- ठ. इस संबंध में कि बड़े खरीदादारों को न्यूनतर कीमतें प्रदान की जा रही हैं, वर्तमान स्थिति यह है कि कम कीमत उच्चतर मात्रा के कारण नहीं दी जा रही है बल्कि यह सामान्य बाजार की स्पष्ट गैर-मौजूदगी के कारण है।
- ड. घरेलू उद्योग का कोरिया आरपी द्वारा 4एडीपीए की अधिप्रापण लागत की नामंजूरी के लिए अनुरोध इस तथ्य पर आधारित नहीं है कि कोरिया आरपी एक बाजार अर्थव्यवस्था देश नहीं है, बल्कि यह प्राधिकारी के दो दायित्वों पर आधारित है अर्थात् (क) ऐसे रिकार्ड निर्यातक देश के सामान्यतः स्वीकृत लेखाकरण सिद्धांतों के अनुरूप होने चाहिए और (ख) इन रिकार्डों में विचाराधीन उत्पाद की उत्पादन और बिक्री से जुड़ी लागत तर्कसंगत रूप से प्रतिबिम्बित होनी चाहिए। मुद्दा यह नहीं है कि क्या 4एडीपीए का प्रापण पाटित कीमतों पर किया जा रहा था/है। बल्कि मुद्दा यह है कि क्या रिकार्डों के अनुरूप लागत इस विचाराधीन उत्पाद की बिक्री और उत्पादन से जुड़ी लागत को तर्कसंगत रूप से प्रतिबिम्बित करती है।
- ।. यह दावा कि यदि प्राधिकारी 4एडीपीए के लिए अधिप्रापण कीमत को नामंजूर कर देते हैं तो इसे किसी तृतीय देश का चयन करना चाहिए, किसी विधिक अपेक्षा द्वारा समर्थित नहीं है। याचिकाकर्ता ने अधिप्रापण कीमत के अननुमोदन की गैर-बाजार अर्थव्यवस्था पर मांग नहीं की है और इसलिए तृतीय देश का चयन करने का प्रश्न नहीं उठता है।
- ण. कोरिया के लिए सामान्य मूल्य का परिकलन करने के संबंध में केकेपीसी ने चुनिंदा रूप से धारा 9क(6)क का उल्लेख किया है और बड़ी आसानी से धारा 9क(1)(ग) की अनदेखी कर दी है जो प्राधिकारी को निर्यातक देश में खपत कीमत पर विचार करने के लिए अधिकार प्रदान कराता है।
- त. इस तर्क के संबंध में कि निर्यातकों से यह कहने के लिए निर्यातक प्रश्नावली में संशोधन किया जाना चाहिए कि वे देश में समान उत्पाद की आयात और मूल्य से संबंधित आंकड़े प्रदान करें, और निर्यातकों को संगत सूचना प्रदान करने या घरेलू उद्योग द्वारा प्रदान कराई गई सूचना पर टिप्पणी करने से कोई भी बंचित नहीं करता है।
- थ. इस तर्क के संबंध में कि संबद्ध देश में अप्रमाणित आंकड़ों पर भरोसा करना जोखिमपूर्ण है, याचिकाकर्ता को आंकड़ों का सत्यापन कराने में कोई आपत्ति नहीं है और उसने सार्वजनिक

- रूप से उपलब्ध सूचना को अंगीकार किया गया है जिसे निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा सत्यापित कराया जा सकता है। जहां तक भाड़े का संबंध है उसे जोड़ा जाना अपेक्षित होता है क्योंकि प्राधिकारी को निर्यातक देश में खपत कीमत का निर्धारण करना अपेक्षित होता है।
- द. इस तर्क के संबंध में कि विशिष्ट बाजार परिस्थितियों के कारण व्यापार के सामान्य अनुक्रम में जब निर्यातक द्वारा दिए गए आंकड़े खपत कीमत का निर्धारण करने में सहायक नहीं होते हैं तो सामान्य मूल्य का परिकलन भारत औसत के रूप में नहीं किया जा सकता है जैसाकि गैर-क्षतिकारी कीमत में किया जाता है, इसलिए प्राधिकारी विधि के अंतर्गत उपबंधित अन्य तरीकों को अपनाने के लिए पूर्णतया स्वतंत्र हैं।
- ध. जियांग्यु कैमिकल्स द्वारा किए गए निर्यातों को सही कीमत का निर्धारण करने के लिए नहीं अपनाया जा सकता है क्योंकि कंपनी को चीन के एक न्यायालय द्वारा आपराधिक रूप से प्रौद्योगिकी को चुराने के लिए अभ्यारोपित किया गया है।
- न. प्राधिकारी को केकेपीसी के लागत रिकार्डों में 4एडीपीए से पीएक्स-13 (6पीपीडी) का उत्पादन करने की उत्पादन लागत का निर्धारण करते समय विभिन्न कच्चे माल के प्रयोग मानकों पर विचार करना चाहिए।
- प. कोरिया कुम्हो ग्राही रूप से हाइड्रोजन का उत्पादन कर रहा है और इसलिए इस वस्तु का उत्पादन और उसकी बिक्री से जुड़ी लागत का तर्कसंगत रूप से प्रतिबिम्बित करने के लिए हाइड्रोजन का सही-सही मूल्यांकन करना महत्वपूर्ण है।
- फ. 4एडीपीए से 6पीपीडी में परिवर्तन के लिए एक आदर्श मेटल केटालिस्ट की जरूरत होती है। इसकी लागत को भी 6पीपीडी की लागत में उचित रूप से प्रतिबिम्बित किया जाना चाहिए।
- ब. कोरिया कुम्हो इस उत्पाद का उत्पादन करने के लिए अपनी स्वयं की उपयोगी वस्तुओं का उत्पादन करता है क्योंकि इसका एक बहु उत्पाद विनिर्माण सेट-अप है। इसलिए, प्राधिकारी को इन उपयोगी वस्तुओं के यथार्थ मूल्यांकन पर विचार करना चाहिए और उसकी तुलना एनओसीआईएल द्वारा प्रदान किए गए तकनीकी प्रमाणपत्र से की जानी चाहिए।
- भ. घरेलू एवं निर्यात बाजार में पैकिंग लागत में भारी अंतर को देखते हुए प्राधिकारी को यह निर्धारित करने के लिए प्रत्युत्तर की जांच करनी चाहिए कि क्या निर्यातक ने इस पैकिंग लागत में अंतर को रिपोर्ट किया है।
- म. यह माना जाता है कि कोरिया कुम्हो भारत में अपने एजेंट को 4 प्रतिशत कमीशन देता है। प्राधिकारी इस करार का सत्यापन कर सकते हैं। भारतीय एजेंट केकेपीसी के साथ विभिन्न उत्पादों का लेनदेन कर रहा है। इसलिए 6 पीपीडी के व्यवसाय में कमीशन में 1 प्रतिशत या 2 प्रतिशत की कमी को अन्य व्यवसायों से प्राप्त होने वाली कमीशन के साथ समायोजन किया जा सकता है।
- य. कोरिया कुम्हो विभिन्न भारतीय ग्राहकों को 120-180 दिनों का क्रेडिट देता है। घरेलू बाजार में महत्वपूर्ण रूप से न्यून होना चाहिए। घरेलू और निर्यात बाजार में क्रेडिट की यह लागत समान होने के कारण निर्यातक को भारत में निर्यातों में उच्चतर क्रेडिट अवधि प्रदान करने के लिए भारी व्यय करना पड़ता होगा।
- कक. केवल यह तथ्य कि इस क्रेडिट की पेशकश कोरिया कुम्हो द्वारा प्रदत्त शुल्क के संबंध में कोरिया सरकार द्वारा की जाती है, उसके लिए क्रेडिट की अनुमति देने के लिए पर्याप्त है। वास्तव में कोरियाई सरकार किसी निर्यातक को, आयातों की वास्तविक खपत/इनपुट शुल्क

से बिना किसी लेनदेन के एफओबी के निश्चित प्रतिशत का अनुप्रयोग करके शुल्क प्रतिअदायगी लाभ प्रदान करती है। बचाए गए शुल्क और खपत किए गए इनपुट के बीच कोई भी संबंध नहीं है।

- खख. लेखाकरण मानदंडों पर विचार करते हुए केकेपीसी को अपना विनिमय घाटा, निर्यात कीमत से समायोजन करने के बजाए "विनिमय घाटा/लाभ" शीर्ष के अंतर्गत बुक करना चाहिए।
- गग. चूंकि पाटनरोधी जांच उत्पाद विशिष्ट जांच होती है, और इसके अतिरिक्त, चूंकि ब्याज आय अन्य प्रचालनों से सृजित होती है जबकि ब्याज व्यय उत्पादन क्रियाकलापों से सृजित होते हैं, इसलिए अन्य प्रचालनों से ब्याज अर्जन को ब्याज व्ययों से घटाया नहीं जा सकता है।
- घघ. चूंकि केकेपीसी का क्षमता उपयोग न्यून है, इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि उत्पादन लागत का निर्धारण वास्तविक उत्पादन के स्तर पर ही किया जाए।

प्राधिकारी द्वारा जांच

30. प्राधिकारी ने संबद्ध वस्तु का पाटन करने के संबंध में विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए प्रस्तुतिकरणों और उठाए गए मुद्दों की निम्नवत जांच की है :-

- क. इस तर्क के संबंध में कि जो क्रेता वस्तु की भारी मात्रा में खरीद करता है, उसे विशेष कीमत की पेशकश की जाती है, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि यह उन्हें, यह देखने के लिए उनके संव्यवहारों की जांच करने से प्रतिवारित नहीं करती है कि क्या उनका निर्माण व्यापार के सामान्य अनुक्रम में किया गया है और वे बाजार कीमतों को प्रतिबिम्बित करते हैं।
- ख. एक प्रतिवादी पक्षकार ने यह तर्क दिया कि निर्यातक द्वारा यथा प्राविधानित 4एडीपीए की अधिप्रापण लागत की उपेक्षा नहीं की जा सकती है क्योंकि कोरिया आरपी एक बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश है और यह कि इस तरह की कार्यप्रणाली का भारतीय निर्यातकों का अन्य देशों के जांचकर्ता प्राधिकारियों के समक्ष उनके व्यवहार पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि कोरिया आरपी एक बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश है और वर्तमान जांच में उसके साथ वैसा ही व्यवहार किया गया है। कोरिया आरपी के उत्पादकों और निर्यातकों को गैर-बाजार आर्थिक हालातों के प्रचालन करते हुए नहीं माना गया है। तथापि यह प्राधिकारी को यह जांच करने से प्रतिवारित नहीं करता है कि क्या 4एडीपीए की अधिप्रापण लागत जैसी लागत व्यापार के सामान्य अनुक्रम की लागत है।
- ग. इस तर्क के संबंध में कि क्या कोरिया आरपी में 4एडीपीए की आयात कीमतें पाटित कीमतें हैं, प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच के दायरे के बाहर की बात है। तथापि, प्राधिकारी को यह विचार करना होता है कि क्या निर्यातक द्वारा प्रदान कराए गए रिकार्ड (क) निर्यातक देश के सामान्यतः स्वीकृत लेखाकरण सिद्धांतों के अनुरूप हैं, और (ख) वे विचाराधीन उत्पाद की उत्पादन और बिक्री से जुड़ी लागत को प्रतिबिम्बित करते हैं। प्राधिकारी यह निर्धारित करते हैं कि केकेपीसी द्वारा 4एडीपीए के लिए रिपोर्ट की गई लागत ऐसी नहीं थी

- जो अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के सामान्य अनुक्रम में विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन और बिक्री से जुड़ी लागत को तर्कसंगत रूप से प्रतिबिम्बित करती हो।
- घ. केकेपीसी ने तर्क दिया कि प्राधिकारी केकेपीसी द्वारा 4एडीपीए की अधिप्रापण लागत को नामंजूर कर देते हैं, उन्हें विधि के अनुसार तृतीय देश का चयन करने के लिए विहित न्यूनतम जरूरतों का अनुपालन करना चाहिए। प्राधिकारी नोट करते हैं कि चूंकि वह केकेपीसी को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था हालात में प्रचालन करते हुए के रूप में नहीं मानते हैं इसलिए यह तर्क असंगत है।
- ङ. इस मुद्दे के संबंध में कि निर्यातक को अपने देश में समान उत्पाद के आयातों से संबंधित आंकड़े प्रदान कराना अपेक्षित है, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि इस तर्क से यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता है कि प्राधिकारी उस उपलब्ध सूचना की मांग नहीं कर सकते हैं जो इस विचाराधीन उत्पाद की बिक्री और उत्पादन से जुड़ी लागत को तर्कसंगत रूप से प्रतिबिम्बित करती हो।
- च. इस तर्क के संबंध में कोरिया आरपी के लिए केआईटीए के आयात आंकड़े प्रमाणित नहीं हैं, प्राधिकारी मानते हैं कि वह सार्वजनिक से उपलब्ध आंकड़ों का जांच करने के पश्चात, प्रयोग कर सकते हैं, जब तक कि कोई हितबद्ध पक्षकार यह साक्ष्य प्रदान नहीं कर देता है कि वे आंकड़े भरोसा किए जाने योग्य नहीं हैं।
- छ. प्रतिवादी पक्षकार ने यह प्रत्युत्तर दिया है कि यदि केकेपीसी घाटी दरों पर 4एडीपीए का प्रापण करने और भारत में इस उत्पाद का पाटन करने, जैसाकि आरोप लगाया गया है, से इसे बिक्री अथवा इस उत्पाद के संबंध में राजस्व नहीं खोना होगा। वर्तमान मामले में प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य का निर्धारण, गैर क्षतिकारी कीमत का निर्धारण करने के लिए भारित औसत सिद्धांत के आधार पर किया है।
- ज. जहां तक इस तर्क का संबंध है कि संबद्ध वस्तु के सामान्य मूल्य की संगणना घरेलू प्रदायकों की कीमत और कोरिया आरपी में पीएक्स-13 (6पीपीडी) की आयात कीमत के भारित औसत के आधार पर की जानी चाहिए, प्राधिकारी मानते हैं कि विधि के अंतर्गत उसकी अनुमति नहीं है।

चीन के उत्पादकों/निर्यातकों के बाजार अर्थव्यवस्था दावे की जांच

31. प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीन जन गण को अन्य डब्ल्यूटीए सदस्यों द्वारा पाटनरोधी जांचों में गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश के रूप में माना जाता है। पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 8.2 के अनुसार चीन जन गण को, नियमों के अंतर्गत किसी निर्यातक देश या व्यक्तिगत निर्यातक द्वारा पूर्वावधारणा के खंडन के अध्वधीन, गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश के रूप में माने जाने का प्रस्ताव किया गया था।

32. पाटनरोधी नियमावली, यथासंशोधित के अनुबंध-1 के पैराग्राफ 8 के अनुसार गैर बाजार अर्थव्यवस्था की धारणा का खंडन किया जा सकता है, यदि चीन के निर्यातक पैराग्राफ 8 के उप-पैराग्राफ (3) में विनिर्दिष्ट मानदंडों के आधार पर्याप्त सूचना एवं साक्ष्य प्रदान कराते हैं और उसके विपरीत सिद्ध करते हैं। चीन जन गण के संबद्ध वस्तु के सहयोगकर्ता निर्यातकों/उत्पादकों से बाजार अर्थव्यवस्था दर्जा (एमईटी) प्रश्नावली के प्रत्युत्तर में पैराग्राफ 8 के उप-पैराग्राफ (3) में यथा उल्लिखित आवश्यक पर्याप्त

सूचना/साक्ष्य प्रदान कराने की अपेक्षा की जाती है ताकि निर्दिष्ट प्राधिकारी निम्नलिखित प्रक्रिया पर विचार कर सकें कि क्या :-

- क. चीन जन. गण. में कीमत, लागत और कच्चे माल सहित इनपुट, प्रौद्योगिकी की लागत, आउट, बिक्री और इस संबंध में राज्य हस्तक्षेप के बिना, आपूर्ति एवं मांग को प्रतिबिम्बित करने वाले बाजार संकेतकों में किए गए निवेश तथा यह कि क्या बड़े इनपुटों की लागत पर्याप्त रूप से बाजार मूल्यों को प्रतिबिम्बित करती है, पूर्ववर्ती गैर-बाजार अर्थव्यवस्था प्रणाली से की गई भारी विकृति के अध्यक्षीन इन फर्मों की उत्पादन लागत और वित्तीय स्थिति खासकर परिसंपत्तियों के अवक्षयण, अन्य बट्टे खाते में डाले गए, विनिमय प्रणाली और ऋणों की क्षतिपूर्ति द्वारा संदाय के संबंध में संबंधित फर्मों के निर्णय।
- ख. ऐसी फर्में दिवालियापन और संपत्ति विधियों, जो इन फर्मों के प्रचालन के लिए निश्चित एवं स्थायित्व की विधिक गारंटी प्रदान करती है, के अध्यक्षीन होती है।
- ग. विनिमय दर परिवर्तन बाजार दरों पर किया जाता है।

33. यह नोट किया जाता है कि चीन जन.गण. के किसी उत्पादक और निर्यातक ने बाजार अर्थव्यवस्था उपचार दिए जाने के लिए अनुरोध नहीं किया है और व्यक्तिगत सामान्य मूल्य निर्धारण के लिए नहीं कहा है।

सामान्य मूल्य का निर्धारण

चीन जन. गण. के लिए सामान्य मूल्य

34. चीन जन. गण. एक गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश है नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 में यह उपबंध किया गया है कि :

"गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों से आयात के संबंध में सामान्य मूल्य का निर्धारण तृतीय देश की बाजार अर्थव्यवस्था में निर्मित मूल्य या कीमत या ऐसे तृतीय देश से भारत सहित अन्य देशों के लिए कीमत के आधार पर अथवा जहां यह संभव नहीं है वहां किसी अन्य न्यायोचित आधार पर, जिसमें समान उत्पाद के लिए भारत में वास्तविक प्रदत्त या देय कीमत जिसका तर्कसंगत लाभ मार्जिन शामिल करने के लिए यथावश्यक समायोजन किया गया हो, भी शामिल हो, किया जा सकता है। निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा संबंधित देश के विकास का स्तर तथा प्रश्नाधीन उत्पाद को ध्यान में रखते हुए एक उपयुक्त बाजार अर्थव्यवस्थायुक्त तृतीय देश का चयन किया जाना चाहिए और चयन के समय उपलब्ध कराई गई किसी विश्वसनीय जानकारी को उचित रूप से ध्यान में रखना चाहिए। किसी अन्य बाजार अर्थव्यवस्था के संबंध में किसी समान मामले में की गई जांच, यदि उपयुक्त हो, की लेखाओं पर समय-सीमा के अंतर्गत विचार किया जाना चाहिए। उपर्युक्त बाजार अर्थव्यवस्था तृतीय देश के चयन की जानकारी जांच के पक्षकारों को अविलंब दी जानी चाहिए और उन्हें अपनी टिप्पणियां देने के लिए उपयुक्त समयावधि दी जानी चाहिए।"

35. चीन जन गण से भारत में आयातित संबद्ध वस्तु के लिए सामान्य मूल्य निम्नलिखित सिद्धांतों पर विनिर्मित किया गया है : प्रमुख कच्चे माल के लिए घरेलू उद्योग के इष्टतम खपत मानकों पर, पीएक्स-13 (6पीपीडी) के कच्चे माल के अपवाद सहित विचार किया गया है। पीएक्स-13 (6पीपीडी) के मामले में,

सहयोगकर्ता निर्यातक के मानकों को मूल जांच के समय अपनाई गई क्रियाविधि के अनुरूप अपनाया गया है। इसके अतिरिक्त, प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीन जनगण के किसी भी प्रतिवादी उत्पादक एवं निर्यातक ने बाजार अर्थव्यवस्था उपचार के लिए अनुरोध नहीं किया है और न ही उनके लिए व्यक्तिगत सामान्य मूल्य निर्धारण की मांग की है। तथापि, चूंकि प्राधिकारी द्वारा चीन को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश के रूप में माना जाता है इसलिए प्रमुख कच्चे माल की कीमत का निर्धारण करने के लिए विभिन्न उत्पादों द्वारा उपभोज किए गए कच्चे माल की अंतर्राष्ट्रीय कीमतों को अपनाया गया है। अन्य कच्चे माल की लागत को घरेलू उद्योग के अनुरूप माना गया है। परिवर्तन लागत, ब्याज, एसजीए आदि पर विचार घरेलू उद्योग के लिए अनुमत स्तर पर किया गया है। ब्याज का अपवर्जन करते हुए बिक्री के लागत की 5 प्रतिशत तर्कसंगत लाभ की अनुमति दी गई है। चीन के लिए निर्धारित विनिर्मित सामान्य मूल्य निम्नलिखित हैं :

उत्पाद	चीन जन.गण. के लिए विनिर्मित सामान्य मूल्य (अमरीकी डालर/किग्रा)
पीएक्स-13 (6पीपीडी)	***
टी डी क्यू	***
पी वी आई	***
टी एम टी	***
एम बी टी	***
सी बी एस	***

निर्यात कीमत का निर्धारण

चीन जन. गण. के सहयोगकर्ता निर्यातकों की निर्यात कीमत

मैसर्स शान्दांग सिनोर्गकेम टेक्नालोजी कंपनी लिमिटेड चीन जनगण मैसर्स जियांग्सु सिनोर्गकेम टेक्नालोजी कंपनी लिमिटेड, चीन जनगण

36. भारत को भारित औसत निर्यात कीमत (सी आई एफ) का निर्धारण निर्यातक द्वारा निर्यातक प्रश्नावली प्रत्युत्तर के परिशिष्ट-2 और 3क में निर्यातक द्वारा प्रदान कराए गए आंकड़ों के अनुरूप निर्धारित की जाती है। समुद्रपारीय भाड़ा, समुद्रपारीय बीमा, अंतरदेशीय भाड़ा, क्रेडिट लागत, बैंक प्रभार, हैंडलिंग और निर्यात पैकिंग के संबंध में कीमत समायोजन का दावा किया है। प्राधिकारी ने निर्यातक द्वारा स्वीकृत समायोजन को स्वीकार किया है। तदनुसार, फैक्टरी बाह्य स्तर पर निर्यात कीमत का निर्धारण किया गया जैसा कि निम्नलिखित पाटन मार्जिन तालिका में दिया हुआ है।

मैसर्स सिनोर्गकेम टाइ आन चीन जनगण मैसर्स जियांग्सु सिनोर्गकेम टेक्नालोजी कंपनी लिमिटेड, चीन जनगण के माध्यम से

37. भारत को भारत औसत निर्यात कीमत (सी आई एफ) का निर्धारण निर्यातक द्वारा निर्यातक प्रश्नावली प्रत्युत्तर के परिशिष्ट-2 और 3क में प्रदान कराए गए आंकड़ों के अनुसार किया गया। समुद्रपारीय भाड़ा, समुद्रपारीय बीमा, अंतरदेशीय भाड़ा, क्रेडिट लागत, बैंक प्रभार, प्रहस्तन और निर्यात पैकिंग के संबंध में कीमत समायोजन का दावा किया है। प्राधिकारी ने निर्यातकों द्वारा दावाकृत समायोजन को स्वीकार कर लिया है। तदनुसार, फैक्टरी बाह्य स्तर पर निर्यात कीमत का निर्धारण अधोलिखित पाटन मार्जिन तालिका में दिए गए के अनुसार किया गया है।

चीन जन.गण के असहयोगकर्ता निर्यातकों की निर्यात कीमत

38. प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीन जन.गण के किसी अन्य निर्यातक ने निर्यातक प्रश्नावली प्रत्युत्तर प्रस्तुत नहीं किया है। अतः, प्राधिकारी ने असहयोगकर्ता निर्यातकों के लिए पीएक्स-13 (6पीपीडी) के लिए सहयोगकर्ता निर्यातकों की न्यूनतम निर्यात कीमत को लिया गया है। जहां तक टीडीक्यू, टीएमटी, पीवीआई, सीबीएस और एमबीटी का संबंध है, कोई प्रत्युत्तर न होने के कारण, निर्यात कीमत का परिकलन करने के लिए भारत में औसत निर्यात कीमत पर विचार किया गया है। फैक्टरी बाह्य स्तर पर निर्यात कीमत पर पहुंचने के लिए चीन जन. गण से सहयोगकर्ता निर्यातकों के संबंध में अनुमत के अनुरूप समायोजन की अनुमति दी गई है। यह तरीका अपनाकर, चीन जन. गण के असहयोगकर्ता निर्यातकों के संबंध में फैक्टरी बाह्य स्तर पर निर्यात कीमत का निर्धारण प्राधिकारी द्वारा निम्नलिखित तालिका के अनुसार किया गया है :

उत्पाद	चीन जन.गण की निवल निर्यात कीमत (यूएस डालर/किग्रा)
पीएक्स-13 (6पीपीडी)	***
टी डी क्यू	***
पी डी क्यू	***
टी एम टी	***
एम बी टी	***
सी बी एस	***

कोरिया आरपी के लिए सामान्य मूल्य

कुम्हो पेट्रोकेमिकल्स कंपनी लिमिटेड (केकेपीसी)

39. मूल जांच में केकेपीसी के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के संबंध में प्राधिकारी ने दिनांक 01 अक्टूबर, 2008 के अंतिम जांच परिणाम में निम्नलिखित रिकार्ड किया है :-

"58. पाटनरोधी नियमावली के नियम 10 में उल्लिखित अनुबंध-1 के पैरा 1 और धारा 9क (1) (ग) (i) में यह अपेक्षा की जाती है कि निर्यातक राष्ट्र में खतप के आशय से समान वस्तु के लिए व्यापार के सामान्य अनुक्रम में तुलनीय कीमत का सुनिश्चयन करने के उद्देश्य से संगत

अवधि के लिए रिकार्डों में प्रतिबिम्बित घरेलू बिक्रियों की उनमें दर्शायी गई कीमत को सामान्यतः स्वीकृत किया जाएगा जब रिकार्डों में उक्त मद के उत्पादन और बिक्री से संबद्ध लागत को तर्कसंगत रूप से प्रदर्शित किया गया हो। प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं और सत्यापन के दौरान यह नोटिस में आया कि 6पीपीडी का विनिर्माण करने के लिए अपेक्षित प्राथमिक कच्चा माल 4एडीपीए को कोरिया कुम्हों द्वारा चीन के एक उत्पादक सिनोर्गकेम से लगभग *** अमरीकी डालर प्रतिक्रिया की कीमत से प्राप्त किया गया था, जो उनके द्वारा भारत को प्रदाय की जा रही कीमतों से *** अमरीकी डालर प्रतिक्रिया कम थी। इसके अतिरिक्त, इसी कच्चे माल को भारत में बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश से मंगाने पर इसकी आयात कीमत 3.09 अमरीकी डालर प्रतिक्रिया पाई गई। प्रासंगिक रूप से ऐसा प्रतीत होती है कि सिनोर्गकेम वर्तमान जांच में चीन जनगण का एक प्रतिभागिता करने वाला निर्यातकों है और प्राधिकारी द्वारा उस उक्त निर्यातक के सत्यापन से यह व्यक्त हुआ कि वे गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के अंतर्गत प्रचालन कर रहे हैं।

59. इसलिए, प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि ऐसी स्थिति में जहां 6पीपीडी का उत्पादन करने में प्रयोग किए जाने वाले प्रमुख इनपुट अर्थात् 4एडीपीए को एक गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाली कंपनी से प्राप्त किया जाता था। इसलिए 4एडीपीए के लिए कुम्हो पेट्रोकेमिकल्स की वास्तविक खरीद कीमत का प्रयोग, 6पीपीडी के उत्पादन से जुड़ी लागत को तर्क संगत के रूप से प्रदर्शित नहीं करती है।

60. उपर्युक्त के मद्देनजर प्राधिकारी ने उत्पादन लागत और बिक्री लागत का समायोजन बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश से 4एडीपीए की अंतर्राष्ट्रीय कीमत और कुम्हो पेट्रोकेमिकल्स की वास्तविक खरीद कीमत के बीच अंतर से किया है। तदनुसार पीएक्स-13 (6पीपीडी) के लिए संशोधित बिक्री लागत *** अमरीकी डालर प्रति किग्रा निर्धारित की गई है। इस समायोजित लागत पर कुम्हो कैमिकल्स द्वारा जांच की अवधि के दौरान की गई घरेलू बिक्री की बिक्री लागत व्यापार के सामान्य अनुक्रम का टेस्ट उत्तीर्ण नहीं हुई है। तदनुसार घरेलू बिक्री समुचित तुलना की अनुमति प्रदान नहीं करती है। इसलिए प्राधिकारी ने कुम्हो पेट्रोकेमिकल्स के लिए सामान्य मूल्य का निर्माण धारा 9क (1)(ग) (ii) में उल्लिखित शर्तों के अनुरूप किया है।

61. इन कारकों को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी ने वर्तमान मामले में सामान्य मूल्य का परिकलन, बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश से 4एडीपीए की अंतर्राष्ट्रीय कीमतों के आधार पर संबद्ध वस्तु की कोरिया आरपी में उत्पादन लागत को ध्यान में रखकर और यथा-दावाकृत एवं यथा सत्यापित अन्य लागत की अनुमति देकर की है। इस तरह निर्धारित की गई बिक्री लागत के संबंध में औसत लाभ मार्जिन पर विचार किया गया है। तदनुसार पीएक्स-13 (6पीपीडी) के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण किया गया है और उसे प्राधिकारी द्वारा *** अमरीकी डालर प्रति किग्रा निर्धारित किया गया है।"

40. मध्यावधि समीक्षा जांच में केकेपीसी के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के संबंध में प्राधिकारी ने अपने दिनांक 5 अगस्त, 2011 के अंतिम जांच परिणाम में निम्नलिखित रिकार्ड किया है :

"28. प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि वर्तमान जांच की परिस्थितियों में मूल जांच के समय की परिस्थितियों से कोई अंतर इसलिए नहीं आया है कि कुम्हो पेट्रोकेमिकल्स ने प्रमुख

अंतर्निविष्टि 4एडीपीए को उसी गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाली कंपनी से प्राप्त करना जारी रखा है और मूल जांच में अंतिम जांच परिणाम जारी करने की तारीख से प्राधिकारी के समक्ष ऐसा कोई तथ्य या साक्ष्य नहीं लाया गया है कि क्या उक्त कंपनी की गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाली स्थिति में कोई परिवर्तन आया है। इसलिए प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि केकेपीसी द्वारा उसी गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाली कंपनी से 4एडीपीए की वास्वतिक खरीद कीमत का प्रयोग पीएक्स-13 (6पीपीडी) की उत्पादन से जुड़ी लागत को तर्कसंगत रूप से परिवर्तित नहीं करती है। इसके अतिरिक्त वर्तमान मध्यावधि समीक्षा की जांच की अवधि के दौरान किसी भी बाजार अर्थव्यवस्था वाले तृतीय देश से भारत के 4एडीपीए के कोई आयात नहीं हुए हैं।

29. चूंकि जांच की अवधि के दौरान इस समीक्षा में 4एडीपीए की अंतर्राष्ट्रीय कीमतों को दर्शाने वाला कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं है इसलिए प्राधिकारी ने 4एडीपीए की उत्पादन लागत का विनिर्माण किया है। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग केवल 4एडीपीए का उत्पादन करती है जो 4एडीपीए से पहले का स्टेज है और प्राधिकारी ने 4एडीपीए की लागत का निर्धारण करने के लिए परम्परागत आधार पर उसी की कीमत को अपनाया है। घरेलू उद्योग की 4एडीपीए की उत्पादन लागत को अपनाते वक्त अंतर्राष्ट्रीय कीमतों पर घरेलू उद्योग के सर्वोत्तम प्रयोग के आधार पर प्रमुख इनपुट लागत, परिवर्तन लागत और घरेलू उद्योग के एसजीए व्ययों तथा तर्कसंगत लाभ पर विचार किया गया है।

30. प्राधिकारी ने पुनः पीएक्स-13 (6पीपीडी) की उत्पादन और बिक्री की लागत का समायोजन 4एडीपीए की विनिर्मित अंतर्राष्ट्रीय कीमत (घरेलू उद्योग के आंकड़ों के आधार पर परिकलित) और इसकी केकेपीसी की वास्तविक क्रय कीमत के बीच अंतर द्वारा किया है। इस तरह विनिर्मित पीएक्स-13 (6पीपीडी) की संशोधित बिक्री लागत को *** अमरीकी डालर प्रति किया निर्धारित किया गया है। बिक्रियों की इस समायोजित लागत पर इस मध्यावधि समीक्षा में जांच की अवधि के दौरान केकेपीसी द्वारा पीएक्स-13 (6पीपीडी) की गई घरेलू बिक्री ओसीटी परीक्षण में असफल हो गई है। उपर्युक्त को देखते हुए प्राधिकारी ने कुम्हो पेट्रोकेमिकल्स के लिए पीएक्स-13 (6पीपीडी) के सामान्य मूल्य का विनिर्माण अधिनियम की धारा 9क(1) (ग) (ii) में उल्लिखित शर्तों के अनुसार किया है जिसका विवरण निम्नलिखित है।

31. प्राधिकारी ने वर्तमान मामले में संबद्ध वस्तु का परिकलन केपीसी के अनुरूप 4एडीपीए के प्रयोग के आधार पर कोरिया आरपी में संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत और उपर्युक्त पैराग्राफ में की गई व्याख्या के आधार पर संगणित कीमत को ध्यान में रखते हुए की है। केकेपीसी की यथा दावाकृत एवं सत्यापित अन्य लागत (अन्य कच्चे माल की लागत, परिवर्तन लागत, एसजीए व्यय आदि) को भी ध्यान में रखा गया है। इसके अतिरिक्त, तर्कसंगत लाभ की अनुमति भी दी गई है। इस तरह संगणित पीएक्स-13 (6पीपीडी) का सामान्य मूल्य *** अमरीकी डालर प्रति किया है।"

41. वर्तमान समीक्षा जांच में केकेपीसी के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के संबंध में प्राधिकारी ने निम्नलिखित निष्कर्ष निकाला है :

- i) वर्तमान निर्णायक समीक्षा जांच की परिस्थितियों में विगत दो जांचों अर्थात मूल जांच और मध्यावधि समीक्षा जांच की परिस्थितियों की तुलना में कोई बड़ा परिवर्तन इस कारण से नहीं

आया है कि कुम्हो पेट्रोकेमिकल्स ने अधिकांश 4एडीपीए को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था कंपनी से प्राप्त करना जारी रखा और वर्तमान निर्णायक समीक्षा जांच में प्राधिकारी के समक्ष ऐसा कोई तथ्य या साक्ष्य नहीं लाया गया है कि उक्त कंपनी के गैर-बाजार अर्थव्यवस्था स्थिति मूल जांच या मध्यावधि समीक्षा जांच में अंतिम जांच परिणाम जारी करने से लेकर अब तक कोई परिवर्तन आया है। वर्तमान समीक्षा में कुम्हो केमिकल्स द्वारा दायर प्रश्नावली प्रत्युत्तर में प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि जांच की अवधि में इस कंपनी द्वारा 4एडीपीए का कुल *** एमटी का आयात हुआ था, जिसमें से कंपनी ने *** एमटी (*** प्रतिशत) का आयात चीन जनगण में उसी सिनोर्गकेम से किया था, जिसे प्राधिकारी द्वारा गैर-बाजार अर्थव्यवस्था देश के रूप में माना गया है और यूरोपियन यूनियन के *** एमटी से केवल *** एमटी (*** प्रतिशत) का आयात किया गया है।

- ii) प्राधिकारी पुनः यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग ने इस निर्णायक समीक्षा जांच में जांच की अवधि के दौरान विश्व को 4एडीपीए का निर्यात करने के लिए चीन के सीमाशुल्क निर्यात आंकड़ों को प्रस्तुत किया है। आंकड़े दर्शाते हैं कि चीन जनगण से संपूर्ण विश्व को (कोरिया आरपी सहित) 21153 एमटी 4एडीपीए का निर्यात किया है इसमें से सिनोर्गकेम, चीन जनगण ने अकेले 20,508 एमटी (97 प्रतिशत) 4एडीपीए का निर्यात कोरिया आरपी को किया है जहां इस कच्चे माल का एकमात्र प्रयोक्ता केकेपीसी है और संसार के अन्य देशों को केवल 3 प्रतिशत का निर्यात किया गया है। इसलिए सिनोर्गकेम केकेपीसी को 4एडीपीए का एक बड़ा प्रदायक बना हुआ है।
- iii) केकेपीसी ने तर्क दिया है कि केकेपीसी और सिनोर्गकेम के बीच ऐसा कोई संबंध नहीं है जिससे उसे 4एडीपीए पर अतिरिक्त डिस्काउंट मिलता हो। केकेपीसी ने तर्क दिया है कि जब कोई क्रेता अन्य क्रेताओं की तुलना में भारी मात्रा का क्रय करता है तो उस विशिष्ट क्रेता को निश्चित हो "भिन्न कीमत" प्राप्त होती है। तथापि, इस तरह का संबंध सामान्य है और यदि किसी क्रेता को उठाई गई मात्रा के आधार पर अतिरिक्त डिस्काउंट प्राप्त होता है तो इसका आशय यह नहीं है कि इस नजदीकी संव्यवहार लागत को नामंजूर कर दिया जाए। इसलिए दोनों पक्षकार समय-समय पर व्यापार की शर्तों और कीमतों पर चर्चा करते हैं और सभी खरीद व्यापार के सामान्य अनुक्रम में की गई थी। केकेपीसी ने यह तर्क भी दिया है कि इसने जांच की अवधि के दौरान 4एडीपीए का अधिप्रापण यूरोप आधारित एक अन्य कंपनी सालुशियाइंग से भी किया है और कीमतों में की गई तुलना यह दर्शाती है कि इस कंपनी ने सिनोर्गकेम, चीन जनगण की तुलना में ईयू में सालुशिया से कम कीमतों पर 4एडीपीए की खरीद की है। इस संबंध में प्राधिकारी केकेपीसी के प्रश्नावली प्रत्युत्तर से यह नोट करते हैं कि कंपनी ने जांच की अवधि के दौरान *** से 4एडीपीए की खरीद *** अमरीकी डालर प्रति किग्रा की औसत कीमत पर केवल दो माह के लिए की है और उन्हीं दो माह में उसने सिनोर्गकेम से *** अमरीकी डालर प्रति किग्रा की औसत कीमत पर खरीद की है। प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि यदि वह केकेपीसी के इस तर्क को मान लेते हैं कि जब कोई विशिष्ट क्रेता अन्य क्रेताओं की तुलना में भारी मात्रा की खरीद करता है तो उस विशिष्ट क्रेता को निश्चित रूप से ही विशेष कीमत प्रदान की जाती है तो सिनोर्गकेम केकेपीसी को 4एडीपीए की बिक्री *** की कीमतों की तुलना में क्यों न कम कीमतों पर बिक्री करें क्योंकि उसने केकेपीसी की 4एडीपीए की कुल जरूरत के

*** प्रतिशत की आपूर्ति की है। इसके अतिरिक्त, केकेपीसी के उपर्युक्त तर्क से प्राधिकारी को इसका भी तर्क नजर नहीं आया कि *** ने केकेपीसी को 4 एडीपीए की सिनोर्गकेम से भी कम कीमत की पेशकश की है जबकि केकेपीसी ने उससे *** से अधिक भारी मात्रा की खरीद भी नहीं की है। प्राधिकारी को इस बात का भी कोई कारण प्रतीत नहीं होता है कि यदि *** की केकेपीसी को 4एडीपीए की कीमतें सिनोर्गकेम की कीमतों से कम हैं तो केकेपीसी ने *** से नियमित आधार पर 4एडीपीए की भारी मात्रा की खरीद क्यों नहीं की है।

- iv) प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि 4एडीपीए का निर्माण करने के लिए एनिलीन और बेन्जीन दो प्रमुख कच्चे माल हैं। मूल जांच की अवधि से वर्तमान निर्णायक समीक्षा जांच के लिए डीजीसीआईएस आंकड़े के अनुसार एनिलाइन और बेन्जीन की कीमत में उतार-चढ़ाव दर्शाता है कि इस अवधि के दौरान एनिलीन की कीमतों में, जो मूल जांच के समय 1.33 अमरीकी डालर प्रति किग्रा थी, वृद्धि हुई और वे वर्तमान निर्णायक समीक्षा जांच में बढ़कर 1.17 अमरीकी डालर प्रति किग्रा हो गई और इसी अवधि के दौरान बेन्जीन की कीमतों में भी वृद्धि हुई, बेन्जीन की कीमतें जो मूल जांच के समय 1.00 अमरीकी डालर प्रति किग्रा थी, बढ़कर वर्तमान निर्णायक समीक्षा जांच में 1.17 अमरीकी डालर प्रति किग्रा हो गई। तथापि, कोरिया के सीमाशुल्क आंकड़े दर्शाते हैं कि 4एडीपीए की वह कीमतें, जिस पर चीन ने कोरिया आरपी को 4एडीपीए का निर्यात किया है, एनिलीन और बेन्जीन की कीमतों में हुई वृद्धि के अनुरूप बढ़ने के बजाय इस अवधि के दौरान समान बनी रहीं। यह कीमतें मूल जांच के समय *** अमरीकी डालर प्रति किग्रा, मध्यावधि समीक्षा जांच के समय *** अमरीकी डालर प्रति किग्रा थी। इसलिए 4एडीपीए की उन कीमतों पर भरोसा नहीं किया जा सकता है जिन पर चीन ने कोरिया आरपी को 4एडीपीए का निर्यात किया है।
- v) प्राधिकारी नोट करते हैं कि 4एडीपीए की भारत को आयात कीमतें भी प्राधिकारी को डीजीसीआईएस आयात आंकड़ों से उपलब्ध हैं। डीजीसीआई आयात मूल जांच के दौरान और वर्तमान निर्णायक समीक्षा जांच के दौरान 4एडीपीए के आयात आंकड़े दर्शाते हैं। यह आयात जर्मनी और चीन जनगण से किए गए हैं। आयात आंकड़े दर्शाते हैं कि जर्मनी, एक बाजार अर्थव्यवस्था देश, की 4एडीपीए की कीमतों में इस अवधि के दौरान वृद्धि हुई है। यह कीमतें मूल जांच के समय 3.13 अमरीकी डालर प्रति किग्रा से बढ़कर वर्तमान निर्णायक समीक्षा जांच में 3.48 अमरीकी डालर प्रति किग्रा हो गई और इसकी तुलना में चीन एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश, से 4एडीपीए की आयात कीमत मूल्य जांच में *** अमरीकी डालर प्रति किग्रा और वर्तमान निर्णायक समीक्षा जांच में *** अमरीकी डालर प्रति किग्रा दर्शाई गई है। इसके विपरीत, वर्तमान निर्णायक समीक्षा जांच की, जांच की अवधि के लिए चीन के सीमाशुल्क आंकड़ों के अनुसार चीन जनगण ने कोरिया आरपी 4एडीपीए का निर्यात 2.46 अमरीकी डालर प्रति किग्रा की औसत कीमत पर तथा शेष विश्व को 3.13 अमरीकी डालर प्रति किग्रा की औसत कीमत पर किया है। इसलिए चीन जनगण से कोरिया आरपी या भारत या विश्व को किए गए 4एडीपीए की निर्यात कीमतों पर जर्मनी, एक बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश की उच्चतर कीमतों से तुलना करने पर भरोसा नहीं किया जा सकता है।
- vi) अतः, प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि केकेपीसी द्वारा चीन जनगण, एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश, से 4एडीपीए की वास्तविक खरीद कीमत का प्रयोग केकेपीसी द्वारा

पीएक्स-13 (6पीपीडी) के उत्पादन से जुड़ी व्यापार के सामान्य अनुक्रम की लागत को तर्क संगत रूप से प्रतिबिम्बित नहीं करेगी।

- vii) प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि मूल जांच में आयात बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश से किया गया था। तथापि, मध्यावधि समीक्षा जांच में 4एडीपीए का आयात बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश से करने का कोई साक्ष्य नहीं था। अब, वर्तमान निर्णायक समीक्षा जांच में जांच की अवधि के दौरान 4एडीपीए की जर्मनी से अंतर्राष्ट्रीय कीमतों को प्रदर्शित करने वाला साक्ष्य, जैसा ऊपर दर्शाया गया है, उपलब्ध है। मूल जांच में प्राधिकारी ने केकेपीसी द्वारा चीन जनगण से 4एडीपीए की वास्तविक क्रय कीमत पर विचार नहीं किया था और इसके बजाय, भारत को एक बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश से आयात कीमतों को अपनाया था। इसलिए, वर्तमान निर्णायक समीक्षा जांच में भी प्राधिकारी केकेपीसी द्वारा चीन जनगण, एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश, से 4एडीपीए की वास्तविक क्रय कीमतों को ऊपर से पैराग्राफों में उल्लिखित कारणों से न अपनाने का निश्चय करते हैं और इसके बजाय भारत को जर्मनी से 4एडीपीए की आयात कीमतों को अपनाते हैं।

42. इन कारकों को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी वर्तमान मामले में सामान्य मूल्य का परिकलन भारत को जर्मनी एक बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश, से 4एडीपीए की 3.48 अमरीकी डालर प्रति किग्रा की अंतर्राष्ट्रीय कीमतों के आधार पर कोरिया आरपी में संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत पर विचार करते हुए और यथा-सत्यापित अन्य लागत की अनुमति देते हुए करते हैं। इस तरह निर्धारित लागत पर लाभ क लिए 5 प्रतिशत पर विचार किया गया है। तदनुसार पीएक्स-13 (6पीपीडी) के लिए सामान्य मूल्य का किया गया निर्धारण अधोलिखित पाटन मार्जिन तालिका में दर्शाया गया है।

निर्यात कीमत

कुम्हो पेट्रोकेमिकल्स कंपनी लिमिटेड (केकेपीसी)

43. प्राधिकारी ने भारत को भारत औसत निर्यात कीमत का निर्धारण केकेपीसी द्वारा निर्यातक प्रश्नावली प्रत्युत्तर के परिशिष्ट-2 और 3क में प्रदान किए गए आंकड़ों के अनुरूप किया है। पैकिंग व्यय, अंतरदेशीय भाड़ा, समुद्री भाड़ा, पत्तन हैंडलिंग, सीमाशुल्क ब्रोकरेज, बैंक प्रभार, क्रेडिट व्यय, सामुद्रिक बीमा, व्यापार कमीशन और शुल्क प्रतिअदायगी के संबंध में कीमत समायोजन की अनुमति दी गई है। तदनुसार, फैक्टरी बाह्य स्तर पर निर्धारित निर्यात कीमत का उल्लेख अधोलिखित पाटन मार्जिन तालिका में किया गया है।

कुम्हो पेट्रोकेमिकल्स कंपनी लिमिटेड, डैवू इंटरनेशनल कारपोरेशन कोरिया आरपी के जरिए

44. डैवू इंटरनेशनल कारपोरेशन कोरिया आरपी ने प्रश्नावली प्रत्युत्तर दायर किया है और यह रिपोर्ट किया है कि कंपनी ने भारतीय बाजार को 6पीपीडी का निर्यात किया है। तथापि, यह कंपनी इस विचाराधीन उत्पाद की उत्पादक नहीं है और उसने केकेपीसी द्वारा उत्पादित वस्तु का निर्यात किया है। इसलिए प्राधिकारी ने डैवू इंटरनेशनल कारपोरेशन द्वारा किए गए निर्यातकों के संबंध में पाटन मार्जिन का निर्धारण किया है। भारत को पाटित औसत निर्यात कीमत (सी आई एफ) का निर्धारण निर्यातक द्वारा निर्यातक प्रश्नावली प्रत्युत्तर के परिशिष्ट 2 और 3 क में उपलब्ध कराए गए अनुसार किया गया है। समुद्रपारीय

बीमा क्रेडिट व्यय और बैंक प्रभार पर कीमत समायोजन की अनुमति दी गई है। तदनुसार फैक्ट्री बाह्य स्तर पर निर्धारित निर्यात कीमत का उल्लेख अधोलिखित पाटन मार्जिन तालिका में किया गया है।

कोरिया आर पी से असहयोगकर्ता निर्यातक

45. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि कोरिया औ पी के किसी भी अन्य निर्यातक ने निर्यातक प्रश्नावली प्रत्युत्तर प्रस्तुत नहीं किया है। इसलिए, प्राधिकारी ने इन असहयोगकर्ता निर्यातकों के लिए सहायककर्ता निर्यातकों की भारत को न्यूनतम प्रतिनिधिक निवल निर्यात कीमत अपनाने का निश्चय लिया है। इस तरह निर्धारित निर्यात कीमत का उल्लेख अधोलिखित पाटन मार्जिन तालिका में किया गया है।

पाटन मार्जिन

46. उपर्युक्त के आधार पर सम्बद्ध देशों से सहयोग कर्ता एवं असहयोगकर्ता निर्यातकों के संबंध में सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन का संक्षेप में उल्लेख निम्नलिखित किया गया है।

पाटन मार्जिन तालिका

अमी. डालर/प्रति कि.ग्रा.

उत्पाद	उत्पादक का नाम	निर्यातक	सामान्य मूल्य	निर्यात कीमत	पाटन मार्जिन	पाटन मार्जिन %	पाटन मार्जिन % रेंज
पी एक्स- 13	मैसर्स शानडांग सिनोर्गकेम टेक्नोलॉजी कम्पनी लिमिटेड, चीन जन.गण.	मैसर्स जियांगसू सिनोर्गकेम टेक्नोलॉजी कम्पनी लिमिटेड, चीन जन.गण.	***	***	***	***	30-40
	मैसर्स सिनोर्गकेम कम्पनी, ताई' आन चीन जन.गण.	मैसर्स जियांगसू सिनोर्गकेम टेक्नोलॉजी कम्पनी लिमिटेड, चीन	***	***	***	***	30-40

	जन.गण.					
कुम्हो पेट्रोकेमिकल्स कम्पनी लिमिटेड कोरिया आर पी	कुम्हो पेट्रोकेमिकल्स कम्पनी लिमिटेड	***	***	***	***	30-40
कुम्हो पेट्रोकेमिकल्स कम्पनी लिमिटेड कोरिया आर पी	डेव् इंटरनेशनल कॉर्पोरेशन कोरिया आर पी	***	***	***	***	30-40
कोरिया आर पी के असहयोगकर्ता निर्यातक		***	***	***	***	35-35

असहयोगकर्ता निर्यातक —चीन जन;गण.

विचाराधीन उत्पाद	सामान्य मूल्य (अमेरिकी डालर/किग्रा)	निवल निर्यात कीमत (अमेरिकी डालर/किग्रा)	पाअन मार्जिन (अमेरिकी डालर/किग्रा)	पाटन मार्जिन (%)	पाअन मार्जिन(% रेंज)
पी एक्स-13 (6पीपीडी)	***	***	***	***	40-50
टी डी क्यू	***	***	***	***	20-30
पी वी आई	***	***	***	***	20-30
टी एम टी	***	***	***	***	25-35
एम बी टी	***	***	***	***	20-30
सी बी एस	***	***	***	***	20-30

ज. क्षति का आकलन एवं कारणात्मक संबंध की जांच

क्षति एवं कारणात्मक संबंध

निर्यातकों/आयातकों/उपभोक्ताओं तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

46. निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत किए गए हैं:-

क. हर उत्पाद का अलग-अलग मूल्यांकन किया जाना चाहिए और एक उत्पाद पर आयातों के प्रभाव के कारण अन्य उत्पादों पर उसका पूर्वाग्रही प्रभाव नहीं होना चाहिए।

- ख. पिछले आठ वर्षों से शुल्क के बाबजूद घरेलू उद्योग ने बाजार में मांग को पूरा करने के लिए उद्योग की क्षमता में विस्तार करने का कोई प्रयास नहीं किया है और दाहेज स्थित नया संयंत्र भी 4 ए डी पी ए का विनिर्माण करने के लिए है।
- ग. यदि घरेलू उद्योग अपनी 100 प्रतिशत क्षमता से भी उत्पादन करता है तब भी वह बाजार की कुल मांग के लगभग 46 प्रतिशत को ही पूरा कर पाएगा।
- घ. घरेलू उद्योग ने उल्लेख किया है कि पी एक्स-13 का उत्पादन करने की उनकी क्षमता बढ़कर अब 14,000 एम टी हो गई है। तथापि, पी एक्स-13 के संबंध में रक्षोपाय जांच शुरुआत अधिसूचना दर्शाती है कि वर्ष 2012-13 में यह क्षमता केवल 85000 एम टी ही थी। यदि यह मान भी लिया जाए कि यह सही है तो इसका आशय यह होगा कि जांच की अवधि के दो माह में ही क्षमता विस्तार हो गया है और इसलिए यह तर्क गलत है कि घरेलू उद्योग क्षति अवधि के दौरान सम्पूर्ण प्रयोक्ता उद्योग को पी एक्स-13 की आपूर्ति करने में सक्षम है। अन्य रबड़ रसायनों के लिए भी मांग-आपूर्ति में अन्तर विद्यमान है।
- ड. घरेलू उद्योग अपने उत्पादन के 50 प्रतिशत का निर्यात करता है।
- च. टी डी क्यू:
- i. जांच की अवधि के दौरान टी डी क्यू के आयातों में वर्ष 2009-10 में 27 प्रतिशत तक की कमी आई है जबकि इस विचाराधीन उत्पाद की मांग में 20 प्रतिशत तक की वृद्धि हुई है। सी आई एफ कीमत बढ़ी है।
 - ii. उत्पादन और बिक्री में मात्रा और मूल्य दोनों में ही वृद्धि हुई है।
 - iii. उपर्युक्त वृद्धि के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में भी वृद्धि हुई है।
 - iv. आंकड़े दर्शाते हैं कि घरेलू उद्योग की टी डी क्यू की बिक्री से लाभ हुआ है।
 - v. कोई कारणात्मक संबंध नहीं है क्योंकि आयात मात्रा में की आई है और टी डी क्यू की सी आई एफ कीमत बढ़ी है। उत्पादन, बिक्री की मात्रा और मूल्य और बाजार हिस्से में वृद्धि हुई है और लाभ अर्जित किया गया है।

छ. सी बी एस:

- i. क्षति अवधि के दौरान सी बी एस के लिए उत्पादन और बिक्री तथा बिक्री प्रापण की मात्रा में वृद्धि हुई है।
- ii. घरेलू बिक्री में वृद्धि घरेलू मांग में वृद्धि के अनुरूप थी।
- iii. सी बी एस की सी आई एफ कीमत में 40 प्रतिशत तक की वृद्धि हुई है।
- iv. घरेलू बाजार हिस्से में हल्की सी कमी अन्य देशों से आयात के हिस्से में वृद्धि के कारण आई चीन से आयातों के बाजार हिस्से में कमी हुई है।
- v. बाजार स्रोतों से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर सी बी एस पर 28.44 रुपए प्रति कि.ग्रा. लाभ रिपोर्ट किया गया है।

ज. पी एक्स-13

- i. रक्षोपाय आंकड़े दर्शाते हैं कि कुल उत्पादन के प्रतिशत के रूप में घरेलू उद्योग की बिक्री में भारी वृद्धि हुई है।
- ii. घरेलू उद्योग अपने उत्पादन के लगभग 50 प्रतिशत का निर्यात करता है, इसलिए निर्यात बिक्री में किसी भी प्रकार की कमी से उनके उत्पादन में अवरोध उत्पन्न होगा, जिसमें गिरावट आई है।
- iii. पी एक्स-13 की घरेलू मांग में वर्ष 2009-10 से जांच की अवधि के दौरान 26 प्रतिशत तक वृद्धि हुई है। तथापि, घरेलू उद्योग बाजार की कुल मांग के केवल 46 प्रतिशत को पूरा कर सकता है और संस्थापित क्षमता में कोई वृद्धि नहीं हुई है।
- iv. जांच की अवधि के दौरान सम्बद्ध देशों से पी एक्स-13 के आयातों में मामूली से वृद्धि हुई है और उनके बाजार हिस्से में कमी आई है। आयात कीमत में वृद्धि हुई है।

झ. विदेशी उत्पादकों की बेशी क्षमता का कोई साक्ष्य नहीं दिया गया है। इसके अतिरिक्त, बेशी क्षमता की केवल मौजूदगी मात्र से क्षति की चुनौती का निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता है।

ञ. यह तथ्य है कि किसी अन्य देश ने किसी साधन का अधिरोपण नहीं किया है, इसका आशय यह नहीं है कि बेशी उत्पादनको भारत की ओर मोड़ दिया जाएगा।

ट. चूंकि घरेलू उद्योग ने अपने उत्पादन, घरेलू बिक्री की मात्रा एवं मूल्य तथा बाजार हिस्से में वृद्धि कर ली है इसलिए घरेलू उद्योग अब सुभेद्य नहीं रह गया है। सम्बद्ध देशों के बाजार हिस्से में की आई है, सी आई एफ कीमत में वृद्धि हुई है इसलिए क्षति की कोई संभावना नहीं है।

कुम्हों पेट्रो कैमिकल्स कम्पनी लिमिटेड और ऋषिरूप पालिमर्स प्राइवेट लिमिटेड

- क. आवेदक ने दावा किया है कि के के पी सी भारत में सम्बद्ध वस्तु के पाटन के कारण घाटा रिपोर्ट किया है और साथ ही उस सम्बद्ध वस्तु का कुल कारोबार के के पी सी के कुल करोबार का केवल 1 प्रतिशत है।
- ख. पी एक्स-13 के सम्बद्ध में रक्षोपाय याचिका और समीक्षा जांच शुरुआत अधिसूचना यह उल्लेख करती है कि 16000 एम टी मध्यवर्तियों के लिए स्थापित दाहेज संयंत्र में नवम्बर, 2012 से उत्पादन होना शुरू हो गया है परन्तु अन्य स्थानों पर ही यह दावा किया गया है कि यह उत्पादन मार्च, 2013 में प्रारंभ हुआ।
- ग. व्यापार आसूचना यह सम्पुष्टि करती है कि पुराना संयंत्र बंद हो गया है। प्राधिकारी ने इस सत्यापन करने का अनुरोध किया है क्योंकि प्राधिकारी ने यह दावा किया है कि वह 4एडी पी ए का उत्पादन दोनों ही संयंत्र में किया जाता है और अन्तिम उत्पाद पुराने संयंत्र में होता है।
- घ. नवीन संयंत्र की स्थापना करने के लिए निम्नलिखित की जांच करना अपेक्षित होगा:
 - i. अनुच्छेद 11.3 के अधीन सम्भावित निर्धारण में उपलब्ध सकारात्मक साक्ष्यों के आधार पर प्रक्षेपित भावी घटनाओं का विश्लेषण करना अपेक्षित होता है। वर्तमान समीक्षा के संदर्भ में दाहेज स्थित नए संयंत्र का प्रचालन एक सम्वेदनशील महत्व है।
 - ii. आवेदक ने दावा किया है कि उसने दाहेज में उत्पादन करके लागत में भारी वचत कर ली है। दाहेज संयंत्र को ध्यान में रखते हुए ही उत्पादन लागत की संगणना की जानी चाहिए कि क्या यह वचत हुई है

उनकी जांच यह देखने के लिए की जानी चाहिए कि क्या यह वचन कच्चे माल के कारण हुई है या किसी अन्य कारण से।

- ड. क्षति की किसी संभावना का निर्धारण करने में रक्षोपाय शुल्क को ध्यान में रखना चाहिए।
- च. पी एक्स-13 पर रक्षोपाय शुल्क अधिरोपित करने के पश्चात आवेदक अपनी विक्री कीमत, घरेलू बिक्री बाजार हिस्से में वृद्धि नहीं कर पाया। इसका निर्यात बाजार खत्म होता रहा। रक्षोपाय संरक्षण की अवधि के दौरान इसकी उत्पादन लागत में वृद्धि हुई और लाभप्रदायकता में कमी आई है।
- छ. क्षति के अन्य कारक :
- i. रक्षोपाय जांच में क्षतिसम्बन्धित आयातों के कारण बताई गई है।
 - ii. इन वर्षों में घरेलू बिक्रियों में अन्य घरेलू उत्पादकों के हिस्से में वृद्धि हुई है। इसका आशय यह है कि कथित रूप से कारित हुई क्षति आयातों के कारण न होकर बाजार की आन्तरिक प्रति स्पर्धा के कारण हुई है। अन्य उत्पादक बेहतर निष्पादक कर रहे हैं तथा आवेदक से कम कीमत पर सम्बद्ध वस्तु का प्रस्ताव कर रहे हैं।
 - iii. सम्बद्ध वस्तु के आयातों के कम से कम 50 प्रतिशत का प्रयोग
 - iv. उन अन्तिम वस्तुओं का निर्माण करने के लिए किया जाता है जिनका अन्य देशों को निर्यात किया जाता है। आयातित वस्तु के उस भाग का आयात पाटनरोधी शुल्क, रक्षोपाय शुल्क तथा आधारभूत सीमा शुल्क एवं सी वी डी से छूट प्राप्त करके किया जाता है। आयातित सम्बद्ध वस्तु का यह भाग ही घरेलू उद्योग पर अधोगामी डाल रहा है।
 - v. प्राधिकारी को इस तथ्य की जांच करना है कि संस्थापित क्षमता का कौन सा भाग घरेलू उत्पादन तथा निर्यात उत्पादन के लिए चिन्हित है। दाहेज संयंत्र की स्थिति के संबंध में आवेदक द्वारा परियोजना रिपोर्ट प्रस्तुत की जानी चाहिए।
 - vi. वित्तवर्ष 2012-13 के दौरान आवेदक को उस संयंत्र की लागत व्यय करना पड़ा जिसकी क्षमता 18500 एम औ 4-एडीपीए उत्पादन करने की है जबकि लिमिटिंग कारक, 8500 एम टी पी एक्स-13 उत्पादित करने की क्षमता में कोई परिवर्तन नहीं किया गया।
 - vii. निदिष्ट प्राधिकारी संगत क्षेत्राधिकार वाले केन्द्रीय उत्पाद कर आयुक्त से, घरेलू उद्योग द्वारा क्षति की रिपोर्ट के संबंध में सूचना प्राप्त कर सकते हैं। यदि आवेदक ने प्राधिकारी के समक्ष अपनी बिक्रियोंको क्षतिकारी के रूप में रिपोर्ट नहीं किया है तो यह निदिष्ट प्राधिकारी के समक्ष दावा नहीं कर सकता है।
 - viii. चूंकि आवेदक के निर्यातों में वर्ष 2009-10 के पश्चात बड़ी तेजी से गिरावट आई है, इसलिए लागत का आबंटन, उत्तरवर्ती वर्षों में लागत और लागत की तुलना करने के लिए, आधार वर्ष के अनुपातिक होना चाहिए। आवेदक को चाहिए कि वह घरेलू एवं निर्यात उत्पादन के सम्बंध में लागत आबंटन के लिए अपनाई गई क्रिया पद्धति बताएं।
 - ix. आवेदक ने दावा किया है कि यूरोप से आयातों को क्षति के अन्य कारकों के अंतर्गत मूल्यांकन करने की जरूरत नहीं है क्योंकि यूरोप के उत्पादकों की उपस्थिति भी बाजार में थी। इसका कारण यह उन पर यूरोपियन आयोग द्वारा कार्टलीकरण के लिए भारी जुर्माना अधिरोपित किया गया है। प्राधिकारी से यह अनुरोध किया जाता है कि वह यूरोप से आयातों का मूल्यांकन करे।

- X आवेदक ने यह स्पष्ट नहीं किया है कि उत्पादन, लाभदायकता, क्षमता उपयोग, निवेश पर अर्जन, उत्पादकता, बिक्री, मांगआपूर्ति अन्तराल, बिक्री कीमत जैसे कारकों ने कैसे व्यवहार किया है और उन्होंने पाटित आयातों के कारण क्षति में योगदान कैसे दिया है।
- X इस सूचना से सम्प्रेषण के पश्चात कि आवेदक दाहेज में एक नए संयंत्र की स्थापना कर रहा है/स्थापना कर ली है, यह अनुरोध किया गया कि संयंत्र की संस्थापि क्षमता कितनी है, इस संस्थापित क्षमता के कितने भाग का प्रयोग संबद्ध वस्तु का घरेलू खपत के लिए उत्पादन हेतु प्रयोग किया जाएगा और इस प्रयोजनार्थ नियोजित क्षमता का सही-सही सत्यापन करने का अनुरोध किया गया क्योंकि यह सूचना यथार्थ विश्लेषण करने के लिए संवेदनशील है। संबद्ध वस्तु का विनिर्माण करने के लिए प्रयोग की गई संस्थापित क्षमता, जिसका उत्तरवर्ती रूप से निर्यात किया जाएगा, का भी प्रावधान किया जाए। यह भी अनुरोध किया गया कि नए संयंत्र पर उत्पादन की सही-सही समय-सीमा स्थापि की जाए और यह निर्धारित करने के लिए कि क्या नए संयंत्र का सत्यापन किया जाए। और आवेदक के इस संयंत्र पर किस विनिर्माण प्रक्रिया का प्रयोग किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त यह भी प्रस्तुत किया गया कि उपर्युक्त सूचना की संवीक्षा करने के पश्चात लागत में समनरूपी आबंटन किया जाए।
- xii. आवेदक ने दावा किया है कि उसका विनिर्माण संयंत्र 190 दिनों के लिए बंद पड़ा था। यह प्रस्तुत किया गया है कि आवेदक का संयंत्र एक वर्ष में जब 190 दिनों के लिए बंद था अर्थात् 6 माह से अधिक समय के लिए बंद था तो आवेदक का क्षमता उपयोग वर्ष 2011-12 में 75 अनुक्रमित बिन्दुओं से बढ़कर जांच की अवधिमें 76 अनुक्रमित बिन्दु हो गया। इस प्रकार ऊपर प्रस्तुत किए गए संयंत्र की तालाबंदी के आलोक में यह कहा जा सकता है कि आवेदक का क्षमता उपयोग बहुत अधिक है।
- xiii. आवेदक के परस्पर विरोधी दावों पर भी प्रकाश डाला जाता है। आवेदक ने दावा किया है कि मांग की कमी थी और उसके पास माल सूची मौजूद थी। तथापि, याचिका से यह स्पष्ट है कि आवेदक की घरेलू बिक्री में भारी वृद्धि हुई और माल सूची में कम होने का रुझान प्रस्तुत हुआ।
- viX आवेदक को बिक्री के कारण क्षति नहीं हुई जिसमें संपूर्ण क्षति अवधि और जांच की अवधि के दौरान बढ़ने की प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है। वर्ष 2009-10 में यह 100 अनुक्रमित बिन्दुओं से बढ़कर जांच की अवधि में 118 अनुक्रमित बिन्दु हो गई।
- VX इसके अतिरिक्त संबद्ध आयातों की अवसारित कीमत के कारण क्षति नहीं हुई जो वर्ष 2011-12 और जांच की अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की घरेलू बिक्री कीमत से रक्षोपाय शुल्क जोड़ने के पश्चात अधिक है। अवसारित मूल्य में वृद्धि होने तथा रक्षोपाय शुल्क के रूप में अतिरिक्त संरक्षण का प्रावधान होने के बावजूद आवेदक अपने निष्पादन में सुधार करने में सक्षम नहीं हो पाया। यह इस कारण से हुआ है कि क्षति के कुछ अंतरनिहित कारण हैं जिन्हें शुल्क का प्रावधान करके सुधारा नहीं जा सकता है।

घरेलू उद्योग के विचार

47. घरेलू उद्योग ने प्रस्तुत किया है कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों से घरेलू उद्योग को क्षति कारित की गई है जैसा कि निम्नलिखित से स्पष्ट है:-

- क. याचिकाकर्ता का विचार है कि यह परस्पर रूप से समान उत्पाद नहीं है। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के रबड़ रसायनों के लिए अलग-अलग उत्पादन सुविधाएं हैं। इसलिए याचिकाकर्ता का यह विचार है कि घरेलू उद्योग को क्षति का आकलन संबद्ध रबड़ रसायन के लिए व्यक्तिगत रूप से अलग-अलग किया जा सकता है, जैसा कि मूल जांच में किया गया था।
- ख. एम बी टी और टी एम टी के अलावा बाकी बचे रबड़ रसायनों (सी बी एस, टी डी क्यूपी वी आई और पी एक्स-13) की मांग में संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान सकारात्मक रुझान प्रदर्शित हुआ है।
- ग. याचिकाकर्ता ने पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण करने से पहले और उसके पश्चात आयातों की मात्रा की प्रवृत्ति का आकलन करने के उद्देश्य से मूल जांच की आधार अवधि से आयातों पर विचार किया है।
- i. मूल शुल्क और मध्यावधि समीक्षा के उपरान्त शुल्क में वृद्धि के बावजूद पी एक्स-13 के आयातों में संपूर्ण अवधि के दौरान वृद्धि हुई है।
 - ii. वर्ष 2003-04 से तुलना करने पर टी एम टी के आयातों में वृद्धि हुई है। अभिनव अवधि में आयातों की मात्रा में गिरावट आई है परन्तु टी एम टी के आयात अब भी भारी मात्रा में बने हुए हैं।
 - iii. वर्ष 2003-04 की तुलना में एम बी टी के आयातों में वृद्धि हुई है। अभिनव अवधि में आयातों की मात्रा में गिरावट आई है परन्तु टी एम टी के आयात अब भी भारी मात्रा में बने हुए हैं।
 - iv. संपूर्ण अवधि के दौरान सी बी एस और पी वी सी के आयातों में वृद्धि हुई है।
 - v. टी डी क्यू के आयातों में वर्ष 2010-11 तक बढोत्तरी हुई परन्तु उसके पश्चात इसमें गिरावट आ गई। तथापि इसके आयात भारी मात्रा में बने रहे।
- घ. संबद्ध देशों से रबड़ रसायनों के आयातों के हिस्से में निम्नलिखित प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है।
- i. भारत में पाटनरोधी शुल्क की मौजूदगी के कारण संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान कुल आयातों, उत्पादन और खपत के संबंध में टी एम टी के आयातों में गिरावट आई है।
 - ii. कुल आयातों के संबंध में टी डी क्यू के आयातों में वर्ष 2011-12 तक वृद्धि हुई परन्तु जांच की अवधि के दौरान मामूली सी गिरावट आई। उत्पादन के संबंध में आयातों में वर्ष 2011-12 तक गिरावट आई है और उसके पश्चात जांच की अवधि के दौरान उसी स्तर पर बने रहे। खपत के संबंध में आयातों में जांच की अवधि के दौरान गिरावट आई है।
 - iii. कुल आयातों के संबंध में पी एक्स-13 के आयातों में वर्ष 2011-12 तक वृद्धि हुई है परन्तु जांच की अवधि के दौरान इसमें मामूली सी गिरावट आई है। कुल उत्पादन के संबंध में भी आयातों में वर्ष 2011-12 तक वृद्धि हुई परन्तु जांच की अवधि के दौरान इसमें मामूली सी गिरावट आई है। कुल खपत के संबंध में आयातों में वर्ष 2011-12 तक वृद्धि हुई परन्तु जांच की अवधि के दौरान इसमें मामूली से कमी आई है।

- iv. भारत में कुल आयातों, उत्पादन और खपत के संबंध में पी वी आई के आयातों में संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान भारी वृद्धि हुई है।
 - v. कुल अयातों के संबंध में सी बी एस के आयातों में वर्ष 2010-11 में गिरावट आई परन्तु उसके पश्चात वर्ष 2011-12 के दौरान इसमें बढ़ोतरी हुई है और यह वृद्धि जांच की अवधि के दौरान भी जारी रही। भारत में उत्पादन और खपत के संबंध में आयातों में वर्ष 2010-11 में गिरावट आई है, परन्तु उसके पश्चात वर्ष 2011-12 के दौरान इसमें वृद्धि होना प्रारंभ हो गई और यह वृद्धि जांच की अवधि के दौरान भी जारी रही।
 - vi. भारत में खपत और कुल आयोतों के संबंध में एम बी टी के आयातों में संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान गिरावट आई है। यह नोट करना युक्तिसंगत है कि ऐसा पाटनरोधी शुल्क मौजूद होने के कारण हुआ है। भारत में उत्पादन के संबंध में आयातों में वर्ष 2010-11 में गिरावट आई है परन्तु इसके पश्चात वर्ष 2011-12 में इसमें वृद्धि होना शुरू हो गई और यह वृद्धि जांच की अवधि के दौरान भी जारी रही। पाटनरोधी शुल्क का प्रतिसंग्रहण कर लिए जाने की स्थिति में आयातों में वृद्धि और भी अधिक तेजी से होने लगेगी।
- ड. संबद्ध देशों से आयातित प्रत्येक प्रकार के रबड़ रसायन द्वारा कीमत अधोरदन किया गया है और कीमत निग्रहण एवं कीमत अवमंदन भी हुआ है।
- च. उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्री में निम्नलिखित रूप से क्षति प्रदर्शित हुई है।
- i. टी एम टी के लिए याचिकाकर्ता के उत्पादन और क्षमता उपयोग में वर्ष 2010-11 तक गिरावट आई है परन्तु उसके पश्चात इसमें वृद्धि हुई। इस संपूर्ण अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री में गिरावट आई परन्तु वर्ष 2010-11 में इसमें थोड़ी सी वृद्धि हुई। तथापि, घरेलू उद्योग की बिक्री में जांच की अवधि के दौरान गिरावट आई है।
 - ii. टी डी क्यू के लिए याचिकाकर्ता के उत्पादन और क्षमता उपयोग में संपूर्ण अवधि के दौरान वृद्धि हुई है। घरेलू उद्योग की बिक्री में भी इस क्षति अवधि के दौरान बढ़ोतरी हुई है।
 - iii. पी एक्स-13 के लिए याचिकाकर्ता के उत्पादन और क्षमता उपयोग में क्षति अवधि के दौरान गिरावट आई परन्तु जांच की अवधि के दौरान इसमें मामूली सी वृद्धि हुई। संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री में वृद्धि हुई। पाटित आयातों के कारण बाजार में अपनी मौजूदगी बनाए रखने के लिए याचिकाकर्ता ने उप-इष्टतम कीमत की पेशकश की है और इसलिए घरेलू उद्योग की बिक्री में बढ़ोतरी हुई है।
 - iv. पी वी आई के लिए याचिकाकर्ता के उत्पादन और क्षमता उपयोग में वर्ष 2011-12 तक वृद्धि हुई परन्तु उसे पश्चात जांच की अवधि में इसमें गिरावट आई है। घरेलू उद्योग की बिक्री में संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान वृद्धि हुई है।
 - v. सी बी एस के लिए के उत्पादन और क्षमता उपयोग में वर्ष 2011-12 तक गिरावट आई है परन्तु उसके पश्चात इसमें वृद्धि हुई है। घरेलू उद्योग की बिक्री और क्षमता उपयोग की तरह ही उत्पादन ने भी समान प्रवृत्ति प्रदर्शित की है।

- vi. एम बी टी के लिए याचिकाकर्ता के उत्पादन और क्षमता उपयोग में वर्ष 2010-11 तक वृद्धि हुई और इसके पश्चात इसमें भारी गिरावट आई है। घरेलू उद्योग की बिक्री में भी क्षति अवधि के दौरान गिरावट आई है।
- छ. लाभप्रदायकता, निवेश पर अर्जन और नकद लाभ ने निम्नलिखित प्रवृत्ति प्रदर्शित की है।
- i. टी एम टी के लिए घरेलू उद्योग का प्रति यूनिट लाभ और पी बी आई टी में संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान गिरावट आई है। नकद लाभ ने भी लाभ/हानि की तरह ही समान प्रवृत्ति प्रदर्शित की है। संपूर्ण अवधि के दौरान निवेश पर अर्जन में भी गिरावट आई है।
 - ii. टी डी क्यू के लिए घरेलू उद्योग का प्रति यूनिट लाभ और पी बी आई टी में संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान गिरावट आई है। नकद ने भी लाभ/हानि की तरह ही समान प्रवृत्ति प्रदर्शित की है। संपूर्ण अवधि के दौरान निवेश पर अर्जन में भी गिरावट आई है।
 - iii. पी एक्स-13 के लिए घरेलू उद्योग के लाभ में संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान गिरावट आई है परन्तु वर्ष 2011-12 और जांच की अवधि के दौरान इसमें भारी घाटा हुआ है। नकद लाभ ने भी लाभ/हानि की तरह ही समान प्रवृत्ति प्रदर्शित की है। सम्पूर्ण क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के नकद लाभ में गिरावट आई है और घरेलू उद्योग को वर्ष 2011-12 तथा जांच की अवधि के दौरान भारी नकद घाटा उठाना पड़ा। संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के निवेश पर अर्जन में उस सीमा तक गिरावट आई है कि 2011-12 और जांच की अवधि के दौरान इसे निवेश पर ऋणात्मक अर्जन सहन करना पड़ा।
 - iv. पी वी आई के मामले में घरेलू उद्योग के लाभ में संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान गिरावट आई है और जांच की अवधि के दौरान उसे भारी घाटा हुआ है। नकद लाभ ने भी लाभ/हानि की तरह ही समान प्रवृत्ति प्रदर्शित की है। घरेलू उद्योग के नकद लाभ में संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान गिरावट आई और जांच की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग को भी नकद घाटा सहन करना पड़ा। निवेश पर अर्जन में घरेलू उद्योग को संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान उस सीमा तक गिरावट आई है कि उसे जांच की अवधि के दौरान निवेश पर ऋणात्मक अर्जन सहन करना पड़ा।
 - v. सी बी एस के मामले में घरेलू उद्योग के लाभ में वर्ष 2010-11 में वृद्धि हुई है और इसके पश्चात इसमें गिरावट आई है। नकद लाभ ने भी लाभ/हानि की तरह ही समान प्रवृत्ति प्रदर्शित की है। घरेलू उद्योग के नकद लाभ में वर्ष 2010-11 तक वृद्धि हुई और तत्पश्चात उसमें गिरावट आई। निवेश पर अर्जन ने भी लाभ की तरह ही समान प्रवृत्ति प्रदर्शित की है।
 - vi. एम बी टी के के मामले में घरेलू उद्योग क प्रति यूनिट लाभ और पी बी आई टी में संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान गिरावट आई है। नकद लाभ में वर्ष 2010-11 में वृद्धि हुई और उसके पश्चात इसमें गिरावट आई। निवेशपर अर्जन में भी संपूर्णक्षति अवधि के दौरान गिरावट आई है।
- ज. मांग में बाजार हिस्से ने निम्नलिखित प्रवृत्ति प्रदर्शित की है।

- i. **टी एम टी :** घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई है जबकि चीन से आयातों के बाजार हिस्से में गिरावट आई है। यह स्थिति तब हुई जब पाटनरोधी शुल्क मौजूद था। पाटनरोधी शुल्क का प्रतिसंग्रहण कर लिए जाने की स्थिति में इन हालातों के विपरीत होने के संभावना है।
 - ii. **टी डी क्यू :** घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई है जबकि चीन से आयातों के बाजार हिस्से में गिरावट आई है। यह स्थिति तब हुई जब पाटनरोधी शुल्क मौजूद था। पाटनरोधी शुल्क का प्रतिसंग्रहण कर लिए जाने की स्थिति में इन हालातों के विपरीत होने के संभावना है।
 - iii. **पी एक्स-13:** घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा स्थिर बना रहा जबकि चीन से आयातों के बाजार हिस्से में गिरावट आई है। यह स्थिति तब हुई जब पाटनरोधी शुल्क मौजूद था। तथापि, अन्य भारतीय उत्पादकों के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई है।
 - iv. **पी वी आई:** घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में क्षति अवधि के दौरान वृद्धि हुई है और आयातों के बाजार हिस्सों में बहुत अधिक वृद्धि हुई है तथापि, आयातों के बाजार हिस्सों में 21 प्रतिशत तक वृद्धि हुई है जबकि घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में केवल 3 प्रतिशत वृद्धि हुई है।
 - v. **सी बी एस :** पाटनरोधी शुल्क मौजूद होने के बावजूद घरेलू उद्योग के बाजार हिस्सों में गिरावट आई है।
 - vi. **एम बी टी:** घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई है जबकि चीन से आयातों के बाजार हिस्से में गिरावट आई है। पाटनरोधी शुल्क का प्रतिसंग्रहण कर लिए जाने की स्थिति में इन हालातों के विपरीत होने के संभावना है।
- झ. रोजगार, वेतन और उत्पादकता में निम्नलिखित प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है:-

- i. **टी डी क्यू:** घरेलू उद्योग के रोजगार में जांच की अवधि के दौरान गिरावट आई है। संदत वेतन में वर्ष 2011-12 तक सामान्य वृद्धि प्रदर्शित हुई है परन्तु जांच की अवधि के दौरान इसमें गिरावट आई है। उत्पादकता प्रतिदिन में भी वृद्धि प्रदर्शित हुई है।
- ii. **पी एक्स-13:** उद्योग के रोजगार में वर्ष 2011-12 तक वृद्धि हुई है और उसके पश्चात जांच की अवधि में इसमें गिरावट आई है। संदत वेतन में सामान्य वृद्धि प्रदर्शित हुई है। उत्पादकता प्रतिदिन में वर्ष 2011-12 तक गिरावट आई है और जांचकी अवधि के दौरान इसमें मामूली सी बढ़ोत्तरी हुई है।
- iii. **पी वी आई:** घरेलू उद्योग के रोजगार में जांच की अवधि के दौरान गिरावट आई है। संदत वेतन में सामान्य वृद्धि प्रदर्शित हुई है। उत्पादकता प्रतिदिन में भी वृद्धि हुई है परन्तु जांचकी अवधि के दौरान इसमें मामूली सी गिरावट आई है।
- iv. **सी बी एस:** घरेलू उद्योग के रोजगार में संपूर्ण अवधि के दौरान वृद्धि हुई है। संदत वेतन में सामान्य वृद्धि प्रदर्शित हुई है। उत्पादकता प्रतिदिन में भी वृद्धि प्रदर्शित हुई है।

- V. **टी एम टी और एम बी टी:** टी एम टी और एम बी टी और जॉव कामगारों के जरिए कराया जाता है। इसलिए इन रबड़ रसायनों का उत्पादन करने के लिए कोई समर्पित कर्मचारी नहीं है।
- ज. मालसूची में निम्नलिखित प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है:-
- i. **टी एम टी:** घरेलू उद्योग के मालसूची स्तर में वर्ष 2011-12 तक गिरावट आई है परन्तु उसके पश्चात जांच की अवधि में इसमें वृद्धि हुई है। बिक्री दिनों की संख्या के रूप में स्टॉक में वर्ष 2011-12 तक गिरावट आई है परन्तु उसके पश्चात जांच की अवधि में इसमें वृद्धि हुई है।
 - ii. **टी डी क्यू:** घरेलू उद्योग के मालसूची स्तर में संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान वृद्धि हुई है। बिक्री दिनों की संख्या के रूप में स्टॉक भी जांच की अवधि में भारी महत्वपूर्ण बना रहा।
 - iii. **पी एक्स-13:** मालसूची स्तर में वर्ष 2010-11 तक वृद्धि हुई और उसके पश्चात इसमें गिरावट आना प्रारंभ हो गई। बिक्री दिनों की संख्या के रूप में स्टॉक भी जांच की अवधि में भारी महत्वपूर्ण बना रहा।
 - iv. **पी वी आई:** मालसूची स्तर में वर्ष 2010-11 के दौरान गिरावट आई है परन्तु उसके पश्चात इसमें वृद्धि हुई है। तथापि, बिक्री दिनों की संख्या के रूप में स्टॉक में वर्ष 2011-12 तक गिरावट आई है और जांच की अवधि में इसमें वृद्धि हुई है।
 - V. **सी बी एस:** घरेलू उद्योग के मालसूची स्तर में वर्ष 2011-12 तक वृद्धि हुई है और फिर उसके पश्चात जांच की अवधि में इसमें गिरावट आई है। बिक्री दिनों की संख्या के रूप में स्टॉक भी जांच की अवधि में भारी महत्वपूर्ण बना रहा।
 - vi. **एम बी टी:** घरेलू उद्योग के मालसूची स्तर में क्षति अवधि के दौरान वृद्धि हुई परन्तु जांच की अवधि के दौरान इसमें भारी वृद्धि हुई। बिक्री दिनों की संख्या के रूप में स्टॉक में संपूर्ण अवधि के दौरान वृद्धि हुई है।
- ट. बिक्री, उत्पादन और क्षमता उपयोग के रूप में घरेलू उद्योग की वृद्धि सकारात्मक थी जबकि लाभ, निवेश पर अर्जन, नकद लाभ और मालसूची के संबंध में यह वृद्धि ऋणात्मक थी।
- ठ. पाटनरोधी शुल्क का प्रतिसंग्रहण कर लिए जाने की स्थिति में क्षति की निरंतरता बने रहने और उसमें और अधिक तीव्रीकरण होने की संभावना है क्योंकि संबद्ध देशों में भारी उत्पादन क्षमता है, प्रतिसंग्रहण कर लिए जाने की स्थिति में निष्पादन के रूप में घरेलू उद्योग की सुभेद्यता, भारतीय बाजार की कीमत आकर्षकता, प्रतिसंग्रहण कर लिए जाने की स्थिति में कीमत अधोरधन की मात्रा और विदेशी रसायन विनिर्माताओं की चीन में अपने कारखाने स्थापित करने की बढ़ती प्रवृत्ति रही है। इसके अतिरिक्त सालुशियाइंक, जियांगशु शिनोरगकेम टैक्नालॉजी कंपनी लिमिटेड और कोरिया कुम्हो पेट्रोकेमिकल कंपनी लिमिटेड ने घोषित किया है कि 4-एडीपीए के उत्पादन की प्रक्रियाओं के लिए सालुशिया पेटेंट के संबंध में उनके बीच होने वाले सभी विवादों का समाधान उन्होंने वैश्विक रूप से किया है। समाधान की इन शर्तों के अंतर्गत सालुशिया, सालुशिया पेटेंट के अंतर्गत 4-एडीपीए का विनिर्माण करने के लिए शिनोरकेम और के के पी सी को लाइसेंस प्रदान करेगी, जो वर्ष

2019 तक समाप्त नहीं होगा। अनुज्ञापी के रूप में शिनोरगकेम और के के पी सी को भी वह पेटेंट प्रभावी बनाने के लिए कतिपय अधिकार दिए गए हैं।

- ड. घरेलू उद्योग को क्षति कारित करने वाले कोई अन्य कारक नहीं हैं क्योंकि :
- i. अन्य देशों से विचारधीन उत्पाद के आयात या तो नगण्य रहे हैं या भारी निर्यात कीमत पर किए गए हैं।
 - ii. जांच की अवधि के दौरान टी एम टी और एम बी टी को छोड़कर प्रत्येक रबड़ रसायनों की मांग में कोई संकुचन नहीं हुआ है।
 - iii. प्रत्येक रबड़ रसायन के संबंध में खपत की प्रणाली में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है।
 - iv. ऐसी कोई व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रक्रिया नहीं है जिसमें घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति में अपना योगदान दिया हो।
 - v. इस उत्पाद का उत्पादन करने के लिए प्रौद्योगिकी में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है।
 - vi. याचिकाकर्ता ने विचाराधीन उत्पाद का निर्यात किया है। तथापि, घरेलू उद्योग को दावा की गई क्षति घरेलू प्रचालनों के कारण हुई है।
- ढ. निम्नलिखित कारणों से स्पष्ट कारणात्मक संबंध स्थापित होता है।
- i. आयातित उत्पाद का भारतीय बाजार में पाटित कीमतों पर प्रवेश हो रहा है।
 - ii. आयातित उत्पाद घरेलू उद्योग की कीमतों का अधोरदन कर रहे थे। इसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को अपनी कीमतें बिक्री लागत में हुई वृद्धि के अनुरूप बढ़ाने से बंचित किया गया है।
 - iii. इसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को लाभ, ब्याज एवं करपूर्व लाभ, लगाई गई पूंजी पर आवक तथा नकद लाभ में गिरावट का सामना करना पड़ा है।
 - iv. कई पैरामीटरों के संबंध में घरेलू उद्योग का विकास ऋणात्मक रहा है।
- ण. इस तर्क के संबंध में घरेलू उद्योग ने अपनी क्षमता बढाने के लिए कोई उपाय नहीं किया, भारतीय उद्योग देश में सभी रबड़ रसायनों की संपूर्ण मांग को पूरा करने में समर्थ है। इस कारण से आयात आवश्यक नहीं हुए थे। (लगभग 12-15 प्रतिशत) मांग का कुछ हिस्सा भारत सरकार द्वारा प्रदान कराई गई शुल्क छूट के कारण हो सकता है परन्तु 55-62 प्रतिशत मांग को आयातों द्वारा पूरा किया गया है। ए टी एम ए द्वारा प्रकाशित आंकड़े यह प्रदर्शित करते हैं कि भारत से टायरों का निर्यात कुल भारतीय उत्पादन का मुश्किल से ही 12-15 प्रतिशत हुआ है।
- त. यदि भारतीय क्षमता को ध्यान में रखकर देखा जाए तो भारतीय मांग को पूरा करने के लिए देश में पर्याप्त क्षमता है। सी बी एस के मामले में, यदि शुल्क मुक्त आयातों की समीक्षा की जाती है तो कोई मांग-आपूर्ति अंतराल नहीं है।
- थ. पी एक्स-13 की क्षमता के संबंध में घरेलू उद्योग की जांच की अवधि तक संस्थापित क्षमता 8500 एम टी थी। दाहेज में उत्पादन प्रारंभ होने से घरेलू उद्योग की यह क्षमता बढ़कर 14,000 एम टी हो गई है।

- द. घरेलू उद्योग के लिए निर्यात मजबूरी का मामला है। एन ओ सी आई एल की निर्यात कीमत उस कीमत से कम है जिस पर एन ओ सी आई एल भारतीय बाजार में इस उत्पाद की बिक्री कर रहा है। एन ओ सी आई एल पर ऐसी कोई संविदात्मक बाध्यता नहीं है कि वह अपनी क्षमता का कुछ भाग विदेशी उपभोक्ता के लिए चिन्हित करे। एन ओ सी आई एल की पहली अधिमानता यह है कि वह घरेलू बाजार से ऑर्डर प्राप्त करे और उनको बिक्री करें। इसके अतिरिक्त यह एक ऐसा मामला है जिसमें उपभोक्तागण ऑर्डर देते हैं और घरेलू उद्योग माल की आपूर्ति करता है और इस लिए जहां कहीं इसे ऑर्डर प्राप्त नहीं हाते हैं यह अंतराष्ट्रीय बाजार की तलाश करता है।
- ध. यद्यपि घरूले उद्योग के निष्पादन में टी डी क्यू के संबंध में उत्पादन, क्षमता उपयोग, बाजार में हिस्सेदारी, घरेलू बिक्री की मात्रा, निर्यात बिक्री की मात्रा के रूप में सुधार हुआ है वहीं मालसूची, लाभ/हानि, निवेश पर अर्जन और नकद लाभ के रूप में घरेलू उद्योग के निष्पादन में गिरावट आई है। इसके अतिरिक्त आयात घरेलू उद्योग की कीमतों का अधोरदन कर रहे थे जिसके कारण कीमत निग्रहण हुआ। इसके अतिरिक्त उत्पादन लागत में वृद्धि कच्चे माल की लागत में वृद्धि के कारण हुई है।
- न. यद्यपि घरेलू उद्योग के निष्पादन में सी बी एस के संबंध में उत्पादन, क्षमता उपयोग, बाजार में हिस्सेदारी, घरेलू बिक्री की मात्रा, निर्यात बिक्री की मात्रा, के रूप में सुधार हुआ है वहीं मालसूची, लाभ/हानि, निवेश पर अर्जन और नकद लाभ के रूप में घरेलू उद्योग के निष्पादन में गिरावट आई है। आयात घरेलू उद्योग की कीमतों का अधोरदन कर रहे थे जिसके कारण कीमत निग्रहण हुआ। इसके अतिरिक्त क्षति मार्जिन मूल जांच की तुलना में बहुत अधिक सकारात्मक एवं उच्चतर रहा है।
- प. पी एक्स-13 के संबंध में घरेलू उद्योग को क्षति क्षमता उपयोग, उत्पादन, बाजार में हिस्सेदारी, निवेश पर अर्जन, लाभ और नकदी प्रवाह में हुई गिरावट तथा मालसूची में हुई वृद्धि से स्पष्ट है।
- फ. कोरिया आर पी और चीन के प्रतिवादी निर्यातकों ने निर्यातक राष्ट्रों में वेशी क्षमताओं के संबंध में कोई विवाद नहीं किया है जबकि ए टी एम ए इस संबंध में विवाद कर रहा है।
- ब. यह तथ्य कि संबद्ध विदेशी उत्पादक वेशी क्षमता का सामना कर रहे हैं, स्वयं में ही यह दर्शाने के लिए पर्याप्त है कि यदि पाटनरोधी शुल्क को समाप्त कर दिया जाता है तो वे अपनी वेशी क्षमताओं का विपथन भारतीय बाजार में करेंगे। व्यवसाय की यह सामान्य स्थिति है कि जिस उत्पादक की क्षमताओं का पूरा-पूरा उपयोग नहीं हो पाता है वह ऐसी बाजार की तलाश में रहता है जहां उसके उत्पाद की बिक्री हो सके।
- भ. घरेलू उद्योग की सुभेद्यता इस साधनके अभाव में देखी जा सकती है। यह तथ्य कि आयात कीमत घरेलू उद्योग कीमतों से कम है स्पष्ट: सिद्ध करता है कि घरेलू उद्योग पाटनरोधी शुल्क समाप्त कर दिए जाने की स्थिति में सुभेद्य हो जाएगा।
- म. टायर्स क्षेत्र में इस उत्पाद के लगभग 11 बड़े उपभोक्ता हैं जो विभिन्न प्रदायकों द्वारा प्रस्तुत की जा रही संगत कीमत के आधार पर विभिन्न स्रोतों से कच्चे माल का अधिप्रापण करते हैं। अतः घरेलू उद्योग क्षति के प्रति स्पष्ट रूप से सुभेद्य है।
- य. घरेलू उद्योग ने सार्वजनिक सुनवाई के दौरान यह उल्लेख किया कि कम्पनी द्वारा इस उत्पाद के पाटन से कम्पनी को वित्तीय घाटा हुआ है। वास्तव में घरेलू उद्योग ने अपनी

- विभिन्न वार्षिक रिपोर्टों से विवरण लिए हैं और यह उल्लेख किया है कि कम्पनी ने विशेषज्ञ रसायनों में वित्तीय घाटा सहन किया है।
- कक. के के पी सी के दाहेज संयंत्र के बारे में दिए गए तर्क के संबंध में याचिकाकर्ता ने कहीं भी इस तथ्य का उल्लेख नहीं किया है कि इस संयंत्र का वाणिज्यिक उत्पादन नवम्बर, 2012 में शुरू हो गया था। इस संयंत्र ने नवम्बर, 2012 में परीक्षण उत्पादन शुरू किया था और मार्च, 2013 में वाणिज्यिक उत्पादन प्रारंभ हुआ।
- खख. एन ओ सी आई एल इससे पहले अपने पुराने संयंत्र में 4-एन डी पी ए- 4ए डी पी ए और पी एक्स-13 का उत्पादन कर रहा था। दाहेज में एक नए संयंत्र की स्थापना के परिणामस्वरूप 4-एन डी पी ए को 4-ए डी पी ए में परिवर्तित करनेकी जरूरत नहीं है क्योंकि दाहेज में 4-ए डी पी ए का विनिर्माण हो रहा है अब कम्पनी अपने नए संयंत्र से मध्यवर्ती 4-एडी पी ए प्राप्त करने के पश्चात अपने पुराने संयंत्र पर पी एक्स-13 का उत्पादन कर रही है।
- गग. इस तर्क के संबंध में कि प्रक्षेपित भावी घटनाओं का विश्लेषण किए जाने की आवश्यकता है, प्राधिकारी को इस जांच की अवधि के आधार पर वर्तमान मामले में पैरामीटरों का निर्धारण करना अपेक्षित है। चूंकि संगत अवधि के दौरान देश में भारी मात्रा में आयात हुए हैं और यह आयात पाटित कीमतों पर किए गए हैं जिसके कारण घरेलू उद्योग को क्षति हुई है, इसलिए जांच की अवधि के पश्चात की घटनाएं पूर्णतया असंगत हैं।
- घघ. याचिकाकर्ताओं ने यह कभी भी उल्लेख नहीं किया कि दाहेज में उत्पादन शुरू होने से लागत में भारी बचत हुई है। वास्तव में इस समय याचिकाकर्ता की उत्पादन लागत विगत में उसकी उत्पादन लागत की तुलना में बहुत अधिक है। इसके अतिरिक्त, दाहेज संयंत्र जांच की अवधि तक पूर्णतया असंगत है। विश्लेषण में संयंत्र की लागत को शामिल नहीं किया गया है।
- ड.ड. रक्षोपाय शुल्क के संबंध में दिए गए तर्क के बारे में यह कहा जा सकता है कि रक्षोपाय शुल्क का अधिरोपण इस ढंग से किया गया था कि यह तभी देय था जब देय पाटनरोधी शुल्क रक्षोपाय शुल्क से कम हो।
- चच. यह तर्क दिया गया कि याचिकाकर्ता रक्षोपाय शुल्क होने के बावजूद अपनी कीमतों में वृद्धि नहीं कर सका। याचिकाकर्ता बाजार में उतनी हिस्सेदारी नहीं बढ़ा सका जितनी वह बढ़ा सकता था क्योंकि निर्यातकों ने समस्त शुल्कों का नियोजन कर रखा था। याचिकाकर्ता अपनी निर्यात बाजार खो रहा था क्योंकि सम्बद्ध निर्यातकों द्वारा निर्यात बाजार में भारी पाटन किया जा रहा था। के के पी सी को कम कीमतों पर 4-एडीपीए प्राप्त होने से के के पी सी को सम्पूर्ण विश्व में इस उत्पाद का पाटन करने में सहायता मिल रही थी। निर्यात में कमी के कारण याचिकाकर्ता की उत्पादन लागत में वृद्धि नहीं हुई थी वास्तव में उत्पादन लागत का अधिकांश भाग परिवर्तनशील लागत होती है।
- छछ. दोहरा उपचार प्राप्त होने के बावजूद भी घरेलू उद्योग को आयातों के कारण क्षति पहुंची है। याचिकाकर्ता उस सीमा तक पाटन शुल्क प्राप्त करने का हकदार है जिस सीमा तक इन आयातों का पाटन किया जाता है। चूंकि यह पाटन शुल्क घरेलू उद्योग द्वारा सहन की गई क्षति का पूर्णतया निराकरण नहीं करता है इसलिए घरेलू उद्योग में उस क्षति के लिए जिसका समाधान नहीं किया गया है, रक्षोपाय शुल्क अधिरोपित करने का अनुरोध किया है।

- जज. आंतरिक बाजार प्रतिस्पर्धा के संबंध में लैनिक्सिस ने अपना संयंत्र किसी अन्य जगह पर अंतरित करने के उद्देश्य से भारत में उत्पादन बंद कर दिया था। इस अवधि के दौरान लैनिक्सिस ने आयातों का सहारा लिया और लैनिक्सिस द्वारा की गई बिक्रियों को आयातों और इस अवधि के दौरान आयातों के बाजार हिस्से में शामिल किया गया। नए स्थान पर अपना उत्पादन फिर से प्रारंभ करने के पश्चात लैनिक्सिस अपने निजी उत्पादन से बिक्री कर रहा है इस बिक्री को घरेलू उत्पादक द्वारा की गई बिक्री के रूप में बताया गया है। चूंकि यह सभी बिक्रियां लैनिक्सिस द्वारा की गई हैं इसलिए यह एक साथ देखा जाना चाहिए कि क्या यह बिक्रिया अपने उत्पादन से की गई हैं या आयातों के जरिए।
- झझ. यह देखा जा सकता है कि लैनिक्सिस की बाजार हिस्सेदारी में वृद्धि हुई है जबकि अन्य भारतीय उत्पादकों के बाजार हिस्से में गिरावट आई है जो स्पष्टतः यह प्रदर्शित करता है कि अन्य भारतीय उत्पादकों के बाजार हिस्से में लैनिक्सिस के कारण वृद्धि हुई है। लैनिक्सिस ने आयात करने के बजाय अपने माल का उत्पादन करना प्रारंभ कर दिया है।
- जज. यह तथ्यात्मक रूप से गलत है कि 50 प्रतिशत आयात शुल्क मुक्त स्कीम के अंतर्गत किए जाते हैं। वास्तव में टायर उद्योग के निर्यात, ए टी एन ए द्वारा प्रकाशित आंकड़ों से यह सिद्ध होता है कि 12 से 15 प्रतिशत के क्षेत्र में आते हैं। इसके अतिरिक्त अधिकांश आयात शुल्क संदत्त आधार पर किए जाते हैं जहां घरेलू उद्योग अपने उत्पाद की सफ़ाई बिक्री कर सकता है। इसके शुल्क प्रदत्त आयात जिनका उपभोक्ताओं द्वारा आयात किया जा रहा है घरेलू उद्योग को भारी मात्रातक क्षति कारित कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त आयात, चाहें वह शुल्क मुक्त हों या शुल्क संदत्त, उनका घरेलू उद्योग पर विपरीत प्रभाव ही पड़ता है क्योंकि घरेलू उद्योग अपनी कीमत का निर्धारण आयात कीमत समतुल्यता के आधार पर करता है। इसलिए यदि 100 प्रतिशत निर्यात शुल्क मुक्त के अंतर्गत किए जाते हैं तो इसका घरेलू उद्योग पर कीमत प्रभाव होगा। यह एक सर्वसम्मत तथ्य है कि घरेलू उद्योग की कीमतें समतुल्यता के आधार पर निश्चित की जाती हैं।
- टट. याचिकाकर्ता ने निर्यात बाजार के लिए किसी क्षमता का निर्धारण नहीं किया है। चूंकि घरेलू बाजार में कीमत अधिक है इसलिए घरेलू उद्योग की पहली अधिमानता घरेलू बाजार ही होती है।
- ठठ. यह तर्क दिया गया था कि वित्त वर्ष 2012-13 के दौरान आवेदक ने एक ऐसे संयंत्र पर लागत व्यय किया था जिसकी 18,500 एम ओ 4-एडीपीए उत्पादन करने की है जबकि निर्धारक कारक अर्थात् 8500 एम ओ पी एकस-13 का उत्पादन करने की क्षमता में कोई परिवर्तन नहीं आया। याचिकाकर्ता ने इस नए संयंत्र पर ऐसा कोई व्यय नहीं किया जिसे निदिष्ट प्राधिकारी को दिए गए आंकड़ों में दावा की गई उत्पादन लागत में शामिल किया गया हो। वास्तव में, दाहेज पर किए गए किसी भी प्रकार के व्यय को निदिष्ट प्राधिकारी को दिए गए लागत संगणन में शामिल नहीं किया गया है।
- डड. यह तर्क दिया गया कि चूंकि आवेदक के निर्यातों में वर्ष 2009-10 में भारी कमी आई इसलिए उत्तरवर्ती वर्षों में लागत और लाभ की तुलना करने हेतु लागत आबंटन को आधार वर्ष के आनुपातिक बनाना चाहिए। इस दावे का समर्थन अनुबंध-3 द्वारा नहीं किया जाता है जिसमें उत्पादित मात्रा के लिए उत्पादन लागत का निर्धारण करने का प्रावधान है।

००. यूरोपियन यूनियन से आयातों की जांच करने के लिए यह आवश्यक है कि पी एक्स 13 के आयातों पर पाउनरोधी शुल्क लगा हुआ है। अतः यह आयात ऐसे पाउन देशों से हैं जिन पर अब पाउनरोधी शुल्क लगा हुआ है। यह आयात गैर पाटित आयात नहीं हैं। नियमों के अंतर्गत प्राधिकारी को गैर पाटित आयातों के प्रभाव का मूल्यांकन करने की जरूरत होती है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

49. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग को क्षति के संबंध में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए प्रस्तुतीकरणों और उठाए गए मुद्दों की जांच निम्नवत की है:-

- क. इस तर्क के संबंध में प्रत्येक रबड़ रसायन का मूल्यांकन अलग-अलग किया जाना चाहिए, यह नोट किया जाता है कि वर्तमान निर्णायक समीक्षा जांच में कई विभिन्न प्रकार के रबड़ रसायन शामिल हैं। यह सभी प्रकार के उत्पाद परस्पर समान उत्पाद नहीं हैं। चूंकि विभिन्न प्रकार के रबड़ रसायनों के लिए समर्पित उत्पादन सुविधाएं होती हैं। इसलिए प्राधिकारी ने प्रत्येक संबद्ध रबड़ रसायन से घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति के लिए अलग-अलग जांच की है।
- ख. इस तर्क के संबंध में कि लगभग 50 प्रतिशत आयात शुल्क मुक्त स्कीम के अंतर्गत किया जाता है और घरेलू उद्योग में शुल्क प्रभावी होने के बावजूद अपनी क्षमता में वृद्धि नहीं की है, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि इन हितबद्ध पक्षकारों ने इसे सिद्ध करने का कोई तर्क नहीं दिया है और घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि लगभग 12 से 15 प्रतिशत मांग को आयातों द्वारा पूरा किया जा सकता है क्योंकि भारत सरकार ने जहां टायरों का निर्यात किया जाता है वहां शुल्क से छूट दे रखी है। घरेलू उद्योग द्वारा टायर निर्यातों से संबंधित प्रदान कराई गई सूचना यह दर्शाती है कि टायर उद्योग द्वारा निर्यात, सीएट और बालकृष्ण को छोड़कर केवल 3-16 प्रतिशत के आस पास थे। सीएट द्वारा 22 प्रतिशत निर्यात किए गए हैं तथापि, 6-पी पी डी का आयात देश में देश में इस उत्पाद की कुल मांग का 55 से 62 प्रतिशत बना रहा।
- ग. इस तर्क के संबंध में कि यदि घरेलू उद्योग अपनी 100 प्रतिशत क्षमता से उत्पादन करने लगे तब भी वह बाजार की कुल मांग के लगभग 46 प्रतिशत की ही आपूर्ति कर सकता है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि (i) भारत में विचाराधीन उत्पाद के लिए क्षमता पर समग्र रूप से विचार किया जाना चाहिए और जांच की अवधि के दौरान मांग के साथ इसकी तुलना इस प्रयोजन से और घरेलू उद्योग की क्षमता के साथ इसकी तुलना करना उपयुक्त नहीं होगा (ii) घरेलू उद्योग की वर्तमान क्षमता का भारी मात्रा में उपयोग नहीं किया जा सका और इस लिए आयातों के वर्तमान स्तर पर मांग-आपूर्ति का अंतर न्यायोचित नहीं होगा। (iii) मर्कम लिमिटेड ने उल्लेख किया है कि वह कम कीमत वाले आयातों के मद्देनजर अपने उत्पाद का उत्पादन और उसकी बिक्री नहीं कर सका और उसकी कंपनी की क्षमताएं लगभग पूर्णतया अनुप्रयुक्त ही रहीं (iv) पाउनरोधी नियमावली में यह अपेक्षा नहीं की जाती है कि घरेलू उद्योग को पाउन के कारण होने वाली क्षति का समाधान प्राप्त करने के लिए प्रयोक्ता उद्योग की मांग को पूरा करना चाहिए।

- घ. घरेलू उद्योग द्वारा पी एक्स-13 के संबंध में, घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि इसे अपने नुकसान को कम करने के लिए निर्यात करना पड़ा। प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग की निर्यात कीमत हमेशा ही घरेलू बिक्री कीमत से कम ताकि उन आयात कीमतों से अधिक रही है जिन पर उस वस्तु का भारत में आयात किया जाता है। यह दर्शाने के लिए रिकॉर्ड में कोई साक्ष्य नहीं दिया गया है कि घरेलू उद्योग ने निर्यात बाजार को अधिमानता देते हुए घरेलू बाजार में बिक्री करने से मना कर दिया।
- ड. विदेशी उत्पादकों की क्षमता के संबंध में प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग ने अपनी याचिका में संबद्ध देशों में विदेशी उत्पादकों की क्षमता और उन देशों में रबड़ रसायनों से संबंधित मांग दोनों के संबंध में सूचना प्रदान कराई है। अतः यह नोट करते हैं कि संबद्ध देशों में विदेशी उत्पादकों की पर्याप्त बेशी क्षमताएं हैं और यह कि मौजूदा पाटनरोधी शुल्क का प्रतिसंग्रहण कर लिए जाने से उन सभी मात्रा का पाटित कीमतों पर भारत की ओर विपथत होने का अनुमान है। जिससे घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति होगी।
- च. के के पी सी ने उल्लेख किया है कि सम्बद्ध वस्तु का उनका काराबार के के पी सी के कुल कारोबार का 1 प्रतिशत बनता है और इसलिए के के पी सी को होने वाला घाटा कंपनी द्वारा पाटन के परिणामस्वरूप नहीं हो सकता है। प्राधिकारी के के पी सी की वर्ष 2012 की वार्षिक रिपोर्ट से एक वास्तविक विवरण नोट करते हैं जो निम्नलिखित है:
- “-----हमारी विशेषज्ञता रसायन व्यवसाय को 3वर्षों में अपनी पहली क्षति कुछ प्रतिस्पर्धियों की कम कीमत की कार्यनीति द्वारा प्रतिस्पर्धा तेज किए जाने के कारण हुई है-”
- छ. दाहेज स्थित एन ओ सी आई एल के संयंत्र के संबंध में प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि इस संयंत्र का परीक्षण उत्पादन नवम्बर, 2012 में और वाणिज्यिक उत्पादन मार्च 2013 में शुरू हुआ था। इससे पहले एन ओसी आई एल पी एक्स-13 का उत्पादन 4-एन डी पी ए के जरिए अपने पुराने संयंत्र पर करता था। दाहेज स्थित नए संयंत्र का वाणिज्यीकरण हो जाने के पश्चात इसे अब 4-एन डी पी ए को 4 ए डी पी ए में परिवर्तित करने की जरूरत नहीं रह गई है। अब एन ओ सी आई एल (जांच की अवधि के पश्चात) पी एक्स-13 का उत्पादन अपने दाहेज स्थित नए संयंत्र ने विनिर्मित मध्यवर्ती 4 ए डी पी ए का प्रयोग करके थाणे संयंत्र पर करता है। यह नोट किया जाता है कि प्रतिवादी पक्षकारों के दावे के विपरीत याचिकाकर्ता की उत्पादन लागत इस समय विगत की उत्पादन लागत की तुलना में बहुत अधिक है। तथापि, दाहेज संयंत्र की लागत वर्तमान जांच में संयंत्र नहीं है। इसलिए ऐसी कोई 'असाधारण लागत' नहीं है जिसका दाहेज संयंत्र के संबंध में निराकरण करने की जरूरत हो।
- ज. एक प्रतिवादी पक्षकार ने यह दावा किया है कि क्षति की संभावना के किसी निर्धारण में रक्षोपाय शुल्क को ध्यान में रखना चाहिए। इसके अतिरिक्त प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि रक्षोपाय शुल्क केवल वहीं संदेह बनाया गया जहां पाटनरोधी शुल्क रक्षोपाय शुल्क से कम था।
- झ. इस तर्क के संबंध में कि घरेलू उद्योग शुल्क के बावजूद पी एक्स-13 के संबंध में अपनी स्थिति में सुधार नहीं कर सका। प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देशों से

- निर्यातकों/उत्पादकों ने शुल्क का अवशोषण कर लिया है जैसा कि वर्तमान जांच अवधि में संबंधित पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन द्वारा स्पष्ट होता है।
- ज. घरेलू उद्योग के इस दावे के संबंध में कि क्षति रक्षोपाय जांच में संबंधित आयातों के कारण हुई है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि इससे याचिकाकर्ता को पाटन द्वारा कारित की जा रही क्षति का हल निकालने के लिए पाटनरोधी शुल्क के विस्तार की मांग करने से नहीं रोका जा सकता है।
- ट. आंतरिक बाजार प्रतिस्पर्धा के संबंध में प्राधिकारी घरेलू उद्योग के इस तर्क को नोट करते हैं कि लेनिक्सिस ने अपने संयंत्र का प्रतिस्थापन करने के उद्देश्य से भारत में अपना उत्पादन अस्थायी रूप से बंद कर रखा है। इस दौरान उसने आयातों का आश्रय लिया है। एक बार उसका संयंत्र पुनर्स्थापित हो जाने और उसमें उत्पादन फिर से शुरू हो जाने पर आयातों की जरूरत नहीं रहेगी। इसलिए लेनिक्सिस द्वारा किए गए उत्पादन की जांच इसी आलोक में की गई है। अन्य भारतीय उत्पादकों के बाजार हिस्से में कमी आई है। इसके अतिरिक्त जांचकीअवधि के दौरान संबद्ध देशों के आयातों द्वारा घरेलू बिक्री कीमत में सकारात्मक कीमत अधोरदन किया गया है।
- ठ. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग ने अपनी क्षमता का निर्यात के लिए और घरेलू उत्पादन के लिए विशेषरूप से निर्धारण नहीं किया है। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग का यह दावा कि चूंकि घरेलू कीमतें अधिक है इसलिए उसकी पहली अधिमानता घरेलू बाजार में बिक्री करना है और यह केवल ऐसी स्थिति में किया जा सकता है कि वह विचाराधीन उत्पाद का निर्यात करने में अक्षम है।
- ड. एक हितबद्ध पक्षकार द्वारा यह दावा किया गया कि वित्त वर्ष 2012-13 के दौरान आवेदक ने एक ऐसे संयंत्र पर लागत व्यय किया था जिसकी 18,500 एम ओ 4-एडीपीए उत्पादन करने की है जबकि निर्धारक कारक अर्थात् 8500 एम ओ पी एक्स-13 का उत्पादन करने की क्षमता में कोई परिवर्तन नहीं आया। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि इस संबंध में याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना का प्राधिकारी द्वारा सत्यापन में दाहेज संयंत्र में होने वाले व्यय को शामिल नहीं किया गया है।
- ण. घरेलू उद्योग द्वारा बिक्री पर हुई क्षति की रिपोर्ट के संबंध में प्राधिकारी द्वारा केन्द्रीय उत्पाद कर आयुक्त से सूचना मंगाने के संबंध में प्राधिकारी यह विचार करते हैं कि वर्तमान मामले में यह व्यवस्था अनिवार्य या वांछित नहीं है। प्राधिकारी ने प्रदान कराए गए आंकड़ों का सत्यापन किया और यह विचार करते हैं कि घरेलू उद्योग को विचाराधीन उत्पाद के संबंध में क्षति हुई है।
- त. एक पक्षकार ने दावा किया है कि चूंकि आवेदक के निर्यातों में वर्ष 2009-10 के पश्चात भारी कमी आई है इसलिए लागत का आबंटन, उत्तरवर्ती वर्षों में लागत एवं लागत की तुलना करने के लिए आधार वर्ष के आनुपातिक होना चाहिए। प्राधिकारी इस संबंध में यह नोट करते हैं कि विचाराधीन उत्पाद से लाभ/हानि का निर्धारण इस उत्पाद के उत्पादन पर होने ले व्यय पर विचार करते हुए किया जाना अपेक्षित है। याचिकाकर्ता ने घरेलू और निर्यात बाजारों के लिए प्रक्रिया अलग-अलग क्षमताओं का निर्धारण नहीं किया है।
- त. आवेदक ने दावा किया है कि यूरोप से होने वाले आयातों का मूल्यांकन क्षति के अन्य कारकों के अंतर्गत करने की जरूरत नहीं है क्योंकि यूरोप के उत्पादक बाजार से निर्गत हो

रहे थे। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि यूरोप से आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगा था और इसलिए यह पाटित आयात हैं।

- थ. जहां तक याचिकाकर्ता द्वारा दाहेज में किए गए निवेश का संबंध है प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि याचिकाकर्ता ने 4-ए डी पी ए विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन करने में प्रयोग होने वाला एक मध्यवर्ती का उत्पादन करने के लिए संयंत्र स्थापित किया है। इस संयंत्र में वाणिज्यिक उत्पादन जांच अवधि के पश्चात प्रारंभ हुआ था। इसके अतिरिक्त याचिकाकर्ता द्वारा दाहेज में किए गए किसी भी व्यय को विचाराधीन उत्पाद के लिए विचारित व्यय में शामिल नहीं किया गया है। वर्तमान निर्धारण में भरोसा किए गए लाभ/हानि में याचिकाकर्ता द्वारा दाहेज में किए गए व्यय को शामिल नहीं किया गया है। पुनः यह नोट किया जाता है कि याचिकाकर्ता ने दावा किया है कि दाहेज संयंत्र में उत्पादन शुरू हो जाने के पश्चात इसकी पी एक्स -13 की क्षमता बढ़कर 14000 एम टी हो गई है। याचिकाकर्ता ने सनदी इंजीनियर का प्रमाणपत्र प्रस्तुत किया है।

50. वर्तमान निर्णायक समीक्षा जांच में विभिन्न प्रकार के रबड़ रसायन शामिल हैं। यह सभी प्रकार परस्पर समान उत्पाद नहीं हैं। चूंकि सभी रबड़ रसायनों के लिए उत्पादन सुविधाएं अलग-अलग हैं इसलिए प्राधिकारी ने प्रत्येक संबद्ध रबड़ रसायन से घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति की जांच की है जैसाकि मूल जांच में किया गया है।

पाटित आयातों के अलावा अन्य कारक

51. पाटित आयातों के अलावा अन्य कारकों के संबंध में विरोधकर्ता हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निम्नलिखित प्रस्तुतीकरण किए गए हैं:-

- (i) आवेदक ने संबद्ध वस्तु पर मौजूद रक्षोपाय शुल्क का विस्तार करने के लिए एक याचिका दायर की। घरेलू उत्पादकों ने उस समय रक्षोपाय शुल्क की मांग की जब उनको हुई क्षति पाटित आयातों के कारण नहीं हुई थी। उसके आलोक में आवेदक से पाटित आयातों के अलावा अन्य आयातों से क्षति का परिमाण और उसकी अभिव्यक्ति करने की अपेक्षा की गई।
- (ii) घरेलू बिक्री के संबंध में घरेलू उत्पादकों की हिस्सेदारी में सतत रूप से वृद्धि हुई है। यह हिस्सेदारी वर्ष 2009-10 में 100 से बढ़कर वर्ष 2010-11 में 132, 2011-12 में 168 से बढ़कर जांच की अवधि के दौरान 173 हो गई। इसके साथ ही एन ओ सी आई एल की बिक्री में गिरावट आई है। एन ओ सी आई एल की बिक्री वर्ष 2009-10 में 100, वर्ष 2010-11 में 90, 2011-12 में 78 और जांच की अवधि के दौरान 76 थी। घरेलू उत्पादकों के बीच परस्पर प्रतिस्पर्धा क्षति का वास्तविक कारण है क्योंकि अन्य घरेलू उत्पादक जो समान बाजार परिस्थितियों में प्रचालन कर रहे हैं आवेदक से संगत रूप से बेहतर निष्पादन करने में सक्षम हैं। इस अधिगम का समर्थन इजिप्ट-डिफिनिटिव एंटी डम्पिंग मीजर्स आन स्टील रबड़ फ्राम तुर्की, डब्ल्यू/डीएस 211/आर (1 अक्टूबर, 2002) में अपीलीय निकाय की व्यवस्था द्वारा किया जाता है जहां अपीलीय निकाय ने यह व्यवस्था की कि जांचकर्ता प्राधिकारी को घरेलू उद्योग की समग्र स्थिति का मूल्यांकन करने की आवश्यकता होती है।

- (iii) संबद्ध वस्तु के पचास प्रतिशत का प्रयोग परिष्कृत उत्पाद का विनिर्माण करने के लिए किया जाता है जिनका उत्तरवर्ती रूप से भारत को निर्यात किया जाता है। आयातित वस्तु उस भाग को पाटनरोधी शुल्क, रक्षोपाय, आधारभूत सीमाशुल्क तथा प्रतिवलनकारी शुल्क (उत्पाद कर के बराबर) सहित सभी शुल्कों से छूट दी जाती है। इसलिए यह तर्क दिया गया कि आयातित वस्तु के उस भाग का अवसारित मूल्य इन छूटों के कारण बहुत कम है और यह आवेदक द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु की कीमतों पर प्रत्यक्ष अधोगामी कीमत दबाव पातित करता है। जांचकर्ता प्राधिकारी को पाटित आयातों के क्षतिकारी प्रभाव तथा अन्य कारकों के क्षतिकारी प्रभाव को पृथक करना अपेक्षित है, अन्यथा ऐसा विश्लेषण क्षतिकारी प्रभावों के सम्यक कारणों का पता नहीं लगा पएगा। गुल अहमद टैक्सटाइल मिल्स बनाम काउंसिल मामला सी-638/11 (27 सितम्बर, 2011) में यूरोपियन यूनियन के सामान्य न्यायालय (सातवां चैम्बर) का निर्णय विधि के उपर्युक्त सिद्धांत के लिए भरोसेमंद होगा।
- (iv) यूरोप में उदभावित अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों का भी प्राधिकारी द्वारा "क्षति के अन्य कारक" के रूप में मूल्यांकन किया जा सकता है। इस तरह के विश्लेषण के आवेदक के इस तर्क के कारण नकारा नहीं जाना चाहिए कि यूरोप में रबड़ विनिर्माता बाजार से निर्गम कर रहे हैं। ऐसा कोई भी निर्णय यूरोपीय आयोग द्वारा यूरोप में रबड़ रसायनों के विनिर्माताओं पर समुच्चयीकरण के लिए अधिरोपित जुर्माने के कारण हुआ है।
- (v) यदि आवेदक क्षति का दावा कर रहा है तो प्राधिकारी उनको हुई इस क्षति की रिपोर्ट के संबंध में क्षेत्राधिकारी वाले केंद्रीय उत्पादकर आयुक्ता लाभ से सूचना मंगा सकते हैं। यदि आवेदक ने संव्यवहार मूल्य पर उत्पाद का का भुगतान किया है तो उस मूल्य को भी "लाभदायक बिक्री" के रूप में लिया जाना चाहिए जब तक कि उसकी सूचना केंद्रीय उत्पाद कर प्राधिकारी को न दी दी जाए कि बीजकों में उल्लिखित मूल्य घाटा करने वाली बिक्रियां थीं। यदि आवेदक ने अपनी बिक्री कीमतों का केंद्रीय उत्पाद कर प्राधिकारियों के समक्ष घाटा करने वाली कीमतों के रूप में दावा किया है तो ऐसा दावा पाटनरोधी महानिदेशक के समक्ष नहीं किया जा सकता है।
- (vi) यह प्रस्तुत किया जाता है कि आवेदक संबद्ध वस्तु का अक्षम एवं अकुशल उत्पादक है तथा उसे पाटनरोधी एवं रक्षोपाय शुल्क के रूप में संरक्षण प्राप्त प्राप्त होते हुए भी वह 6पीपीडी का पर्याप्त मात्रा में उत्पादन तथा आपूर्ति करने के योग्य नहीं है। उपर्युक्त तर्क के समर्थन में यह तथ्य प्रस्तुत किया जाता है कि रक्षोपाय शुल्क का अधिरोपण करने के पश्चात उस कीमत में जिसपर पीएक्स-13 उपभोक्ता उद्योग को उपलब्ध था, पहले उपलब्ध कीमत की तुलना में 30 प्रतिशत तक वृद्धि हो गई। रक्षोपाय शुल्क का अधिरोपण करने के परिणामस्वरूप आवेदक को अपनी बिक्री कीमत में वृद्धि करने का पर्याप्त अवसर था। तथापि, यह न तो अपनी बिक्री कीमत में वृद्धि कर सका और न ही अपनी बिक्री मात्रा/बाजार हिस्से में वृद्धि कर सका और उसने बड़ी हुई दरों पर निर्यात बाजार भी खो दी। यह प्रस्तुत किया जाता है कि आवेदक को क्षति के आंतरिक कारण से घाटा हुआ है और इस प्रकार शुल्क में विस्तार नहीं किया जाना चाहिए।

प्राधिकारी द्वारा जांच

52. प्राधिकारी ने पाटित आयातों के अलावा अन्य कारकों के संबंध में अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए प्रस्तुतिकरणों एवं उठाए गए मुद्दों के संबंध में प्राधिकारी ने निम्नलिखित जांच की है :

- (i) जहां तक इस तर्क का संबंध है कि याचिकाकर्ता ने रक्षोपाय शुल्क के अधिरोपण की मांग की है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि किसी उत्पाद पर पाटनरोधी शुल्क तथा रक्षोपाय शुल्क दोनों का अधिरोपण एक साथ किया जा सकता है। केवल व्यवधान यह है कि घरेलू उद्योग को एक ही क्षति के लिए दोहरा संरक्षण प्रदान नहीं किया जाना चाहिए। इस संबंध में यह नोट किया जाना चाहिए कि केंद्रीय सरकार द्वारा अधिरोपित रक्षोपाय शुल्क स्पष्टतः यह उल्लेख करती है कि पाटनरोधी शुल्क की प्रमात्रा को रक्षोपाय शुल्क की प्रमात्रा से घटा दिया जाएगा और केवल उसके अंतर को ही रक्षोपाय शुल्क के रूप में प्रभारित किया जाएगा। अतः यह नोट किया जाता है कि रक्षोपाय शुल्क तथा पाटनरोधी शुल्क की प्रमात्रा घरेलू उद्योग की क्षति की प्रमात्रा से अधिक नहीं होगी।
- (ii) जहां तक इस तर्क का संबंध है कि लगभग 50 प्रतिशत आयात शुल्क मुक्त श्रेणी के अंतर्गत बताए गए हैं जहां सीमाशुल्क, पाटनरोधी शुल्क और रक्षोपाय शुल्क लागू नहीं होता है, यह स्पष्ट किया जाता है कि प्राधिकारी ने भारित औसत कीमत अधोरदन का निर्धारण किया है।
- (iii) जहां तक यूरोप से आयातों का संबंध है प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि यूरोप से होने वाले आयातों पर पाटनरोधी शुल्क पहले से ही अधिरोपित है। नियमावली के अंतर्गत प्राधिकारी को उस क्षति से पृथक करना चाहिए जहां शुल्क नहीं लगा है। घरेलू उद्योग को अन्य पाटित आयातों से होने वाली क्षति से पृथक नहीं करना चाहिए।
- (iv) जहां तक केंद्रीय उत्पाद कर प्राधिकारियों को क्षति रिपोर्ट करने और उत्पाद कर शुल्क का भुगतान करने का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि उन्होंने केवल सत्यापित आंकड़ों को ही अपनाया है और यह पाया है कि घरेलू उद्योग को इस विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन और बिक्री पर घरेलू बाजार में वित्तीय घाटा हुआ है।
- (v) जहां तक इस तर्क का संबंध है कि घरेलू उद्योग अक्षम एवं अकार्यकुशल उत्पादक है, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश क्षति मार्जिन और पाटन मार्जिन से न्यूनतम पर की जाती है। इसके अतिरिक्त घरेलू उद्योग के कार्यनिष्पादन ने इस अवधि में गिरावट का प्रदर्शन किया है। हितबद्ध पक्षकारों का यह तर्क नहीं है कि पहले घरेलू उद्योग एक योग्य एवं कार्य कुशल उत्पादक था और वह अब अक्षम एवं अकार्यकुशल उत्पादक हो गया है। घरेलू उद्योग के निष्पादन में भी कार्यकुशलता के उसी स्तर तक गिरावट आई है।
- (vi) जहां तक इस तर्क का संबंध है कि घरेलू उद्योग इस वस्तु का उत्पादन करने एवं उसकी आपूर्ति करने में सक्षम नहीं है, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि याचिकाकर्ता ने अपने कुछ उत्पादों का उत्पादन प्रतिवादी निर्यातकों के क्षमता उपयोग से कहीं अधिक क्षमता उपयोग के स्तर से किया है। यह उपपादित किया जाता है कि घरेलू उद्योग का वर्ष 2009-10 में 6पीपीडी का उत्पादन करने का 85 प्रतिशत क्षमता उपयोग था। हितबद्ध पक्षकारों ने यह दर्शाने के लिए साक्ष्य उपलब्ध नहीं कराया है कि घरेलू उद्योग क्रेताओं द्वारा दिए गए संपुष्ट आर्डरों की पूर्ति के लिए माल उत्पादन करने और उसकी आपूर्ति करने में सक्षम नहीं रहे हैं।
- (vii) जहां तक इस तर्क का संबंध है कि घरेलू उद्योग (पीएक्स-13 पर) रक्षोपाय शुल्क लगे होने से बावजूद भी अपनी कीमतें बढ़ाने में सक्षम नहीं हुआ, प्राधिकारी ने आयातों की अवसारित कीमत का विश्लेषण सीमाशुल्क, पाटनरोधी शुल्क और रक्षोपाय शुल्क जोड़ने के पश्चात किया है और यह घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से सदैव कम रहा है।

क्षति का संचयी आकलन

53. नियमावली के अनुबंध-II (ii) के अनुसार यदि किसी मामले में एक से अधिक देश से आयातों की एक साथ पाटनरोधी जांच की जा रही है तो प्राधिकारी को ऐसे आयातों के प्रभावों का संचयी आकलन करना होता है, केवल तभी यह निर्धारित करता है कि :

- ख) प्रत्येक देश से आयातों के संबंध में पाटन का मार्जिन निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में अभिव्यक्त 2 प्रतिशत से अधिक है और प्रत्येक देश से आयातों की मात्रा समान वस्तु के आयातों के 3 प्रतिशत से कम है अथवा जहां अलग-अलग देशों से निर्यात 3 प्रतिशत से कम है, सामूहिक रूप से आयात समान वस्तु के आयातों का 7 प्रतिशत से अधिक है, और
- ग) आयातों के प्रभावों का संचयी आकलन आयातित वस्तु तथा समान घरेलू वस्तु के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थिति के आलोक में उपयुक्त है।

54. वर्तमान मामले में 6पीपीडी के संबंध में जांच एक से अधिक देश के लिए है। इसलिए प्राधिकारी ने यह जांच की है कि क्या घरेलू उद्योग को क्षति का निर्धारण इन दोनों स्रोतों से 6पीपीडी के बारे में संचयी रूप से किया जाना चाहिए। प्राधिकारी ने यह पाया है कि प्रत्येक संबद्ध देश के मामले में पाटन का मार्जिन 2 प्रतिशत से अधिक है और प्रत्येक देश से आयातों की मात्रा 3 प्रतिशत से अधिक है। निम्नलिखित के मद्देनजर इन दो देशों से क्षति का संचयी आकलन किया जाना आवश्यक है :

- i) संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु का आयात समान प्रशुल्क वर्गीकरण के अंतर्गत किया गया है;
- ii) प्राधिकारी ने यह पाया है कि आयातित संबद्ध वस्तु घरेलू रूप से उत्पादित 6पीपीडी के वाणिज्यिक प्रतिस्थानी है;
- iii) प्राधिकारी को प्रस्तुत की गई सूचना यह स्पष्ट संकेत देती है कि संबद्ध देशों से किए गए निर्यात उसी बाजार में प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं और वे समान उत्पाद हैं।
- iv) कोरिया आरपी और चीन से आयात उपभोक्ताओं की उसी श्रेणी द्वारा किए गए हैं जो इस उत्पाद की खरीद घरेलू उद्योग से कर रहे थे।

55. प्राधिकारी यह धारित करते हैं कि 6पीपीडी के पाटित आयातों का घरेलू रूप से उत्पादित समान वस्तु पर प्रभाव का संचयी रूप से आकलन करना उपयुक्त होगा।

बाजार हिस्से तथा मांग से हिस्से का आकलन

56. इस विचाराधीन उत्पाद की घरेलू खपत/मांग का परिकलन करने के लिए प्राधिकारी ने भारतीय उत्पादन तथा सभी स्रोतों से आयातों के जोड़ पर विचार किया है। भारतीय उत्पादों द्वारा किए गए निर्यातों का संगणन से अपवर्जन कर दिया गया जिससे कि स्पष्ट खपत का सुनिश्चयन हो सके।

57. यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग ने आयात मात्रा और मूल्य का निर्धारण गौण स्रोत अर्थात् अंतर्राष्ट्रीय बिजनेस सूचना सेवा (आई बी आई एस) मुंबई से संग्रहित आंकड़ों के आधार पर किया है। इससे पहले घरेलू उद्योग ने अपने प्रस्तुतिकरण में खेपवार आयातों की सूचना प्रस्तुत की थी। जांच के दौरान, प्राधिकारी ने डी जी आई एंड एस से उक्त जानकारी खेपवार से खेपवार उपलब्ध कराने का अनुरोध किया और उसे वह उपलब्ध हो गई। यह नोट किया गया कि चूंकि इस विचाराधीन उत्पाद के लिए कोई

समर्पित कोड नहीं है इसलिए इस विचाराधीन उत्पाद के आयातों याचिकाकर्ता द्वारा आई बी आई एस का आधार पर की गई रिपोर्ट डी जी सी आई एस द्वारा रिपोर्ट की गई आयातों की मात्रा की तुलना में आयातों की उच्चतर मात्रा का प्रदर्शन करती है और इसलिए डी जी सी आई एस से प्राप्त सूचना का प्रयोग नहीं किया जा सकता है और इसलिए प्राधिकारी ने आई बी आई एस में रिपोर्ट किए गए आयात आंकड़ों पर विचार किया है।

58. भारत में मांग निम्नवत है :

उत्पाद प्रकार	यूनिट	2009-10	2010-11	2011-12	जन.-दिस. 2012
एम बी टी	एमटी	1,450	1,477	1,385	1,372
सी बी एस	एमटी	3,171	3,513	4,325	4,263
टी डी क्यू	एमटी	6,581	7,973	8,135	7,923
पी वी आई	एमटी	1,717	1,694	1,569	1,907
टी एम टी	एमटी	1,843	1,591	1,744	1,679
पीएक्स-13	एमटी	14,311	14,851	16,003	18,033

59. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि एमबीटी और टीएमटी के अलावा शेष रबड़ रसायनों की मांग (सीबीएस, टीडीक्यू, पीवीआई और पीएक्स-13) में क्षति अवधि के दौरान सकारात्मक प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है।

पाटित आयातों का मात्रा प्रभाव

60. पाटित आयातों की मात्रा के संबंध में यह जांच की गई है कि क्या पाटित आयातों में भारत में उत्पादन क्या खपत से संगत रूप में या समग्र रूप में भारी वृद्धि हुई है। पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध II (ii) में प्रावधान किया गया है।

"पाटित आयातों की मात्रा की जांच करते समय उक्त प्राधिकारी यह विचार करेंगे कि क्या पाटित आयातों में भारत के उत्पादन या खपत के संबंध में संगत रूप से या समग्र रूप से भारी वृद्धि हुई है।"

आयात मात्रा और बाजार हिस्सा

61. आयातों की मात्रा को निम्नलिखित तालिका में प्रदान कराया गया है :

आयात मात्रा	यूनिट	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि
एम बी टी					
चीन	एम टी	865	797	768	550
वह देश जिन पर पाटनरोधी शुल्क (एडीडी) लगा है	एम टी	-	-	-	-
अन्य देश	एम टी	4	18	70	265
कुल आय	एम टी	869	816	838	815
सी बी एस					

चीन	एम टी	929	604	1,023	1,135
वह देश जिन पर पाटनरोधी शुल्क (एडीडी) लगा है	एम टी	-	-	-	-
अन्य देश	एम टी	356	705	1,034	832
कुल आय	एम टी	1,285	1,309	2,057	1,967
पी वी आई					
चीन	एम टी	707	830	985	1,192
वह देश जिन पर पाटनरोधी शुल्क (एडीडी) लगा है	एम टी	-	-	-	-
अन्य देश	एम टी	1	0	-	1
कुल आय	एम टी	707	831	985	1,193
पीएक्स-13					
चीन	एम टी	1,831	1,970	3,364	2,569
कोरिया	एम टी	6,030	5,541	4,504	5,726
संबद्ध देश	एम टी	7,860	7,511	7,868	8,294
वह देश जिन पर पाटनरोधी शुल्क (एडीडी) लगा है	एम टी	577	1,009	815	2,511
अन्य देश	एम टी	1,392	1,243	1,052	286
कुल आय	एम टी	9,828	9,763	9,735	11,092
टी डी क्यू					
चीन	एम टी	1,063	1,217	887	781
वह देश जिन पर पाटनरोधी शुल्क (एडीडी) लगा है	एम टी	-	-	-	-
अन्य देश	एम टी	1,256	1,035	12	317
कुल आय	एम टी	2,320	2,253	899	1,098
टी एम टी					
चीन	एम टी	572	352	324	244
वह देश जिन पर पाटनरोधी शुल्क (एडीडी) लगा है	एम टी	-	-	-	-
अन्य देश	एम टी	220	144	248	299
कुल आय	एम टी	792	496	572	543

62. उपर्युक्त तालिका से यह नोट किया जाता है कि :

क) पीएक्स-13, पीवीआई,क) (पीएक्स-13), सीबीएस के आयातों में पाटनरोधी शुल्क और रक्षोपाय शुल्क अधिरोपित होने (पीएक्स-13) के बावजूद क्षति अवधि के दौरा वृद्धि हुई है।
 ख) टीएमटी, ख) टीएमटी, एम्बीटी और टीडीक्यू के आयातों में अभिनव अवधि में गिरावट आई है परंतु यह पाटनरोधी शुल्क अधिरोपित होने के बावजूद भी बहुत अधिक बने रहे।

63. आयातों के हिस्से को निम्नलिखित तालिका में उपलब्ध कराया गया है :

आयातों का बाजार हिस्सा	यूनिट	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि
एम बी टी					
चीन	%	99.51	97.74	91.70	67.48
वह देश जिन पर पाटनरोधी शुल्क (एडीडी) लगा है	%	-	-	-	-
अन्य देश	%	0.49	2.26	8.30	32.52
कुल आय	%	100.00	100.00	100.00	100.00
सी बी एस					
चीन	%	72.26	46.15	49.74	57.69
वह देश जिन पर पाटनरोधी शुल्क (एडीडी) लगा है	%	-	-	-	-
अन्य देश	%	27.74	53.85	50.26	42.31
कुल आय	%	100.00	100.00	100.00	100.00
पी वी आई					
चीन	%	99.89	99.97	100.00	99.95
वह देश जिन पर पाटनरोधी शुल्क (एडीडी) लगा है	%	-	-	-	-
अन्य देश	%	0.11	0.03	-	0.05
कुल आय	%	100.00	100.00	100.00	100.00
पीएक्स-13					
चीन	%	18.63	20.18	34.56	23.16
कोरिया आरपी	%	61.35	56.76	46.26	51.62
संबद्ध देश	%	79.97	76.94	80.82	74.78
वह देश जिन पर पाटनरोधी शुल्क (एडीडी) लगा है	%	5.87	10.33	8.37	22.64
अन्य देश	%	14.16	12.73	10.81	2.58
कुल आय	%	100.00	100.00	100.00	100.00
टी डी क्यू					
चीन	%	45.84	54.04	98.72	71.15
वह देश जिन पर पाटनरोधी शुल्क (एडीडी) लगा है	%	-	-	-	-

अन्य देश	%	54.16	45.96	1.28	28.85
कुल आय	%	100.00	100.00	100.00	100.00
टी एम टी					
चीन	%	72.21	70.95	56.61	44.95
वह देश जिन पर पाटनरोधी शुल्क (एडीडी) लगा है	%	-	-	-	-
अन्य देश	%	27.79	29.05	43.39	55.05
कुल आय	%	100.00	100.00	100.00	100.00

63. कुल आयातों भारतीय उत्पादन तथा भारत में उत्पादन के संबंध में संबद्ध देशों से आयातों की स्थिति निम्नलिखित है :

विवरण	यूनिट	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि
एम बी टी					
आयात मात्र	एम टी	865	797	768	550
निम्नलिखित के संबंध में आयातों का हिस्सा					
Ø कुल आय	%	99.51	97.74	91.70	67.48
Ø उत्पादन	%	88.70	68.15	87.35	87.70
Ø खपत	%	59.63	54.00	55.46	40.07
सी बी एस					
आयात मात्र	एम टी	929	604	1,023	1,135
निम्नलिखित के संबंध में आयातों का हिस्सा					
Ø कुल आय	%	72.26	46.15	49.74	57.69
Ø उत्पादन	%	42.69	26.06	38.27	43.34
Ø खपत	%	29.28	17.19	23.66	26.62
पी वी आई					
आयात मात्र	एम टी	707	830	985	1,192
निम्नलिखित के संबंध में आयातों का हिस्सा					
Ø कुल आय	%	38.60	42.15	29.28	46.40
Ø उत्पादन	%	40.80	51.54	73.89	98.35
Ø खपत	%	41.15	49.01	62.78	62.50
पीएक्स-13					
आयात मात्र	एम टी	7,860	7,511	7,868	8,294
निम्नलिखित के संबंध में आयातों का हिस्सा					
Ø कुल आय	%	79.97	76.94	80.82	74.78
Ø उत्पादन	%	94.05	90.37	98.53	98.23
Ø खपत	%	54.92	50.58	49.17	46.00
टी डी क्यू					

आयात मात्र	एम टी	1,063	1,217	887	781
निम्नलिखित के संबंध में आयातों का हिस्सा					
Ø कुल आय	%	45.84	54.04	98.72	71.15
Ø उत्पादन	%	13.92	11.59	7.24	6.85
Ø खपत	%	16.16	15.27	10.91	9.86
टी एम टी					
आयात मात्र	एम टी	572	352	324	244
निम्नलिखित के संबंध में आयातों का हिस्सा					
Ø कुल आय	%	72.21	70.95	56.61	44.95
Ø उत्पादन	%	52.46	30.93	26.56	20.20
Ø खपत	%	31.02	22.11	18.55	14.54

65. उपर्युक्त तालिका से यह नोट किया जाता है कि :

- क. टीएमटी : भारत में कुल आयात, उत्पादन और खपत के संबंध में आयातों में संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान गिरावट आई है।
- ख. टीडीक्यू : कुल आयातों के संबंध में टीडीक्यू के आयातों में वर्ष 2011-12 तक वृद्धि हुई है परंतु जांच की अवधि के दौरान इनमें गिरावट आई है। उत्पादन और खपत के संबंध में आयातों में इस अवधि के दौरान गिरावट आई है।
- ग. पीएक्स-13 : कुल आयातों के संबंध में आयात लगभग समान स्तर पर बने रहे, परंतु जांच की अवधि के दौरान इनमें गिरावट आई है। उत्पादन के संबंध में क्षति अवधि के दौरान आयातों में वृद्धि हुई है। क्षति अवधि के दौरान खपत के संबंध में आयातों में गिरावट आई है।
- घ. पीवीआई : भारत में कुल आयातों, उत्पादन और खपत के संबंध में आयातों में संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान वृद्धि हुई है।
- ङ. सीबीएस : कुल आयातों के संबंध में आयातों में वर्ष 2010-11 तक गिरावट आई है परंतु उसके पश्चात वर्ष 2011-12 के दौरान इनमें वृद्धि होना शुरू हो गई और जांच की अवधि में इनमें और भी अधिक वृद्धि हुई। भारत में उत्पादन और खपत के संबंध में आयातों में वर्ष 2010-11 में गिरावट आई परंतु उसके पश्चात वर्ष 2011-12 के दौरान इनमें वृद्धि होना शुरू हो गई और जांच की अवधि में इनमें और भी अधिक वृद्धि हुई।
- च. एमबीटी : भारत में कुल आयातों और खपत के संबंध में आयातों में संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान वृद्धि हुई है। भारत में उत्पादन के संबंध में आयातों में वर्ष 2010-11 में गिरावट आई है परंतु उसके पश्चात इनमें वृद्धि होना शुरू हो गई।

66. 6 पीपीडी के बारे में यह तर्क दिया गया था कि जबकि अन्य घरेलू उत्पादकों की बाजार में हिस्सेदारी में वृद्धि हुई है वहीं घरेलू उद्योग की हिस्सेदारी में गिरावट आई है। इससे घरेलू उत्पादकों के बीच परस्पर प्रतिस्पर्धा का अर्थ निकलता है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हो रही है। घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि 6पीपीडी के आयातों में लैनक्सस द्वारा किए गए आयात भी शामिल हैं। लैनक्सस ने इस उत्पाद का कुछ समय के लिए आयात किया क्योंकि वह अपनी उत्पादन सुविधा को किसी अन्य स्थान पर शिफ्ट कर

रहा था। इसलिए लैनक्सेस द्वारा किए गए आयात तथा उस कंपनी द्वारा किए गए उत्पादन को एक साथ देखना चाहिए। प्राधिकारी ने 6पीपीडी के आयातों तथा बाजार हिस्से के संबंध में विस्तार से जांच की है। प्राधिकारी ने डी जी सी आई एस से प्राप्त आयात आंकड़ों की जांच की और यह पाया कि 6पीपीडी के आयातों के संबंध में लैनक्सेस ने भी वहीं प्रदर्शित किया है। प्राधिकारी ने लैनक्सेस के आयातों और उत्पादन की बाजार में हिस्सेदारी पर संचयी रूप से विचार करते हुए विभिन्न पक्षकारों के बाजार हिस्से की जांच की है। यह पाया गया कि संपूर्ण अवधि के दौरान लैनक्सेस का हिस्सा लगभग समान स्तर पर ही बना रहा है। निम्नलिखित तालिका से इस देखा जा सकता है।

मांग में बाजार हिस्सा	यूनिट	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि
चीन	%	12.79	13.27	21.02	14.24
कोरिया	%	42.13	37.31	28.14	31.75
संबद्ध देश	%	54.92	50.58	49.17	46.00
वह देश जिस पर पाटनरोधी शुल्क लगा है।	%	4.03	6.79	5.09	13.92
सभी पाटित देशों का हिस्सा	%	58.95	57.37	54.26	59.92
अन्य देश	%	1.27	2.79	5.45	1.59
लैनक्सेस द्वारा आयात	%	***	***	***	***
एन ओ सी आई एल	%	***	***	***	***
लैनक्सेस इंडिया प्राइवेट लिमिटेड	%	***	***	***	***
लैनक्सेस (आयात + उत्पादन)	%	***	***	***	***
पी एम सी प्राइवेट लिमिटेड	%	***	***	***	***
भारतीय उद्योग	%	***	***	***	***
कुल	%	100.00	100.00	100.00	100.00

67. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि उन सभी देशों का बाजार हिस्सा जिन पर पाटनरोधी शुल्क लगा है संपूर्ण क्षति अवधि में लगभग समान ही बना रहा। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि वर्तमान जांच एक निर्णायक समीक्षा जांच है, इसलिए भारत में खपत में संबद्ध देशों के बाजार हिस्से पर यह विचार करते हुए देखा जाना चाहिए कि इन देशों से आयातों पर पाटनरोधी शुल्क अधिरोपित है। हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि संबद्ध वस्तु के लगभग 5 प्रतिशत का प्रयोग अंतिम उत्पाद का विनिर्माण करने के लिए किया जाता है जिनका उत्तरवर्ती रूप से भारत को निर्यात किया जाता है। इन आयातों को सभी शुल्कों से छूट दी जाती है जिनमें पाटनरोधी शुल्क, रक्षोपाय शुल्क, आधारभूत सीमाशुल्क और (उत्पाद कर के समान) प्रतिवहनकारी शुल्क शामिल हैं। इस प्रकार प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि विभिन्न पक्षकारों का लगभग स्थिर बाजार हिस्से से ऐसा प्रतीत होता है कि देश में इस उत्पाद के शुल्क मुक्त आयातों में लगभग स्थिर हिस्सेदारी है। तथापि, यह विश्लेषण किया गया है कि आयातों का अवसारित मूल्य सीमाशुल्क, पाटनरोधी शुल्क और रक्षोपाय शुल्क जोड़ने के बाद भी घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से कम ही बना रहा। घरेलू उद्योग ने यह प्रस्तुत किया है कि अधिकांश (86 प्रतिशत) उत्पाद की खपत टायर उद्योग द्वारा की जाती है, जहां उपभोक्ताओं की संख्या सीमित (दस से भी कम) है। यह उपभोक्तागण माल का भारतीय उत्पादकों तथा आयातों दोनों से ही प्रापण करते हैं। इससे यह स्पष्टतः सिद्ध होता है कि यदि लगभग सभी आयातों को शुल्क से छूट प्रदान कर दी जाए तब भी उनका घरेलू उद्योग पर विपरीत कीमत प्रभाव ही रहेगा।

घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का तथा कीमत को प्रभावित करने वाले अन्य कारकों का कीमत प्रभाव

68. कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी से यह अपेक्षा की जाती है कि वे यह विचार करेंगे कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान उत्पाद की कीमतों की तुलना में भारी कीमत अधोरदन किया जा रहा है या इन आयातों का प्रभाव अन्यथा कीमतों का भारी मात्रा में निग्रहण करना है या कीमतों को बढ़ने से निवारित करना है जिनमें अन्यथा भारी मात्रा में वृद्धि हुई होती।

69. संबद्ध देशों से पारित आयातों का घरेलू उद्योग की कीमतों पर प्रभाव की प्राधिकारी द्वारा जांच कीमत अधोरदन, कीमत अधोबिक्रयण, कीमत निग्रहण और कीमत अवमंदन, यदि कोई, के संबंध में की गई है। इस विश्लेषण के प्रयोजनार्थ उत्पादन की भारित औसत लागत, निवल बिक्री प्रापण (एन एस आर) और घरेलू उद्योग की गैर-क्षतिकारी कीमत (एन आई पी) की प्राधिकारी द्वारा तुलना संबद्ध देशों से आयातों की अवसारित लागत से की गई।

70. घरेलू उद्योग के निवल बिक्री प्रापण की गणना करते समय घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत किए गए रिबेटों, डिस्काउंट और कमीशन और संदत केंद्रीय उत्पाद का प्राधिकारी द्वारा अपवर्जन कर दिया गया है।

71. प्राधिकारी द्वारा कीमत अधोरदन का निर्धारण जांच की संपूर्ण अवधि के दौरान संबद्ध देशों से पाटित आयातों के अवसारित मूल्य की तुलना उसी अवधि के लिए घरेलू उद्योग के निवल बिक्री प्रापण से करके किया गया है। इस प्रयोजन के लिए आयातों के अवसारित मूल्य का परिकलन प्रतिवादी निर्यातकों द्वारा रिपोर्ट की गई और जांच टीम द्वारा स्थल सत्यापन के दौरान सत्यापित की गई भारित औसत निर्यात कीमत पर लागू आधारभूत सीमा शुल्क तथा 1 प्रतिशत उतराई प्रभारों को जोड़कर किया गया है। जहां तक संबद्ध देशों से असहयोगकर्ता निर्यातकों का संबंध है, उनकी अवसारित कीमत का प्राधिकारी द्वारा निर्धारण सहयोगकर्ता निर्यातकों की, उनके प्रस्तुतिकरणों में प्रदर्शित तथा प्राधिकारी द्वारा सत्यापित, न्यूनतम निर्यात कीमत के आधार पर किया गया है।

71. कीमत अधोबिक्रयण के प्रयोजनार्थ, 72. कीमत अधोबिक्रयण के प्रयोजनार्थ, संबद्ध देशों से आयातों की अवसारित कीमत की तुलना प्राधिकारी द्वारा जांच की अवधि के लिए निर्धारित घरेलू उद्योग की गैर-क्षतिकारी कीमत से की गई है। अधोरदन एवं अधोबिक्रयण की प्रवृत्ति निम्नलिखित तालिका में दर्शाई गई है।

कीमत अधोरदन

विवरण	यूनिट	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि
एम बी टी					
संबद्ध देशों की उतराई कीमत	रुपए/किग्रा	102.73	108.42	121.68	136.04
निवल बिक्री प्रापण	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
कीमत अधोरदन	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
कीमत अधोरदन	%	***	***	***	***
कीमत अधोरदन	% रेंज	30-40	30-40	25-35	20-30
सी बी एस					
संबद्ध देशों की उतराई कीमत	रुपए/किग्रा	128.63	148.78	171.76	180.68
निवल बिक्री प्रापण	रुपए/किग्रा	***	***	***	***

कीमत अधोरदन	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
कीमत अधोरदन	%	***	***	***	***
कीमत अधोरदन	% रेंज	35-45	25-35	20-30	20-30
पी वी आई					
संबद्ध देशों की उतराई कीमत	रुपए/किग्रा	206.67	195.34	201.04	215.96
निवल बिक्री प्रापण	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
कीमत अधोरदन	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
कीमत अधोरदन	%	***	***	***	***
कीमत अधोरदन	% रेंज	15-25	15-25	15-25	10-20
पीएक्स-13					
संबद्ध देशों की उतराई कीमत	रुपए/किग्रा	166.64	165.62	172.04	168.82
निवल बिक्री प्रापण	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
कीमत अधोरदन	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
कीमत अधोरदन	%	***	***	***	***
कीमत अधोरदन	% रेंज	25-35	25-35	20-30	20-30
टी डी क्यू					
संबद्ध देशों की उतराई कीमत	रुपए/किग्रा	88.25	105.86	107.66	123.59
निवल बिक्री प्रापण	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
कीमत अधोरदन	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
कीमत अधोरदन	%	***	***	***	***
कीमत अधोरदन	% रेंज	25-35	10-20	15-25	10-20
टी एम टी					
संबद्ध देशों की उतराई कीमत	रुपए/किग्रा	76.59	69.73	82.53	91.03
निवल बिक्री प्रापण	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
कीमत अधोरदन	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
कीमत अधोरदन	%	***	***	***	***
कीमत अधोरदन	% रेंज	30-40	35-45	30-40	25-35

कीमत अधोबिक्रयण

विवरण	यूनिट	पीएक्स-13		टीडीक्यू	पीवीआई	टीएमटी	एमबीटी	सीबीएस
		चीन आरपी	कोरिया आरपी	चीन आरपी	चीन आरपी	चीन आरपी	चीन आरपी	चीन आरपी
गैर-क्षतिकारी कीमत (एन आई पी)	रुपए/ किग्रा	***	***	***	***	***	***	***
आयातों का अवसारित मूल्य	रुपए/ किग्रा	***	***	***	***	***	***	***
कीमत अधोबिक्रयण	रुपए/ किग्रा	***	***	***	***	***	***	***
कीमत अधोबिक्रयण	%	***	***	***	***	***	***	***
कीमत अधोबिक्रयण (रेंज)	%	70-80	75-85	20-30	30-40	30-40	25-35	20-30

73. उपर्युक्त तालिका से प्राधिकारी यह धारित करते हैं कि संबद्ध रबड़ रसायनों के पाटित आयातों के अवसारित मूल्य ने घरेलू कीमतों का भारी अधोरदन किया है। इसके अतिरिक्त, संबद्ध देशों का अवसारित मूल्य घरेलू उद्योग की गैर-क्षतिकारी कीमत से बहुत कम है। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क और रक्षोपाय शुल्क जोड़ने के पश्चात (पीएक्स-13) आयातों की अवसादित कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से कम है जो स्पष्टतः यह स्थापित करता है कि पाटित आयातों ने घरेलू उद्योग की अपनी कीमतें बढ़ाने से वंचित कर दिया।

कीमत निग्रहण/अवमंदन

74. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि निर्णायक समीक्षा जांच में प्राधिकारी से यह जांच करने की अपेक्षा की जाती है कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों का भारी विपरीत कीमत प्रभाव था या पाटनरोधी शुल्क का प्रतिसंहरण कर लिए जाने की स्थिति में भारी विपरीत कीमत प्रभाव होने की संभावना है। कीमत निग्रहण एवं अवमंदन प्रभाव की जांच करने के लिए प्राधिकारी ने जांच की अवधि ओर क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री लागत और प्रति यूनिट बिक्री कीमत की निम्नवत जांच की है।

विवरण	यूनिट	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि
एम बी टी					
बिक्री लागत	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	110	122	130
बिक्री कीमत	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	106	111	113
अवसारित कीमत	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	106	118	132
सी बी एस					
बिक्री लागत	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	105	115	122
बिक्री कीमत	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	106	111	116
अवसारित कीमत	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	116	134	140
पी वी आई					
बिक्री लागत	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	100	108	119
बिक्री कीमत	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	99	98	98
अवसारित कीमत	रुपए/किग्रा	***	***	***	***

प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	95	97	104
पीएक्स-13					
बिक्री लागत	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	102	109	118
बिक्री कीमत	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	99	96	95
अवसारित कीमत	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	99	103	101
टी डी क्यू					
बिक्री लागत	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	110	123	133
बिक्री कीमत	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	106	114	119
अवसारित कीमत	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	120	122	140
टी एम टी					
बिक्री लागत	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	116	139	150
बिक्री कीमत	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	103	108	113
अवसारित कीमत	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	91	108	119

75. पाटित आयातों का घरेलू उद्योग पर कीमत निग्रहण प्रभाव की जांच करने के लिए प्राधिकारी द्वारा निवल बिक्री प्रापण की प्रवृत्तियों की तुलना उत्पादन लागत से की गई है।

76. प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि क्षति अवधि के दौरान बिक्री लागत की प्रवृत्ति उपरिगामी रही है। बिक्री लागत में यह वृद्धि मुख्यतः इनपुट कीमत में वृद्धि के कारण हुई है।

77. पीएक्स-13 (6पीपीडी) की बिक्री कीमत में उतार-चढ़ाव दर्शाता है कि जांच की अवधि के दौरान बिक्री लागत में लगभग 18 प्रतिशत की वृद्धि हुई, इसके विपरीत, बिक्री कीमत लगभग 5 प्रतिशत घट गई। इसी तरह पीवीआई के संबंध में यद्यपि जांच की अवधि के दौरान बिक्री लागत में वृद्धि हुई, वहीं इसकी बिक्री कीमत में लगभग 2 प्रतिशत की गिरावट आई। टीएमटी के मामले में जांच की अवधि के दौरान यद्यपि इसकी बिक्री लागत में वृद्धि हुई, वहीं इसके विपरीत बिक्री कीमत में 13 प्रतिशत तक की वृद्धि हुई। इसी तरह एमबीटी, सीबीएस और टीडीक्यू के मामले में यद्यपि जांच की अवधि के दौरान बिक्री लागत में क्रमशः 25 प्रतिशत 21 प्रतिशत और 33 प्रतिशत तक की वृद्धि हुई वहीं इसके विपरीत बिक्री कीमत में क्रमशः केवल 13 प्रतिशत, 16 प्रतिशत और 19 प्रतिशत की वृद्धि ही हुई।

78. प्राधिकारी द्वारा किया गया उपर्युक्त विश्लेषण यह संकेत देता है कि पीवीआई और पीएक्स-13 के मामले में निवल बिक्री प्रापण में गिरावट बिक्री लागत में वृद्धि के बावजूद बहुत अधिक रहा है। टीएमटी, टीडीक्यू एमबीटी और सीबीएस के मामले में, यद्यपि जांच की अवधि के दौरान बिक्री लागत में वृद्धि हुई वहीं घरेलू उद्योग अपनी इस लागत में वृद्धि के अनुरूप बिक्री कीमत में वृद्धि करने में अक्षम रहा। इसलिए, प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि पाटित आयातों के कीमत प्रभाव में घरेलू उद्योग को, अपना बाजार हिस्सा बरकरार बनाए रखने के लिए अपनी कीमतें न्यूनतर करने को मजबूर कर दिया।

घरेलू उद्योग से संबंधित आर्थिक पैरामीटर

79. नियमावली का अनुबंध-II यह अपेक्षा करता है कि क्षति के निर्धारण में संबद्ध वस्तु के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव की उद्देश्यपरक जांच करना आवश्यक होता है। इसके अतिरिक्त, नियमावली के अनुबंध-II (IV) में यह निर्धारित किया गया है कि :

"संबंधित घरेलू उद्योग पर आयात की गई वस्तुओं के प्रभाव की जांच में सभी संगत आर्थिक तथ्यों का मूल्यांकन तथा जिसमें बिक्री, लाभ, आउटपुट, मार्केट शेयर, उत्पादक का शेयर, निवेश पर लाभ अथवा क्षमता निर्माण, घरेलू मूल्यों को प्रभावित करने वाले तथ्य, वास्तविक रूप से आयात की गई वस्तुओं के मार्जिन तथा रोकड़, इनवेंटरी, रोजगार, वेतन वृद्धि तथा निवेश पर पूंजी उगाहने जैसे घरेलू उद्योग को प्रभावित करने वाले सूचकांक का मूल्यांकन शामिल होता है।"

उत्पादन, क्षमता, क्षमता उपयोग की बिक्री

80. घरेलू उत्पादन की मात्रा और घरेलू उद्योग के घरेलू प्रचालनों पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच घरेलू उद्योग के कुल उत्पादन, क्षमता उपयोग और घरेलू बिक्रियों को ध्यान में रखकर की गई है। घरेलू उद्योग की क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्री मात्रा का विवरण निम्नलिखित है :

विवरण	यूनिट	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि
एम बी टी					
संस्थापित क्षमता	एम टी	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	100	100	100
उत्पादन	एम टी	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	116	85	76
क्षमता उपयोग (%)	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	116	85	76
घरेलू बिक्रियां	एम टी	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	115	84	87
सी बी एस					
संस्थापित क्षमता	एम टी	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	100	100	100
उत्पादन	एम टी	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	98	123	133
क्षमता उपयोग (%)	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	98	123	133
घरेलू बिक्रियां	एम टी	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	113	119	127
पी वी आई					
संस्थापित क्षमता	एम टी	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	100	100	100
उत्पादन	एम टी	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	100	102	91
क्षमता उपयोग (%)	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	100	102	91

घरेलू बिक्रियां	एम टी	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	97	99	122
पीएक्स-13					
संस्थापित क्षमता	एम टी	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	100	100	100
उत्पादन	एम टी	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	92	75	76
क्षमता उपयोग (%)	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	92	75	76
घरेलू बिक्रियां	एम टी	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	102	109	118
टी डी क्यू					
संस्थापित क्षमता	एम टी	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	100	100	100
उत्पादन	एम टी	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	123	131	135
क्षमता उपयोग (%)	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	127	134	135
घरेलू बिक्रियां	एम टी	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	111	117	128
टी एम टी					
संस्थापित क्षमता	एम टी	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	100	100	100
उत्पादन	एम टी	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	97	101	102
क्षमता उपयोग (%)	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	97	101	102
घरेलू बिक्रियां	एम टी	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	96	100	98

81. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि :

- क. **टीएमटी** : घरेलू उद्योग के उत्पादन और क्षमता उपयोग में वर्ष 2010-11 में गिरावट आई परंतु उसके पश्चात उसमें वृद्धि हुई। बिक्री में वर्ष 2010-11 में गिरावट आई और फिर वर्ष 2011-12 में इसमें थोड़ी सी वृद्धि हुई। तथ्य, जांच की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री में गिरावट आई।
- ख. **टीडीक्यू** : घरेलू उद्योग के उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्री में संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान वृद्धि हुई है।
- ग. **पीएक्स-13** : संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान याचिकाकर्ता के उत्पादन और क्षमता उपयोग में कमी आई है, हालांकि जांच की अवधि के दौरान इसमें मामूली सी वृद्धि हुई। घरेलू उद्योग की बिक्री में संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान वृद्धि हुई है।

- घ. **पीवीआई** : याचिकाकर्ता के उत्पादन और क्षमता उपयोग में वर्ष 2011-12 तक वृद्धि हुई और उसके पश्चात जांच की अवधि के दौरान इसमें गिरावट आई। घरेलू उद्योग की बिक्री में संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान वृद्धि हुई है।
- ङ. **सीबीएस** : घरेलू उद्योग के उत्पादन और क्षमता उपयोग में वर्ष 2010-11 तक गिरावट आई और उसके पश्चात इसमें वृद्धि हुई। घरेलू उद्योग की बिक्री में संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान वृद्धि हुई।
- च. **एमबीटी** : घरेलू उद्योग के उत्पादन में वर्ष 2010-11 तक वृद्धि हुई और उसके पश्चात इसमें भारी गिरावट आई। घरेलू उद्योग की बिक्री और क्षमता उपयोग में क्षति अवधि के दौरान गिरावट आई है।

लाभ, निवेश पर अर्जन और नकद लाभ

82. घरेलू उद्योग द्वारा संबद्ध वस्तु की घरेलू बिक्री में अर्जित लाभ, नकदी प्रवाह और निवेश पर अर्जन निम्नलिखित है :

विवरण	यूनिट	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि
एम बी टी					
बिक्री लागत	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	110	122	130
बिक्री कीमत	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	106	111	113
लाभ/हानि	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	89	67	47
सी बी एस					
बिक्री लागत	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	105	115	122
बिक्री कीमत	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	106	111	116
लाभ/हानि	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	110	89	86
पी वी आई					
बिक्री लागत	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	100	108	119
बिक्री कीमत	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	99	98	98
लाभ/हानि	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	95	13	(76)
पीएक्स-13					
बिक्री लागत	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	102	109	118
बिक्री कीमत	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	99	96	95
लाभ/हानि	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	76	(33)	(137)

टी डी क्यू					
बिक्री लागत	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	110	123	133
बिक्री कीमत	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	106	114	119
लाभ/हानि	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	87	55	38
टी एम टी					
बिक्री लागत	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	116	139	150
बिक्री कीमत	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	103	108	113
लाभ/हानि	रुपए/किग्रा	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	75	43	35

विवरण	यूनिट	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि
एम बी टी					
पी बी टी	रुपए/लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	103	56	41
ब्याज एवं कर पूर्व लाभ	रुपए/लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	103	56	43
नकद लाभ- पी बी डी टी	रुपए/लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	103	56	41
लगाई गई पूंजी पर आवक	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	80	53	38
सी बी एस					
पी बी टी	रुपए/लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	124	105	110
ब्याज एवं कर पूर्व लाभ	रुपए/लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	124	106	114
नकद लाभ- पी बी डी टी	रुपए/लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	124	106	110
लगाई गई पूंजी पर आवक	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	123	83	96
पी वी आई					
पी बी टी	रुपए/लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	91	13	(92)
ब्याज एवं कर पूर्व लाभ	रुपए/लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	91	13	(86)
नकद लाभ- पी बी डी टी	रुपए/लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	92	21	(70)
लगाई गई पूंजी पर आवक	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	113	14	(82)
पीएक्स-13					

पी बी टी	रुपए/लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	78	(36)	(162)
ब्याज एवं कर पूर्व लाभ	रुपए/लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	78	(35)	(156)
नकद लाभ- पी बी डी टी	रुपए/लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	83	(9)	(116)
लगाई गई पूंजी पर आवक	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	68	(29)	(133)
टी डी क्यू					
पी बी टी	रुपए/लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	97	65	49
ब्याज एवं कर पूर्व लाभ	रुपए/लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	97	65	54
नकद लाभ- पी बी डी टी	रुपए/लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	98	69	56
लगाई गई पूंजी पर आवक	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	86	53	41
टी एम टी					
पी बी टी	रुपए/लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	72	43	34
ब्याज एवं कर पूर्व लाभ	रुपए/लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	72	43	36
नकद लाभ- पी बी डी टी	रुपए/लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	72	43	34
लगाई गई पूंजी पर आवक	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	81	40	37

83. उपर्युक्त तालिका से प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि :

- क. **टीएमटी** : घरेलू उद्योग की लाभप्रदायता में संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान गिरावट आई है। घरेलू उद्योग के पी बी आई टी और नकद लाभ में संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान गिरावट आई है। निवेश पर अर्जन ने भी नकद लाभ के समान ही प्रवृत्ति प्रदर्शित की है।
- ख. **टीडीक्यू** : घरेलू उद्योग की लाभप्रदायता में संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान गिरावट आई है। घरेलू उद्योग के पी बी आई टी और नकद लाभ में संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान गिरावट आई है। निवेश पर अर्जन ने भी नकद लाभ के समान ही प्रवृत्ति प्रदर्शित की है।
- ग. **पीएक्स-13** : घरेलू उद्योग की लाभप्रदायकता में संपूर्ण क्षति के दौरान गिरावट आई है। घरेलू उद्योग को वर्ष 2011-12 और जांच की अवधि के दौरान घाटा हुआ है। घरेलू उद्योग के पी बी आई टी और नकद लाभ में संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान गिरावट आई है। घरेलू उद्योग को वर्ष 2011-12 के दौरान और जांच की अवधि के दौरान नकद घाटा और ऋणात्मक पी बी आई टी सहन और जांच की अवधि के दौरान करना पड़ा है। निवेश पर अर्जन ने भी नकद लाभ के समान ही प्रवृत्ति प्रदर्शित की है।

- घ. **पीवीआई** : : घरेलू उद्योग की लाभप्रदायकता में संपूर्ण क्षति के दौरान गिरावट आई है। घरेलू उद्योग को वर्ष 2011-12 और जांच की अवधि के दौरान घाटा हुआ है। घरेलू उद्योग के पी बी आई टी और नकद लाभ में संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान गिरावट आई है। घरेलू उद्योग को वर्ष 2011-12 के दौरान और जांच की अवधि के दौरान नकद घाटा और ऋणात्मक पी बी आई टी सहन और जांच की अवधि के दौरान करना पड़ा है। निवेश पर अर्जन ने भी नकद लाभ के समान ही प्रवृत्ति प्रदर्शित की है। निवेश पर अर्जन में वर्ष 2010-11 के दौरान वृद्धि हुई और फिर उसके पश्चात जांच की अवधि के दौरान ऋणात्मक स्तर में गिरावट आई है।
- ङ. **सीबीएस** : घरेलू उद्योग की लाभप्रदायकता में वर्ष 2010-11 में वृद्धि हुई और फिर उसके पश्चात वर्ष 2011-12 एवं पुनः जांच की अवधि के दौरान इसमें गिरावट आई। निवेश पर अर्जन में वर्ष 2012-12 वृद्धि हुई परंतु इसके पश्चात इसमें गिरावट आई। पी बी आई टी और नकद लाभ में संपूर्ण अवधि में वृद्धि हुई है।
- च. **एमबीटी** : घरेलू उद्योग की लाभप्रदायकता में संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान गिरावट आई। पी बी आई टी, नकद लाभ और निवेश पर अर्जन में वर्ष 2010-11 में वृद्धि हुई परंतु उसके पश्चात वर्ष 2010-11 में वृद्धि हुई परंतु उसके पश्चात वर्ष 2011-12 और उसके पश्चात जांच की अवधि में इसमें गिरावट आई।

रोजगार उत्पादकता और पारिश्रमिक

84. घरेलू उद्योग द्वारा नियोजित कर्मचारियों की संख्या, इसकी उत्पादकता और संदत्त वेतन निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है।

विवरण	यूनिट	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि
उत्पादकता प्रति दिन					
एम बी टी	एम टी	***	***	***	***
सी बी एस	एम टी	***	***	***	***
पी वी आई	एम टी	***	***	***	***
पी एक्स-13	एम टी	***	***	***	***
टी डी क्यू	एम टी	***	***	***	***
टी एम टी	एम टी	***	***	***	***
प्रति कर्मचारी उत्पादकता	एम टी				
एम बी टी	एम टी	***	***	***	***
सी बी एस	एम टी	***	***	***	***
पी वी आई	एम टी	***	***	***	***
पी एक्स-13	एम टी	***	***	***	***
टी डी क्यू	एम टी	***	***	***	***
टी एम टी	एम टी	***	***	***	***

विवरण	यूनिट	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि
एम बी टी					
कर्मचारी	संख्या	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	100	100	100
पारिश्रमिक	रु./लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	111	122	133
सी बी एस					
कर्मचारी	संख्या	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	100	100	100
पारिश्रमिक	रु./लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	118	127	124
पी वी आई					
कर्मचारी	संख्या	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	94	94	88
पारिश्रमिक	रु./लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	107	122	118
पी एक्स-13					
कर्मचारी	संख्या	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	100	100	89
पारिश्रमिक	रु./लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	105	100	123
टी डी क्यू					
कर्मचारी	संख्या	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	100	83	75
पारिश्रमिक	रु./लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	98	102	98
टी एम टी					
कर्मचारी	संख्या	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	100	100	100
पारिश्रमिक	रु./लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	111	122	133

85. प्रतिदिन उत्पादन के संबंध में अधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि टी डी क्यू और सी वी एस की उत्पादकता में वृद्धि हुई है। तथापि, पी एक्स-13 और पी वी आई की उत्पादकता में आधार वर्ष से तुलना करने पर जांच की अवधि के दौरान गिरावट आई है। जांच की अवधि के दौरान उत्पादकता में

गिरावट उत्पादन में गिरावट के कारण आई है। टी एम टी और एम बी टी के संबंध में प्रति कर्मचारी उत्पादकता समान स्तर पर ही बनी रही।

86. प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि रोजगार स्तर में कोई खास परिवर्तन प्रदर्शित नहीं होता है। संदत पारिश्रमिक में टी डी क्यू के लिए पारिश्रमिक को छोड़कर सामान्य वृद्धि प्रदर्शित हुई है।

मालसूची

87. घरेलू उद्योग की मालसूची इति स्टाक के रूप में निम्नलिखित तालिका में दी गई है:-

विवरण	यूनिट	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि
एम बी टी					
अथ स्टाक	एम टी	***	***	***	***
इति स्टाक	एम टी	***	***	***	***
औसत स्टाक	एम टी	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	121	190	215
सी बी एस					
अथ स्टाक	एम टी	***	***	***	***
इति स्टाक	एम टी	***	***	***	***
औसत स्टाक	एम टी	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	93	149	156
पी वी आई					
अथ स्टाक	एम टी	***	***	***	***
इति स्टाक	एम टी	***	***	***	***
औसत स्टाक	एम टी	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	83	79	129
पी एक्स -13					
अथ स्टाक	एम टी	***	***	***	***
इति स्टाक	एम टी	***	***	***	***
औसत स्टाक	एम टी	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	156	167	123
टी डी क्यू					
अथ स्टाक	एम टी	***	***	***	***
इति स्टाक	एम टी	***	***	***	***
औसत स्टाक	एम टी	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	110	133	146
टी एम टी					
अथ स्टाक	एम टी	***	***	***	***
इति स्टाक	एम टी	***	***	***	***
औसत स्टाक	एम टी	***	***	***	***
प्रवृत्ति	अनुक्रमित	100	82	70	117

88. उपर्युक्त तालिका से प्राधिकारी निम्नलिखित नोट करते हैं:-

- क. **टी एम टी** : घरेलू उद्योग के मालसूची स्तर में वर्ष 2011-12 तक गिरावट आई परन्तु उसके पश्चात जांच की अवधि में इसमें वृद्धि हुई।
- ख. **टी डी क्यू**: घरेलू उद्योग के मालसूची स्तर में सम्पूर्ण अवधि में वृद्धि हुई।

- ग. **पी एक्स-13:** घरेलू उद्योग के मालसूची स्तर में वर्ष 2011-12 तक वृद्धि हुई और उसके पश्चात जांच की अवधि के दौरान इसमें गिरावट आई।
- घ. **पी वी आई:** घरेलू उद्योग के मालसूची स्तर में वर्ष 2011-12 तक वृद्धि हुई और उसके पश्चात जांच की अवधि के दौरान इसमें गिरावट आई।
- ड. **सी बी एस :** घरेलू उद्योग के मालसूची स्तर में वर्ष 2010-11 तक गिरावट आई परन्तु उसके पश्चात वर्ष 2011-12 और पुनः जांच की अवधि में इसमें वृद्धि हुई।
- च. **एम बी टी :** घरेलू उद्योग के मालसूची स्तर में सम्पूर्ण क्षति अवधि के दौरान वृद्धि हुई और जांच की अवधि के दौरान इसमें भारी वृद्धि हुई।

घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक

88. सम्बद्ध देशों और अन्य देशों से आयात कीमत, लागत ञांचे में परिवर्तन, घरेलू बाजार में प्रतिस्पर्धा, घरेलू बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों को प्रभावित करने वाले पाटित आयातों के अलावा अन्य कारक पर विचार करने से यह स्पष्ट होता है कि सम्बद्ध देशों से प्रत्येक सम्बद्ध रबड़ रसायन के आयातित सामग्री का अवसारित मूल्य घरेलू उद्योग के लिए निर्धारित सम्बंधित गैरक्षतिकारी कीमत से कम है जिससे भारतीय बाजार में कीमत अधोबिक्रयण हो रहा है। अन्य देशों से आयात न्यूनतम स्तर पर या उच्चतर कीमतों पर किए गए या ऐसे आयात किए गए जिन पर पाटनरोधी शुल्क लगा हुआ था। इस उत्पाद का कोई अर्थक्षम प्रतिस्थानी नहीं है। इस उत्पाद के लिए मांगबढ़ रही थी और प्रत्येक रबड़ रसायन के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा सामना किए जाने वाले कीमत निग्रहण और कीमत अवमन्दन के लिए उत्तरदायी कारक नहीं हैं। अतः यह स्पष्ट है कि घरेलू उद्योग की इस नाजुक स्थिति के लिए सम्बद्ध आयात ही उत्तरदायी हैं। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि आयातों की, पाटनरोधी शुल्क और रक्षोपाय शुल्क को जोड़ने के पश्चात, अवसारित कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से कम है जिससे यह स्पष्टतः सिद्ध होता है कि पाटित आयातों ने घरेलू उद्योग को अपनी कीमतें बढ़ाने से रोक दिया।

पाटन मार्जिन की मात्रा

90. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि संबद्ध देशों से प्रत्येक रबड़ रसायन के लिए पाटन मार्जिन इस समय पाटनरोधी शुल्क प्रभावी होने के बावजूद न्यूनतम से अधिक और बहुत महत्वपूर्ण हैं।

पूंजी उगाहने की क्षमता

91. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि यद्यपि सम्बद्ध वस्तु का देश में सतत पाटन करने से घरेलू उद्योग की पूंजी उगाहने की क्षमता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है फिर भी पाटन से होने वाला सतत घटा भविष्य में इसके द्वारा पूंजी उगाहने की क्षमता को प्रभावित कर सकता है।

वृद्धि

92. घरेलू उद्योग के बिक्री, उत्पादन और क्षमता उपयोग में वृद्धि हुई है जबकि लाभ, निवेश पर अर्जन और नकद लाभ एवं मालसूची में यह वृद्धि ऋणात्मक रही है। यह स्थिति प्रभावी पाटनरोधी शुल्क की मौजूदगी के पश्चात भी यथावत बनी हुई है।

विवरण	यूनिट	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि
एम बी टी					
उत्पादन मात्रा	%	-	***	***	***
बिक्री मात्रा	%	-	***	***	***
बिक्री की लागत	%	-	***	***	***

बिक्री कीमत	%	-	***	***	***
लाभ/हानि	%	-	***	***	***
लगाई गई पूंजी पर अर्जन	%	-	***	***	***
सी बी एस					
उत्पादन मात्रा	%	-	***	***	***
बिक्री मात्रा	%	-	***	***	***
बिक्री की लागत	%	-	***	***	***
बिक्री कीमत	%	-	***	***	***
लाभ/हानि	%	-	***	***	***
लगाई गई पूंजी पर अर्जन	%	-	***	***	***
पी वी आई					
उत्पादन मात्रा	%	-	***	***	***
बिक्री मात्रा	%	-	***	***	***
बिक्री की लागत	%	-	***	***	***
बिक्री कीमत	%	-	***	***	***
लाभ/हानि	%	-	***	***	***
लगाई गई पूंजी पर अर्जन	%	-	***	***	***
पी एक्स-13					
उत्पादन मात्रा	%	-	***	***	***
बिक्री मात्रा	%	-	***	***	***
बिक्री की लागत	%	-	***	***	***
बिक्री कीमत	%	-	***	***	***
लाभ/हानि	%	-	***	***	***
लगाई गई पूंजी पर अर्जन	%	-	***	***	***
टी डी क्यू					
उत्पादन मात्रा	%	-	***	***	***
बिक्री मात्रा	%	-	***	***	***
बिक्री की लागत	%	-	***	***	***
बिक्री कीमत	%	-	***	***	***
लाभ/हानि	%	-	***	***	***
लगाई गई पूंजी पर अर्जन	%	-	***	***	***
टी एम टी					
उत्पादन मात्रा	%	-	***	***	***
बिक्री मात्रा	%	-	***	***	***
बिक्री की लागत	%	-	***	***	***
बिक्री कीमत	%	-	***	***	***
लाभ/हानि	%	-	***	***	***
लगाई गई पूंजी पर अर्जन	%	-	***	***	***

क्षति संबंधी निष्कर्ष

92. क्षति के संबंध में प्राधिकारी निम्नलिखित धारित करते हैं :-

- i. **पी एक्स-13** – जांच की अवधि के दौरान पी एक्स -13 के आयातों में पाटनरोधी शुल्क और रक्षोपाय शुल्क मौजूद होने के बावजूद समग्र वृद्धि हुई है। पाटनरोधी शुल्क और रक्षोपाय शुल्क की मौजूदगी के बावजूद भारत में कुल आयात, खपत और उत्पादन के संबंध में आयात बहुत अधिक हुए हैं। कीमत प्रभाव के संबंध में यह नोट किया जाता है आयात घरेलू उद्योग की बाजार में कीमतों का भारी अधोरदन कर रहे थे और उत्पादन लागत में वृद्धि होने के बावजूद जांच की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में गिरावट आई है। आयात घरेलू उद्योग की कीमतों का अधोरदन इसमें सीमा शुल्क पाटनरोधी शुल्क और रक्षोपाय शुल्क (पी एक्स-13) जोड़ने के बाद भी कर रहे थे जिसके परिणामस्वरूप कीमत निग्रहण हुआ। घरेलू उद्योग के निष्पादन में क्षति अवधि के दौरान उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री कीमत, लाभ, ब्याज एवं कर पूर्व लाभ, नकद लाभ एवं निवेश पर अर्जन में गिरावट आई है। जांच की अवधि के दौरान घरेलू बिक्रियों में वृद्धि हुई और मालसूची में गिरावट आई। आयात घरेलू कीमतों का अवमन्दन कर रहे थे। प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग को सम्बद्ध देशों से पी एक्स-13 के सतत पाटित आयातों के कारण निरन्तर क्षति सहन करनी पड़ी है।
- ii. **पी बी आई** – पी बी आई के आयातों में समग्र रूप से वृद्धि हुई है। भारत में उत्पादन और खपत के संबंध में आयातों में वृद्धि हुई है। कीमत प्रभाव के संबंध में यह पाया जाता है कि आयात घरेलू उद्योग की बाजार में कीमतों का भारी अधोरदन कर रहे थे और उत्पादन लागत में वृद्धि होने के बावजूद क्षति की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में गिरावट आई है। जहां तक घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के परिणामी प्रभाव का संबंध है, यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग के निष्पादन में उत्पादन, क्षमता उपयोग, मालसूची, बिक्री कीमत, नकद लाभ, लाभ और निवेश पर अर्जन के रूप में गिरावट आई है। आयातों ने सम्पूर्ण क्षति अवधि के दौरान घरेलू कीमतों का अवमन्दन किया है। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि चीन से पी बी आई पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को निरन्तर क्षति सहन करनी पड़ी है।
- iii. **टी डी क्यू**: टी डी क्यू के आयातों में इस अवधि के दौरान गिरावट आई। कीमत प्रभाव के संबंध में आयात बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों का भारी कीमत अधोरदन कर रहे थे। इसके परिणामस्वरूप जांच की अवधि के दौरान लाभ, नकद लाभ और निवेश पर अर्जन में कमी आई है। घरेलू उद्योग के निष्पादन में उत्पादन, क्षमता उपयोग और घरेलू बिक्रियों के रूप में सुधार हुआ है। तथापि, चीन से पाटन होने के कारण जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के निष्पादन में लाभप्रदायकता, नकद लाभ और निवेश पर अर्जन में गिरावट आई है। सम्पूर्ण अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की मालसूची में वृद्धि हुई है। आयातों से घरेलू उद्योग की कीमतों का भारी कीमत निग्रहण हो रहा है। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि चीन से टी डी क्यू के पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को सतत क्षति हुई है।
- iv. **टी एम टी**: टी एम टी के आयातों में उक्त अवधि के दौरान गिरावट आई है। कीमत प्रभाव के संबंध में, बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों का भारी कीमत अधोरदन हो रहा है। जहां तक घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के परिणामी प्रभाव का संबंध है, घरेलू उद्योग के निष्पादन में उत्पादन, क्षमता उपयोग के संबंध में सुधार हुआ है। वहीं इसकी लाभप्रदायकता, नकद लाभ और निवेश पर अर्जन में गिरावट आई है। घरेलू उद्योग को

लागत में वृद्धि के अनुरूप अपनी कीमतें न बढ़ाने के लिए मजबूर किया गया। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि चीन से टी एम टी पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को निरन्तर क्षति सहन करनी पड़ रही है।

- v. **सी बी एस:** सी बी एस के आयातों में भारत में उत्पादन/खपत के संबंध में और संगत रूप से भारी वृद्धि हुई है। कीमत प्रभाव के संबंध में, बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों का भारी कीमत अधोरदन हो रहा था और घरेलू उद्योग लागत में वृद्धि के अनुरूप अपनी कीमतें बढ़ाने में अक्षम थे। जहां तक घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के परिणामी प्रभाव का संबंध है, यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग के निष्पादन में उत्पादन, बिक्री मात्रा और क्षमता उपयोग में सुधार हुआ है। तथापि, जांच की अवधि के दौरान लाभ प्रदायकता, ब्याज एवं कर पूर्व लाभ, नकद लाभ और निवेश पर अर्जन में गिरावट आई है। घरेलू उद्योग के पास उपलब्ध मालसूची में भी इस अवधि के दौरान वृद्धि हुई है। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि चीन से सी बी एस पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को निरन्तर क्षति सहन करनी पड़ रही है।

- vi. **एम बी टी:** एम बी टी के आयातों में गिरावट आई है। कीमत प्रभाव के संबंध में, बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों का भारी कीमत अधोरदन हो रहा था। घरेलू उद्योग लागत में वृद्धि के अनुरूप अपनी कीमतें बढ़ाने में अक्षम थे। इस प्रकार आयात बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों का निग्रहण कर रहे थे। जहां तक पाटित आयातों का घरेलू उद्योग पर परिणामी प्रभाव का संबंध है, घरेलू उद्योग की बिक्री, उत्पादन, क्षमता उपयोग, लाभप्रदायकता, नकद लाभ और निवेश पर अर्जन में जांच की अवधि के दौरान गिरावट आई है। घरेलू उद्योग के पास उपलब्ध मालसूची में भी इस अवधि के दौरान वृद्धि हुई है। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि चीन से एम बी टी पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को निरन्तर क्षति सहन करनी पड़ रही है।

94. उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर प्राधिकारी यह धारित करते हैं कि घरेलू उद्योग का सामूहिक रूप से एवं संचयी रूप से निष्पादन यह प्रदर्शित करता है कि घरेलू उद्योग को वास्तव में क्षति हुई है।

झ. पाटन एवं क्षति की निरन्तरता अथवा उसकी पुनरावृत्ति की संभावना

घरेलू उद्योग के विचार

95. यदि शुल्क का प्रतिसंहरण कर लिया जाता है तो पाटन की निरन्तरता बनी रहने और उसमें भारी वृद्धि होने की संभावना निम्नलिखित कारणों से है:-

- i. सभी विगत जांचों में निर्धारित पाटन मार्जिन बहुत अधिक था।
- ii. चीन में रबड़ रसायनों का उत्पादन करने की भारी क्षमता है और विश्व में उसकी स्थिति अग्रणी है।
- iii. संबद्ध देशों से प्रत्येक रबड़ रसायन के मामले में आयातों की मात्रा पाटनरोधी शुल्क अधिरोपित होने के बावजूद बहुत अधिक बनी रही और यह बढ़ने की प्रवृत्ति प्रदर्शित करती है।
- iv. संबद्ध देशों में उत्पादकों के पास अपनी घरेलू मांग की तुलना में सम्बद्ध वस्तु का उत्पादन करने की भारी क्षमता है

- v. पाटनरोधी शुल्क का प्रतिसंहरण कर लिए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग की कीमतों का संबद्ध देशों से आयातों द्वारा कीमत अधोरदन किए जाने की संभावना है और यह कीमत अधोरदन और अधिक बढ़ सकता है।
- vi. विश्व के सभी रबड़/टायर उद्योग चीन की ओर अंतररित हो रहे हैं, विदेशी रसायन विनिर्माताओं ने चीन में कारखाने स्थापित करने के लिए बढ़ने की प्रवृत्ति है क्योंकि वे चीन के बाजार को अधिकाधिक महत्व दे रहे हैं।
- vii. सालूशिया इंक (“सालूशिया”), ज्यांगसू सिनोर्गकेम टेक्नालॉजी कम्पनी लिमिटेड (“सिनोर्गकेम”) और कोरिया कुम्हो पेट्रोकेमिकल कंपनी लिमिटेड (“के के पी सी”) ने घोषित किया है कि 4-एडीपीए के उत्पादन की प्रक्रियाओं के लिए सालूशिया पेटेंट के संबंध में उनके बीच होने वाले सभी विवादों का समाधान उन्होंने वैश्विक रूप से किया है। समाधान की इन शर्तों के अंतर्गत सालूशिया, सालूशिया पेटेंट के अंतर्गत 4-एडीपीए का विनिर्माण करने के लिए शिनोरकेम और के के पी सी को लाइसेंस प्रदान करेगी, जो वर्ष 2019 तक समाप्त नहीं होगा। अनुज्ञप्तिधारी के रूप में सिनोर्गकेम और के के पी सी को इन पेटेंटों को प्रभावी करने का कतिपय अधिकार भी दिया गया है।
- viii. उपर्युक्त विचाराधीन उत्पाद के लिए भारतीय बाजार अत्यधिक कीमत संवेदी है। उपभोक्तागण माल का प्रापण करने के लिए स्रोत का निर्धारण करते हैं और कीमत को सर्वाधिक महत्व दिया जाता है।
- ix. मौजूदा पाटनरोधी शुल्क होने के बावजूद चीन के आयातों की बाजार में हिस्सेदारी बहुत अधिक है।
- X. संबद्ध देशों में क्षमता, घरेलू मांग और मौजूदा निर्यात दर्शाते हैं कि इन संबद्ध देशों में उत्पादक नियातान्मुखी हैं।

विरोधकर्ता हितबद्ध पक्षकारों के विचार:

95. संभावना विश्लेषण के संबंध में विरोधकर्ता हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निम्नलिखित प्रस्तुतीकरण किए गए हैं:-

- i. आवेदक का यह दावा कि पाटनरोधी शुल्क में विस्तार इस कारण से करना चाहिए कि कोरिया आर पी में बेशी क्षमताएं मौजूद हैं, नामंजूर कर दिया जाना चाहिए। यह प्रस्तुत किया जाता है कि यथार्थ क्षमता की जांच प्रश्नावली प्रत्युत्तर से की जाए। इसके अतिरिक्त यह भी सिद्ध किया जाना चाहिए कि इस बेशी क्षमता का उपयोग विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन और फिर उस उत्पाद का भारत को निर्यात करने के लिए किया जाएगा। इसके अतिरिक्त बेशी क्षमताओं की मौजूदगी पाटनरोधी शुल्क का विस्तार किए जाने के लिए पर्याप्त नहीं है। इस संबंध में भारतीय बुनकर एसोसिएशन बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी, 2004 (170) ई एल टी 144 (ट्रि-डैल) में माननीय सी ई एस टी ए टी द्वारा की गई व्यवस्था और यू एस ए एवं जापान से एनीलाइन निर्णायक समीक्षा जांच में डी जी ए डी के दिनांक 17 जनवरी, 2012 के अन्तिम जांच परिणाम संख्या 15/19/2010 -डी जी ए डी पर भरोसा किया गया है।

- ii) चूंकि निर्णायक समीक्षा भविष्य में होने वाले परिणामों की जांच करती है इसलिए आवेदक द्वारा दाहेज स्थित नए संयंत्र में संगत लागत का सत्यापन किया जाना और तदनुसार उसकी संगणना किया जाना अपेक्षित है। इस कार्य के बिना गैर क्षतिकारी कीमत का कोई भी निर्धारण त्रुटिपूर्ण होगा। यह प्रस्तुत किया जाता है कि प्राधिकारी को दाहेज स्थित नए विनिर्माण संयंत्र की जांच करानी चाहिए कि (क) किस संयंत्र पर इस सत्यापन का आयोजन किया गया; (ख) क्या गैर क्षतिकारी कीमत का निर्धारण नए संयंत्र, पुराने संयंत्र या दोनों की उत्पादन लागत को ध्यान में रखकर किया गया है; और (ग) क्या आवेदक नए संयंत्र पर लागत में कोई कटौती करने का प्रस्ताव है या नहीं। इसके अतिरिक्त, यह प्रस्तुत किया जाता है कि यदि प्राधिकारी पुराने संयंत्र में हुई कीमत को अपनाने का विचार करते हैं तो नए संयंत्र पर लागत के किसी भी घटक को गैर क्षतिकारी कीमत का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ नहीं अपनाए जाना चाहिए।

प्राधिकारी द्वारा जांच

97. घरेलू उद्योग ने अपने प्रस्तुतीकरण में दावा किया है कि निर्णायक समीक्षा के अंतर्गत यह जांच करने की अपेक्षा की जाती है कि क्या पाटनरोधी शुल्क को प्रतिसंहरण कर लिए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग को क्षति की निरंतरता बने रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है। और इसलिए क्षति विश्लेषण हेतु सूचीबद्ध किए गए किसी भी कारक के आधार पर की गई जांच सही नहीं होगी। इसलिए प्राधिकारी के संज्ञान में लाए गए ऐसे सभी कारकों की जांच यह उपपादित करने के लिए की गई कि क्या शुल्क को वापस ले लेने की स्थिति में क्षति की निरंतरता बनी रहने की संभावना है। प्राधिकारी यह निर्धारित करते हैं कि सम्बद्ध वस्तु का भारतीय बाजार में पाटित कीमतों पर निरंतर आयात हो रहा है अथवा पाटनरोधी शुल्क वापस ले लिए जाने की स्थिति में सम्बद्ध देशों से पाटित कीमतों पर निर्यात बने रहने की संभावना है। यह जांच करना संगत है कि क्या घरेलू उद्योग को क्षति, यदि शुल्क हटा लिया जाता है तो इन पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की क्षति बने रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है।
98. सतत क्षति की जांच करने के अतिरिक्त प्राधिकारी ने जांच की अवधि के दौरान विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना और उनके साक्ष्य के आधार पर प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की यह जांच भी संपादित की कि क्या घरेलू उद्योग को क्षति की निरंतरता बने रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है। प्राधिकारी ने नियमावली के अनुबंध 2(Mi) में उल्लिखित शर्तों के अनुसार वास्तविक क्षति की चुनौती की संभावना से संबंधित पैरामीटरों पर विचार करते हुए क्षति की निरंतरता अथवा उसकी पुनरावृत्ति पर विचार किया है।

“वास्तविक क्षति की चुनौती का निर्धारण तथ्यों पर आधारित होना चाहिए न कि केवल आरोपों, अटकलों या सुदूर संभावना पर। परिस्थितियों में परिवर्तन जो ऐसे हालात सृजित कर सकते हैं जिनमें पाउन के कारण क्षति हो सकती है उनको स्पष्ट रूप से पूर्वापेक्षित एवं आसन्न होना चाहिए। वास्तविक क्षति की चुनौती की मौजूदगी का निर्धारण करने के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी को अन्य बातों के साथ-साथ निम्नलिखित कारकों पर विचार करना चाहिए।

- i) भारत में पाटित आयातों की वृद्धि की भारी दर जिससे पर्याप्त रूप से संबंधित आयातों की संभावना का संकेत मिलता है।
- ii) निर्यातक की क्षमता में स्वतंत्र रूप से समाधान योग्य या आसन्न, पर्याप्त रूप से वृद्धि हुई है जिससे भारतीय बाजार में पाटित निर्यातों की पर्याप्त रूप से वृद्धि की संभावना का संकेत

मिलता हूँ और इसमें किसी अन्य निर्यात बाजार की उपलब्धता पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए।

iii) क्या आयातों का प्रवेश ऐसी कीमतों पर हो रहा है जिनका घरेलू कीमतों पर भारी निग्रहणकारी या अवमन्दनकारी प्रभाव पड़ता हो और उससे आयातों की माँग में और अधिक वृद्धि हमारे की संभावना हो

iv) उस वस्तु की मालसूची की जांच की जा रही हो

99. घरेलू उद्योग ने संबद्ध देशों में उत्पादकों द्वारा धारित अत्यधिक उत्पादन क्षमता, घरेलू उद्योग की सुभेद्यता, भारतीय बाजार की कीमत आकर्षकता, साधन के अभाव में कीमत अधःपदन और विदेशी विनिर्माताओं द्वारा चीन में कारखाने लगाने से संबंधित सूचना प्रदान की है जिससे कि घरेलू उद्योग को हमारे वाली क्षति की निरंतरता की संभावना को सिद्ध किया जा सके।

100. इस संबंध में प्राधिकारी द्वारा निम्नलिखित तथ्यों/आंकड़ों/प्रवृत्तियों को नष्ट किया गया है।

संबद्ध देशों में बेशी उत्पादन क्षमता

101. वास्तविक क्षमता, घरेलू बाजार में सम्बद्ध वस्तु की खपत के आधार पर विश्लेषण यह दर्शाते हैं कि सम्बद्ध देशों में सम्बद्ध वस्तु का उत्पादन करने के लिए अधिशेष निस्तारणीय क्षमता है। इसलिए प्राधिकारी यह धारित करते हैं कि पाटनराष्ट्री शुल्क को वापस ले लिए जाने की स्थिति में इस तथ्य की काफी संभावना है कि इस निस्तारणीय क्षमता का प्रयोग पाटित कीमतों पर भारत में सम्बद्ध वस्तु का निर्यात बढ़ाने के लिए कंपनियों द्वारा की जाएगी। सम्बद्ध देशों की क्षमता, माँग से संबंधित स्थिति निम्नलिखित है:-

देश	उत्पाद	क्षमता (एमटी/ए)	घरेलू माँग (एमटी/ए)	अधिशेष (एमटी/ए)
करिया	पी एक्स -13	70000	8000	62000
चीन	पी एक्स -13	195000+	90000	115000+
चीन	टी पी क्यू	78400+	60000	18400+
चीन	एम बी टी	44000+	10000	34000+
चीन	एम बी टी	79000+	10000	69000+
चीन	टी एम टी	32240+	15000	17240+
चीन	सी बी एस	54600+	25000	29000+

102. प्राधिकारी नष्ट करते हैं कि के के पी सी और जियांग्सू सिनार्कैम द्वारा पी एक्स-13 (6 पी पी टी) के लिए दायर प्रश्नावली प्रत्युत्तर में निम्नलिखित दर्शाया गया है।

	के के पी सी	जियांग्सू सिनार्कैम
क्षमता (एम टी)	***	***
उत्पादन (एम टी)	***	***
अप्रयुक्त क्षमता %	***	***

सतत पाटन एवं घरेलू उद्योग को सतत क्षति

103. करिया आर पी से पी एक्स-13 के पाटन की निरन्तरता बने रहने की संभावना के संबंध में प्राधिकारी ने रिकार्ड में उपलब्ध उस साक्ष्य पर भरोसा किया है जिस पर जांच की अवधि के दौरान करिया से कई अन्य देशों को सम्बद्ध वस्तु का निर्यात किया गया है। यह नष्ट किया जाता है कि सम्बद्ध वस्तु का निर्यात जांच की अवधि के दौरान करिया आर पी से अन्य देशों को किया जाता है और करिया के सीमा शुल्क आंकड़ों से गणना किये गए निर्यात के विवरण दर्शाते हैं कि उन्होंने 3.04 अमेरिकी डॉलर प्रति

कि.ग्रा. की औसत सी आई एफ कीमत पर कुल 105 मिलियन अमेरिकी डॉलर मूल्य की 33, 138 एम टी पी एक्स-13 का निर्यात किया है। उन कीमतों पर पाटन की संभावना का विचार करते हुए जिन पर उनका तृतीय देशों का जांच की अवधि के दौरान व्यक्तिगत रूप से या सामूहिक रूप से निर्यात किया गया है। यह नष्ट किया जाता है कि कारिया के उत्पादकों ने सम्बद्ध वस्तु का तृतीय देशों का निर्यात जांच की अवधि के लिए कारिया हेतु निर्धारित सामान्य मूल्य से बहुत अधिक कम कीमत पर किया है। जांच की अवधि के दौरान अन्य देशों का पी एक्स-13 की निर्यात कीमत के आधार पर पाटन मार्जिन बहुत अधिक है जिसे निम्नलिखित रूप में देखा जा सकता है।

विवरण	यूनिट	
मूल्य	अमेरिकी डॉलर/मिलियन	105
बजन	एम टी	33,138
एफ ओ वी कीमत	अमेरिकी डॉलर/कि.ग्रा.	3.16
फैक्ट्री बाह्य कीमत	अमेरिकी डॉलर/कि.ग्रा.	2.96
सी आई एफ कीमत	अमेरिकी डॉलर/कि.ग्रा.	3.04
अवसारित कीमत	अमेरिकी डॉलर/कि.ग्रा.	3.27
सामान्य मूल्य	अमेरिकी डॉलर/कि.ग्रा.	***
पाटन मार्जिन	अमेरिकी डॉलर/कि.ग्रा.	***

104. प्राधिकारी यह नष्ट करते हैं कि विचाराधीन उत्पाद का भारी मात्रा में पाटित कीमतों पर निर्यात किया गया है। प्रत्येक विचाराधीन उत्पाद के सम्बद्ध आयातों की मात्रा समग्र रूप से और भारत में उत्पादन एवं खपत के संबंध में बहुत अधिक है जैसा कि निम्नलिखित तालिका से देखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त घरेलू उद्योग का चालू अवधि में वास्तविक क्षति हुई है। इसलिए, प्राधिकारी यह नष्ट करते हैं कि सतत पाटन एवं सतत क्षति के साथ-साथ अंतरग्रस्त वर्तमान मात्रा से स्वयं ही यह स्पष्ट हो जाता है कि यदि पाटनराशि शुल्क का समाप्त कर दिया जाता है तो पाटन और घरेलू उद्योग का क्षति हमारे की संभावना है। वास्तव में पाटनराशि शुल्क का समाप्त कर दिए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग का क्षति और भी अधिक बढ़ जाएगी।

विवरण	यूनिट	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि
एम बी टी					
आयात मात्रा	M	865	797	768	550
निम्नलिखित के संबंध में आयातों की हिस्सेदारी					
Ø कुल आयात	%	99.51	97.74	91.70	67.48
Ø उत्पादन	%	***	***	***	***
Ø खपत	%	59.63	54.00	55.46	40.07
सी बी एस					
आयात मात्रा	M	929	604	1,023	1,135
निम्नलिखित के संबंध में आयातों की हिस्सेदारी					
Ø कुल आयात	%	72.26	46.15	49.74	57.69
Ø उत्पादन	%	***	***	***	***
Ø खपत	%	29.28	17.19	23.66	26.62
पी वी आई					
आयात मात्रा	M	707	830	985	1,192

निम्नलिखित के संबंध में आयातों की हिस्सेदारी					
Ø कुल आयात	%	38.60	42.15	29.28	46.40
Ø उत्पादन	%	***	***	***	***
Ø खपत	%	41.15	49.01	62.78	62.50
पी एक्स-13					
आयात मात्रा	M	7,860	7,511	7,868	8,294
निम्नलिखित के संबंध में आयातों की हिस्सेदारी					
Ø कुल आयात	%	79.97	76.94	80.82	74.78
Ø उत्पादन	%	***	***	***	***
Ø खपत	%	54.92	50.58	49.17	46.00
टी पी क्यू					
आयात मात्रा	M	1,063	1,217	887	781
निम्नलिखित के संबंध में आयातों की हिस्सेदारी					
Ø कुल आयात	%	45.84	54.04	98.72	71.15
Ø उत्पादन	%	***	***	***	***
Ø खपत	%	16.16	15.27	10.91	9.86
टी एम टी					
आयात मात्रा	M	572	352	324	244
निम्नलिखित के संबंध में आयातों की हिस्सेदारी					
Ø कुल आयात	%	72.21	70.95	56.61	44.95
Ø उत्पादन	%	***	***	***	***
Ø खपत	%	31.02	22.11	18.55	14.54

105. जहां तक भारतीय बुनकर एसोसिएशन बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी, 2004 (170) ई एल टी 144 (ट्रि-पैल) में माननीय सी ई एस टी ए टी द्वारा की गई व्यवस्था का संबंध है, प्राधिकारी नष्ट करते हैं सिस्टैट ने यह उपपादित किया कि पाटन की निरंतरता बनी हुई थी और उस मामले में पाटित कीमतों से घरेलू उद्योग का वास्तविक क्षति कारित नहीं की जा रही थी और इसलिए बेशी उत्पादन क्षमता की मौजूदा क्षति की भावी एवं आसन्न चुनौती के रूप में नहीं देखा जा सकता है। तथापि, वर्तमान मामले में घरेलू उद्योग का क्षति हो रही है। पाटनरधी शुल्क और रक्षाप्राय शुल्क प्रचलन में न हमने पर कीमत अधःपदन बहुत अधिक था। इसलिए, यदि वर्तमान पाटनरधी शुल्क का प्रतिसंहरण नहीं किया जाता है तो घरेलू उद्योग का संवर्द्धित क्षति सहन करनी होगी।

106. जहां तक घरेलू उद्योग की भावी उत्पादन लागत पर विचार किए जाने का संबंध है, प्राधिकारी नष्ट करते हैं कि क्षति मार्जिन का निर्धारण जांच की अवधि के दौरान उत्पादन लागत पर विचार करते हुए किया जाना अपेक्षित होता है। भविष्य में उत्पादन लागत में हमने वाली किसी संभावित वृद्धि या कमी पर क्षति मार्जिन का निर्धारण करने के लिए और उस पाटनरधी शुल्क की प्रमात्रा का निर्धारण करने के लिए नहीं किया जा सकता है जिसकी सिफारिश की जाना चाहिए। इस संबंध में यह स्पष्ट किया जाता है कि दाहेज में एक मध्यवर्ती 4-एपीपीए का वाणिज्यिक उत्पादन जांच की अवधि के पश्चात अर्थात् मार्च, 2012 माह में प्रारंभ हुआ था। इसलिए जांच की अवधि के दौरान याचिकाकर्ता ने थाणे स्थित अपने संयंत्र में विचाराधीन उत्पाद (मध्यवर्ती सहित) का उत्पादन किया था। प्राधिकारी ने थाणे संयंत्र पर किए गए व्यय का सत्यापन किया है। चूंकि याचिकाकर्ता ने जांच की अवधि के दौरान नई प्रक्रिया से वाणिज्यिक उत्पादन नहीं किया है इसलिए प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा अपनाई गई प्रक्रिया पर विचार करते हुए और क्षतिकारी कीमत का निर्धारण किया है। जहां तक नए संयंत्र में कीमत में कमी हमने का संबंध है, जब याचिकाकर्ता

ने 4-एपीपीए का वाणिज्यिक उत्पादन किया ही नहीं है इसलिए नए प्लांट में कीमत में संभावित कमी की जांच प्राधिकारी द्वारा नहीं की गई। प्राधिकारी यह भी नए करते हैं कि नियमावली में पाटनरधी शुल्क की आवधिक समीक्षा करने का प्रावधान किया गया है और यदि कोई हितबद्ध पक्षकार बदली हुई परिस्थितियों को सिद्ध कर देता है तो प्राधिकारी प्रभावी पाटनरधी शुल्क की आवधिक समीक्षा करते हैं। यह भी स्पष्ट किया जाता है कि और क्षतिकारी कीमत का परिकलन करने के प्रयोजनार्थ नए संयंत्र पर आए लागत तत्व को शामिल नहीं किया गया है।

शुल्क की अनुपस्थिति में कीमत अधादन

107. प्राधिकारी यह नए करते हैं कि वह कीमत जिस पर जांच की अवधि के दौरान संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु का आयात देश में हो रहा था घरेलू उद्योग के निवल बिक्री प्रापण से बहुत कम है जिससे निर्यातकों के लिए भारतीय बाजार एक आकर्षक व्यापार स्थल बना हुआ है।

108. वर्तमान मामले में प्रत्येक संबद्ध वस्तु का संबद्ध देशों से जांच की अवधि के दौरान भारी मात्रा में आयात किया गया है। यह नए किया जाता है कि इन वस्तुओं का निर्यात पाटित कीमतों पर किया गया और वे घरेलू उद्योग की कीमतों का भारी मात्रा में अधादन कर रहे हैं। यदि पाटनरधी शुल्क को समाप्त करने की अनुमति दे दी जाती है तो संबद्ध वस्तु की पाटित कीमतों पर मात्रा और भी अधिक बढ़ जाने की संभावना है। यह विचार इस तथ्य पर ध्यान देते हुए और भी अधिक तीव्र हो जाता है कि संबद्ध देशों में संबद्धवस्तु का उत्पादन करने की भारी अप्रयुक्त क्षमताएं मौजूद हैं जैसा कि घरेलू उद्योग द्वारा प्रावधान किया गया है।

पाटन एवं क्षति की निरंतरता की संभावना के संबंध में निष्कर्ष

109. प्राधिकारी को उपलब्ध सूचना पर विचार करते हुए प्राधिकारी यह निर्धारित करते हैं कि घरेलू उद्योग की मौजूदा वित्तीय स्थिति, भारी कीमत अधादन, चीन जन.गण. और करिया आर पी ने भारी अप्रयुक्त उत्पादन क्षमताओं और शुल्क का प्रतिसंहरण कर लिए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग की वित्तीय स्थिति पर विचार करते हुए पाटन की निरंतरता और उसके परिणामस्वरूप हमने वाली क्षति की संभावना और भी बढ़ जाती है।

कारणात्मक संबंध

110 यह नए किया जाता है कि उपर्युक्त तथ्य यह स्थापित करते हैं कि घरेलू उद्योग को पाटित आयातों द्वारा क्षति कारित की गई है। कारणात्मक संबंध के बारे में नियमावली के अनुबंध 2 में निम्नलिखित प्रावधान किया गया है :-

“ऐसा प्रदर्शित होना चाहिए कि पाटित आयात, पाटन के प्रभावों के जरिए जैसा कि उपर्युक्त पैराग्राफ (ii) और (iv) घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचा रहे हैं। पाटित आयातों तथा घरेलू उद्योग को क्षति के बीच कारणानात्मक संबंधों का प्रदर्शन निर्दिष्ट प्राधिकारी के समक्ष संत साक्ष्य की जांच पर आधारित होना चाहिए। निर्दिष्ट प्राधिकारी भी पाटित आयातों के अलावा उन अन्य सभी ज्ञात कारकों की भी जांच करेंगे जो घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचा रहे हों और इन कारकों द्वारा कारित क्षति के लिए पाटित आयातों को उत्तरदायी नहीं ठहराया जाएगा। इस संबंध में जो कारक संत हो सकते हैं उनमें, अन्य बातों के साथ-साथ, पाटित कीमतों पर न बेचे गए आयातों की मात्रा और कीमत मांग में संकुचन या खपत की प्रणाली में परिवर्तन, व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रक्रियाएं और घरेलू एवं विदेशी उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा, प्रौद्योगिकी में विकास और निर्यात निष्पादन तथा घरेलू उद्योग की उत्पादकता शामिल है।”

अन्य ज्ञातकारकों की जांच

पाटित कीमतों पर न बेचे गए आयातों की मात्रा और मूल्य

111. विभिन्न देशों से आयातों का विवरण यह दर्शाता है कि इस विचाराधीन उत्पाद का अन्य देशों से आयात न्यूनतम स्तर से कम स्तर पर या जांच की अवधि के दौरान संबद्ध देश के आयातों से उच्चतर कीमतों पर किया जा रहा है अथवा उन पर पाटनराष्ट्री शुल्क अधिरूपित है। इसलिए, यह नहीं कहा जा सकता है कि अन्य देशों से हमारे वाले आयात घरेलू उद्योग की क्षति पहुंचा रहे हैं।

मांग में संकुचन

112. जांच की अवधि के दौरान आधार वर्ष से तुलना करने पर टी एम टी और एम बी टी के सिवाय किसी भी रबड़ रसायन की मांग में संकुचन नहीं हुआ है। यह नष्ट किया जाता है कि मांग में संकुचन ने घरेलू उद्योग की क्षति नहीं पहुंचाई है।

खपत की प्रणाली में परिवर्तन

113. विचाराधीन उत्पाद के संबंध में खपत की प्रणाली में कोई भी परिवर्तन नहीं हुआ है। खपत की प्रणाली में परिवर्तन ने घरेलू उद्योग को हमारे वाली क्षति में अपना योगदान नहीं दिया है।

व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रक्रियाएं और घरेलू एवं विदेशी उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा

114. ऐसी कोई व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रक्रियाएं नहीं हैं जिनकी बजह से घरेलू उद्योग की क्षति पहुंची हो।

प्रौद्योगिकी में विकास

115. इस उत्पाद का उत्पादन करने के लिए प्रौद्योगिकी में न तो कोई विशेष परिवर्तन हुआ है और न ही निकट भविष्य में कोई परिवर्तन हमारे की संभावना है। इसलिए प्रौद्योगिकी में विकास क्षति कारित करने वाला एक कारक नहीं हो सकता है।

निर्यात निष्पादन

116. प्राधिकारी नष्ट करते हैं कि घरेलू उद्योग ने इस विचाराधीन उत्पाद का निर्यात किया है। तथापि, घरेलू उद्योग की क्षति घरेलू प्रचालनों के कारण हो रही है। प्राधिकारी ने घरेलू बिक्रियों के लिए लागू निर्धारण एवं क्षति संबंधी सूचना की जांच अलग से की है। इसलिए, घरेलू उद्योग की क्षति के लिए निर्यातों की उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता है।

घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित और बेचे जाने वाले अन्य उत्पादों का निष्पादन

117. प्राधिकारी नष्ट करते हैं कि जांच किए गए क्षति पैरामीटर विचाराधीन उत्पाद से संबंधित है और पाई गई क्षति घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित तथा बेचे गए अन्य उत्पादों के निष्पादन के कारण नहीं हुई है।

कारणात्मक संबंधों का विश्लेषण

118. कारणात्मक संबंधों का विप्लेषण निम्नलिखित है :-

- i. **पी एक्स-13:** पी एक्स-13 के आयात बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों का अधःपतन कर रहे हैं। इसके प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में, एक ओर यद्यपि आयातों की मात्रा में वृद्धि हुई है वहीं दूसरी ओर घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में गिरावट आई है। इसके परिणामस्वरूप जांच की अवधि में घरेलू बिक्रियों, लाभ/हानि, नकद लाभ, निवेश पर अर्जन में गिरावट आई है और घरेलू उद्योग की मालसूची में वृद्धि हुई है।
- ii. **पी वी आई:** पी वी आई के आयात बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों का अधःपतन कर रहे हैं। इसके प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में, एक ओर यद्यपि आयातों की मात्रा में वृद्धि हुई है वहीं दूसरी ओर घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में गिरावट आई है। इसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के निष्पादन में क्षति अवधि के दौरान उत्पादन, क्षमता उपयोग, मालसूची,

लाभ/हानि, नकद लाभ, निवेश पर अर्जन में गिरावट आई है। इस संपूर्ण अवधि के दौरान भारी कीमत अधःपतन के परिणामस्वरूप बाजार में भारी कीमत निःसरण हुआ है।

- iii. **टी पी क्यू:** टी पी क्यू के आयात बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों का अधःपतन कर रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के निष्पादन में जांच की अवधि के दौरान लाभ/हानि, नकद लाभ और निवेश पर अर्जन में गिरावट आई है तथा घरेलू उद्योग की मालसूची में वृद्धि हुई है। इस संपूर्ण अवधि के दौरान भारी कीमत अधःपतन के परिणामस्वरूप लाभ, निवेश पर अर्जन और नकद लाभ में भारी गिरावट आई है।
- iv. **टी एम टी:** टी एम टी के आयात बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों का अधःपतन कर रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के निष्पादन में क्षति अवधि के दौरान लाभ/हानि, नकद लाभ और निवेश पर अर्जन तथा मालसूची में गिरावट आई है।
- v. **एम बी टी :** एम बी टी के आयात बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों का अधःपतन कर रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप क्षमता उपयोग, मालसूची, लाभ/हानि, नकद लाभ, निवेश पर अर्जन में गिरावट आई है। घरेलू उद्योग के भारी कीमत अधःपतन के परिणामस्वरूप जांच की अवधि के दौरान लाभ, नकद लाभ और निवेश पर अर्जन में गिरावट निरंतर बनी हुई है।
- vi. **सी बी एस:** सी बी एस के आयात बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों का अधःपतन कर रहे हैं। इसके प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में, एक ओर यद्यपि आयातों की मात्रा में वृद्धि हुई है वहीं दूसरी ओर घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में गिरावट आई है। इसके परिणामस्वरूप, घरेलू उद्योग के निष्पादन में जांच की अवधि के दौरान लाभ/हानि, मालसूची आदि के संबंध गिरावट आई है।

भारतीय उद्योग का हित

119. सामान्य पाटनरक्षी शुल्क का प्रयोजन उस पाटन का उपशमन करना होता है जो घरेलू उद्योग को क्षति कारित पर रहा हो और भारतीय बाजार में खुली और पक्षपात रहित प्रतिस्पर्धा का ऐसा माहौल पुनःस्थापित करना होता है जो देश में आम हित में हो। प्राधिकारी यह मानते हैं कि पाटनरक्षी शुल्क की निरंतरता उन उत्पादों के कीमत स्तर को प्रभावित कर सकती है जिनका विनिर्माण सम्बद्ध वस्तु का प्रयोग कर सकती है जिनका विनिर्माण सम्बद्ध वस्तु का प्रयोग करके किया जाता है और परिणामतः इन उत्पादों की संतुष्ट प्रतिस्पर्धात्मकता पर कुछ प्रभाव पड़ सकता है। तथापि, भारतीय बाजार में पक्षपात रहित प्रतिस्पर्धा पाटनरक्षी उपायों से कम नहीं होगी। इसके विपरीत, पाटनरक्षी उपाय की निरंतरता से पाटन की प्रक्रियाओं द्वारा अर्जित अनुचित लाभ दूर होगा, यह घरेलू उद्योग को पतन से बचाएगा और उपभोक्ताओं को सम्बद्ध वस्तु की उपलब्धता की व्यापक पसंद बनाए रखने में सहायता मिलेगी। प्राधिकारी यह नष्ट करते हैं कि पाटनरक्षी उपाय की निरंतरता से सम्बद्ध क्षेत्र से आयातों पर किसी तरह का कोई प्रतिबंध नहीं लगेगा और इसलिए उसकी उपभोक्ताओं को उपलब्धता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। उपभोक्ताओं अभी भी आपूर्ति के दायरे या उससे अधिक प्राप्त बनाए रख सकते हैं।

क्षति एवं क्षति मार्जिन की मात्रा

120. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के लिए प्रारंभिक क्षतिकारी कीमत की निर्धारण नियमावली में विहित सिद्धांतों के आधार पर किया है। क्षति मार्जिन का निर्धारण करने के लिए घरेलू उद्योग की प्रारंभिक क्षतिकारी कीमत की तुलना संबंधित देशों से संबंधित आयातों के अवसारित मूल्य से की गई है। इस तरह आकलित क्षति मार्जिन का निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है।

सहायक निर्यातक के मामले में क्षति मार्जिन

उत्पाद	उत्पादक का नाम	निर्यातक	प्रारंभिक क्षतिकारी कीमत (रु./कि.ग्रा.)	अवसारित मूल्य (रु./कि.ग्रा.)	क्षति मार्जिन	क्षति मार्जिन %	क्षति मार्जिन % रेंज
पी एक्स - 13	मैसर्स शान्ति सिनार्केम टेक्नॉलॉजी कम्पनी लिमिटेड, चीन जन.गण.	मैसर्स जियांगसू सिनार्केम टेक्नॉलॉजी कम्पनी लिमिटेड, चीन जन.गण.	***	***	***	***	55-65
	मैसर्स सिनार्केम कम्पनी, ताई' आन चीन जन.गण.	मैसर्स जियांगसू सिनार्केम टेक्नॉलॉजी कम्पनी लिमिटेड, चीन जन.गण.	***	***	***	***	55-65
	कुम्हा पेट्रोकेमिकल्स कम्पनी लिमिटेड करिया आर पी	कुम्हा पेट्रोकेमिकल्स कम्पनी लिमिटेड	***	***	***	***	60-70
	कुम्हा पेट्रोकेमिकल्स कम्पनी लिमिटेड करिया आर पी	पेव इंटरनेशनल कॉरपोरेशन करिया आर पी	***	***	***	***	60-70
	करिया आर पी के असहायक निर्यातक		***	***	***	***	80-90

असहायक निर्यातकों के मामले में क्षति निर्धारण

विवरण	यूनिट	पी एक्स - 13	टी पी क्यू	पी वी आई	टी एम टी	एम बी टी	सी बी एस
		चीन जन. ंण.	चीन जन. ंण.	चीन जन. ंण.	चीन जन. ंण.	चीन जन. ंण.	चीन जन. ंण.
पैर क्षतिकारी कीमत (एन आई पी)	रु./कि.ग्रा .	***	***	***	***	***	***
आयातों का अवसारित मूल्य	रु./कि.ग्रा .	***	***	***	***	***	***
क्षति मार्जिन	रु./कि.ग्रा .	***	***	***	***	***	***
क्षति मार्जिन	%	***	***	***	***	***	***
क्षति मार्जिन (रेंज)	%	70-80	20-30	30-40	30-40	25-35	20-30

121. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए तर्कों, प्रदान कराई गई सूचना और किए गए प्रस्तुतीकरणों तथा प्राधिकारी के समक्ष ऊपर रिकार्ड किए गए के अनुसार उपलब्ध तथ्यों का ध्यान में रखते हुए और घरेलू उद्योग का पाटन एवं उसके परिणामस्वरूप हुई क्षति की निरन्तरता और पाटन एवं क्षति की निरन्तरता की संभावना की स्थिति के लिए गए उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि :-

- (i) सम्बद्ध देशों से संबद्ध वस्तु भारतीय बाजार में पाटित कीमतों पर प्रवेश कर रही है और पाटन मार्जिन बहुत अधिक है। यह भी देखा गया है कि पाटनरक्षी शुल्क मौजूद होने के बावजूद भारत का सम्बद्ध वस्तु का पाटित कीमतों पर निर्यात की निरन्तरता बनी हुई है और यदि पाटन रक्षी शुल्क का समापन करने की अनुमति दे दी जाती है उसकी निरन्तरता की संभावना और भी अधिक बढ़ जाएगी।
- (ii) पाटनरक्षी शुल्क के बिना सम्बद्ध देशों से कीमत अथवा प्रदान और कीमत अथवा विक्रयण बहुत अधिक है। घरेलू उद्योग का जांच की अवधि के दौरान संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के निरंतर पाटन के कारण वास्तविक क्षति की निरन्तरता बनी हुई है और पाटन रक्षी शुल्क का प्रतिसंहरण कर दिए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग के प्रचालनात्मक निष्पादन में और भी अधिक कमी होने की संभावना है।

अ हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रकटन पश्चात किया गया विवरण प्रस्तुतीकरण

122. प्राधिकारी ने यह नोट किया है कि हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रकटन विवरण में दी गई टिप्पणियां केवल दाह्राई गई हैं। संक्षेप में हितबद्ध पक्षकारों ने प्रकटन विवरण पर निम्नलिखित टिप्पणियां प्रस्तुत की हैं :

अ1. विराधकर्ता हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रकटन पश्चात किए गए विवरण प्रस्तुतिकरण

123. कप्रिया सरकार सहित विराधकर्ता हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रकटन पश्चात किए गए विवरण प्रस्तुतिकरण संक्षेप में निम्नलिखित हैं :

- (i) आवेदक का भारत में घरेलू उद्योग का प्रतिनिधित्व करने का अपेक्षित आधार नहीं है।

- (ii) वर्तमान मामले में जांच शुरूआत विधि विरुद्ध थी। दिनांक 30 सितम्बर 2011 की अधिसूचना संख्या 92/2011-सीमा शुल्क के निर्णायक खण्ड के अनुसार संबद्ध वस्तु पर पाटनरक्षी शुल्क दिनांक 04 मई, 2013 को समाप्त हो गया था। केवल 5 जुलाई, 2013 को अधिसूचना सं. 17/2013-सीमाशुल्क (एपीपी) के तहत शुल्क में विस्तार किया गया। इसलिए, चूंकि शुल्क विस्तार करने से पहले ही शुल्क समाप्त हो गया था, वर्तमान समीक्षा इस उद्देश्य से निष्फल रही कि समीक्षा करने के लिए पाटनरक्षी शुल्क मौजूद ही नहीं था।
- (iii) प्रतिवादी ने यह प्रस्तुत किया कि प्राथमतः, विधिसम्मत रूप से प्राधिकारी वर्तमान मामले में प्रतिवादी द्वारा 4एपीपीए पर किए गए लागत व्यय संबंधी वास्तविक आंकड़ों की अनुदेखी नहीं कर सकते हैं। द्वितीयतः, प्राधिकारी ने 4एपीपीए की लागत से संबंधित आंकड़ों को नामंजूर करने का को विधिक तथ्यपरक आधार पर प्रस्तुत नहीं किया है। इस मामले में, यह एक मुद्दा नहीं है कि प्रतिवादी के रिकार्ड करिया जीएएपी के अनुसार नहीं है। इसलिए, हमारा प्रस्तुतिकरण प्राधिकारी द्वारा यह निष्कर्ष निकालने में विधिक भूल की गई है कि प्रतिवादी का रिकार्ड विचाराधीन वस्तु के उत्पादन और बिक्री से जुड़ी लागत को युक्तियुक्त ढंग से परावर्तित नहीं करता है। विशेष रूप से, प्रतिवादी यह प्रस्तुत करता है कि प्राधिकारी ने प्रतिवादी निर्यातक के लिए सामान्य मूल्य की संणना करते समय निम्नलिखित विधिक त्रुटियां की हैं :
- क. प्राधिकारी ने प्रतिवादी निर्यातक की 4एपीपीए की अधिप्रापण कीमत को बिना किसी विधि आधार के नामंजूर कर दिया है।
- ख. प्राधिकारी ने त्रुटिवश लैनक्सेस इण्डिया द्वारा 4एपीपीए का अधिप्रापण कीमत का प्रयोजन लैनक्सेस जर्मनी के लिए किया है।
- (iv) जर्मनी से भारत को 4एपीपीए की आयात कीमत की तुलना यथार्थ तस्वीर प्रस्तुत नहीं करेगी और इसके परिणामस्वरूप अशुद्ध विश्लेषण होगा। यह इस कारण से होगा कि जर्मनी से भारत को कीमत पर विचार करते समय भाड़ा जैसी लागत पर्याप्त रूप से भिन्न होगी क्योंकि यह सही कीमत नहीं है। आयात कीमत विभिन्न समयावधियों एवं संवर्धनों के अध्यधीन होगी है जैसे भाड़ा प्रभार, बीमा, बैंक प्रभार आदि। यह सभी समयावधियों संबंधित पतनों से दूरी के कारण अलग-अलग होंगे। अपनाई गई कीमत सत्य एवं सही तस्वीर प्रस्तुत नहीं करेगी और उसे नहीं अपनाया जाना चाहिए।
- (v) पाटन एवं क्षति की निरंतरता बने रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की कोई संभावना नहीं है। प्रतिवादी विगत में किए गए प्रस्तुतिकरणों में क्षति के कारकों और कारणात्मक संबंध के बारे में दिए गए निम्नलिखित तर्कों को पुनः दहराते हैं :
- क. यदि हमें करिया से पीएक्स-13 के आयात आंकड़ों का विश्लेषण करना होगा तो यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि करिया आरपी से आयातों ने वर्षों से संगत णिरावट प्रदर्शित की है जिसके साथ-साथ, चीन जनण से पीएक्स-13 (6पीपीपी) के आयातों में संगत वृद्धि हुई है। करिया से आयातों की मात्रा जो वर्ष 2009-10 में 6030 एमटी थी घटकर वर्ष 2011-12 में 4504 एमटी हो गई।
- ख. आवेदक को बिक्रियों के कारण कोई क्षति नहीं हुई, जिसमें संपूर्ण क्षति अवधि तथा जांच की अवधि के दौरान वृद्धि की प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है। बिक्री वर्ष 2009-10 में 100 अनुक्रमित बिन्दुओं से बढ़कर जांच की अवधि के दौरान 118 अनुक्रमित बिंदु

ह० ंई। परस्पर प्रतिस्पर्धा क्षति का एक कारण ह० सकता है। घरेलू उद्य० के निष्पादन में कुछ प्रचालों के संबंध में सुधार हुआ है। घरेलू एक सक्षम एवं आयुष्य उत्पादक है।

- (vi) प्राधिकारी द्वारा प्रकटन विवरण में अपनाई ंई विनिमय दर 53.69 है। तथापि, भारतीय रिजर्व बैंक के अनुसार अमरीकी ंलर की प्रचलित दर इस समय 60.71 है। प्राधिकारी ने विनिमय दर 53.69 पर विचार करते हुए 20-30 प्रतिशत का कीमत अधादन किया है। तथापि, यदि प्रचलित विनिमय दर पर विचार किया जाता है, ज० सर्वाधिक यथार्थ तस्वीर प्रस्तुत करेगी, त० कीमत अधादन का स्तर काफी हद तक कम ह० जाएगा। प्राधिकारी से अनुरोध है कि वह पाटन एवं क्षति की निरंतरता अथवा उसकी पुनरावृत्ति की संभावना पर विचार करते समय इस कारक पर विचार करें।
- (vii) भारत में इस विचाराधीन उत्पाद का मां० आपूर्ति अंतर है और घरेलू उद्य० पिछले 8 वर्षों से शुल्क संरक्षण प्राप्त करने के बावजूद भारत में उपभोक्ता उद्य० की मां० क० पूरा करने के लिए अपने उत्पादन में वृद्धि नहीं कर पाया है।
- (viii) सभी आर्थिक संकेतक स्पष्टतः यह स्थापित करते हैं कि घरेलू उद्य० ल०भ० सभी क्षति पैरामीटरों पर बढ़-चढ़कर अच्छी तरह काम कर रहा है और इसलिए चीन जन०ण से टीपीक्यू और सीबीएस के आयातों के कारण घरेलू उद्य० के क्षति के दावे के बीच कई कारणात्मक संबंध मौजूद नहीं है।
- (ix) जहां तक पीएक्स-13 का संबंध है जांच की अवधि के दौरान संबद्ध देशों से पीएक्स-13 के आयातों में वृद्धि मामूली सी है और उत्पादन, घरेलू बिक्री, क्षमता उपय०, आयात मात्रा, बाजार में हिस्सेदारी सीआईएफ कीमत आदि जैसे पैरामीटर घरेलू उद्य० द्वारा क्षति के दावे और चीन जन०ण एवं करिया आरपी से पीएक्स-13 के आयातों के बीच कारणात्मक संबंध क० भ० करते हैं।
- (x) घरेलू उद्य० अपने उत्पादन के एक बहुत बड़े भा० का निर्यात करता है और यह स्पष्टतः सिद्ध करता है कि घरेलू उद्य० के उत्पादन में िरावट निर्यात बिक्रियों के कारण आई है।
- (xi) प्राधिकारी ने प्रकटन रिपोर्ट में यह ईक्षण किया कि पाटनरधी शुल्क एवं रक्षाप्राय शुल्क के साथ-साथ अधिराण करके दाहरा संरक्षण नहीं दिया जाना चाहिए। तथापि, इस दाहरे संरक्षण का परिहार करने के उद्देश्य से घरेलू उद्य० सभी आर्थिक पैरामीटरों के लिए पाटनरधी शुल्क और रक्षाप्राय जांच दाओं में क्षति के समान आंकड़े प्रदान नहीं कर पाया क्योंकि उससे क्षति का पृथक्करण नहीं ह० सकता था।
- (xii) पाटन मार्जिन का परिकलन ंब्ल्यूटीओ और एपीए से असं०त है : घरेलू उद्य० क० कथित क्षति के संबंध में पर्याप्त साक्ष्य नहीं हैं और उच्चतर शुल्क का अधिराण करना जनहित के विरुद्ध है।
- (xiii) जांच की अवधि के दौरान भारत क० 4एपीपीए के आयातों के आंकड़े दर्शाते हैं कि 4एपीपीए के आयात चीन जन०ण और जर्मनी दाओं से किए ०ए। यद्यपि प्राधिकारी ने भारत में उत्पादित 6पीपीपी की तर्कसं०त ला०त का सुनिश्चयन करने के प्रयत्नार्थ 4एपीपीए के जर्मनी से आयात कीमत पर विचार किया है, इसने चीन जन०ण से 4एपीपीए की आयात

कीमत की अनेदखी की है ज० सुझाऊ ०ानरेज फार्मारयुटिकल कंपनी लिमिटे० बनाम पीजीएपी (2012)(282) ईएलटी 433 (अधिकरण-दिल्ली) के मामले में सेस्टैट के निर्णय के अनुपात के विपरीत है।

- (xiv) प्राधिकारी से इस तथ्य क० ध्यान में रखते हुए कि 4एपीपीए का निर्यातक चीन जन०ण का है, इसलिए जर्मनी से आयातित समान ब्रैं० के 4एपीपीए की आयात कीमत के बजाय चीन जन०ण के वुल्कैनाक्स, 4एपीपीए का एक ब्रैं० की आयात कीमत क० अपनाने का अनुरोध किया जाता है। पुनः यह प्रस्तुत किया ०या कि जर्मनी से 4एपीपीए के आयात वास्तव में संबद्ध पक्षकार संव्यवहार हैं और उन पर सच्ची एवं सही तस्वीर के लिए भरपूरा नहीं किया जा सकता है।
- (xv) सहयोगकर्ता निर्यातकों ने अपने दिनांक 26.4.2014 के ई-मेल से प्राधिकारी क० यह सूचित किया कि इसी बीच, महानिदेशक, रक्षाप्राय ने पीएक्स-13 के आयातों के संबंध में अपना जांच परिणाम जारी कर दिया और इस कारण, प्राधिकारी क० अपने वि०त में जारी प्रकटन विवरण में किए ०ए कुछ विश्लेषणों की जांच करने की जरूरत है।
- (xvi) अनिवार्य तथ्यों के प्रकटन पश्चात, करिया की सरकार ने निम्नलिखित का उल्लेख किया है :
- क. केपीसी द्वारा कच्चे माल की क्रय कीमत क० इस आधार पर अस्वीकार करना उपयुक्त नहीं है कि उक्त सामग्री की खरीद ढ़र-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश से की ०ई।
- ख. भारतीय प्राधिकारी द्वारा केपीसी के लिए किया ०या पाटन मार्जिन का परिकलन पाटनराधी करार के अनुच्छेद 2.1 और 2.2 के उपबंधों के अनुरूप नहीं है।
०. घरेलू उद्य० क० कथित क्षति के संबंध में साक्ष्य पर्याप्त नहीं हैं क्योंकि घरेलू उद्य० की घरेलू बिक्री में वृद्धि हुई और जांच की अवधि के दौरान इसका बाजार हिस्सा स्थिर बना रहा।
- घ. उच्चतर शुल्क का अधिराप्पण करने से भारत में इससे संबंधित उद्य० पर ऋणात्मक प्रभाव पड़े०।

ज2. प्रकटन पश्चात घरेलू उद्य० द्वारा किया ०या विवरण प्रस्तुतिकरण

124. घरेलू उद्य० द्वारा प्रकटन पश्चात किए ०ए विवरण प्रस्तुतिकरण संक्षेप में निम्नलिखित है :

- (i) देश में रबड़ रसायनों के संबंध में आपूर्ति में कोई अंतर नहीं था। भारतीय उद्य० देश की संपूर्ण मां० क० पूरा करने के लिए सक्षम था। इस कारण से आयात नहीं किए ०ए हैं। यहां तक सीबीएस का संबंध है भारतीय उद्य० भारत में कुल मां० में से 80 प्रतिशत क० पूरा करने में सक्षम है जबकि उद्य० ने त० इसकी बहुत कम मां० क० पूरा किया है।
- (ii) चीन से रबड़ रसायनों अर्थात् एमबीटी, सीबीएस, टीपीक्यू, पीवीआई और टीएमटी के तथा चीन जन०ण एवं करिया आरपी से पीएक्स-13 के आयातों में मूल जांच के आधार वर्ष से वृद्धि हुई है।
- (iii) संबद्ध देशों के उत्पादक और निर्यातक का इस विचाराधीन उत्पाद का भारत क० पाटित कीमतों पर निर्यात जारी है।

- (iv) कारिया कुम्ह की उत्पादन लात का निर्धारण दलों पक्षकारों के बीच विशेष संबंध का ध्यान में रखते हुए 4एपीए की अधिप्रापण लात पर विचार करते हुए नहीं किया जा सकता है।
- (v) कारिया के संबंध में सामान्य मूल्य का निर्धारण आयातित उत्पाद की कीमत और घरेलू आपूर्तिकर्ता की कीमत के भारत औसत के आधार पर किया जा सकता है। केवल कारिया कुम्हों के आंकड़ों के आधार पर आकलित सामान्य मूल्य बहुत विकृतिकारी ह। क्योंकि यह उत्पाद से जुड़ी लात का युक्तियुक्त ढं से परावर्तित नहीं करती है।
- (vi) संबद्ध देशों से आयात प्रत्येक संबद्ध रबड़ रसायन में घरेलू उद्य की कीमतों का अधिप्रापण कर रहे हैं। परिणामतः, आयात घरेलू उद्य की कीमतों का निग्रहण या अवमंदन कर रहे हैं। घरेलू उद्य के सतत पाटन के परिणामस्वरूप निरंतर वास्तविक क्षति ह रही है। प्रत्येक संबद्ध रबड़ रसायन पर लाभ, नकद लाभ, ब्याज एवं कर पूर्व लाभ, निवेश पर अर्जन में गिरावट आई है।
- (vii) वि जांच में प्राधिकारी द्वारा पाए गए भारी पाटन मार्जिन चीन के रबड़ रसायन उद्य की स्थिति जिसकी क्षमताओं में वृद्धि हुई है और नए स्थान पर कारखाने लगाए गए हैं, मूल अवधि से आयात की मात्रा की प्रवृत्ति संबद्ध देशों के उत्पादकों की मुक्त रूप से निस्तारणीय उत्पादन क्षमता और उनकी निर्यातक्षमता, भारतीय बाजार की कीमत आकर्षकता जिसका साक्ष्य कीमत अधिप्रापण है, कीमत संवेदनशीलता के रूप में भारतीय बाजार की सुभेद्यता, बाजार में हिस्सेदारी तथा निर्यातक बाजारों की मांग एवं आपूर्ति स्थिति में अंतर के कारण पाटन एवं चर्च की निरंतरता बने रहने की स्पष्ट संभावना है।
- (viii) चूंकि यह एक निर्णायक समीक्षा है, इसलिए पाटन की निरंतरता और उसके परिणामस्वरूप हानि वाली क्षति की संभावना ही प्रासंगिक है। यह प्रस्तुत किया जाता है कि यह इन और पिछले प्रस्तुतिकरणों में स्पष्टतः सिद्ध हो जाता है।

3. प्राधिकारी द्वारा जांच

125. प्राधिकारी नष्ट करते हैं हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए उपर्युक्त प्रस्तुतिकरण बार-बार दहराए गए हैं और उनका इस जांच परिणाम में अन्यत्र निस्तारण कर दिया गया है। तथापि उनके द्वारा उठाए गए कुछ प्रमुख मुद्दों की जांच निम्नवत की जाती है :

- (i) विरधकर्ता हितबद्ध पक्षकार के इस प्रस्तुतिकरण के संबंध में कि आवेदक का अपेक्षित आधार नहीं है, प्राधिकारी नष्ट करते हैं कि जांच की अवधि के दौरान एनओसीआईएल का प्रत्येक संबद्ध वस्तु का उत्पादन घरेलू उद्य के उत्पादन के 50 प्रतिशत से अधिक है और इसलिए आवेदक का स्पष्ट आधार है।
- (ii) विरधकर्ता हितबद्ध पक्षकारों के इस प्रस्तुतिकरण के संबंध में कि घरेलू उद्य ने शुल्क समाप्त होने से 90 दिन पहले आवेदन दायर नहीं किया है, प्राधिकारी यह नष्ट करते हैं कि आवेदक ने निर्णायक समीक्षा जांच प्रारंभ करने के लिए याचिका जनवरी, 2013 में दायर की थी जिसकी जांच की अवधि अक्टूबर, 2011 से सितम्बर, 2012 थी। तदुपरांत, दिनांक 9 अप्रैल, 2013 का एक संशोधित आवेदनपत्र दायर किया जिसकी जांच की अवधि जनवरी, 2012- दिसम्बर, 2012 थी। अतः प्राधिकारी यह धारित करते हैं कि आवेदक ने आवेदनपत्र विहित समय सीमा के अंदर दायर किया है।
- (iii) केकेपीसी द्वारा 4एपीए की क्रय कीमत का न अपनाए जाने के विस्तृत कारणों का उल्लेख इस जांच परिणाम में कर दिया गया है। प्राधिकारी पुनः यह अपेक्षा की गई है कि

नियमावली में प्राधिकारी से यह अपेक्षा की गई है कि वे यह सुनिश्चित करें कि अपनाई गई उत्पादन लागत इस विचाराधीन उत्पाद की उत्पादन एवं बिक्री से जुड़ी लागत का तर्कसंगत ढंग से प्रदर्शित करती है। निर्यातक ने यह सिद्ध नहीं किया है कि उसके द्वारा दावा की गई उत्पादन लागत इस उत्पाद के उत्पादन और बिक्री से जुड़ी लागत का परावर्तित करती है। केपीसी द्वारा सालुशिया से 4एपीपीए की अधिप्रापण लागत की नामजुरी के संबंध में प्राधिकारी यह नष्ट करते हैं कि उनके कारणों का प्रकटन विवरण तथा इस जांच परिणाम में पहले ही स्पष्ट कर दिया गया है।

- (iv) प्राधिकारी नष्ट करते हैं कि केपीसी का यह तर्क कि इस उत्पाद के आयातों से संबंधित व्यय इसकी दूरी के कारण अलग-अलग है। उपलब्ध सर्वोत्तम जानकारी के आधार पर प्राधिकारी ने उपयुक्त रूप से जर्मनी से भारत का भाड़ा और चीन से करिया आरपी का भाड़े के बीच भाड़ा अंतर के कारण हज़ारे वाले कीमत अंतर का समायोजन किया है 4एपीपीए की कीमत का 0.06 अमरीकी डॉलर प्रति किग्रा की राशि तक कम कर दिया गया है।
- (v) केपीसी के इस प्रस्तुतिकरण के संबंध में निर्यात कीमत का निर्धारण करने के लिए शुल्क प्रतिअदायी वापसी पर विचार किया जाए, प्राधिकारी यह नष्ट करते हैं कि केकेपीसी द्वारा निर्यातित पीएक्स-13 के सामान्य मूल्य का निर्धारण उत्पादन लागत और तर्कसंगत लाभ का जाँचकर किया गया है। प्राधिकारी पुनः यह नष्ट करते हैं कि 4एपीपीए की लागत की संयोजना करते समय केपीसी द्वारा भुगतान किए गए सीमाशुल्क पर विचार किया गया है और इसलिए निर्यात कीमत के एक भाग के रूप में सीमाशुल्क की वापसी पर विचार करने का प्रश्न ही नहीं उठता है।
- (vi) इस तर्क के संबंध में घरेलू उद्योग के कार्यनिष्पादन में कुछ पैरामीटरों के संबंध में सुधार हुआ है, प्राधिकारी नष्ट करते हैं कि नियम में यह प्रावधान नहीं किया गया है कि घरेलू उद्योग के प्रत्येक पैरामीटर के संबंध में क्षति हज़मी चाहिए।
- (vii) इस तर्क के संबंध में घरेलू उद्योग के कुछ खंड रसायनों की घरेलू बिक्री पर अभी भी लाभ हो रहा है प्राधिकारी यह नष्ट करते हैं कि घरेलू उद्योग के लाभ में इस अवधि के दौरान गिरावट आई है जो स्पष्टतः यह दर्शाता है कि लाभ के संबंध में घरेलू उद्योग के निष्पादन में गिरावट आई है।
- (viii) इस तर्क के संबंध में परस्पर प्रतिस्पर्धा क्षति का एक कारण हो सकती है प्राधिकारी यह नष्ट करते हैं कि यह सिद्ध करने के लिए कोई परिवर्तनीय साक्ष्य प्रदान नहीं कराया गया है कि परस्पर प्रतिस्पर्धा के कारण घरेलू उद्योग के निष्पादन में गिरावट आई है।
- (ix) इस तर्क के संबंध में कि कीमत अधिप्रापण की योजना जांच की अवधि के दौरान प्रचलित दरों की तुलना में वर्तमान विनिमय दर के आधार पर की जानी चाहिए, प्राधिकारी यह नष्ट करते हैं कि उन्होंने कीमत अधिप्रापण का निर्धारण अपनी संयोजित परस्पर के अनुरूप जांच की अवधि के दौरान प्रचलित विनिमय दर पर विचार करते हुए किया है।
- (x) इस प्रस्तुतिकरण के संबंध में कि मांग एवं आपूर्ति में भारी अंतर है प्राधिकारी नष्ट करते हैं कि इस उत्पाद के लिए मांग का निर्धारण सभी स्रोतों से किए गए आयात और सभी घरेलू उत्पादों की बिक्री पर विचार करते हुए किया गया है। इसके अतिरिक्त, भारतीय मांग का सभी घरेलू उत्पादकों द्वारा पूरा किया जाना चाहिए। इसलिए यह घरेलू मांग की तुलना केवल घरेलू उद्योग की क्षमताओं से करना उपयुक्त नहीं होगा।

- (xi) इस तर्क के संबंध में घरेलू उद्योगों की क्षति निर्यातों के संबंध में हुई हैं, प्राधिकारी यह नष्ट करते हैं कि उन्होंने घरेलू बिक्रियों के कारण हमारे वाली क्षति का आकलन निर्यातकों की लाभप्रदायकता के समुचित रूप से अपवर्जन करके किया है।
- (xii) इस तर्क के संबंध में कि ऐसा कोई साक्ष्य नहीं है कि बेशी क्षमताओं का विपथन भारतीय बाजार की ओर किया जाए, प्राधिकारी यह नष्ट करते हैं कि बेशी क्षमताओं की मौजूदगी क्षति की संभावना का निर्धारण करने के लिए अधिक संत है। इसके अतिरिक्त विराधकर्ता हितबद्ध पक्षकार ने यह सिद्ध करने के लिए कोई सूचना प्रदान नहीं कराई है कि कोई बेशी क्षमता नहीं है या इस बेशी क्षमता का प्रयोग अन्य बाजारों की मांग को पूरा करने के लिए किया जाए।
- (xiii) इस तर्क के संबंध में कि पाटनराष्ट्री शुल्क तथा रक्षाप्राय शुल्क दामों का समवर्ती अधिराप्रण करने से दाहुरा संरक्षण प्राप्त होता है, प्राधिकारी यह नष्ट करते हैं कि पहले रक्षाप्राय शुल्क का अधिराप्रण करते समय भारत सरकार ने उसे पाटनराष्ट्री शुल्क की प्रमात्रा से घटा दिया ताकि पाटनराष्ट्री शुल्क द्वारा समाधान की गई क्षति का निराकरण पुनः रक्षाप्राय शुल्क का अधिराप्रण करके न किया जाए। यह सिद्ध नहीं किया गया है कि एक ही क्षति की भरपाई दो बार की जा रही है।
- (xiv) केकेपीसी के इस प्रस्तुतिकरण के संबंध में कि 4एपीपीए की आयात कीमतों को सीईएसटीएटी के निर्णय के अनुरूप चीन जनगण की कीमतों को अपनाना चाहिए, प्राधिकारी यह नष्ट करते हैं कि स्टेट के निर्णय में उल्लिखित मामले के तथ्य वर्तमान मामले से भिन्न हैं। उस मामले में घरेलू उद्योग स्वयं उक्त कच्चे माल का आयात चीन जनगण से चीन में याचिकाकर्ता उत्पादक की क्रय कीमतों से तुलनीय कीमतों पर कर रहा था। इसलिए सेस्टेट ने व्यवस्था की कि प्राधिकारी सामान्य मूल्य का आकलन करते समय इस कीमत की अनदेखी नहीं कर सकते हैं। प्राधिकारी पुनः यह नष्ट करते हैं कि वर्तमान जांच में घरेलू उद्योग ने 4एपीपीए का आयात चीन जनगण से नहीं किया है।
- (xv) चूंकि वह कीमतें जिस पर केपीसी ने 4एपीपीए का चीन जनगण से अधिप्रापण किया है तर्कसंगत नहीं पाई गई हैं, इसलिए प्राधिकारी ने उस कीमत पर विचार किया है जिस पर इस सामग्री का निर्यात जर्मनी से किया गया। लैनक्सेस इंडिया द्वारा लैनक्सेस जर्मनी से 4एपीपीए का आयात ऐसी दो संबद्ध कंपनियों के बीच है जो दो भिन्न बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों में स्थित हैं और इसलिए तब तक यह माना जा सकता है कि यह व्यवसाय परस्पर आधार पर किया गया है, जब तक कि इसके विपरीत कोई साक्ष्य प्राधिकारी की जानकारी में नहीं लाया जाता है। इसके अतिरिक्त, भारत में प्रचलित अंतरण कीमत नियम के अनुसार भारत से बाहर संबद्ध कंपनियों से वस्तु का क्रय परस्पर आधार पर माना जाता है।
- (xvi) उपर्युक्त के मद्देनजर प्राधिकारी यह धारित करते हैं कि केपीसी द्वारा 4एपीपीए के आयातों की तर्कसंगत लागत निर्धारित करने में अपनाई गई क्रियापद्धति उपयुक्त है और उसमें किसी अन्य संशोधन करने की जरूरत नहीं है जैसा कि केपीसी ने अनुरोध किया है।
- (xvii) कॅरियाई सरकार द्वारा किए गए प्रस्तुतिकरण के संबंध में प्राधिकारी नष्ट करते हैं कि केपीसी की 4-एपीपीए की क्रय कीमत पर विचार न करने का मुद्दा का निराकरण इस जांच परिणाम में "कॅरिया के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण" शीर्षक के अंतर्गत कर दिया गया है। प्राधिकारी पुनः यह नष्ट करते हैं कि, जैसा इस जांच परिणाम में अन्यत्र स्पष्ट किया गया है कि इसने

विभिन्न आर्थिक पैरामीटरों का उद्देश्यपरक विश्लेषण किया और यह निष्कर्ष निकाला कि पाटित आयातों ने घरेलू उद्योगों को भारी क्षति पहुंचाई है।

(xviii) कपरिया सरकार के इस प्रस्तुतिकरण के संबंध में कि शुल्क का अधिराप्रण जनहित में नहीं होगा, प्राधिकारी नष्ट करते हैं कि पाटनराष्ट्री शुल्क का अधिराप्रण निर्यातक द्वारा अपनाई जाने वाली अनुचित व्यापार प्रक्रियाओं को रोकने और एक ओर घरेलू उत्पादकों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा लाने और दूसरी ओर संबद्ध वस्तु के उपभोक्ताओं को दीर्घकालिक लाभ प्रदान कराने के लिए किया जाता है।

(xix) महानिदेशक रक्षाप्राय के दिनांक 24 अप्रैल 2014 के जांच परिणाम के आलाप में प्राधिकारी द्वारा आंकड़ों विश्लेषण की समीक्षा के संदर्भ में प्राधिकारी नष्ट करते हैं कि पाटनराष्ट्री जांच अलग नियमों के अंतर्गत आयोजित की जाती है और पाटनराष्ट्री शुल्क के अधिराप्रण का उद्देश्य पाटन की अनुचित व्यापार प्रक्रियाओं को रोकना होता है।

ट. निष्कर्ष एवं सिफारिश

126. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए तर्कों प्रदान कराई गई सूचना एवं किए गए प्रस्तुतिकरणों तथा प्राधिकारी के समक्ष उपलब्ध तथ्यों को ध्यान में रखते हुए तथा पाटन एवं क्षति की निरंतरता बने रहने की संभावना तथा हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए प्रकटन पश्चात विवरण प्रस्तुतिकरणों का विश्लेषण सहित उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं और यह सिफारिश करते हैं कि संबद्ध देशों से पाटित आयात घरेलू उद्योगों को क्षति पहुंचा रहे हैं और यदि संबद्ध देशों से आयात की जा रही संबद्ध वस्तु से मौजूदा शुल्क को समाप्त करने की अनुमति दी जाती है तो घरेलू उद्योगों के पाटन एवं क्षति की संभावना बनी रहेगी और इसलिए संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों पर शुल्क की सिफारिश किए जाने की आवश्यकता है।

127. यह नष्ट किया जाता है कि संबद्ध जांच में चीन जन.गण. के सहयोगकर्ता उत्पादक एवं निर्यातक एक दूसरे से संबद्ध हैं और उनका संबद्ध कंपनियों का एक गुप है। प्राधिकारी की यह संत परम्परा रही है कि एक दूसरे से संबद्ध निर्यातकर्ता उत्पादकों या समान समूह से संबंधित निर्यातकर्ता उत्पादकों को पाटनराष्ट्री शुल्क का उद्ग्रहण करने के लिए एक एकल निकाय के रूप में माना जाए। प्राधिकारी यह धारित करते हैं कि पाटनराष्ट्री शुल्क की व्यक्तिगत दर का अनुमादन करने से संबद्ध निर्यातकर्ता उत्पादक को किसी ऐसी कंपनी के जरिए अपनी सरणी बनाकर निर्यात करेंगे जिस पर शुल्क की दर न्यूनतम होगी और जो पाटनराष्ट्री साधन का परिवंचन करती होगी और उसे निष्क्रिय कर देती होगी। तदनुसार, प्राधिकारी ने समान समूह से जुड़े सहयोगकर्ता उत्पादकों/निर्यातकों के लिए पाटनराष्ट्री शुल्क की एक एकल दर की सिफारिश की है। उपर्युक्त के अतिरिक्त, उस उत्पादक के लिए भी पाटनराष्ट्री शुल्क की सिफारिश की गई है जो संबद्ध वस्तु का निर्यात विभिन्न सरणियों (विभिन्न निर्यातकों के जरिए) के जरिए कर रहे हैं।

128. प्राधिकारी द्वारा अपनाये जाने वाले न्यूनतर शुल्क नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी पाटन के मार्जिन और क्षति के मार्जिन से न्यूनतर के बराबर निर्णायक पाटनराष्ट्री शुल्क का अधिराप्रण करने की सिफारिश करते हैं जिससे कि घरेलू उद्योगों की क्षति दूर की जा सके। तदनुसार सम्बद्ध देशों में उद्भवित अथवा वहां से निर्यातित सम्बद्ध वस्तु के सभी आयातों पर निम्नलिखित तालिका के कालम 9 में उल्लिखित राशि के बराबर निर्णायक पाटनराष्ट्री शुल्क अधिराप्रित करने की सिफारिश की जाती है।

शुल्क तालिका

क्र.सं.	शीर्ष/उप-शीर्ष	वस्तु विवरण	विनिर्देशन	उद्गम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	शुल्क राशि	यूनिट	मुद्रा
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)
1	2902, 2907, 2909, 2917, 2921, 2925, 2930, 2933, 2934, 2935, 2942, 3811, 3812, 3815	रबड़ रसायन पी एक्स -13	अधलिखित तालिका का क्र.सं. 1	चीन जन. ञ.	चीन जन. ञ.	शानघां सिनघां केम टेक्नोलॉजी कम्पनी लिमिटेड	जियांग्सू सिनघां केम टेक्नोलॉजी कम्पनी लिमिटेड	1.55	प्रति कि.ग्रा.	अम. डालर
2	-वही-	-वही-	-वही-	चीन जन. ञ.	चीन जन. ञ.	सिनघां केम कम्पनी, ताई' आन	जियांग्सू सिनघां केम टेक्नोलॉजी कम्पनी लिमिटेड	1.55	प्रति कि.ग्रा.	अम. डालर
3	-वही-	-वही-	-वही-	चीन जन. ञ.	चीन जन. ञ.	ऊपर क्र.सं. 1 और 2 के अलावा किसी अन्य उत्पादक एवं निर्यातक का संयोजन		1.84	प्रति कि.ग्रा.	₹
4	-वही-	-वही-	-वही-	चीन जन. ञ.	कई देश	उपर्युक्त के अलावा कई अन्य	उपर्युक्त के अलावा कई अन्य	1.84	प्रति कि.ग्रा.	अम. डालर
5	-वही-	-वही-	-वही-	करिया आर पी के अलावा कई अन्य देश	चीन जन. ञ.	उपर्युक्त के अलावा कई अन्य	उपर्युक्त के अलावा कई अन्य	1.84	प्रति कि.ग्रा.	अम. डालर
6	-वही-	-वही-	-वही-	करिया आर पी	करिया आर पी	कुम्हा पेट्रॉकैमिकल्स कम्पनी लिमिटेड	कुम्हा पेट्रॉकैमिकल्स कम्पनी लिमिटेड	1.33	प्रति कि.ग्रा.	अम. डालर
7	-वही-	-वही-	-वही-	करिया आर पी	करिया आर पी	कुम्हा पेट्रॉकैमिकल्स कम्पनी लिमिटेड	पेवू इंटरनेशनल कॉरपोरेशन	1.33	प्रति कि.ग्रा.	अम. डालर

8	-वही-	-वही-	-वही-	कारिया आर पी	कारिया आर पी	ऊपर क्र.सं. 6 और 7 के अलावा किसी अन्य उत्पादक एवं निर्यातक का संयोजन		1.63	प्रति कि.ग्रा.	अम . पालर
9	-वही-	-वही-	-वही-	कारिया आर पी	काई देश	उपर्युक्त के अलावा काई अन्य	उपर्युक्त के अलावा काई अन्य	1.63	प्रति कि.ग्रा.	अम. पालर
10	-वही-	-वही-	-वही-	चीन जन.० न. के अलावा काई अन्य देश	कारिया आर पी	उपर्युक्त के अलावा काई अन्य	उपर्युक्त के अलावा काई अन्य	1.63	प्रति कि.ग्रा.	अम. पालर
11	-वही-	रबड रसायन एम बी टी	अधलिखित तालिका का क्र.सं. 2	चीन जन.० न.	चीन जन.० न.	काई	काई	0.70	प्रति कि.ग्रा.	अम. पालर
12	-वही-	-वही-	-वही-	काई देश	चीन जन.० न.	काई	काई	0.70	प्रति कि.ग्रा.	अम. पालर
13	-वही-	-वही-	-वही-	चीन जन.० न.	काई देश	काई	काई	0.70	प्रति कि.ग्रा.	अम. पालर
14	-वही-	रबड रसायन टी पी क्यू	अधलिखित तालिका का क्र. सं. 3	चीन जन.० न.	चीन जन.० न.	काई	काई	0.55	प्रति कि.ग्रा.	अम. पालर
15	-वही-	-वही-	-वही-	काई देश	चीन जन.० न.	काई	काई	0.55	प्रति कि.ग्रा.	अम. पालर
16	-वही-	-वही-	-वही-	चीन जन.० न.	काई देश	काई	काई	0.55	प्रति कि.ग्रा.	अम. पालर
17	-वही-	रबड रसायन टी एम टी	अधलिखित तालिका का क्र. सं. 4	चीन जन.० न.	चीन जन.० न.	काई	काई	0.62	प्रति कि.ग्रा.	अम. पालर
18	-वही-	-वही-	-वही-	काई देश	चीन जन.० न.	काई	काई	0.62	प्रति कि.ग्रा.	अम. पालर
19	-वही-	-वही-	-वही-	चीन जन.० न.	काई देश	काई	काई	0.62	प्रति कि.ग्रा.	अम. पालर
20	-वही-	रबड रसायन सी बी एस	अधलिखित तालिका का क्र. सं. 5	चीन जन.० न.	चीन जन.० न.	काई	काई	0.85	प्रति कि.ग्रा.	अम. पालर
21	-वही-	-वही-	-वही-	काई देश	चीन जन.० न.	काई	काई	0.85	प्रति कि.ग्रा.	अम. पालर
22	-वही-	-वही-	-वही-	चीन जन.० न.	काई देश	काई	काई	0.85	प्रति कि.ग्रा.	अम. पालर
23	-वही-	रबड रसायन पी वी आई	अधलिखित तालिका का क्र. सं. 6	चीन जन.० न.	चीन जन.० न.	काई	काई	1.24	प्रति कि.ग्रा.	अम. पालर

24	-वही-	-वही-	-वही-	कई देश	चीन जन. ण.	कई	कई	1.24	प्रति कि.ग्रा.	अम. दालर
25	-वही-	-वही-	-वही-	चीन जन. ण.	कई देश	कई	कई	1.24	प्रति कि.ग्रा.	अम. दालर

नष्ट : अधलिखित तालिका में दर्शाए गए विनिर्देशन ऊपर दी गई तालिका के कालम 4 में उल्लिखित विनिर्देशनों के लिए लागू होंगे।

क्र.सं.	जैनरिक नाम	रसायनिक विवरण/अन्य व्यापार नाम/ब्रैंड नाम
1	6पीपीपी	एन- (1, 3-डाईमिथाइल व्यूटाइल एन' फिनाइल - पी -फिनाइयलीन)आयमाइन, या 6सी , या पिलफ्लैक्स 13, एंटॉक्साइड 4020, कुमानॉक्स 13, वनकैनोंक्स 4020
2	एम बी टी	2-मर्केप्टो वेन्जोथायाजोल, या एकसीलरेटर एम, एकसीलरेटर एम बी टी
3	टी पी क्यू/टी एम क्यू	पॉलीमराइज्ड 2,2, 4-ट्राईमिथाइल -1,2-डाईहाइड्राक्यूनोलिन, या टी पी क्यू या एन्टीऑक्सीडेंट आर पी
4	टी एम टी	टेट्रामिथाइलथियूरम डाइसल्फ्यू, या एकसीलरेटर टी एम टी पी, थियूरम सी
5	सी बी एस	एन-साइक्लोहेक्साइल-2-बेंजोथायाजोल सलफेनामाइड, या एकसीलरेटर सी जै. एकसीलरेटर एच बी एस, सी बी एस
6	पी वी आई	एन-(साइक्लोहेक्साइलथिओ) थेलीमाइड, या एंटीस्काच एजेंट सी ओ पी, पी वी आई

129. इस अधिसूचना के प्रयोजनार्थ आयातों का अवसारित मूल्य सीमाशुल्क अधिनियम के अंतर्गत सीमाशुल्क द्वारा यथानिश्चित निर्धार्य मूल्य होगा और उसके उक्त अधिनियम की धारा 3, 3क, 8ख, 9 और 9क के अंतर्गत शुल्कों का छाड़कर सीमाशुल्क के अन्य सभी शुल्क शामिल होंगे।

130. केंद्रीय सरकार के इस आदेश के विरुद्ध, सीमाशुल्क प्रशुल्क अधिनियम के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद कर एवं सेवा कर अपीलीय अधिकरण में अपील की जा सकती है।

जे. एस. दीपक, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING & ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 29th April, 2014

(Final Findings)

Subject: - Final Findings in the Sunset Review anti-dumping investigation concerning imports of 'Rubber Chemicals, namely, MBT, CBS, TDQ, PVI and TMT, originating in or exported from China PR and imports of PX-13 (6PPD) originating in or exported from China PR and Korea RP

No 15/1/2013-DGAD - Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended from time to time and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti- Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules 1995 thereof:

A. BACKGROUND OF THE CASE

1. Whereas having regard to the Customs Tariff Act, 1975, as amended from time to time (hereinafter referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, as amended from time to time (hereinafter referred to as the Rules or AD Rules), the Designated Authority (hereinafter referred to as the Authority) recommended imposition of anti-dumping duty on the imports of Rubber Chemicals, namely, MBT, CBS, TDQ, PVI and TMT originating in or exported from China PR and PX-13(6PPD) originating in or exported from China PR and Korea RP vide its Final Findings Notification No.14/5/2007- DGAD dated 1st October, 2008. On the basis of the Findings, anti-dumping duties on the above mentioned rubber chemicals (hereinafter referred to as the subject goods or the product under consideration) originating in or exported from China PR and Korea RP (hereinafter referred to as the subject countries) were imposed by the Central Government vide Notification No. 133/2008-Customs dated 12th December, 2008. These Findings with respect to imports of PX-13 (6PPD) originating in or exported from Korea RP were modified by the Authority in a Mid-Term Review investigation vide Final Findings Notification No. 15/21/2010-DGAD dated 5th August, 2011 and whereupon with respect to imports of PX-13 (6PPD) originating in or exported from Korea RP, the anti-dumping duty was modified vide Customs Notification No. 92/2011, dated 20th September, 2011.
2. Whereas, M/s National Organic Chemicals Limited (hereinafter also referred to as the petitioner or the applicant or the domestic industry), a producer of the subject goods in India, filed a duly substantiated application before the Authority in accordance with the Act and the Rules alleging continued dumping of the rubber chemicals, namely, MBT, CBS, TDQ, PVI, TMT originating in or exported from China PR and PX-13 (6PPD) originating in and exported from China PR and Korea RP and requested the Authority for review, modification and continuation of the anti-dumping duties.
3. And, whereupon in accordance with Section 9A (5) of the Act read with Rule 23 of the AD Rules, the Authority issued a public notice dated 30th April, 2013, published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating the Sunset Review investigation to review the need for continued imposition of duties in force on the imports of the rubber chemicals, namely, MBT, CBS, TDQ, PVI, TMT originating in or exported from China PR and PX-13 (6PPD) originating in and exported from China PR and Korea RP and to examine as to whether the cessation of such duties is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury.
4. And, whereas the anti-dumping duty as notified vide Notification No 133/2008-Customs dated 12th December, 2008 was extended by the Central Government up to 4th May, 2014 vide Notification No. 16/2013-Customs (ADD) dated 5th July, 2013 and the anti-dumping duty as notified vide Notification No 92/2011-Customs dated 20th September, 2011 was extended up to 4th of May, 2014 vide Notification No. 17/2013-Customs (ADD) dated 5th July, 2013, in terms of Section 9(A)(5) of the Act.

B. PROCEDURE

5. The procedure described below has been followed with regard to this investigation:
 - a. The Authority issued public notice No. 15/1/2013-DGAD dated 30th April, 2013, published in the Gazette of India Extraordinary, initiating sunset review investigation.
 - b. The Authority sent copies of initiation notification dated 30th April, 2013; exporter's questionnaire including Market Economy Questionnaire in respect of the exporters/producers from China PR to the embassies of the subject countries in India, known exporters/producers from the subject countries and known importers and other interested parties. Parties to this investigation were requested to file the responses to the questionnaire and make their views known in writing within the prescribed time limit. The embassies of the subject countries were also requested to advise the other exporters/producers from the subject countries to respond to the questionnaires within the prescribed time.
 - c. The Authority provided copies of the non-confidential version of the application to the known exporters and the embassies of subject countries in accordance with Rules 6(3) supra. A copy of the non-confidential version of the application was also provided to other interested parties, wherever requested.
 - d. The Authority forwarded a copy of the public notice to the following known exporters (whose names and addresses were made available to the Authority in the application) and gave them opportunity to make their views known in writing within forty days from the date of the letter in accordance with the Rules 6(2) & 6(4):

- i. Shandong Shanxi and Chemical Co. Ltd.
 - ii. Jiangsu Sinorgchem Technology Co., Ltd.
 - iii. Shandong Yanggu Huatai Chemical Co. Ltd.
 - iv. Changde Dingyuan Chemical Industrial Limited
 - v. Dongying Bo Chen Chemical Co. Ltd.
 - vi. Jinan Runquan Chemical Co. Ltd.
 - vii. Nanjing Chemical Plant (NCP)
 - viii. Zhejiang Yongjia chemical Plant
 - ix. Henan Kailun Chemical Co. Ltd.
 - x. Rongcheng Chemical General Factory Co. Ltd.
 - xi. Dalian Richon Chem Co. Ltd.
 - xii. Zhenjiang No. 2 Chemical Factory
 - xiii. Hebei Haufeng Chemical Group
 - xiv. Shenzhen Huaren Industrial Co.
 - xv. Yixing Dongfang Fince Chemicals
 - xvi. Zhejina Yueqing Ultrafine Powders & Chemicals Co. Ltd.
 - xvii. M/s. Kumho Petrochemical Co. Ltd.
- e. Response to exporter's questionnaire were received from the following producers/exporters of the subject goods from the subject countries:
- i. M/s. Shandong Sinorgchem Technology Co. Ltd., China PR
 - ii. M/s. Sinorgchem Co., Tai'an, China PR
 - iii. M/s. Jiangsu Sinorgchem Technology Co. Ltd. China PR
 - iv. Kumho Petrochemicals Co. Ltd., Korea RP
 - v. Daewoo International Corporation, Korea RP
- f. The Authority forwarded a copy of the public notice to the following known importers (whose names and addresses were made available to the Authority) of the subject goods in India and advised them to make their views known in writing within forty days from the date of issue of the letter in accordance with the Rule 6(4).
- i. Automotive Tyre Manufacturers' Association
 - ii. The All India Rubber Industries Association
 - iii. J.K. Industries Ltd.
 - iv. Metro Tyres Ltd.
 - v. CEAT Limited
 - vi. Poddar Tyres Ltd.
 - vii. Apollo Tyres Ltd.
 - viii. Raison India Ltd.
 - ix. Birla Tyre
 - x. Rubber Products Ltd.
 - xi. MRF Limited
- g. In response to the Importers' Questionnaire, CEAT Ltd. Apollo Tyres Ltd. and J K Tyres & Industries Ltd., filed importer questionnaire responses.
- h. The following opposing interested parties also submitted the written submissions:
- i. M/s Kumho Petrochemicals Co. Ltd., Korea RP
 - ii. M/s Rishiroop Polymers Pvt. Ltd., Importer in India
 - iii. Automotive Tyre Manufacturers' Association (ATMA)
- i. Exporters, producers and other interested parties who neither responded to the Authority nor supplied information relevant to this investigation have been treated as non-cooperating interested parties by the Authority.
- j. Investigation has been carried out for the period starting from 1st January, 2012 to 31st December, 2012 (also referred to as the period of investigation or the POI). The examination of trends in the context of injury analysis covered the period from 2009-2010, 2010-11, 2011-12 and the POI.
- k. Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to arrange details of imports of subject goods for the past three years and the period of investigation and the same was received.

- l. Cost investigations were conducted to work out optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and the information furnished by the applicant so as to ascertain if anti-dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to the domestic industry. The Non-injurious Price has been worked out in accordance with Annexure III of the anti-dumping rules.
- m. The Authority held a public hearing on 6th December, 2013 to provide an opportunity to the interested parties to present relevant information orally. The parties attending the public hearing were advised to file written submissions of the information presented orally. Interested parties were also provided opportunity for rejoinder submissions on the views expressed by opposing interested parties in the public hearing. The Authority has considered the written submissions and rejoinders received from the interested parties to the extent found relevant in this Final Findings Notification.
- n. The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by the interested parties through a public file maintained by the Authority and kept open for inspection by all interested parties as per Rule 6(7).
- o. The Authority during the course of investigation satisfied itself as to the accuracy of the information supplied upon. For that purpose, the Authority conducted on-the-spot verification of the domestic industry and the co-operating producer/exporter to the extent considered relevant and necessary.
- p. Wherever an interested party has refused access to, or has otherwise not provided necessary information during the course of the present investigations, or has significantly impeded the investigation, the Authority has recorded its observations/analysis on the basis of the facts available.
- q. Information provided by interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has granted confidentiality, wherever warranted and such information has been considered confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non-confidential version of the information filed on confidential basis.
- r. A Disclosure Statement containing the essential facts in this investigation which formed the basis of the Final Findings was issued to the interested parties on 18.04.2014. The post-Disclosure Statement submissions received from the interested parties have been considered, to the extent found relevant, in this Final Findings Notification.
- s. *** In this Final Findings Notification represents information furnished by the interested parties on confidential basis and so considered by the Authority under the AD Rules.
- t. The average exchange rate of Rs. 53.69 per 1 US\$ as per Ministry of Finance order has been considered for conversion of US\$ into INR in the POI.

PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLE

6. The product under consideration (PUC) in the present investigation are the following rubber chemicals:
 - i) MBT, having chemical description 2-Mercapto Benzothiazole, with other trade/brand name as Accelerator M, Accelerator MBT etc.
 - ii) CBS, having chemical description N-Cyclohexyl-2-Benzothiazole Sulphenamide with other trade name/brand names as Accelerator CZ. Accelerator HBS, CBS etc.
 - iii) TDQ, having chemical description Polymerized 2,2,4 – Trimethyl-1,2- dihydroquinoline with other trade/brand names as TMR or Antioxidant RD etc.
 - iv) PVI, having chemical description N-(Cyclohexylthio) Pthalimide with other trade/brand names as Anti Scorch agent CTP, PVI etc.
 - v) TMT having chemical description as Tetramethylthiuram Disulfide with other trade/brand names as Accelerator TMTD Thiuram C etc.
 - vi) PX-13 (6PPD) having chemical description N-(1,3-dimethyl butyl)-N'' Phenyl-P-1 with other trade/brand names as 6C, Pilflex 13, Sirantox 4020 Antioxidant 4020, Kumanox 13 Vulcanox 4020 etc.

Views of the Domestic Industry

7. The following submissions have been made by the domestic industry with regard to the scope of the product under consideration (PUC) and the like article:
 - a. The present investigation being a sunset review investigation, the scope of the product under consideration should be the same as that in the original investigation, that is:
 - i. MBT, having chemical description 2-Mercapto Benzothiazole, with other trade/brand name as Accelerator M, Accelerator MBT etc.
 - ii. CBS, having chemical description N-Cyclohexyl-2-Benzothiazole Sulphenamide with other trade name/brand names as Accelerator CZ. Accelerator HBS, CBS etc.

- iii. TDQ, having chemical description Polymerized 2,2,4 – Trimethyl-1,2- dihydroquinoline with other trade/brand names as TMR or Antioxidant RD etc.
 - iv. PVI, having chemical description N-(Cyclohexylthio) Pthalimide with other trade/brand names as Anti Scorch agent CTP, PVI etc.
 - v. TMT having chemical description as Tetramethylthiuram Disulfide with other trade/brand names as Accelerator TMTD Thiuram C etc.
 - vi. PX-13 (6PPD) having chemical description N-(1,3-dimethyl butyl)-N” Phenyl-P-1 with other trade/brand names as 6C, Pilflex 13, Sirantox 4020 Antioxidant 4020, Kumanox 13 Vulcanox 4020 etc.
8. The rubber chemicals as detailed above are used in treating natural rubber and synthetic rubber based compounds. The products do not have a dedicated classification at 8 digit level. The products are stated to be imported under chapter 29 and 38 of the Customs Tariff Act.

Views of the exporters/ importers and other opposing interested parties

9. None of the other interested parties raised issues with regard to the scope of the product under consideration and the like article.

Examination by the Authority

10. The present investigation is a sunset review investigation concerning anti dumping duties already in force on imports of the above mentioned rubber chemicals on the basis of recommendations earlier made by the Authority. The Authority notes that the scope of the product under consideration remains the same as that of the original investigation.
11. The Authority notes that there is no significant difference in each of the subject goods produced by the Indian industry and each of the respective subject goods imported from the subject countries. Each of the subject goods produced by the Indian industry and respective subject goods imported from subject countries are comparable in terms of their physical & chemical characteristics, manufacturing process & technology, functions & uses, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification. The two are technically and commercially substitutable. The consumers are using the two interchangeably. None of the opposing interested parties has raised any objection in this regard. Thus, each of the subject rubber chemicals produced by the petitioner company are being treated by the Authority as like articles to the respective subject goods imported from the subject countries in accordance with the Anti-dumping Rules.

C. DOMESTIC INDUSTRY AND STANDING

12. The application has been filed by M/s. National Organic Chemicals Limited (NOCIL), producer of the product under consideration in India. NOCIL has provided all relevant information for the purpose of the present investigations.

Views of exporters/importers/other opposing interested parties

13. The following submissions have been made:
- a) The applicant domestic producer in the present sunset review is M/s. National Organic Chemical Industries Limited. The applicant does not satisfy the definition of “domestic industry” as the collective output of the subject goods produced by the applicant may not constitute a “major proportion” of the total domestic production of the subject goods.
 - b) Reliance is placed on the fact that Merchem Ltd., one of the domestic producers of the subject goods, is also manufacturing the 4-ADPA at its new facilities, as stated in its Annual Report 2010-11 and is further setting up a new plant for the manufacture of PX-13 (6PPD). The applicant is thus facing stiff competition from other domestic producers who are seeking to capture the market. It is also known that the applicant has set up a new manufacturing plant at Dahej which may have commenced production sometime in the financial year 2012-13.
 - c) At the hearing conducted by the Directorate General of Safeguards in connection with the review of safeguard duty on PX-13 (6 PPD), the applicant had claimed that the capacity for the domestic producers was the following: NOCIL (8500 MT/year), Merchem (8500 MT/year), Lanxess (2000 MT/year) and PMC (1000 MT/year).
 - d) It is submitted that as a result of significant capacity additions, the production break up in the domestic market has undergone a significant change. The applicant no longer has 50% of the capacity to produce the subject goods and it is highly likely that it will not ultimately produce 50% of the subject good. None of the other domestic producers has supported the petition of the applicant. When the applicant cannot

produce 50% of the subject goods, it fails to satisfy the definition of “domestic industry” in Rule 2(b) and Article 4.1 which mandates that the collective output of the domestic industry should constitute a “major proportion” of the subject goods.

- e) It is further claimed that an applicant who produces any proportion of the total domestic production of the subject goods cannot constitute the “domestic industry”. The ruling of the Appellate Body in European Communities - Definitive Anti-Dumping Measures on Certain Iron or Steel Fasteners from China, WT/DS397/AB/R (28 July 2011) where the term “major proportion” was interpreted to mean “a relatively high proportion of the domestic production” is also relied upon.
- f) Thus, it is argued that the applicant does not satisfy the definition of “domestic industry” and as a result of the same, the present review is to be terminated.

Views of the domestic industry

14. The following submissions have been made by the domestic industry with regard to the scope of the domestic industry and standing:
 - a. The petitioner, NOCIL, is a major producer of the product under consideration in the country. Lanxess India Pvt. Ltd, Merchem Ltd. and PMC Rubber Chemicals India Pvt. Ltd. are other known producers of the product under consideration in India.
 - b. The petitioner has not imported the subject goods. Petitioner is not related either to an exporter of the subject products in the subject countries or an importer in India.
 - c. NOCIL is a major producer of each of the subject rubber chemicals in the country. As regards the production of subject goods by other producers, no published information is available in this regard. The petitioner has assessed the production of other companies based on their imports of raw material. Petitioner has assessed the production by considering the domestic sales, imports and exports made by individual companies.
 - d. The petitioner accounts for a major proportion in the Indian production and, therefore, constitutes domestic industry. It has the standing to file the petition under the Anti-dumping Rules.
 - e. As regards Merchem, it is submitted that the production of PX-13 by Merchem is at low volumes as compared to the total Indian production.

Examination by the Authority

15. The Authority notes that the application has been filed by NOCIL, a producer of the product under consideration in India and that NOCIL has provided all relevant information for the purpose of the present sunset review investigation. The production of petitioner company constituted a major proportion for each of the subject rubber chemicals, as is seen from the table below:

Products	NOCIL Production MT	Supporter Production MT	Total Domestic Production (NOCIL + Supporter) MT	Production Other Indian Producers MT	Total Indian Production MT	Share of Domestic Industry in Indian Production %	Share of Domestic Industry in Indian Production % Range
PX-13 (6PPD)	***	***	***	***	***	***	60-70%
TDQ	***	***	***	***	***	***	85-95%
PVI	***	***	***	***	***	***	90-100%
TMT	***	***	***	***	***	***	90-100%
MBT	***	***	***	***	***	***	75-85%
CBS	***	***	***	***	***	***	90-100%

16. As regards the argument on production of PX-13 by Merchem Ltd., domestic industry provided a letter from Merchem Ltd addressed to the Authority wherein Merchem Ltd has stated following capacity and capacity utilization. It is noted from that letter that the company has produced very low volume of PX-13 during the injury period as can be seen in the table below.

	2010-11	2011-12	2012-13
Capacity	***	***	***
Production	***	***	***
Capacity utilisation	***	***	***

17. Based on the information on record, the Authority determines that the production by NOCIL accounts for a major proportion of total Indian production of each of the subject rubber chemicals. The petitioner, therefore, satisfies standing and constitutes domestic industry within the meaning of the Rules.

D. CONFIDENTIALITY

Views of exporters/importers/other opposing interested parties

18. The following submissions have been made by the domestic industry with regard to confidentiality:

- i. Selective and excess confidentiality not in keeping with Rule 7 of AD Rules since domestic industry has revealed domestic sales figures but capacity, capacity utilization and production figures have not been revealed.

Views of the Domestic Industry

19. The following submissions have been made by the domestic industry with regard to confidentiality:

- a. The opposing interested parties have claimed excessive confidentiality in their Exporter Questionnaire Responses.
 - i. M/s. Shandong Sinorgchem Technology Co. Ltd., China, M/s. Sinorgchem Co Tai'an, China PR and M/s. Jiangsu Sinorgchem Technology Co. Ltd, China PR have claimed confidentiality regarding names of the shareholder, related companies involved in product concerned, details of cost centers, details and name of raw materials, production process and Appendix 1. Further, there is no summarization or indexed version provided by the company for information claimed confidential and volume information like capacity, production and sales, inventories.
 - ii. Kumho Petrochemicals has claimed confidentiality regarding names of the shareholders, details of related supplier of sub materials, production process, flow chart, details and name of raw materials exports to third countries, capability to produce or any plants to produce in India or other countries, change in operations relating to production of PUC, export markets, significance of ADD on KPC and changes in production capacity. Further, one of the raw materials is purchased from related company but the details are kept confidential. Almost entire SSR questionnaire is kept confidential.
 - iii. In Importer Questionnaire Responses of CEAT and Apollo, information in all the Annexures claimed confidential and no indexation is provided.

Examination by the Authority

20. The Authority notes that information provided by interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. As regards the argument on non-disclosure of some information by the domestic industry, the petitioner claimed that the information not disclosed by the petitioner is confidential business sensitive information of the petitioner and the domestic industry has not disclosed this information publicly. Merely because the petitioner has chosen to disclose information on domestic sales volumes, it does not imply that the petitioner is obliged to disclose all other information as well. It has not been shown that the petitioner has claimed some information confidential, which has been otherwise disclosed publicly by the petitioner elsewhere. The Authority notes that wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non-confidential version of the information filed on confidential basis and on being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims wherever warranted and such information has been considered as confidential and not disclosed to other interested parties.

E. MISCELLANEOUS ISSUES

Views of the exporters/importers/other opposing interested parties

21. The following submissions have been made by the exporters/importers and other opposing interested parties:

- (a) The sunset review is required to be terminated in light of certain preliminary objections, i.e., expiry of anti-dumping duty on subject good and extension post-expiry in violation of Section 9A(5) of the Act; and delayed filing of petition by the applicant requesting the initiation of anti-dumping investigation in violation of Rule 23(1B) of the AD Rules and Trade Notice No. 2/2011 issued by the DGAD.
- (b) It is submitted that the anti-dumping duty on the subject goods expired on May 4, 2013 according to the sunset clause in Notification No. 92/2011–Cus dated 20th September, 2011. It was only on 5th July, 2013 that the duty was extended vide Notification No.17/2013–Customs (ADD). Therefore, it is argued that because the

duty had expired before the extension, the present review is infructuous as there was no anti-dumping duty in existence to review.

- (c) Circular No. 28 dated 08.07.2011 by the Ministry of Finance is relied upon which clarified that an anti-dumping measure in force shall expire automatically at the end of five years unless a notification extending the levy of such duty is issued before the expiry of the five year period.
- (d) Additionally, it is submitted that as per the requirements of Trade Notice No. 2/2011 dated 6th June 2011, the applicant was required to file the petition for initiation of sunset review 90 days before the expiry of the anti-dumping duty, i.e., before 4th March 2013. However, such petition was not filed by the applicant until 20th March 2013, as stated in Annexure 2.1 of the petition. This infirmity also rendered the present sunset review invalid and liable to be terminated.
- (e) The domestic industry has enjoyed anti-dumping duty protection on various rubber chemicals from various sources for eight years and in the form of safeguard duty on PX-13 from all sources for two years.

Views of the domestic industry

22. The following submissions have been made by the domestic industry:

- a. With respect to the argument that the domestic industry has enjoyed duty protection, it is submitted that antidumping duty merely corrects an unfair trade practice and is required to be imposed so long as there is evidence of continuation or likelihood of recurrence of dumping and injury.

Examination by the Authority

- 23. As regards the submission that the domestic industry has already enjoyed duty protection, it is noted that this does not preclude the Authority from continuing duties if it finds that there is continuation or likelihood of recurrence of dumping and injury.
- 24. As regards the argument that the present review is infructuous as there was no anti-dumping duty in existence to review because the duty had expired on 4th May, 2013 before its extension on 5th July, 2013, the Authority notes that the only obligation under Section 9A (5) in this regard is that the investigation must be initiated before the expiry of the duty.
- 25. As regards Circular No. 28 dated 08.07.2011 by the Ministry of Finance, the Authority notes that the scope of the same is with regard to collection of anti dumping duty and specifies that anti dumping duty shall not be collected beyond the time period.
- 26. As regards the argument that delayed filing of petition by the applicant requesting the initiation of anti-dumping duty is in violation of Rule 23(1B) of the AD Rules and Trade Notice No. 2/2011 issued by the DGAD, it is noted from the records before the Authority that the petition was filed within the reasonable period of time considering January-December, 2012 as the proposed investigation period.

G. ASSESSMENT OF DUMPING - METHODOLOGY AND PARAMETERS

Determination of Dumping Margin

- 27. The Authority notes that the following exporters/importers filed questionnaire responses:
 - i. M/s. Shandong Sinorgchem Technology Co. Ltd, China PR
 - ii. M/s. Sinorgchem Co., Tai'an, China PR
 - iii. M/s. Jiangsu Sinorgchem Technology Co. Ltd, China PR
 - iv. Kumho Petrochemicals Co. Ltd., Korea RP
 - v. Daewoo International Corporation, Korea RP
 - vi. CEAT Limited (Importer)
 - vii. J K Tyres Ltd (Importer)
 - viii. Apollo Tyres Ltd (Importer)

Views of the exporters/ importers/other opposing interested parties

- 28. The following submissions have been made by the exporters/importers and other opposing interested parties:
 - a. There is no "special relationship" between Kumho Petrochemicals Co. Ltd., (KPC) and Sinorgchem by which KPC gets 4ADPA at a special concessional rate.
 - b. The applicant stated that KPC's domestic sales have declined over the years. It is not known how it establishes any relation between KPC and Sinorgchem.

- c. The alleged decline of Sinorgchem exports to other countries and the US and alleged increase of KPC exports to other countries and US do not prove the claim of special relationship.
- d. The applicant's claim that Solutia Inc., Sinorgchem and KPC have reached a settlement whereby Solutia grants Sinorgchem and KPC to manufacture 4- ADPA proves that there is no restriction on export of the goods to US by Sinorgchem.
- e. If KPC was able to procure 4-ADPA at a reduced rate and dump the product into India, as alleged, it would not be losing revenue in sales or with regard to the product.
- f. When a particular buyer buys huge quantity in comparison to other buyers, then that particular buyer will certainly be at a 'different price'. However, such relationship is usual and if a buyer gets extra discount because of the quantity off take that does not mean the arm's length transaction price is to be rejected.
- g. The procurement price of 4-ADPA as provided by KPC cannot be disregarded as Korea RP is a Market Economy Country. This would adversely affect the treatment of Indian exporters before investigating authorities in other countries.
- h. The law does not permit the investigating authority to discard input prices even when they are considered to be dumped. 4-ADPA is/was not subject to anti-dumping investigation and there is no determination that its prices to South Korea were dumped during THE POI.
- i. In case the Authority rejects the procurement prices of 4-ADPA by KPC, it should follow the bare minimum requirements prescribed for selection of third country as per law.
- j. Applicant is contending that normal value be computed on the basis of weighted average of sales volumes of the subject goods of the Respondent in the Korean domestic market and import price of the same into Korea but Section 9A (6A) of Customs Tariff Act states that normal value shall be determined based on the records of the exporter/producer and has no reference to imported goods in that country.
- k. If import prices are to be considered for normal value, EQ should be amended to ask exporters to provide data relating to import volume and value of the like product in its country. Exporters would be unable to provide such data and declared non-cooperating.
- l. Reliance on unverified import data in the subject country is highly risky. Further, the value of the goods would include freight from the country of export to Korea RP.
- m. Normal value is not comparable to non-injurious price in the sense that NIP is required to be determined by taking weighted average of various expenses of each applicant domestic producer whereas normal value is required to be determined individually for each producer/exporter.
- n. The contention of the applicant that the normal value of the subject goods should be computed on the basis of domestic suppliers' price and the import price of PX-13 (6 PPD) into Korea RP is squarely rejected. The entirety of such an approach is rejected on the grounds listed below.

(i) Firstly, it is argued that it is against Section 9A(6A) of the Customs Tariff Act which places an obligation upon the Authority to estimate the margin of dumping based on normal value and export price determined on the basis of records maintained and information provided by the exporter or producer. Thus, it is contended that the normal value shall be determined based on the records of the exporter/producer of that article and it has no reference to imported goods in that country. The application of the same principle is extended to the cost of production provided by Kumho Petrochemical Co. Ltd.

(ii) Secondly, it is submitted that if import prices are to be considered for normal value, then it will result in an absurd situation wherein the Authority will be required to amend the Exporters Questionnaire format, in addition to making the relevant amendments to the AD Rules, and further will be required to request each exporter to provide, apart from his own data, data relating to import volume and value of the like product in the respective country. Since such exporters/producers will evidently be unable to provide such data, the Authority will then be in a position to declare them non-cooperating. Reliance on such unverified data is also highly risky because (i) it is not known whether the value adopted was the sole consideration for the transaction and (ii) how other factors have been apportioned including freight from the country of export (USA, EU etc.) to Korea RP.

- o. Furthermore, it is submitted that the procurement price of 4-ADPA as disclosed by the exporter cannot be rejected by the Authority as such non-acceptance would set a dangerous precedent for Indian exporters facing anti-dumping investigations worldwide. If rejection of the procurement price is given effect to, then the cost of production of the Indian exporters may be rejected wherever part of the raw material had been procured from a Non-Market Economy. For instance, a manufacturer-exporter of cars in India could import the engine, steering knuckles, the front axle beam, steel wheels and tyres from a Non-Market Economy country, assemble them along with other parts produced in India into cars and then export the finished cars to various other countries. In such a situation, the investigating authority in other countries investigating the dumping of cars from India may cite such a decision and reject the cost of production of cars as disclosed by the Indian exporter because the inputs/parts of cars were procured from a Non-Market Economy country.
- p. It is also argued that the Authority may not supplant the provisions applicable to NMEs and use it for the exporter, who is based in a market economy country, i.e., Korea RP.
- q. It is additionally submitted that the claim of the applicant that there are 'legal battles' being waged in the courts of Ohio and South Korea regarding IP infringement is misinformed and irrelevant as firstly, the patent claims that were made involved processes for the production of 4-ADPA and the derivatives of 4-ADPA. The product under consideration is PX-13 (6PPD) and not 4-ADPA. Secondly, the U.S. International Trade Commission (ITC) ruled in 2006 that Kumho did not infringe the Flexsys America LP's (the complainant) patents. A second set of claims initiated against Kumho as well as the action initiated in the district court in Ohio were also rejected.

Views of the Domestic Industry

29. The following submissions have been made by the domestic industry:

- a. Chinese producers' cost and price cannot be relied upon for determination of normal value and the same must be treated as operating in a non-market economy.
- b. Normal Value for China cannot be determined on the basis of price or constructed value in a market economy third country for the reason that the relevant information is not publicly available. Petitioner has determined Normal Value in China on the basis of cost of production in India; duly adjusted.
- c. Normal Value for Korea RP in respect of 6PPD is required to be determined on the basis of weighted average of the imported product price and domestic supplier's price. Normal value based solely on M/s Kumho Petrochemical Co. Ltd data would be highly distorted. Provisions relating to cost of production do not establish that the normal value should be based, that too solely, on the domestic sales transactions of the manufacturer concerned.
- d. KPC's questionnaire response of previous investigation shows that domestic sales have declined over the years and KPC's exports to China have declined while its exports to rest of the world have increased and the company has got significant unutilized capacities. This is clear from its annual report for 2009. The company has admitted its inability to increase its exports in Chinese market because of relationship with its raw material supplier.
- e. KPC is losing revenue of more than \$ 4-5 million in domestic sales and \$15 million in the product, despite a price difference of more than \$1. This clearly shows that the intermediate is being given to KPC under some special arrangements and KPC is not free to fix the prices as per prevailing market prices. The low prices fixed by KPC are clearly a result of the ambition of the Chinese producer to be the sole global producer in this product.
- f. The benefits of non-market economy available to Sinorgchem are being passed on to KPC.
- g. Cost of production of KPC cannot be taken since such elements of cost must reasonably reflect the costs associated with production and sale of the product under consideration, irrespective of the producer. In the previous cases, the Designated Authority had already held that Sinorgchem is not operating under market economy conditions.
- h. The normal value of Korea has been determined by considering the import price of PX-13 into Korea.

- i. Export price has been determined as the weighted average import price of each of the rubber chemicals from respective subject countries. Adjustments for Ocean Freight, Marine Insurance, Port Expenses, Inland Freight and Commission have been considered.
- j. Dumping margins are above de minimis and significant for each of the rubber chemicals from the subject countries.
- k. The agreement between Solutia Inc., Sinorgchem and KPC is proved by the facts – (a) in the past, Sinorgchem was prevented free market access and, therefore, used KPC as a proxy for sale in those markets; and (b) with Sinorgchem and KPC now allowed to sell globally, the two in a combined way wish to kill all other producers for the product globally.
- l. With respect to big buyers getting a lower price, the present situation is not one of lower price due to higher quantities, but a clear absence of ordinary market situation.
- m. The request of domestic industry for rejection of procurement price of 4-ADPA by Korea RP is not based on the ground that Korea RP is not a market economy country but on the two obligations on the Authority, i.e., (a) such records should be in accordance with the generally accepted accounting principles of the exporting country, and (b) such records reasonably reflect the cost associated with production and sale of the article under consideration. The issue is not whether 4-ADPA is/was being procured at dumped prices. The issue is whether costs as per records reasonably reflect the cost associated with production and sale of the article under consideration.
- n. The claim that if the Authority rejects the procurement prices for 4-ADPA, it should select a third country is unsupported by legal requirement. The petitioner has not sought rejection of the procurement price on the grounds of non market economy and, therefore, the question of selection of third country shall not arise.
- o. With respect to the calculation of normal value for Korea, KPC has selectively referred to Section 9A(6)(a) and has conveniently ignored Section 9A(1)(c) which directly obliges the Authority to consider consumption price in the exporting country.
- p. With respect to the argument that EQ should be amended to ask exporters to provide data relating to import volume and value of the like product in its country, nothing prevents the exporter from providing the relevant information or commenting on the information provided by the domestic industry.
- q. With respect to the argument that reliance on unverified data in the subject country is risky, the petitioner has no objection to verification of data and has adopted publically available information which can be verified by the Designated Authority. As regards freight, the same is required to be added as the Authority is required to determine consumption price in the exporting country.
- r. With respect to the argument that Normal Value cannot be calculated as a weighted average as in the case of NIP when the data given by the exporter is not be helpful in determining consumption price in the ordinary course of trade because of particular market situation, the Authority is fully justified in adopting other methods provided under the law.
- s. Exports made by Xiangyu Chemicals cannot be adopted for determination of correct price for the reason that the company is understood to have been criminally indicted for theft of technology by a Chinese Court.
- t. The authority should consider the usage norms of various raw materials while determining the cost of production from 4 ADPA to PX13 (6 PPD) in KPC's cost records.
- u. M/s Kumho Petrochemical Co. Ltd is captively producing Hydrogen and, therefore, correct valuation of Hydrogen is vital for reasonably reflecting the cost associated with production and sale of the article.
- v. A noble metal catalyst is needed for this conversion of 4ADPA into 6PPD. Its cost should also be reflected suitably in the cost of 6PPD.
- w. M/s Kumho Petrochemical Co. Ltd is producing its own utilities for production of the product as it has a large manufacturing multiproduct setup. The authority should, therefore, consider correct valuation of these utilities and compare the same with the technical certificate provided by NOCIL.
- x. In view of significant difference in the packing cost in domestic and export markets, the authority should examine the response to ascertain whether the exporter has reported difference in packing cost.
- y. It is understood that M/s. Kumho Petrochemical Co. Ltd is giving 4% commission to its Indian agent. The authority may verify the agreement. The Indian agent is dealing with KPC on various products. Therefore, 1 % or 2% reduction in commission in 6 PPD business can be easily adjusted against commission of other business.
- z. M/s Kumho Petrochemical Co. Ltd is giving 120-180 days credit to various Indian customers. The credit in domestic market must be significantly low. The cost of credit for the domestic and export market being the same, the exporter must have incurred significantly higher expenses in offering significantly higher credit period in exports to India.

- aa. Mere fact that the credit is being offered by Government of Korea in respect of duty paid by M/s. Kumho Petrochemical Co. Ltd is insufficient to permit credit for the same. Korean scheme in fact allows an exporter to avail drawback benefits by applying a fixed % of FOB without any relation to actual consumption of imports/input duties. There is absence of linkage between duty saved and inputs consumed.
- bb. Given the accounting standards, KPC must have booked exchange loss under the head “exchange loss/gains” instead of adjusting from the export price
- cc. Since anti-dumping investigations are product specific and further since interest income arise from other operations whereas interest expense arise from production activities, interest income from other operations cannot be reduced from the interest expenses
- dd. As KPC is having low capacity utilisation, it is important that the cost of production is determined at the level of actual production.

Examination of the Authority

30. The Authority has examined the submissions and issues raised by the interested parties with regard to dumping of the subject goods as under :-

- a. With respect to the argument that a buyer who purchases in large quantities is often given a special price, the Authority notes that this does not preclude it from examining the transactions to see whether they are made in the ordinary course of the trade and reflect market price.
- b. One of the responding parties has argued that the procurement price of 4-ADPA as provided by the exporter cannot be disregarded as Korea RP is a Market Economy country and that such a practice would adversely affect the treatment of Indian exporters before investigating authorities in other countries. The Authority notes that Korea RP is a market economy country and treated as such in the present investigation. Producers and exporters from Korea RP are not determined to be operating under non-market economy conditions. However, this does not preclude the Authority from examining whether costs such as the procurement price of 4-ADPA are costs in the ordinary course of trade.
- c. With respect to the argument whether 4-ADPA import prices in Korea RP are the dumped prices, the Authority notes that it is outside the scope of the investigation. However, the Authority is to consider whether the records provided by the exporter are (a) in accordance with the generally accepted accounting principles of the exporting country, and (b) reasonably reflect the cost associated with production and sale of the product under consideration. The Authority determines that the costs reported for 4-ADPA by KPC were not such as to reasonably reflect the cost associated with production and sale of the product under consideration in the ordinary course of international trade.
- d. KPC has argued that in case the Authority rejects the procurement prices of 4-ADPA by KPC, it should follow the bare minimum requirements prescribed for selection of third country as per law. The Authority notes that since it is not treating KPC as operating under non-market economy conditions, this argument is irrelevant.
- e. With respect to the issue of exporter being required to provide data relating to imports of the like product in its country, the Authority notes that the argument cannot be stretched to conclude that the Authority cannot seek information available which reasonably reflects the cost associated with production and sale of the product under consideration.
- f. With respect to the argument of import data of KITA for Korea RP being unverified, the Authority considers that it can use the data that is publically available after examination unless any interested party comes out with evidence that those data is not reliable.
- g. The responding party has argued that normal value is not comparable to non-injurious price in the sense that NIP is required to be determined by taking weighted average of various expenses of each applicant domestic producer whereas normal value is required to be determined individually for each producer/exporter. The Authority has not determined the normal value in the present case on the basis of weighted average principle for determining non-injurious price.

- h. As regards the contention that normal value of the subject good should be computed on the basis of weighted average of domestic suppliers' price and the import price of PX-13 (6 PPD) into Korea RP, the Authority considers that the same is impermissible under the law.

Examination of market economy claims of Producers/Exporter from China

31. The Authority notes that China PR has been treated as a non-market economy country in the anti-dumping investigations by other WTO members. In terms of Para 8(2) of the annexure-1 of anti-dumping rules, China PR was proposed to be treated as a non-market economy country subject to rebuttal of the presumption by the exporting country or individual exporters in terms of the Rules.
32. As per Paragraph 8, Annexure 1 to the Anti-Dumping Rules, as amended, the presumption of a non-market economy can be rebutted, if the exporter(s) from China provide information and sufficient evidence on the basis of the criteria specified in sub paragraph (3) in Paragraph 8 and prove to the contrary. The cooperating exporters/producers of the subject goods from People's Republic of China are required to furnish necessary information/sufficient evidence as mentioned in sub-paragraph (3) of paragraph 8 in response to the Market Economy Treatment (MET) questionnaire to enable the Designated Authority to consider the following criteria as to whether:-
- The decisions of concerned firms in China PR regarding prices, costs and inputs, including raw materials, cost of technology and labour, output, sales and investment are made in response to market signals reflecting supply and demand without significant state interference in this regard, and whether costs of major inputs substantially reflect market values; the production costs and financial situation of such firms are subject to significant distortions carried over from the former non-market economy system, in particular in relation to depreciation of assets, other write-offs, barter trade and payment via compensation of debts;
 - Such firms are subject to bankruptcy and property laws which guarantee legal certainty and stability for the operation of the firms.
 - The exchange rate conversions are carried out at the market rate.
33. It is noted that none of the responding producers and exporter from China RP has requested for Market Economy Treatment and asked for individual normal value determination for them.

Determination of Normal Value

Normal Value for China PR

34. China PR is a non-market economy country. Para 7 of Annexure I of the Rule provides that:
- "In case of imports from non-market economy countries, normal value shall be determined on the basis if the price or constructed value in the market economy third country, or the price from such a third country to other countries, including India or where it is not possible, or on any other reasonable basis, including the price actually paid or payable in India for the like product, duly adjusted if necessary, to include a reasonable profit margin. An appropriate market economy third country shall be selected by the designated authority in a reasonable manner, keeping in view the level of development of the country concerned and the product in question, and due account shall be taken of any reliable information made available at the time of selection. Accounts shall be taken within time limits, where appropriate, of the investigation made in any similar matter in respect of any other market economy third country. The parties to the investigation shall be informed without any unreasonable delay the aforesaid selection of the market economy third country and shall be given a reasonable period of time to offer their comments."*
35. The normal value for the subject products imported from China PR into India has been constructed based on the following principles:- optimum consumption norms of the domestic industry for major raw materials have been considered with the exception of raw material of PX-13(6PPD). In the case of PX-13(6PPD), norms of the cooperative exporter have been adopted in line with the methodology followed at the time of original investigation. Further, the Authority notes that none of the responding producers and exporter from China RP has requested for Market Economy Treatment and asked for individual normal value determination for them. However, since China is treated as a non-market economy country by the Authority, international prices for the raw material consumed by the different products have been adopted for working out the major raw material

cost. Cost of other raw materials has been considered at par with the domestic industry. Conversion cost, interest, SGA etc. have been considered at the level allowed for the domestic industry. 5% of cost of sales excluding interest has been allowed towards reasonable profit. The constructed normal value determined for China is as under:

Product	Constructed Normal Value for China PR (US\$/Kg)
PX-13 (6PPD)	***
TDQ	***
PVI	***
TMT	***
MBT	***
CBS	***

Determination of Export Price

Export price of cooperating exporters from China PR

M/s Shandong Sinorgchem Technology Co. Ltd China PR through M/s Jiangsu Sinorgchem Technology Co. Ltd, China PR

36. The weighted average export price (CIF) to India is determined as per the data provided by the exporter in Appendix 2 and 3A of the exporter's questionnaire response. Price adjustments have been claimed on overseas freight, overseas insurance, inland freight, credit cost, bank charges, handling and export packing. The Authority has admitted the adjustments claimed by the exporter. Accordingly, the export price at ex-factory level determined is as given in the Dumping Margin Table below.

M/s Sinorgchem Co Tai'an China PR through M/s Jiangsu Sinorgchem Technology Co. Ltd, China PR

37. The weighted average export price (CIF) to India is determined as per the data provided by the exporter in Appendix 2 and 3A of the exporter's questionnaire response. Price adjustments have been claimed on overseas freight, overseas insurance, inland freight, credit cost, bank charges, handling and export packing. The Authority has admitted the adjustments claimed by the exporter. Accordingly, the export price at ex-factory level determined is as given in the Dumping Margin Table below.

Export price of non-cooperating exporters from China PR

38. The Authority notes that no other exporter from China PR has submitted exporter's questionnaire response. Therefore, the Authority has adopted the the lowest export price of the cooperating exporters for PX13 (6PPD) for non-cooperative exporters. As regards TDQ, TMT, PVI, CBS and MBT, there being no response, the average export price into India has been considered for calculation of net export price. Adjustments have been allowed at par with the ones allowed in respect of co-operating exporters from China PR as above for arriving at export price at ex-factory level. By adopting this method, the export price at ex-factory level in respect of non-cooperating exporters from China PR worked out by the Authority is as per table below:

Product	Net Export Price of China PR (US\$/Kg)
PX-13 (6PPD)	***
TDQ	***
PVI	***
TMT	***
MBT	***
CBS	***

Normal value for Korea RP**Kumho Petrochemicals Company Ltd (KPC)**

39. With regard to determination of Normal Value for KPC in the original investigation, the Authority in the Final Findings dated 1st October, 2008 recorded as under:

*"58. Section 9A (1) (c) (i) and Para 1 of Annexure 1 referred in rule 10 of anti-dumping rules require that in order to ascertain the comparable price in ordinary course of trade for the like article when meant for consumption in the exporting country, the domestic sales reflected in the records for the relevant period at the price shown therein will normally be accepted when the records reasonably reflected the cost associated with the production and sale of such article. Authority concludes that during the course of verification it came to notice that 4 ADPA, the primary raw material required for manufacture of 6 PPD was sourced by Korea Kumho from Sinorgchem, a Chinese producer at a price of approximately US\$ *** per K.G., lower than the price of US \$ *** per K.G., at which they had been supplying the same to India. Further the import price of this very raw material when sourced from a market economy country into India was found to be US \$ 3.09 per K.G. Incidentally Sinorgchem happens to be a participating exporter from China PR in the present investigation and verification of the said exporter by the Authority revealed that they are operating under nonmarket economy conditions.*

59. Therefore, the Authority concludes that in a situation where major input i.e. 4 ADPA used in production of 6 PPD was solely sourced from a non-market Economy Company, the use of actual purchase price of Kumho Petrochemicals for 4 ADPA, would not reasonably reflect the cost associated with production of 6 PPD.

*60. In view of above, the authority has adjusted the cost of production and sale by the difference between the international price of 4 ADPA from a market economy country and actual purchase price of Kumho Petrochemicals. Accordingly the revised cost of sales for PX 13(6PPD) works out to US \$ *** per kg. At this adjusted cost of sale the domestic sales made by Kumho Petrochemicals during POI fail to pass the ordinary course of trade test. Accordingly the domestic sales do not permit a proper comparison. The Authority, therefore, has constructed the normal value for Kumho Petrochemicals in terms of Section 9A (1) (c) (ii)*

*61. Taking note of these factors, the Authority has calculated the normal value in the instant case by taking into account the cost of production of the subject goods in Korea RP based upon the 4ADPA's international price from a market economy country, and allowing other costs as claimed and verified. On the cost of sales so arrived at, the average profit margin has been considered. Normal value for PX-13 (6PPD) has been determined accordingly and worked out as US \$ *** per K.G by the Authority."*

40. With regard to determination of Normal Value for KPC in the Mid Term Review investigation, the Authority in the Final Findings dated 5th August, 2011 has recorded as under:

"28. The Authority concludes that the situation in the present investigation has not undergone any change from the original investigation for the reasons that Kumho Petrochemicals continues to source the major input 4ADPA from the same non-market economy company and no facts or evidence have been brought before the Authority since the issuance of Final Findings in the original investigation that the non-market economy status of the said company has undergone any change. The Authority, therefore, concludes that the use of actual purchase price of 4ADPA by KPC from the said non-market economy company would not reasonably reflect the cost associated with production of PX13 (6 PPD). Further, there are no imports of 4ADPA to India from a market economy third country during the POI in the present MTR.

29. Since there is no evidence available showing international price of 4-ADPA during the POI in this Review, the Authority has constructed the cost of production of 4-ADPA. The Authority notes that the domestic industry has produced only 4-NDPA, which is a stage prior to 4-ADPA and the Authority adopted the cost of the same for determining the cost of 4ADPA on a conservative basis. While adopting the cost of production of 4ADPA of the domestic industry, cost of major inputs as per the best usage of the domestic industry at international prices, conversion costs and SGA expenses of the domestic industry, and reasonable profit have been considered.

30. The Authority has further adjusted the cost of production and sale of PX-13 (6PPD) by the difference between the constructed international price of 4ADPA (computed on the basis of data of the domestic industry) and its actual purchase price of KPC. The revised cost of sales of PX-13 (6PPD) so constructed

*works out to US \$ *** per kg. At this adjusted cost of sales, the domestic sales of PX-13 (6PPD) made by KPC during the POI in this MTR fail to pass the OCT test. In view of the above, the Authority has constructed the normal value of PX-13 (6PPD) for Kumho Petrochemicals in terms of Section 9A (1) (c) (ii) of the Act as detailed below.*

*31. The Authority has calculated the normal value of the subject goods in the instant case by taking into account the cost of production of the subject goods in Korea RP based on the usage of 4ADPA as per KPC and the price computed on the basis explained in the above paragraph. The other costs (cost of other raw materials, conversion cost, SGA expenses, etc) of KPC as claimed and verified have also been taken into account. Further, reasonable profit has also been allowed. The Normal value for PX-13 (6PPD) thus computed works out to US \$ *** per K.G."*

41. With regard to determination of Normal Value for KPC in the present sunset review investigation, the Authority concludes as under:
- i) The situation in the present sunset review investigation has not undergone any major change from the previous two investigations, i.e., the original investigation and the midterm review investigation for the reasons that Kumho Petrochemicals continues to source majority of 4ADPA from the same non-market economy company with whom Kumho Petrochemicals Co Ltd had earlier reported to have special relationship and no facts or evidence have been brought before the Authority in the present sunset review investigation that the non-market economy status of the said company has undergone any change since the issuance of Final Findings in the original investigation and midterm review investigation. From the questionnaire response filed by Kumho Petrochemicals in the present investigation, the Authority notes that in the POI, the total import of 4ADPA by the company is *** MT, out of which the company has imported *** MT (***%) from the same company Sinorgchem in China PR which has been considered by the Authority as a non-market economy country, and only *** MT (***%) has been imported from Solutia in European Union.
 - ii) The Authority further notes that the domestic industry has also submitted the China Customs export data for the exports of 4ADPA to the world in the POI in this sunset review investigation. This data shows that China PR has exported a total of 21,153 MT of 4ADPA to the world (including Korea RP). Out of this, Sinorgchem, China PR alone has exported *** MT (***%) of 4ADPA to Korea RP where the only user of this raw material is KPC and only ***% has been exported to other countries. Therefore, Sinorgchem, with whom Kumho Petrochemicals Co Ltd had earlier reported to have special relationship, remains practically the major supplier of 4ADPA to KPC.
 - iii) KPC has argued that there is no special relationship between KPC and Sinorgchem by which KPC gets 4ADPA at an extra discount. KPC has argued that when a particular buyer buys huge quantity in comparison to other buyers, then that particular buyer will certainly be at a 'different price'. However, such relationship is usual and if a buyer gets extra discount because of the quantity off-take that does not mean the arm's length transaction price is to be rejected. Therefore, both the parties negotiated the terms and prices from time to time and all purchases were made in the normal course of international trade. KPC also argued that it also procured 4ADPA from another company - Solutia Inc based in Europe during the POI and a comparison of the prices showed that the company has purchased 4ADPA at lower prices from Solutia in EU as compared to Sinorgchem, China PR. In this regard, the Authority notes from the questionnaire response of KPC that the company has purchased 4ADPA from *** in the POI in only two months at an average price of *** US\$ per kg. and in the same two months from Sinorgchem at an average price of *** US\$ per kg. The Authority therefore holds that if it goes by the argument of KPC that when a particular buyer buys huge quantity in comparison to other buyers, then that particular buyer will certainly be given a special price, then why would Sinorgchem not sell 4ADPA to KPC at a price lower than that of *** as it has given ***% of the total requirement of 4ADPA of KPC. Again by the above logic of KPC, the Authority also sees no reason as to why *** offered 4ADPA to KPC at a price lower than that of Sinorgchem as KPC has not procured substantial quantity from ***. The Authority also sees no reason that if *** prices of 4ADPA to KPC are lower than that of Sinorgchem, then as to why KPC did not procure more quantity of 4ADPA from *** on regular basis.
 - iv) The Authority notes that Aniline and Benzene are the two major raw materials for manufacturing 4ADPA. The price movement of Aniline and Benzene as per the DGCIS data from the period of original investigation to the present SSR investigation shows that the prices of Aniline have gone up over these periods from 1.33 US\$ per kg in the original investigation to 1.74 US\$ per kg. in the present SSR investigation and prices of Benzene have gone up over these periods from 1.00 US\$ per kg. in the original investigation to 1.17 US\$ per kg. in the present SSR investigation. However, Korea Customs data shows that the prices of 4ADPA at which China has exported 4ADPA to Korea RP instead of moving up in tune with the increase in the prices of its

raw materials Aniline and Benzene, remained in the same price range over these periods from *** US\$ per kg. in the original investigation to *** US\$ per kg in the mid term review investigation to *** US\$ per kg. in the present SSR investigation. Therefore, the prices of 4ADPA at which China has exported 4ADPA to Korea RP cannot be relied upon.

- v) The Authority notes that the import prices of 4ADPA to India are also available with the Authority from the DGCIS import data. The DGCIS import data shows imports of 4ADPA during the original investigation and the present SSR investigation. These imports are from Germany and China PR. The import data shows that the import prices of 4ADPA from Germany, a market economy country, have gone up over these periods from 3.13 US\$ per kg in the original investigation to 3.48 US\$ per kg in the present SSR investigation and in comparison the import prices of 4ADPA from China, a non market economy country, show price of *** US\$ per kg in the original investigation and *** US\$ per kg in the present SSR investigation. On the other hand, as per China customs data for the POI of the present SSR investigation, China PR has exported 4ADPA to Korea RP at an average price of 2.46 US\$ per kg and to the rest of the countries at an average price of 3.13 US\$ per kg. Therefore, export price of 4ADPA from China PR, to either Korea RP or India or the rest of the world cannot be relied upon when compared to higher price from Germany, a market economy country.
 - vi) The Authority, therefore, concludes that the use of actual purchase price of 4ADPA by KPC from China PR, a non-market economy country would not reasonably reflect the cost associated with production of PX13 (6 PPD) by KPC in the ordinary course of trade.
 - vii) The Authority notes that in the original investigation there were imports from a market economy country. However, in the mid-term review investigation, there was no evidence of import of 4ADPA from a market economy country. Now, in the POI of the present SSR investigation, there is again evidence available showing international price of 4-ADPA from Germany as shown above. In the original investigation, the Authority had not considered the actual purchase price of 4ADPA by KPC from China PR and instead, adopted the import price in to India from a market economy country. Therefore, in the present SSR investigation also, the Authority has decided not to adopt the actual purchase price of 4ADPA by KPC from China PR, a non-market economy country for the reasons mentioned in the paras above and instead adopted the import prices of 4ADPA from Germany to India.
42. Taking note of these factors, the Authority has calculated the normal value in the instant case by taking into account the cost of production of the subject goods in Korea RP based upon the 4ADPA's international price of 3.48 US\$ per kg from Germany, a market economy country to India, after duly adjusting the same for the difference in freight at the rate *** US\$ per kg and allowing other costs as verified. On the cost of sales so arrived at 5% has been considered towards profit. Normal value for PX-13 (6PPD) determined accordingly is mentioned in the Dumping Margin Table below.

Export Price

Kumho Petrochemicals Company Ltd (KPC)

43. The Authority has determined the weighted average export price (CIF) to India as per the data provided by KPC in Appendix 2 and 3A of the exporter's questionnaire response. Price adjustments have been allowed on packing expenses, inland freight, overseas freight, port handling, customs brokerage, bank charges, credit expense, overseas insurances and sales commission. Accordingly, the export price at ex-factory level determined is mentioned in the Dumping Margin Table below.

Kumho Petrochemicals Company Ltd through Daewoo International Corporation, Korea RP

44. Daewoo International Corporation, Korea RP, filed questionnaire response and reported that the company exported 6PPD to Indian market. The company is, however, not a producer of the product under consideration and has exported the goods produced by KPC. The Authority has, therefore, determined dumping margin in respect of exports made by Daewoo International Corporation. Weighted average export price (CIF) to India has been determined as per data provided by the exporter in Appendix 2 and 3A of the exporter's questionnaire response. Price adjustments have been allowed on Overseas Insurance, Credit Expenses and Bank Charges. Accordingly, the export price at ex-factory level determined is mentioned in the Dumping Margin Table below.

Non cooperating exporters from Korea RP

45. The Authority notes that no other exporter from Korea RP has submitted exporter's questionnaire response. Therefore, the Authority adopted the lowest representative net export price to India of the

cooperative exporters for non-cooperative exporters. The export price determined is mentioned in the Dumping Margin Table below.

DUMPING MARGIN

46. Based on the above, the Normal Value, Export Price and Dumping Margin in respect of cooperative and non-cooperative exporters from the subject countries are summarized below.

Dumping Margin Table

US\$/Kg

Product	Name of producer	Exporter	Normal Value	Export Price	Dumping Margin	Dumping Margin %	Dumping Margin % Range
PX-13	M/s Shandong Sinorgchem Technology Co. Ltd, China PR	M/s Jiangsu Sinorgchem Technology Co. Ltd, China PR	***	***	***	***	30-40
	M/s Sinorgchem Co, Tai'an China PR	M/s Jiangsu Sinorgchem Technology Co. Ltd, China PR	***	***	***	***	30-40
	Kumho Petrochemicals Company Ltd, Korea RP	Kumho Petrochemicals Company Ltd	***	***	***	***	30-40
	Kumho Petrochemicals Company Ltd, Korea RP	Daewoo International Corporation, Korea RP	***	***	***	***	30-40
	Non cooperating exporters from Korea RP		***	***	***	***	35-35

Non Co-operating Exporters - China PR

Product under consideration	Normal Value (US\$/Kg)	Net Export Price (US\$/Kg)	Dumping Margin (US\$/Kg)	Dumping Margin (%)	Dumping Margin (% Range)
PX-13 (6PPD)	***	***	***	***	40-50
TDQ	***	***	***	***	20-30
PVI	***	***	***	***	20-30
TMT	***	***	***	***	25-35
MBT	***	***	***	***	20-30
CBS	***	***	***	***	20-30

ASSESSMENT OF INJURY AND EXAMINATION OF CAUSAL LINK

Injury & Causal Link

Views of the exporters/importers/consumers and other opposing interested parties

47. The following arguments have been advanced:

ATMA

- a. Each of the products should be evaluated individually and the impact of import on one product should not lead to a prejudicial effect on the other products.

- b. In spite of duty for the past 8 years, the domestic industry has not taken any steps to increase the capacity of the industry to meet the demand of the market and the new plant at Dahej is for 4ADPA manufacturing.
- c. Even if the domestic industry produces at 100% capacity they would only be able to cater to about 46% of the total demand of the market.
- d. The domestic industry stated that the PX-13 production capacity has increased to 14000 MT. However, the PX-13 Safeguard initiation notification showed that capacity is 8500 MT in 2012-13. Even assuming this is correct, it would mean increased capacity for two months in the POI and so the argument that domestic industry had the capacity to supply PX-13 to the entire user industry during the injury period is incorrect. Demand-supply gap exists for other rubber chemicals as well.
- e. The domestic industry exports 50% of their production.
- f. TDQ:
 - i. Imports of TDQ have decreased in the POI from 2009-10 by 27% while demand for PUC increased by 20%. The CIF price has increased.
 - ii. There was an increase in production and sales in both volume and value.
 - iii. As a result of the above increase, the market share of the domestic industry increased as well.
 - iv. The figures show that the domestic industry is in profit with the sales of TDQ.
 - v. There is no causal link since import volume has declined and CIF price increased for TDQ. Production, volume and value of sales and market share increased and profits were posted.
- g. CBS:
 - i. Volume of production and sales and sales realization increased for CBS over the injury period.
 - ii. Increase in domestic sales was in consonance with increase in domestic demand.
 - iii. There is an increase in CIF price of CBS by 40%.
 - iv. Slight decrease in market share by the domestic industry is due to increase in share of imports by other countries. Market share of imports from China have decreased.
 - v. Based on figures from market sources, profit of Rs. 28.44 per kg is reported for CBS.
- h. PX-13:
 - i. The SG data shows that there has been a significant increase in sales of the domestic industry as a percentage of total production.
 - ii. The domestic industry exports nearly 50% of their production hence, any decline in export sales would hamper their own production, which has seen a decline.
 - iii. The domestic demand for PX-13 had increased by 26% in the POI from 2009-10. However, the domestic industry can only cater to 46% of the total market and there has been no increase in installed capacity.
 - iv. Increase in imports of PX-13 in POI from subject countries was miniscule and market share decreased. Import price increased.
- i. No evidence of excess capacities with foreign producers given. Further, mere existence of surplus capacity cannot lead to conclusion of threat.
- j. The fact that no other country has imposed measures cannot mean that surplus production will be diverted to India.
- k. The domestic industry is not vulnerable since it has increased its production, volume and value of domestic sales, and market share. Market share of subject countries has declined, CIF price has increased. Hence, no likelihood of injury.

Kumho Petrochemical Co. Ltd and Rishiroop Polymers Pvt. Ltd.

- a. the Applicant claimed that KPC had reported loss because of dumping of the subject goods in India but at the same time that turnover of the subject goods forms 1% of the total turnover of KPC.
- b. The PX-13 Safeguard petition and review initiation notification states that the Dahej plant set up for 10000 MTS of intermediaries went into production from November 2012 but at other places it is claimed that production commenced in March 2013.
- c. Business intelligence confirms the old plant is discontinued. The Authority is requested to verify since applicant claimed that 4ADPA is manufactured at both plants and final product at old plant.
- d. Setting up of a new plant requires examination of the following:
 - i. A likelihood determination under Article 11.3 entails an analysis of projected future events based on positive evidence available. In the context of the present review, the operation of the new plant at Dahej is of crucial importance.

- ii. The applicant has claimed that it has achieved significant cost saving by undertaking production at Dahej. Computation of cost of production has to be done after consideration of the plant at Dahej. The heads under which costs were saved must be examined to see whether it is because of best utilization of raw materials, etc. or other causes.
 - iii. Any extraordinary costs involved in the Dahej plant must be excluded.
- e. Any determination of likelihood of injury must take into account the safeguard duty.
- f. After imposition of safeguard duty on PX-13, the applicant could not increase selling price, domestic sales or market share. It kept losing export market. It increased the cost of production and reduced the profitability during the period of Safeguard protection.
- g. Other factors of Injury:
 - i. Injury due to increased imports alleged in safeguards investigation.
 - ii. The share of other domestic producers with regard to domestic sales consistently increased in the years compared. This implies that the injury allegedly caused has not happened due to imports but internal market competition. Other producers are performing better and offering the subject goods at lower prices than the applicant.
 - iii. At least 50% of the imports of the subject goods are used to manufacture final goods which are exported to other countries. That portion of imported goods is imported with exemptions from anti-dumping duty, safeguard duty, basic customs duty and CVD. It is this portion of the imported subject goods which are exerting a downward pressure on the prices of the domestic industry goods.
 - iv. The Authority is to verify what proportion of installed capacity is earmarked for domestic and export production. Project reports by the applicant on the status of the Dahej plant must be submitted.
 - v. During FY 2012-13, applicant incurred costs on plants having capacity to produce 18,500MT of 4-ADPA whereas the limiting factor, capacity to produce only 8,500MT of PX-13, was not changed.
 - vi. DA may seek information from the jurisdictional Central Excise Commissioner regarding reporting of losses on sales by the DI. If the applicant has not reported its sales as loss-making before that authority, it cannot make the claim before the DA.
 - vii. Since the exports of the applicant decreased very sharply after 2009-10, the allocation of cost should be proportionate to the base year to make comparison for costs and profits for subsequent years. Applicant should provide methodology for allocation of cost on domestic and export production.
 - viii. The applicant claimed that imports from Europe need not be evaluated under other factors of injury since producers in Europe were exiting the market. The reason is heavy fines imposed on them for cartelization by the European Commission. Authority is requested to evaluate imports from Europe.
 - ix. The applicant had not established how factors such as production, profitability, capacity utilization, return on investment, productivity, sales, demand supply gap, selling price have behaved and contributed to injury due to dumped imports.
 - x. After communication of the information that the applicant is setting up/has set up a new plant at Dahej, it was requested that information relating to the exact installed capacity of the plant, how much of the installed capacity will be utilised for the production of the subject good for domestic consumption, and the exact earmarking of capacity to be employed for that purpose be verified as such information is crucial for a correct analysis to be undertaken. The percentage of installed capacity to be utilised for the manufacture of the subject good which is subsequently exported is also to be provided. It was also requested that the correct timeline of production at the new plant be established and that verification at the new plant be conducted to determine which manufacturing process is being carried on at which plant of the applicant. Additionally, it was submitted that a corresponding allocation in costs be made after scrutiny of the above information.
 - xi. The applicant has claimed that its manufacturing plant was shut down for 190 days. It is submitted that even when the plant of the applicant was shut for 190 days in a year, which comes to more than half the year, the capacity utilisation of the applicant had increased from 75 indexed points in 2011-12 to 76 indexed points in the POI. The applicant, thus, has an extremely high rate of capacity utilisation even in the light of plant shutdowns as submitted by it.

- xii. The mutually contradictory claims of the applicant are also highlighted. The applicant has claimed that there was a lack of demand as well as the presence of inventories with it. However, from the petition, it is clear that domestic sales of the applicant underwent a significant increase and inventories are undergoing a decreasing trend.
- xiii. There is no injury to the applicant on account of sales, which has undergone an increasing trend throughout the injury period as well as the POI, with an increase from 100 indexed points in 2009-10 to 118 indexed points in the POI.
- xiv. Furthermore, there is no injury on account of landed price of the subject imports, which after the addition of safeguard duty is greater than the domestic selling price of the subject good in 2011-12 as well as in the POI. Despite the increase in the landed value and the provision of additional protection in the form of safeguard duty, the applicant has not been able to improve its performance. This is because it has intrinsic causes of injury which cannot be cured by the provision of any duty.

Views of the domestic industry

48. The Domestic Industry has submitted that the subject goods from the subject countries have caused injury to the domestic industry as evident from the following:
- a. Petitioner considers that these are not inter se like products. Further, production facilities for different types of rubber chemicals are also dedicated. Therefore, petitioner considers that injury to the domestic industry can be assessed individually for each of the subject rubber chemical as has been done in the original investigation.
 - b. Apart from MBT and TMT, the demands of rest of the rubber chemicals (CBS, TDQ, PVI and PX-13) have shown a positive trend throughout the injury period.
 - c. The petitioner has considered imports from the base period of the original investigation in order to assess the trend of volume of imports pre and post imposition of anti-dumping duty.
 - i. Imports of PX-13 have increased throughout the period, despite the original duty and enhancement of duty following the mid-term review.
 - ii. Imports of TMT have increased when compared to the year 2003-04. The volume of imports has declined in the recent period, but still the imports of TMT have remained significant.
 - iii. Imports of MBT have increased when compared to the year 2003-04. The volume of imports has declined in the recent period, but still the imports of MBT have remained significant.
 - iv. Imports of CBS and PVC have increased throughout the period.
 - v. Imports of TDQ have increased till 2010-11 but declined thereafter. However imports have remained significant.
 - d. Share of imports from the subject countries with respect to each rubber chemical showed the following trends.
 - i. Imports of TMT in relation to total imports, production and consumption in India have declined throughout the injury period due to anti-dumping duty in existence.
 - ii. Imports of TDQ in relation to total imports have increased till 2011-12 but marginally declined during POI. Imports in relation to production have declined till 2011-12 and remained same thereafter during POI. Imports in relation to consumption have declined during the period.
 - iii. Imports of PX-13 in relation to total imports have increased till 2011-12 but marginally declined during POI. Imports in relation to total production have increased till 2011-12 but marginally declined during POI. Imports in relation to total consumption have increased till 2011-12 but marginally declined during POI.
 - iv. PVI imports in relation to total imports, production and consumption in India have increased significantly throughout the injury period.
 - v. CBS imports in relation to total imports declined in 2010-11, but started increasing thereafter during 2011-12 and further in the period of investigation. The imports in relation to production and consumption in India declined in 2010-11, but started increasing thereafter during 2011-12 and further in the period of investigation.

- vi. Imports of MBT in relation to total imports and consumption in India have declined throughout the injury period. It is pertinent to note that it is due to anti-dumping duty in existence. The imports in relation to production in India declined in 2010-11, but started increasing thereafter during 2011-12 and further in the period of investigation. In the event of revocation of anti-dumping duty, the imports will increase at a significant rate.
- e. There is price undercutting by each type of rubber chemical imported from the subject countries, and either price depression or suppression.
- f. Production, capacity, capacity utilization and sales show injury as follows:
 - i. For TMT, the production and capacity utilization of the petitioner declined in 2010-11 but thereafter increased. The sales of the domestic industry declined throughout the period with a slight increase in the year 2010-11. However, the sale of the domestic industry has declined during period of investigation.
 - ii. For TDQ, the production and capacity utilization of the petitioner increased throughout the period. The sales of the domestic industry increased throughout the injury period.
 - iii. For PX-13, the production and capacity utilization of the petitioner declined throughout the injury period with a marginal increase during POI. The sales of the domestic industry increased throughout the injury period. The petitioner in order to sustain in the market due to dumped imports, offered sub optimal prices and hence the sales of the domestic industry have increased.
 - iv. For PVI, the production and capacity utilization of the petitioner increased till 2011-12 but thereafter declined in the period of investigation. The sales of the domestic industry increased throughout the injury period.
 - v. For CBS, the production of the petitioner declined in 2010-11 but thereafter increased. The sales and capacity utilization of the domestic industry showed the same trend as that of production.
 - vi. For MBT, the production of the petitioner increased till 2010-11 thereafter declined significantly. The sales of the domestic industry declined over the injury period.
- g. Profitability, return on investment and cash profits showed following trends.
 - i. For TMT, the profit per unit and PBIT of the domestic industry declined throughout the injury period. Cash profits showed the same trend as that of Profit/Loss. The return on investment also declined throughout the injury period.
 - ii. For TDQ, the profit per unit and PBIT of the domestic industry declined throughout the injury period. Cash profits showed the same trend as that of Profit/Loss. The return on investment also declined throughout the injury period.
 - iii. For PX-13, the profits of the domestic industry declined throughout the injury period, with significant losses during 2011-12 and the period of investigation. Cash profits showed the same trend as that of Profit/Loss. The cash profits of the domestic industry declined throughout the injury period and the domestic industry suffered cash losses during 2011-12 and the period of investigation. The return on investment also declined throughout the injury period to such an extent that the domestic industry suffered negative return on investments during 2011-12 and the period of investigation.
 - iv. In the case of PVI, the profits of the domestic industry declined throughout the injury period, with significant losses during the period of investigation. Cash profits showed the same trend as that of Profit/Loss. The cash profits of the domestic industry declined throughout the injury period and the domestic industry suffered cash losses during the period of investigation. The return on investment also declined throughout the injury period to such an extent that the domestic industry suffered negative return on investments during period of investigation.
 - v. In the case of CBS, the profits of the domestic industry increased in 2010-11 but thereafter declined. Cash profits showed the same trend as that of Profit/Loss. The cash profits of the domestic industry increased in 2010-11 thereafter declined. The return on investment showed the same trend as that of profits.
 - vi. In the case of MBT, the profit per unit and PBIT of the domestic industry declined throughout the injury period. Cash profits increased in 2010-11 but thereafter declined. The return on investment also declined throughout the injury period.
- h. Market share in demand has shown the following trends:
 - i. TMT: Market share of the domestic industry has increased whereas that of imports from China has declined. This is a situation when the anti-dumping duty in existence. The situation is likely to reverse in the event of revocation of anti-dumping duty.

- ii. TDQ: Market share of the domestic industry has increased whereas that of imports from China has declined. This is a situation when the anti-dumping duty in existence. The situation is likely to reverse in the event of revocation of anti-dumping duty
- iii. PX-13: Market share of the domestic industry has remained stable whereas that of imports from China has declined. This is a situation when the anti-dumping duty in existence. However, market share of other Indian producers have increased.
- iv. PVI: Market share of the domestic industry increased and that of imports materially increased over the injury period. However, the market share of imports have increased upto 21% whereas the market share of domestic industry increased only by 3%.
- v. CBS: Market share of the domestic industry declined despite existence of anti-dumping duty.
- vi. MBT: Market share of the domestic industry has increased whereas that of imports from China has declined. The situation is likely to reverse in the event of revocation of anti-dumping duty.
- i. Employment, wages and productivity have shown the following trends:
 - i. TDQ: The employment with the domestic industry has declined in the period of investigation. Wages paid have shown normal wage growth till 2011-12 but declined during period of investigation. Productivity per day has also shown an increase.
 - ii. PX-13: The employment with the domestic industry has increased till 2011-12 but thereafter declined in the period of investigation. Wages paid have shown normal wage growth. Productivity per day has declined till 2011-12 and then marginally increased during the period of investigation.
 - iii. PVI: The employment with the domestic industry has declined in the period of investigation. Wages paid have shown normal wage growth. Productivity per day has also shown an increase with a marginal decline in the period of investigation.
 - iv. CBS: The employment with the domestic industry has increased throughout the period. Wages paid have shown normal wage growth. Productivity per day has also shown an increase.
 - v. TMT and MBT: The production of TMT and MBT is done through job workers. Hence there are no dedicated employees for production of these rubber chemicals.
- j. Inventories have shown the following trends:
 - i. TMT: The inventory levels of the domestic industry have declined till 2011-12 but thereafter increased in the period of investigation. Stock as no of days sales have declined till 2011-12 but thereafter declined in the period of investigation
 - ii. TDQ: The inventory levels of the domestic industry have increased throughout the period. Stock as no of days sales have increased also increased throughout the period.
 - iii. PX-13: The inventory levels have increased till 2010-11 and started declining thereafter. The Stock as no of days sales have also remained significant in the period of investigation.
 - iv. PVI. The inventory levels have declined during 2010-11 but thereafter increased. However, the Stock as no of days sales have declined till 2011-12 and increased in the period of investigation
 - v. CBS: The inventory levels of the domestic industry have increased in 2011-12 but thereafter declined in the period of investigation. The Stock as no of days sales have also remained significant in the period of investigation
 - vi. MBT: The inventory levels of the domestic industry have increased throughout the injury period with a significant increase during period of investigation. Stock as no of days sales have also increased throughout the period.
- k. Growth of the domestic industry in terms of sales, production, and capacity utilization was positive whereas growth in respect of profits, return on investment, cash profits and inventories was negative.
- l. There is likelihood of continuation and intensification of injury in the event of revocation of anti-dumping duty due to excessive production capacities held in the subject countries, the vulnerability of the domestic industry in terms of its performance in the event of revocation, price attractiveness of the Indian market, the magnitude of price undercutting in the event of revocation, and there has been an increasing trend among foreign chemicals manufacturers to set up factories in China. Further,

Solutia Inc., Jiangsu Sinorgchem Technology Co., Ltd., and Korea Kumho Petrochemical Co., Ltd. announced that they have reached a global settlement to resolve all disputes among them involving Solutia's patents for processes to produce 4-ADPA. Under the terms of the settlement, Solutia grants Sinorgchem and KPC licenses to manufacture 4-ADPA under Solutia's patents, which do not expire until 2019. As licensees, Sinorgchem and KPC are also granted certain rights to enforce those patents.

- m. There is no other factor causing injury to the domestic industry since:
 - i. Imports of product under consideration from other countries are either negligible or the export prices are higher.
 - ii. There is no contraction in demand of the each of the rubber chemicals during POI except TMT and MBT.
 - iii. The pattern of consumption with regard to the each of the rubber chemicals has not undergone any change.
 - iv. There is no trade restrictive practice which could have contributed to the injury to the domestic industry.
 - v. Technology for production of the product has not undergone any change.
 - vi. The petitioner has exported the product under consideration. However, the claimed injury to the domestic industry is on account of domestic operations.
- n. There is a clear causal link for the following reasons:
 - i. Imported product is entering the Indian market at dumped prices.
 - ii. Imported product was undercutting the prices of the domestic industry. Resultantly, the domestic industry has been prevented from increasing its prices in proportion to increase in cost of sales.
 - iii. Consequently, the domestic industry has to face deterioration in profits, PBIT, return on capital employed and cash profits.
 - iv. Growth of the domestic industry became negative in respect of a number of parameters.
- o. With respect to the argument that the domestic industry did not take steps to increase capacity, Indian industry was in a position to meet the entire demand for all the rubber chemicals in the country. Imports were not necessitated for this reason. While some share of demand (approx. 12-15%) may be because of duty exemption granted by the Government of India, demand to the extent of 55-62% has been met by imports. Statistics published by ATMA show that exports of tyres from India are hardly in the region of 12-15% of total industry's production.
- p. If Indian capacity is taken into account, there is sufficient capacity in the country to cater to Indian demand. In the case of CBS, if duty free imports are reviewed, there is no demand-supply gap.
- q. With respect to PX-13 capacity, the installed capacities with the domestic industry till investigation period were 8500 MT. With commencement of production at Dahej, the capacity of the domestic industry has got enhanced to 14000 MT.
- r. Exports for the domestic industry are a matter of compulsion. The export price of NOCIL is lower than the price at which NOCIL is selling the product in the Indian market. There is no contractual obligation on NOCIL to earmark its capacities to the foreign consumers. NOCIL's first preference is to get the order from domestic market and sell to them. Further, it is a case where consumers place orders and domestic industry supplies the material and so where it was not getting orders, it had to look to international markets.
- s. While performance of the domestic industry with respect to TDQ improved in terms of production, capacity utilization, market share, domestic sales volumes, export sales volumes; performance of the domestic industry deteriorated in terms of inventories, profit/loss, return on investment and cash profits. Further, imports were undercutting the domestic price which has led to price suppression. Further, increase in cost of production has been on account of increase in raw material cost.
- t. While performance of the domestic industry with respect to CBS increased in terms of production, capacity utilization, market share, domestic sales volumes, export sales volumes, performance of the domestic industry deteriorated in terms of inventories, profit/loss, cash profits, return on investment. Imports were undercutting the domestic price which has led to price suppression. Further, the injury margin is significantly positive and higher than that in the original investigation.

- u. The injury to the domestic industry with respect to PX-13 is evident in decline in capacity utilization, production, market share, profits, return on investment and cash flow and increase in inventories.
- v. Responding exporters from Korea RP and China have not disputed existence of surplus capacities in the exporting countries but ATMA is disputing the same.
- w. The fact that subject foreign producers are faced with surplus capacities in itself is sufficient to show that such surplus production will be diverted to the Indian market in the event of cessation of anti-dumping duty. It is a simple business situation that a producer with unutilized capacity will look for market where product can be sold.
- x. Vulnerability of the domestic industry has to be seen in the absence of the measures. The fact that import price is lower than domestic industry prices clearly establishes that the domestic industry is vulnerable in the event of cessation of antidumping duties.
- y. In tyre segment, there are about eleven large consumers of the product who are procuring various raw materials from various sources on the basis of the relative price being offered by various suppliers. Thus, the domestic industry is clearly vulnerable to injury.
- z. The domestic industry did not state during the public hearing that the dumping of the product by the company led to financial losses to the company. In fact, the domestic industry quoted from their annual report and stated that the company has stated to have suffered financial losses in specialty chemicals.
- aa. With respect to KPC's argument regarding the Dahej plant, the petitioner has nowhere stated that the plant went into commercial production in November, 2012. The plant commenced trial production in November, 2012 and commercial production in March, 2013.
- bb. NOCIL was earlier producing 4NDPA-4ADPA and PX-13 at the old plant. Consequent to setting up plant at Dahej, the process of converting 4-NDPA to 4-ADPA is not required, as Dahej is manufacturing 4-ADPA. The company is now producing PX-13 at the old plant after getting the intermediate 4-ADPA from the new plant.
- cc. With respect to the argument that analysis of projected future events is required, the Authority is required to determine the parameters in the present case based on the period of investigation. Since there is significant imports into the country during the relevant period and these imports are at dumped price which has caused injury to the domestic industry, the events occurred after period of investigations are totally irrelevant.
- dd. The petitioner never stated that production at Dahej has led to significant cost savings. In fact, cost of production of the petitioner at present is significantly higher as compared to the cost of production in the past. Further, the Dahej plant is totally irrelevant upto the POI. No costs of the plant have been included in the analysis.
- ee. With respect to the arguments concerning safeguard duty, the safeguard duty was imposed in such a manner that it was payable only if anti-dumping duty was less than safeguard duty.
- ff. It was argued that the petitioner could not increase prices despite safeguard duty. The petitioner has not been able to gain market share to the extent it could, because exporters have absorbed the duties. The petitioner is losing export market because of significant dumping by the subject exporters in the export market as well. Access to low priced 4-ADPA to KPC is helping KPC in globally dumping the product. The cost of production of the petitioner has not increased because of reduction in exports. In fact, significant proportion of the cost of production is a variable cost.
- gg. With respect to dual remedy, injury to the domestic industry is because of imports. To the extent these imports are dumped imports, the petitioner is entitled to dumping duties. Since such dumping duty does not fully address the injury suffered by the domestic industry, the domestic industry has requested for imposition of safeguard duty in order to cover the unaddressed injury.
- hh. With respect to internal market competition, Lanxess had earlier shutdown its production in India temporarily to shift its plant from one location to another. During this period, Lanxess resorted to imports, and sales by Lanxess are included in the imports and market share of imports during this period. After recommencing the production at the new location, Lanxess has been selling from its own production. This sale has been reported as sales by domestic producer. Since all these sales have been made by Lanxess, this should be seen together whether these are from production or through imports.

- ii. It would be seen that the market share of Laxness has increased whereas the market share of other Indian producer has declined, clearly showing that the market share of other Indian producers as whole, has increased due to Laxness started production once again instead of importing.
- jj. It is factually incorrect that the 50% of the imports are under duty exemption scheme. In fact, exports of tyre industry are in the region of 12-15% as established by the statistics published by ATMA. Further, there are significant imports on duty paid basis where domestic industry could clearly sell the product. The duty paid imports being made by consumers are clearly causing volume injury to the domestic industry. Further, the imports whether duty paid or duty free have adverse price effect on the domestic industry, as the domestic industry fixes its price on the basis of import price parity. Thus, even if 100% of the exports are under duty exemption scheme, it will have price effect on the domestic industry. It is undisputed that the domestic industry prices are fixed on import parity basis.
- kk. The petitioner does not earmark capacity for export market. Since price in the domestic market is higher, the first preference for the domestic industry is the domestic market.
- ll. It was argued that during FY 2012-13, applicant incurred costs on plants having capacity to produce 18,500MT of 4-ADPA whereas the limiting factor, capacity to produce only 8,500MT of PX-13, was not changed. The petitioner incurred no expense in the new plant which has been included in the cost of production claimed in the data given to the Designated Authority. In fact, none of the expenses incurred at Dahej have been included in the cost computation given to the Designated Authority.
- mm. It was argued that since the exports of the applicant decreased very sharply after 2009-10, the allocation of cost should be proportionate to the base year to make comparison for costs and profits for subsequent years. This claim is not supported by Annexure-III which provides for determination of cost of production for the quantities produced.
- nn. With respect to the need for examining imports from the EU, imports of PX-13 are attracting anti-dumping duty. Thus, these imports are imports from dumping countries which are now attracting anti-dumping duty. These are not non-dumped imports. Under the Rules, the authority is required to evaluate impact of non-dumped imports.

Examination by the Authority

49. The Authority has examined the submissions and issues raised by the interested parties with regard to injury to the domestic industry as under:-
- a. With respect to the argument that each of the rubber chemicals should be evaluated separately, it is noted that a number of different types of rubber chemicals are involved in the present sunset review investigation. These types are not like products *inter se*. Since the production facilities for the different types of rubber chemicals are dedicated, the Authority has examined injury to the domestic industry individually for each of the subject rubber chemical as has been done in the original investigation.
 - b. With respect to the argument that the around 50% of the imports are made under duty exemption scheme and domestic industry has not increased capacity despite duties in force, the Authority notes that these interested parties provided no evidence to establish the same and the domestic industry contended that approximately 12-15% of the demand may be met by imports because of duty exemption granted by the Government of India where tyres are exported. Information on tyres exports provided by the domestic industry showed that exports by tyre industry, barring Ceat Ltd and Balakrishna were in the region of 3-16%. Exports by Ceat are in the region of 22%. However, imports of 6PPD constituted 55-62% of demand of the product in the country.
 - c. With respect to the argument that even if the domestic industry produces at 100% capacity they would only be able to cater to about 46% of the total demand of the market, the Authority notes that (i) capacity for the product under consideration in India as a whole should be considered and compared with demand during the investigation period for the purpose and comparison with capacity of the domestic industry is inappropriate, (ii) the present capacity with the domestic industry remained significantly unutilized and, therefore, demand-supply gap would not justified the present level of imports, (iii) Merchem Ltd has stated that it has not been able to produce and sell in view of significantly low priced imports and the capacities with the company have remained almost completely unutilized, (iv) AD Rules do not require that the domestic industry must meet the demand of the user industry for getting redressal to its injury on account of dumping.

- d. With respect to exports by the domestic industry of the PX-13, the domestic industry contended that it had to export to minimize losses. The Authority notes that export price of domestic industry were always lower than the domestic selling price but higher than the price at which such goods are imported into India. No evidence has been brought on record to show that domestic industry has refused to sell in domestic market in preference to export market.
- e. With respect to capacities with foreign producers, the Authority notes that the domestic industry has provided information in its petition regarding both the capacities with the foreign producers in the subject countries and the demand for the respective rubber chemicals in those countries. Hence, the Authority notes that there are considerable excess capacities with the foreign producers in the subject countries and that with the revocation of the existing anti-dumping duties, there is a likelihood of those volumes being diverted to India at dumped prices, causing material injury to the domestic industry.
- f. KPC highlighted that the turnover of the subject goods forms 1% of the total turnover of KPC and so losses of KPC could not be a result of dumping by the company. The Authority notes the actual statement from the Annual Report of KPC for the year 2012 which is as follows:

“..... Our specialty chemicals business saw its first loss in three years due to intensifying competition driven by the lower price strategy of certain competitors.....”

- g. With respect to the plant of NOCIL at Dahej, the Authority notes that the plant commenced trial production in November, 2012 and commercial production in March, 2013. NOCIL was earlier producing PX-13 through 4NDPA at the old plant. Once the new plant at Dahej is commercialized, it was no longer required to convert 4-NDPA to 4-ADPA. NOCIL now (after the investigation period) produces PX-13 at its Thane plant using the intermediate 4-ADPA manufactured at the new plant at Dahej. It is noted that contrary to the claim of the responding party, the cost of production of the petitioner at present is significantly higher than the cost of production in the past. In any case, costs at the Dahej plant are not relevant in the present investigation. Therefore, there are no ‘extraordinary costs’ that need to be addressed in relation to the Dahej plant.
- h. One of the responding parties has claimed that any determination of likelihood of injury must take into account the safeguard duty. Further, the Authority notes that safeguard duty was only made payable where anti-dumping duty was less than safeguard duty.
- i. With respect to the argument that the domestic industry could not improve its position despite duties on PX-13, the Authority notes that the exporters/producers from the subject countries appear to have absorbed the duties, as established by the increased dumping margin and injury margin in the present investigation period.
- j. With respect to the domestic industry claiming that injury was due to increased imports in the safeguards investigation, the Authority notes that this does not disentitle the petitioner from seeking extension of anti-dumping duty to address injury being caused by dumping.
- k. With respect to internal market competition, the Authority notes the argument of the domestic industry that Lanxess had shut down production in India temporarily in order to relocate its plant. During this time it had resorted to imports. Once it had relocated its plant, production resumed and imports were no longer required. Hence, the increase in production by Lanxess was examined in this light. The market share of other Indian producers has declined. Further, there has been positive price undercutting by subject countries imports of the domestic selling price in the period of investigation.
- l. The Authority notes that the domestic industry does not specifically earmark its capacity for export and domestic production. The Authority notes the claim of the domestic industry that since domestic prices are higher, the first preference is to sell in the domestic market and it is only in the event that it is unable to do so that it exports the product under consideration.
- m. It was claimed by one of the interested parties that during FY 2012-13, applicant incurred costs on plants having capacity to produce 18,500 MT of 4-ADPA whereas the limiting factor, capacity to produce only 8,500 MT of PX-13, was not changed. The Authority notes in this regards that the information submitted by the petitioner and verified by the Authority does not include expenses incurred at the Dahej plant.
- n. With respect to the Authority seeking information from the Central Excise Commissioner regarding the reporting of losses on sales by the domestic industry, the Authority considers that such recourse is not

- necessary or warranted in the present case. The Authority has verified the data provided and considers that the domestic industry has suffered losses with respect to the product under consideration.
- o. One of the parties has claimed that since the exports of the applicant decreased very sharply after 2009-10, the allocation of cost should be proportionate to the base year to make comparison for costs and profits for subsequent years. The Authority notes in this regard that profit/loss in the product under consideration is required to be determined after considering the expenses and production in the product. The petitioner does not have separate or earmarked capacities for the domestic and export markets.
 - p. The applicant claimed that imports from Europe need not be evaluated under other factors of injury since producers in Europe were exiting the market. The authority notes that imports from Europe were attracting anti-dumping duty and therefore, these are dumped imports.
 - q. As regards investment made by the petitioner at Dahej, the authority notes that the petitioner has set up a plant for production of 4-ADPA, an intermediate in the production of the product under consideration. The said plant commenced commercial production after the investigation period. Further, none of the expenses incurred by the petitioner at Dahej have been included in expenses considered for the product under consideration. The profit/loss relied upon in the present determination does not include any expense incurred by the petitioner at Dahej. It is further noted that the petitioner has claimed that its capacity for PX-13 has increased to 14,000 MT after commencement of production at Dahej plant. The petitioner provided a Chartered Engg. Certificate in this regard.
50. A number of different types of rubber chemicals are involved in the present sunset review investigation. These types are not like products *inter se*. Since the production facilities for different types of rubber chemicals are dedicated, the Authority has examined injury to the domestic industry individually for each of the subject rubber chemical as has been done in the original investigation.

Factors other than dumped imports

51. The following are the submissions on factors other than dumped imports made by the opposing interested parties:
- (i). The applicant had filed a petition for the extension of safeguard duty in existence on the subject good. A safeguard duty is sought by domestic producers when injury suffered by them is not due to dumped imports. In light of the same, the applicant is required to demonstrate and quantify the injury due to imports other than the dumped imports.
 - (ii). The share of other domestic producers with regard to domestic sales consistently increased from 100 in 2009-10 to 132 in 2010-11, 168 in 2011-12 to 173 in the POI. This was accompanied by a decline in NOCIL's sales from 100 in 2009-10, 90 in 2010-11, 78 in 2011-12 to 76 in the POI. The existence of inter se competition between the domestic producers is the real cause of injury because other domestic producers who are operating in the same market conditions are able to perform relatively better than the applicant. This approach is supported by the ruling of the Appellate Body in *Egypt - Definitive Anti-Dumping Measures on Steel Rebar from Turkey*, WT/DS211/R (1 October 2002) where the Appellate Body ruled that the investigating authority is required to evaluate the condition of the domestic industry overall.
 - (iii). Fifty percent of the subject goods was used in the manufacturing of final product which are subsequently exported out of India. That portion of imported goods are exempted from all duties including anti-dumping, safeguard, Basic Customs Duty as well as CVD (equal to excise duties). Therefore, it was argued that the landed value of such portion of imported goods is much lower due to exemptions and is exerting a direct downward price pressure on prices of the subject good produced by the applicant. The investigating authority is required to separate the injurious effects of the dumped imports and the injurious effects of other factors; otherwise such an analysis will not attribute the injurious effects to the correct causes. The judgment of the General Court (Seventh Chamber) of the European Union in *Gul Ahmed Textile Mills v Council*, Case C-638/11 (27 Sept. 2011) for the above principle of law is relied upon.
 - (iv). The imports of the subject goods originating in or exported from Europe are also to be evaluated by the Authority as "other factors of injury". Such an analysis must not be neglected due to

contentions of the applicant that rubber manufacturers in Europe are exiting the market. Any such exits are only due to the heavy fines imposed on the manufacturers of rubber chemicals in Europe by the European Commission for cartelisation.

- (v). If the applicant is claiming losses, then the Authority may seek information from the jurisdictional Central Excise Commissionerate regarding reporting of such losses to them. If the applicant paid Central Excise duty on transaction value then that value itself should be taken to be “profit making sales” unless it was reported to the Central Excise Authorities that the value mentioned in the invoices was the loss making sales. If the applicant had not claimed its selling prices to be loss making prices before the Central Excise authorities, such a claim cannot be made before the DGAD also.
- (vi). It is submitted that the applicant is an incapable and inefficient producer of the subject good and is not capable of producing and supplying the sufficient quantity of 6PPD even if protection is given as anti-dumping or safeguard duty. The above contention is supported with the fact that after the imposition of safeguard duty, the price at which PX-13 was available to the user industry increased by 30% than at which it was available earlier. As a result of imposition of the safeguard duty, the applicant also had ample opportunity to increase its sales price. However, it could neither increase the selling price nor its sales volume/market share and lost the export market at an increased rate as well. It is submitted that the applicant suffers from intrinsic cause of injury and thus, the duty must not be extended.

Examination by the Authority

52. The Authority has examined the submissions and issues raised by the opposing interested parties on factors other than dumped imports as under:

- i) As regards the contention that the petitioner has also sought imposition of safeguard duty, the authority notes that both anti dumping duty and safeguard duty can be imposed on a product at the same time. The only bar is that the domestic industry should not be granted dual protection for the same injury. It is noted in this regard that the safeguard duty imposed by the Central Govt. clearly stated that the quantum of anti dumping duty shall be reduced from the quantum of safeguard duty and only the difference shall be charged as safeguard duty. It is thus noted that the quantum of anti dumping duty and safeguard duty has not exceeded total quantum of injury to the domestic industry.
- ii) As regards the contention that about 50% imports have been reported under duty exemption category where customs duty, anti dumping duty and safeguard duty does not apply, it is clarified that the authority has determined weighted average price undercutting.
- iii) As regards imports from Europe, the authority notes that imports from Europe are already subject to anti dumping duty. Under the rules, the authority is required to segregate injury to the domestic industry from sources not resorting to dumping. Injury to the domestic industry from other dumped imports is not required to be segregated.
- iv) As regards reporting of losses to Central Excise authorities and payment of excise duty, the authority notes that it has adopted verified information and found that the domestic industry has suffered financial losses in production and sale of the product under consideration in the domestic market.
- v) As regards contention that the domestic industry is incapable and inefficient producer, the authority notes that the anti dumping duty is recommended at the lower of dumping margin and injury margin. Further, the performance of the domestic industry has shown deterioration over the period. It is not the contention of the interested parties that the domestic industry was earlier an efficient and capable producer and has now become an incapable & inefficient producer. The performance of the domestic industry has deteriorated with the same level of efficiencies.
- vi) As regards the contention that the domestic industry is not capable of producing & supplying the goods, the authority notes that the petitioner has been producing some of its products at significantly higher level of capacity utilisation than the capacity utilisations of the responding exporters. It is found that the domestic industry had capacity utilisation of 85% in 6PPD in 2009-10. The interested parties have not provided

evidence to show that the domestic industry has not been able to produce and supply goods against confirmed orders placed by the purchasers.

vii) As regards the contention that the domestic industry has not been able to increase its prices even after imposition of safeguard duty (PX-13), the authority has analysed the landed price of imports after addition of customs duty, anti dumping duty and safeguard duty have remained below the selling price of the domestic industry.

Cumulative Assessment of Injury

53. As per annexure-II (iii) of the Rules, in case imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to Anti-Dumping investigation, the Authority is required to cumulatively assess effect of such imports, only when it determines that
- The margin of dumping established in relation to imports from each country is more than 2% expressed as percentage of export price and the volume of the imports from each country is 3% of the imports of like article, or where the export of individual countries is less than 3%, the imports collectively accounts for more than 7% of the imports of like article, and
 - Cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic article.
54. In the instant case, investigations in respect of 6PPD are from more than one country. The Authority, therefore, examined whether the injury to the domestic industry must be determined cumulatively from these two sources in respect of 6 PPD. The Authority has found that the margin of dumping in respect of each of the subject country is more than 2% and the volume of imports from each country is also more than 3%. Cumulative assessment of injury is appropriate in respect of these two countries in view of the followings-
- The subject goods have been imported from the subject countries under the same tariff classification;
 - The Authority has found that the imported subject goods are commercial substitutes of the domestically produced 6 PPD.
 - The information furnished to the Authority gives a reasonable indication that the exports made from the subject countries compete in the same market and are like products.
 - Imports from Korea RP and China have been made by same category of customers who are buying the product from the domestic industry.
55. The Authority holds that it is appropriate to cumulatively assess the effect of dumped imports of 6 PPD on the domestically produced like article

Assessment of market share and share in demand

56. For the calculation of the domestic consumption/demand of the product under consideration, the Authority has taken the sum of Indian production and imports from all sources. Exports made by the Indian producers have been excluded from the computation in order to ascertain apparent consumption.
57. It is noted that domestic industry has determined imports volume and value based on data collected from secondary source, i.e., International Business Information Services, Mumbai (IBIS). The domestic industry has earlier submitted transaction wise import information in their submission. During the investigation, the Authority requested DGC&S to provide the said information on transaction to transaction basis, which was received by the Authority. It is noted that since there is no dedicated code for the product under consideration, imports of the products under consideration reported by the petitioner based on IBIS shows much higher volume of imports as compared to the volume of imports reported in DGC&S and, therefore, information from DGC&S could not be used and so the Authority has considered import data as reported in IBIS.
58. Demand in India are as follows:

Product Type	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	Jan-Dec 2012
MBT	MT	1,450	1,477	1,385	1,372
CBS	MT	3,171	3,513	4,325	4,263
TDQ	MT	6,581	7,973	8,135	7,923

PVI	MT	1,717	1,694	1,569	1,907
TMT	MT	1,843	1,591	1,744	1,679
PX-13	MT	14,311	14,851	16,003	18,033

59. The Authority notes that apart from MBT and TMT, the demand for rest of the rubber chemicals (CBS, TDQ, PVI and PX-13) have shown a positive trend over the injury period.

Volume Effect of Dumped Imports

60. With regard to the volume of the dumped imports, it has been examined that whether there has been a significant increase in dumped imports either in absolute terms or relative to production or consumption in India. Annexure II (ii) of the Anti Dumping Rules provides as under:

“While examining the volume of dumped imports, the said authority shall consider whether there has been significant increase in the dumped imports either in absolute terms or relative in production or consumption in India”

Import volumes and market share

61. The volume of imports is provided in the table below:

Imports Volume	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI
MBT					
China	MT	865	797	768	550
Countries Attracting anti dumping duty(ADD)	MT	-	-	-	-
Other Countries	MT	4	18	70	265
Total Imports	MT	869	816	838	815
CBS					
China	MT	929	604	1,023	1,135
Countries Attracting ADD	MT	-	-	-	-
Other Countries	MT	356	705	1,034	832
Total Imports	MT	1,285	1,309	2,057	1,967
PVI					
China	MT	707	830	985	1,192
Countries Attracting ADD	MT	-	-	-	-
Other Countries	MT	1	0	-	1
Total Imports	MT	707	831	985	1,193
PX-13					
China	MT	1,831	1,970	3,364	2,569
Korea	MT	6,030	5,541	4,504	5,726
Subject Country	MT	7,860	7,511	7,868	8,294
Countries Attracting ADD	MT	577	1,009	815	2,511
Other Countries	MT	1,392	1,243	1,052	286
Total Imports	MT	9,828	9,763	9,735	11,092
TDQ					
China	MT	1,063	1,217	887	781
Countries Attracting ADD	MT	-	-	-	-
Other Countries	MT	1,256	1,035	12	317
Total Imports	MT	2,320	2,253	899	1,098
TMT					
China	MT	572	352	324	244

Countries Attracting ADD	MT	-	-	-	-
Other Countries	MT	220	144	248	299
Total Imports	MT	792	496	572	543

62. It is noted from the table above:

- Imports of PX-13, PVI, CBS have increased over the period despite the imposition of anti-dumping and safeguard duties (PX-13).
- The imports of TMT, MBT and TDQ have declined in the recent period, but remained significant despite imposition of anti-dumping duty.

63. The share of imports is provided in the table below:

Market Share in Imports	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI
MBT					
China	%	99.51	97.74	91.70	67.48
Countries Attracting ADD	%	-	-	-	-
Other Countries	%	0.49	2.26	8.30	32.52
Total Imports	%	100.00	100.00	100.00	100.00
CBS					
China	%	72.26	46.15	49.74	57.69
Countries Attracting ADD	%	-	-	-	-
Other Countries	%	27.74	53.85	50.26	42.31
Total Imports	%	100.00	100.00	100.00	100.00
PVI					
China	%	99.89	99.97	100.00	99.95
Countries Attracting ADD	%	-	-	-	-
Other Countries	%	0.11	0.03	-	0.05
Total Imports	%	100.00	100.00	100.00	100.00
PX-13					
China	%	18.63	20.18	34.56	23.16
Korea RP	%	61.35	56.76	46.26	51.62
Subject Countries	%	79.97	76.94	80.82	74.78
Countries Attracting ADD	%	5.87	10.33	8.37	22.64
Other Countries	%	14.16	12.73	10.81	2.58
Total Imports	%	100.00	100.00	100.00	100.00
TDQ					
China	%	45.84	54.04	98.72	71.15
Countries Attracting ADD	%	-	-	-	-
Other Countries	%	54.16	45.96	1.28	28.85
Total Imports	%	100.00	100.00	100.00	100.00
TMT					
China	%	72.21	70.95	56.61	44.95
Countries Attracting ADD	%	-	-	-	-
Other Countries	%	27.79	29.05	43.39	55.05
Total Imports	%	100.00	100.00	100.00	100.00

64. Imports from the subject countries in relation to total imports, Indian production and consumption in India was as follows:

Particulars	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI
MBT					
Import volumes	MT	865	797	768	550
Share of imports in relation to					
Ø Total imports	%	99.51	97.74	91.70	67.48
Ø Production	%	***	***	***	***
Ø Consumption	%	59.63	54.00	55.46	40.07
CBS					
Import volumes	MT	929	604	1,023	1,135
Share of imports in relation to					
Ø Total imports	%	72.26	46.15	49.74	57.69
Ø Production	%	***	***	***	***
Ø Consumption	%	29.28	17.19	23.66	26.62
PVI					
Import volumes	MT	707	830	985	1,192
Share of imports in relation to					
Ø Total imports	%	38.60	42.15	29.28	46.40
Ø Production	%	***	***	***	***
Ø Consumption	%	41.15	49.01	62.78	62.50
PX-13					
Import volumes	MT	7,860	7,511	7,868	8,294
Share of imports in relation to					
Ø Total imports	%	79.97	76.94	80.82	74.78
Ø Production	%	***	***	***	***
Ø Consumption	%	54.92	50.58	49.17	46.00
TDQ					
Import volumes	MT	1,063	1,217	887	781
Share of imports in relation to					
Ø Total imports	%	45.84	54.04	98.72	71.15
Ø Production	%	***	***	***	***
Ø Consumption	%	16.16	15.27	10.91	9.86
TMT					
Import volumes	MT	572	352	324	244
Share of imports in relation to					
Ø Total imports	%	72.21	70.95	56.61	44.95
Ø Production	%	***	***	***	***
Ø Consumption	%	31.02	22.11	18.55	14.54

65. It is noted from the tables above:

- TMT – the imports in relation to total imports, production and consumption in India have declined throughout the injury period.
- TDQ – the imports in relation to total imports have increased till 2011-12 but declined during the period of investigation. Imports in relation to production and consumption have declined during the period.
- PX-13 – the imports in relation to total imports remained almost at the same level, but declined during the period of investigation. Imports in relation to production have increased over the injury period. Imports in relation to consumption declined over the injury period.

- d. PVI – the imports in relation to total imports, production and consumption in India have increased throughout the injury period.
- e. CBS – the imports in relation to total imports declined in 2010-11, but started increasing thereafter during 2011-12 and further in the period of investigation. The imports in relation to production and consumption in India declined in 2010-11, but started increasing thereafter during 2011-12 and further in the period of investigation.
- f. MBT – the imports in relation to total imports and consumption in India have declined throughout the injury period. The imports in relation to production in India declined in 2010-11, but started increasing thereafter.
66. In respect of 6PPD, it has been contended that whereas the market share of other domestic producers increased, that of domestic industry declined. This implied existence of inter se competition amongst domestic producers causing injury to the domestic industry. The domestic industry contended that imports of 6PPD include imports by Lanxess. Lanxess imported the product for some time, as it was shifting its production facilities to another location. Therefore, the imports made by Lanxess and production by the company should be seen together. The authority examined the imports and market share in case of 6PPD in detail. The Authority examined import data of DGCI&S and found that the same shows imports of 6PPD by Lanxess. The Authority examined the market share of various parties by considering market share of Lanxess cumulatively from imports and production. It is found that the share of Lanxess has remained almost at the same level over the period. The following table may be seen.

Market Share in Demand	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI
China	%	12.79	13.27	21.02	14.24
Korea	%	42.13	37.31	28.14	31.75
Subject Country	%	54.92	50.58	49.17	46.00
Countries Attracting anti-dumping duty	%	4.03	6.79	5.09	13.92
Share of all dumping countries	%	58.95	57.37	54.26	59.92
Other Countries	%	1.27	2.79	5.45	1.59
Import by Lanxess	%	***	***	***	***
NOCIL	%	***	***	***	***
Lanxess India P Ltd	%	***	***	***	***
Lanxess (imports + production)	%	***	***	***	***
PMC Pvt Ltd	%	***	***	***	***
Indian Industry	%	***	***	***	***
Total	%	100.00	100.00	100.00	100.00

67. The Authority notes that the market share of all countries attracting anti dumping duty has remained almost at similar levels over the injury period. The Authority notes that the present investigation is a sunset review investigation and, therefore, the market share of the subject countries in consumption in India has to be seen considering that anti dumping duty is in force on imports from these countries. The interested parties contended that about 50% of the subject goods are used in the manufacturing of final products which are subsequently exported out of India. These imports are exempted from all duties including anti-dumping, safeguard, Basic Customs Duty as well as CVD (equal to excise duties). The Authority thus notes that near static market share of various parties appears to be due to near static share of duty free imports of the product in the country. However, it has been analysed that the landed price of imports even after adding customs duty, anti dumping duty and safeguard duty were below the selling price of the domestic industry. The domestic industry submitted that majority of the product (86%) is consumed in tyre industry where the number of consumers are limited (less than ten). These consumers are sourcing both from Indian producers and imports. This clearly establishes that even if entirety of the imports are being made under duty exemption category, the same are having adverse price effect on the domestic industry.

Price Effect of the Dumped imports on the Domestic Industry & factors affecting prices

68. With regard to the effect of dumped imports on prices, the Designated Authority is required to consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of like product in India or whether effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increase, which otherwise would have occurred to a significant degree.

69. The impact of dumped imports on the prices of the domestic industry from the subject countries have been examined by the Authority with reference to the price undercutting, price underselling, price suppression and price depression, if any. For the purpose of this analysis the weighted average cost of production, Net Sales Realization (NSR) and the Non-injurious Price (NIP) of the Domestic industry have been compared with the landed cost of imports from the subject countries by the Authority.
70. While working out the net sales realization of the domestic industry, the rebates, discounts and commissions offered by the domestic industry and the central excise duty paid have been excluded by the Authority.
71. Price undercutting has been determined by the Authority by comparing the landed value of dumped imports from the subject countries over the entire period of investigation with the net sales realization of the domestic industry for the same period. For this purpose, landed value of imports has been calculated by adding 1% landing charge and applicable basic customs duty to the weighted average export price reported by responding exporters and verified during spot verification by the investigating team. So far as the non-cooperating exporters from the subject countries are concerned, the landed price has been determined by the Authority based upon the least export price of the cooperating exporters reflected in their submissions and verified by the Authority.
72. For the purpose of price underselling, the landed prices of imports from subject countries have been compared with the non-injurious price of the domestic industry determined for the POI by the Authority. The trend of undercutting and underselling is given below.

Price Undercutting

Particular	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI
MBT					
Landed Price of subject country	Rs/Kg	102.73	108.42	121.68	136.04
Net Sales Realization	Rs/Kg	***	***	***	***
Price Undercutting	Rs/Kg	***	***	***	***
Price Undercutting	%	***	***	***	***
Price Undercutting	% Range	30-40	30-40	25-35	20-30
CBS					
Landed Price of subject country	Rs/Kg	128.63	148.78	171.76	180.68
Net Sales Realization	Rs/Kg	***	***	***	***
Price Undercutting	Rs/Kg	***	***	***	***
Price Undercutting	%	***	***	***	***
Price Undercutting	% Range	35-45	25-35	20-30	20-30
PVI					
Landed Price of subject country	Rs/Kg	206.67	195.34	201.04	215.96
Net Sales Realization	Rs/Kg	***	***	***	***
Price Undercutting	Rs/Kg	***	***	***	***
Price Undercutting	%	***	***	***	***
Price Undercutting	% Range	15-25	15-25	15-25	10-20
PX-13					
Landed Price of subject country	Rs/Kg	166.64	165.62	172.04	168.82
Net Sales Realization	Rs/Kg	***	***	***	***
Price Undercutting	Rs/Kg	***	***	***	***
Price Undercutting	%	***	***	***	***
Price Undercutting	% Range	25-35	25-35	20-30	20-30
TDQ					
Landed Price of subject country	Rs/Kg	88.25	105.86	107.66	123.59
Net Sales Realization	Rs/Kg	***	***	***	***
Price Undercutting	Rs/Kg	***	***	***	***
Price Undercutting	%	***	***	***	***

Price Undercutting	% Range	25-35	10-20	15-25	10-20
TMT					
Landed Price of subject country	Rs/Kg	76.59	69.73	82.53	91.03
Net Sales Realization	Rs/Kg	***	***	***	***
Price Undercutting	Rs/Kg	***	***	***	***
Price Undercutting	%	***	***	***	***
Price Undercutting	% Range	30-40	35-45	30-40	25-35

Price Underselling

Particular	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI
MBT					
Landed Price of subject country	Rs/Kg	102.73	108.42	121.68	136.04
Net Sales Realization	Rs/Kg	***	***	***	***
Price Undercutting	Rs/Kg	***	***	***	***
Price Undercutting	%	***	***	***	***
Price Undercutting	% Range	30-40	30-40	25-35	20-30
CBS					
Landed Price of subject country	Rs/Kg	128.63	148.78	171.76	180.68
Net Sales Realization	Rs/Kg	***	***	***	***
Price Undercutting	Rs/Kg	***	***	***	***
Price Undercutting	%	***	***	***	***
Price Undercutting	% Range	35-45	25-35	20-30	20-30
PVI					
Landed Price of subject country	Rs/Kg	206.67	195.34	201.04	215.96
Net Sales Realization	Rs/Kg	***	***	***	***
Price Undercutting	Rs/Kg	***	***	***	***
Price Undercutting	%	***	***	***	***
Price Undercutting	% Range	15-25	15-25	15-25	10-20
PX-13					
Landed Price of subject country	Rs/Kg	166.64	165.62	172.04	168.82
Net Sales Realization	Rs/Kg	***	***	***	***
Price Undercutting	Rs/Kg	***	***	***	***
Price Undercutting	%	***	***	***	***
Price Undercutting	% Range	25-35	25-35	20-30	20-30
TDQ					
Landed Price of subject country	Rs/Kg	88.25	105.86	107.66	123.59
Net Sales Realization	Rs/Kg	***	***	***	***
Price Undercutting	Rs/Kg	***	***	***	***
Price Undercutting	%	***	***	***	***
Price Undercutting	% Range	25-35	10-20	15-25	10-20
TMT					
Landed Price of subject country	Rs/Kg	76.59	69.73	82.53	91.03
Net Sales Realization	Rs/Kg	***	***	***	***
Price Undercutting	Rs/Kg	***	***	***	***
Price Undercutting	%	***	***	***	***
Price Undercutting	% Range	30-40	35-45	30-40	25-35

73. From the above table, the Authority holds that the landed value of dumped imports of subject rubber chemicals have been undercutting the domestic prices significantly. Further, the landed value from the subject countries are also significantly below the non-injurious price of the domestic industry. The authority also notes that the landed price of imports after addition for anti dumping duty and safeguard duty (PX-13) were lower than the selling price of the domestic industry which clearly establishes that the dumped imports prevented the domestic industry from raising its prices.

Price suppression/depression

74. The Authority notes that in a sunset review investigation, the Authority is required to examine whether there was a significant adverse price effect by the dumped imports as compared with the price of the like product in India, or whether there is likelihood of significant adverse price effect in case of revocation of anti dumping duty. To examine price suppression and depression effect, the Authority has examined cost of sales and selling price per unit of the domestic industry during the POI and the injury period as under.

Particular	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI
MBT					
Cost of Sales	Rs/Kg	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>110</i>	<i>122</i>	<i>130</i>
Selling Price	Rs/Kg	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>106</i>	<i>111</i>	<i>113</i>
Landed Price	Rs/Kg	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>106</i>	<i>118</i>	<i>132</i>
CBS					
Cost of Sales	Rs/Kg	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>105</i>	<i>115</i>	<i>122</i>
Selling Price	Rs/Kg	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>106</i>	<i>111</i>	<i>116</i>
Landed Price	Rs/Kg	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>116</i>	<i>134</i>	<i>140</i>
PVI					
Cost of Sales	Rs/Kg	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>100</i>	<i>108</i>	<i>119</i>
Selling Price	Rs/Kg	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>99</i>	<i>98</i>	<i>98</i>
Landed Price	Rs/Kg	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>95</i>	<i>97</i>	<i>104</i>
PX-13					
Cost of Sales	Rs/Kg	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>102</i>	<i>109</i>	<i>118</i>
Selling Price	Rs/Kg	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>99</i>	<i>96</i>	<i>95</i>
Landed Price	Rs/Kg	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>99</i>	<i>103</i>	<i>101</i>
TDQ					
Cost of Sales	Rs/Kg	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>110</i>	<i>123</i>	<i>133</i>
Selling Price	Rs/Kg	***	***	***	***

<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>106</i>	<i>114</i>	<i>119</i>
Landed Price	Rs/Kg	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>120</i>	<i>122</i>	<i>140</i>
TMT					
Cost of Sales	Rs/Kg	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>116</i>	<i>139</i>	<i>150</i>
Selling Price	Rs/Kg	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>103</i>	<i>108</i>	<i>113</i>
Landed Price	Rs/Kg	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>91</i>	<i>108</i>	<i>119</i>

75. To examine the price suppression effect of the dumped imports on the domestic prices, the trend of net sales realization has been compared with the cost of production by the Authority.
76. The Authority concludes that there were upward trends in the cost of sales during the injury period. Increase in cost of sales has mainly been due to increase in inputs price.
77. The movement in selling price of PX-13 (6 PPD) shows that while during POI, the cost of sales went up by about 18%, on the contrary, the selling price came down by about 5%. Similarly, in respect of PVI while cost of sales went up during POI, the selling price registered a fall of about 2%. In the case of TMT, while cost of sales went up during POI, the selling price, on the contrary, went up only by 13%. Similarly in MBT, CBS and TDQ, while cost of sales went up during POI by 25%, 21% and 33% respectively, the selling price, on the contrary, went up only by 13%, 16% and 19% respectively.
78. The above analysis by the Authority indicates that in the case of PVI and PX-13 the fall in the sales realization has been significantly higher despite increase in the cost of sales. In the case of TMT, TDQ, MBT and CBS, while cost of sales went up during POI, the domestic industry was unable to increase its selling price in proportion to increase in cost. The Authority, therefore, concludes that the price effect of the dumped imports has forced the domestic industry to keep its prices lower in order to retain its market share.

Economic parameters relating to the domestic industry

79. Annexure II to the Rules requires that the determination of injury shall involve an objective examination of the consequent impact of these imports on domestic producers of the subject goods. Further Annexure II (iv) of the Rules lays down as follows:-

“The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including natural and potential decline in sales, profits, output market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments”

Production, Capacity, Capacity Utilization and Sales

80. The volume of domestic production and effects of dumped imports on the domestic operation of the domestic industry have been examined in terms of total production, capacity utilization and domestic sales of the domestic industry. Capacity, production, capacity utilization and sales volumes of the domestic industry have been as under:-

Particular	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI
MBT					
Installed Capacity	MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>100</i>	<i>100</i>	<i>100</i>

Production	MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>116</i>	<i>85</i>	<i>76</i>
Capacity Utilization (%)	%	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>116</i>	<i>85</i>	<i>76</i>
Domestic Sales	MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>115</i>	<i>84</i>	<i>87</i>
CBS					
Installed Capacity	MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>100</i>	<i>100</i>	<i>100</i>
Production	MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>98</i>	<i>123</i>	<i>133</i>
Capacity Utilization (%)	%	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>98</i>	<i>123</i>	<i>133</i>
Domestic Sales	MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>113</i>	<i>119</i>	<i>127</i>
PVI					
Installed Capacity	MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>100</i>	<i>100</i>	<i>100</i>
Production	MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>100</i>	<i>102</i>	<i>91</i>
Capacity Utilization (%)	%	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>100</i>	<i>102</i>	<i>91</i>
Domestic Sales	MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>97</i>	<i>99</i>	<i>122</i>
PX-13					
Installed Capacity	MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>100</i>	<i>100</i>	<i>100</i>
Production	MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>92</i>	<i>75</i>	<i>76</i>
Capacity Utilization (%)	%	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>92</i>	<i>75</i>	<i>76</i>
Domestic Sales	MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>102</i>	<i>109</i>	<i>118</i>
TDQ					
Installed Capacity	MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>100</i>	<i>100</i>	<i>100</i>
Production	MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>123</i>	<i>131</i>	<i>135</i>
Capacity Utilization (%)	%	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>127</i>	<i>134</i>	<i>135</i>
Domestic Sales	MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>111</i>	<i>117</i>	<i>128</i>
TMT					
Installed Capacity	MT	***	***	***	***

<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>100</i>	<i>100</i>	<i>100</i>
Production	MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>97</i>	<i>101</i>	<i>102</i>
Capacity Utilization (%)	%	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>97</i>	<i>101</i>	<i>102</i>
Domestic Sales	MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>96</i>	<i>100</i>	<i>98</i>

81. The Authority notes that:

- TMT: The production and capacity utilization of the domestic industry declined in 2010-11 but thereafter increased. The sales declined in 2010-11 and then slightly increase in the year 2011-12. However, the sale of the domestic industry declined during the period of investigation.
- TDQ: The production, capacity utilization and sales of the domestic industry increased throughout the injury period.
- PX-13: The production and capacity utilization of the petitioner declined throughout the injury period except a marginal increase during POI. The sales of the domestic industry increased throughout the injury period.
- PVI: The production and capacity utilization of the petitioner increased till 2011-12 and thereafter declined in the period of investigation. The sales of the domestic industry increased throughout the injury period.
- CBS: The production and capacity utilization of the domestic industry declined in 2010-11 but thereafter increased. The sales of the domestic industry increased throughout the injury period.
- MBT: The production of the domestic industry increased till 2010-11 thereafter declined significantly. The sales and capacity utilization of the domestic industry declined over the injury period.

Profits, return on investment and cash profit

82. The profits, cash flow and return on investments earned by the domestic industry from the sales of the subject goods in the domestic market were as under: -

Particular	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI
MBT					
Cost of Sales	Rs/Kg	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>110</i>	<i>122</i>	<i>130</i>
Selling Price	Rs/Kg	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>106</i>	<i>111</i>	<i>113</i>
Profit/Loss	Rs/Kg	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>89</i>	<i>67</i>	<i>47</i>
CBS					
Cost of Sales	Rs/Kg	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>105</i>	<i>115</i>	<i>122</i>
Selling Price	Rs/Kg	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>106</i>	<i>111</i>	<i>116</i>
Profit/Loss	Rs/Kg	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>110</i>	<i>89</i>	<i>86</i>
PVI					
Cost of Sales	Rs/Kg	***	***	***	***

<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>100</i>	<i>108</i>	<i>119</i>
Selling Price	Rs/Kg	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>99</i>	<i>98</i>	<i>98</i>
Profit/Loss	Rs/Kg	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>95</i>	<i>13</i>	<i>(76)</i>
PX-13					
Cost of Sales	Rs/Kg	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>102</i>	<i>109</i>	<i>118</i>
Selling Price	Rs/Kg	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>99</i>	<i>96</i>	<i>95</i>
Profit/Loss	Rs/Kg	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>76</i>	<i>(33)</i>	<i>(137)</i>
TDQ					
Cost of Sales	Rs/Kg	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>110</i>	<i>123</i>	<i>133</i>
Selling Price	Rs/Kg	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>106</i>	<i>114</i>	<i>119</i>
Profit/Loss	Rs/Kg	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>87</i>	<i>55</i>	<i>38</i>
TMT					
Cost of Sales	Rs/Kg	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>116</i>	<i>139</i>	<i>150</i>
Selling Price	Rs/Kg	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>103</i>	<i>108</i>	<i>113</i>
Profit/Loss	Rs/Kg	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>75</i>	<i>43</i>	<i>35</i>

Particular	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI
MBT					
PBT	Rs/Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>103</i>	<i>56</i>	<i>41</i>
PBIT	Rs/Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>103</i>	<i>56</i>	<i>43</i>
Cash Profit - PBDT	Rs/Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>103</i>	<i>56</i>	<i>41</i>
ROCE	%	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>80</i>	<i>53</i>	<i>38</i>
CBS					
PBT	Rs/Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>124</i>	<i>105</i>	<i>110</i>
PBIT	Rs/Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>124</i>	<i>106</i>	<i>114</i>
Cash Profit - PBDT	Rs/Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>124</i>	<i>106</i>	<i>110</i>
ROCE	%	***	***	***	***

<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>123</i>	<i>83</i>	<i>96</i>
PVI					
PBT	Rs/Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>91</i>	<i>13</i>	<i>(92)</i>
PBIT	Rs/Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>91</i>	<i>13</i>	<i>(86)</i>
Cash Profit - PBDT	Rs/Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>92</i>	<i>21</i>	<i>(70)</i>
ROCE	%	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>113</i>	<i>14</i>	<i>(82)</i>
PX-13					
PBT	Rs/Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>78</i>	<i>(36)</i>	<i>(162)</i>
PBIT	Rs/Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>78</i>	<i>(35)</i>	<i>(156)</i>
Cash Profit - PBDT	Rs/Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>83</i>	<i>(9)</i>	<i>(116)</i>
ROCE	%	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>68</i>	<i>(29)</i>	<i>(133)</i>
TDQ					
PBT	Rs/Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>97</i>	<i>65</i>	<i>49</i>
PBIT	Rs/Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>97</i>	<i>65</i>	<i>54</i>
Cash Profit - PBDT	Rs/Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>98</i>	<i>69</i>	<i>56</i>
ROCE	%	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>86</i>	<i>53</i>	<i>41</i>
TMT					
PBT	Rs/Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>72</i>	<i>43</i>	<i>34</i>
PBIT	Rs/Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>72</i>	<i>43</i>	<i>36</i>
Cash Profit – PBDT	Rs/Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>72</i>	<i>43</i>	<i>34</i>
ROCE	%	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>81</i>	<i>40</i>	<i>37</i>

83. From the above table, the Authority concludes that:

- TMT: The profitability of the domestic industry declined throughout the injury period. The PBIT and cash profits of the domestic industry declined throughout the injury period. Return on investments showed the same trend as that of cash profits.
- TDQ: The profitability of the domestic industry declined throughout the injury period. The PBIT and cash profits of the domestic industry declined throughout the injury period. Return on investments showed the same trend as that of cash profits.

- c. PX-13: The profitability of the domestic industry declined throughout the injury period. The domestic industry is suffering losses in the year 2011-12 and POI. The PBIT and cash profits of the domestic industry declined throughout the injury period. The domestic industry has suffered cash losses and negative PBIT during 2011-12 and period of investigation. Return on investments showed the same trend as that of cash profits.
- d. PVI: The profitability of the domestic industry declined throughout the injury period. The domestic industry is suffering losses during POI. The PBIT and cash profits of the domestic industry declined throughout the injury period. The domestic industry has suffered cash losses and negative PBIT during period of investigation. Return on investments increased in 2010-11 and thereafter declined to negative levels during period of investigation.
- e. CBS: The profitability of the domestic industry increased in 2010-11 but thereafter declined in 2011-12 and further in POI. PBIT and Cash profits have increased over the period. Return on investment increased in 2010-11 but thereafter declined.
- f. MBT: The profitability of the domestic industry declined throughout the injury period. PBIT, cash profits and return on investment increased in 2010-11 but thereafter declined in 2011-12 and further in period of investigation.

Employment, productivity and wages

84. The number of employees employed by the domestic industry, its productivity and wages paid shows as follows:

Particular	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI
Productivity per day					
MBT	MT	***	***	***	***
CBS	MT	***	***	***	***
PVI	MT	***	***	***	***
PX-13	MT	***	***	***	***
TDQ	MT	***	***	***	***
TMT	MT	***	***	***	***
Productivity per employee					
MBT	MT	***	***	***	***
CBS	MT	***	***	***	***
PVI	MT	***	***	***	***
PX-13	MT	***	***	***	***
TDQ	MT	***	***	***	***
TMT	MT	***	***	***	***
Particular	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI
MBT					
Employees	Nos.	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>100</i>	<i>100</i>	<i>100</i>
Wages	Rs/Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>111</i>	<i>122</i>	<i>133</i>
CBS					
Employees	Nos.	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>100</i>	<i>100</i>	<i>100</i>
Wages	Rs/Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>118</i>	<i>127</i>	<i>124</i>
PVI					

Employees	Nos.	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>94</i>	<i>94</i>	<i>88</i>
Wages	Rs/Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>107</i>	<i>122</i>	<i>118</i>
PX-13					
Employees	Nos.	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>100</i>	<i>100</i>	<i>89</i>
Wages	Rs/Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>105</i>	<i>100</i>	<i>123</i>
TDQ					
Employees	Nos.	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>100</i>	<i>83</i>	<i>75</i>
Wages	Rs/Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>98</i>	<i>102</i>	<i>98</i>
TMT					
Employees	Nos.	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>100</i>	<i>100</i>	<i>100</i>
Wages	Rs/Lacs	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>111</i>	<i>122</i>	<i>133</i>

85. From the data on production per day, the Authority concludes that the productivity of TDQ and CBS has increased. However, productivity of PX-13 and PVI declined during POI as compared to base year. This fall in production during POI, is due to decline in production. The productivity per employee in respect of TMT and MBT has remained at the same level.

86. The Authority concludes that the employment level does not show significant change. Wages paid have shown a normal growth except for TDQ.

Inventories

87. Inventory position of the domestic industry in the form of closing stock is given in the table below:

Particular	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI
MBT					
Opening Stock	MT	***	***	***	***
Closing Stock	MT	***	***	***	***
Average Stock	MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>121</i>	<i>190</i>	<i>215</i>
CBS					
Opening Stock	MT	***	***	***	***
Closing Stock	MT	***	***	***	***
Average Stock	MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>93</i>	<i>149</i>	<i>156</i>
PVI					
Opening Stock	MT	***	***	***	***
Closing Stock	MT	***	***	***	***
Average Stock	MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>83</i>	<i>79</i>	<i>129</i>
PX-13					
Opening Stock	MT	***	***	***	***

Closing Stock	MT	***	***	***	***
Average Stock	MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>156</i>	<i>167</i>	<i>123</i>
TDQ					
Opening Stock	MT	***	***	***	***
Closing Stock	MT	***	***	***	***
Average Stock	MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>110</i>	<i>133</i>	<i>146</i>
TMT					
Opening Stock	MT	***	***	***	***
Closing Stock	MT	***	***	***	***
Average Stock	MT	***	***	***	***
<i>Trend</i>	<i>Indexed</i>	<i>100</i>	<i>82</i>	<i>70</i>	<i>117</i>

88. The Authority notes as follows from the table above:

- TMT: Inventory levels of the domestic industry have declined till 2011-12 but thereafter increased in the period of investigation.
- TDQ: Inventory levels of the domestic industry have increased throughout the period.
- PX-13: Inventory levels increased till 2011-12 and declined during period of investigation.
- PVI: Inventory levels declined till 2011-12 but increased during period of investigation.
- CBS: Inventory levels of the domestic industry have declined in 2010-11 but thereafter increased in 2011-12 and further in period of investigation.
- MBT: Inventory levels of the domestic industry have increased throughout the injury period with a significant increase during period of investigation.

Factors affecting domestic prices

89. Consideration of the import prices from the subject countries and other countries, change in the cost structure, competition in the domestic market, factors other than dumped imports that might be affecting the prices of the domestic industry in the domestic market shows that the landed value of imported material of each of the subject rubber chemicals from the subject countries, are below the respective non injurious price determined for the domestic industry, causing price underselling in the Indian Market. Imports from other countries are either de minimis or at much higher prices or are attracting anti-dumping duties. There is no viable substitute to this product. Demand for the product was growing and could not have been a factor responsible for price suppression or depression faced by the domestic industry in each of the rubber chemicals. It is, thus, evident that the subject imports are responsible for the domestic industry's fragile state. The Authority also notes that the landed price of imports after addition of anti-dumping duty and safeguard duty were lower than the selling price of the domestic industry, which clearly establishes that the dumped imports prevented the domestic industry from raising its prices.

Magnitude of Dumping Margin

90. The Authority notes that dumping margins for each of the rubber chemicals from the subject countries are more than the *de-minimis* limits and significant despite the existence of anti-dumping duties currently in force.

Ability to raise capital

91. The Authority notes that while continued dumping of the subject goods in the country has not yet impacted the ability of the domestic industry to raise capital, continued losses due to dumping may affect its ability to raise capital in the future.

Growth

92. The growth of the domestic industry in terms of sales, production, and capacity utilization was positive whereas growth in respect of profits, return on investment, cash profits and inventories was negative. This situation is in existence in spite of anti-dumping duty being in force.

Particular	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI
MBT					
Production volume	%	-	***	***	***
Sales volume	%	-	***	***	***
Cost of Sales	%	-	***	***	***
Selling Price	%	-	***	***	***
Profit/Loss	%	-	***	***	***
ROCE	%	-	***	***	***
CBS					
Production volume	%	-	***	***	***
Sales volume	%	-	***	***	***
Cost of Sales	%	-	***	***	***
Selling Price	%	-	***	***	***
Profit/Loss	%	-	***	***	***
ROCE	%	-	***	***	***
PVI					
Production volume	%	-	***	***	***
Sales volume	%	-	***	***	***
Cost of Sales	%	-	***	***	***
Selling Price	%	-	***	***	***
Profit/Loss	%	-	***	***	***
ROCE	%	-	***	***	***
PX-13					
Production volume	%	-	***	***	***
Sales volume	%	-	***	***	***
Cost of Sales	%	-	***	***	***
Selling Price	%	-	***	***	***
Profit/Loss	%	-	***	***	***
ROCE	%	-	***	***	***
TDQ					
Production volume	%	-	***	***	***
Sales volume	%	-	***	***	***
Cost of Sales	%	-	***	***	***
Selling Price	%	-	***	***	***
Profit/Loss	%	-	***	***	***
ROCE	%	-	***	***	***
TMT					
Production volume	%	-	***	***	***
Sales volume	%	-	***	***	***
Cost of Sales	%	-	***	***	***
Selling Price	%	-	***	***	***

Profit/Loss	%	-	***	***	***
ROCE	%	-	***	***	***

Conclusion on injury

93. On the injury front, the Authority holds as under:

- i. **PX-13** – Imports of PX13 during POI increased in absolute terms despite existing anti dumping duty and safeguard duty. Imports remained significant in relation to total imports, production and consumption in India despite existing anti dumping duty and safeguard duty. With regard to price effect, it is noted that imports were significantly undercutting the prices of the domestic industry in the market and selling price of the domestic industry declined during investigation period, despite increase in cost of production. The imports were undercutting the domestic prices even after adding customs duty, anti dumping duty and safeguard duty (PX-13) which has resulted in price suppression. Performance of the domestic industry deteriorated over the injury period in terms of production, capacity utilization, selling price, profits, PBIT, cash profit and return on investments. Domestic sales have increased and inventories have declined during POI. Imports were depressing domestic prices. The authority notes that the domestic industry has suffered continued injury due to continued dumped imports of PX-13 from subject countries.
- ii. **PVI** – Imports of PVI increased in absolute terms. Imports increased in relation to production and consumption in India. With regard to price effect, it is found that imports were significantly undercutting the prices of the domestic industry in the market and selling price of the domestic industry declined over the injury period. As regards consequent impact of dumped imports on the domestic industry, it is noted that performance of the domestic industry deteriorated in terms of production, capacity utilization, inventories, selling price, profits, cash profit and return on investments. Imports were depressing the domestic prices throughout the injury period. The authority notes that the domestic industry has suffered continued injury due to dumped imports of PVI from China.
- ii. **TDQ** – Imports of TDQ declined over the period. With regard to price effect, imports were significantly undercutting the prices of the domestic industry in the market. Resultantly, profits, cash profits and return on investment declined in the investigation period. Performance of the domestic industry improved in terms of production, capacity utilization and domestic sales. However, the performance in respect of profitability, cash profits and return on investments declined in the investigation period with dumping from China. Inventories with the domestic industry increased throughout the period. The imports are significantly suppressing the prices of the domestic industry. The authority notes that the domestic industry has suffered continued injury due to dumped imports of TDQ from China.
- iii. **TMT** – Imports of TMT declined during the period. With regard to price effect, imports were significantly undercutting the price of the domestic industry in the market. As regards consequent impact of dumped imports on the domestic industry, performance of the domestic industry improved in terms of production, capacity utilization, whereas profitability, cash profits and return on investments declined. The domestic industry was forced not to increase prices in proportion to increased in cost. The authority notes that the domestic industry has suffered continued injury due to dumped imports of TMT from China.
- iv. **CBS** – Imports of CBS increased significantly in absolute terms and in relation to production/consumption in India. With regard to price effect, imports were significantly undercutting the price of the domestic industry in the market, and the domestic industry was unable to increase its prices in proportion to increase in cost. As regards consequent impact of dumped imports on the domestic industry, it is noted that the performance of the domestic

industry improved in terms of production, sales volume and capacity utilization. However, the profitability, PBIT, cash profit and return on investment declined during the POI. The inventories with the domestic industry also increased over the period. The authority notes that the domestic industry has suffered continued injury due to dumped imports of CBS from China.

- v. **MBT** – Imports of MBT have declined. With regard to price effect, imports were significantly undercutting the price of the domestic industry in the market. Domestic industry was unable to increase selling price in proportion to increase in cost. The imports were thus suppressing of the domestic industry in the market. As regards consequent impact of dumped imports on the domestic industry, production, sales, capacity utilization, profitability, cash profits and return on investment declined during POI. The level of inventories increased throughout the period. The authority notes that the domestic industry has suffered continued injury due to dumped imports of MBT from China

94. On the basis of above analysis, the Authority holds that the performance of the domestic industry collectively and cumulatively shows that the domestic industry has suffered material injury.

LIKELIHOOD OF CONTINUATION OR RECURRENCE OF DUMPING & INJURY

Views of the Domestic Industry

95. There is high likelihood of continuation and intensification of dumping in the event of revocation of duties for the following reasons:
 - i. Dumping margins determined in all previous investigations were significant.
 - ii. China has high capacity and output for rubber chemicals and holds a leading position worldwide.
 - iii. The volume of imports in case of each of rubber chemical from subject countries has remained significant despite imposition of anti dumping duty and is showing an increasing trend.
 - iv. Producers in subject countries maintain huge capacities to produce subject goods in excess of domestic demand.
 - v. Imports from subject countries are likely to undercut the prices of the Domestic Industry in the event of revocation of anti-dumping duty and price undercutting is likely to further increase.
 - vi. With worldwide rubber/tyre industry shifting to China, there has been an increasing trend among foreign chemicals manufacturers to set up factories in China as they attach more and more importance to the Chinese market.
 - vii. Solutia Inc. (“Solutia”), Jiangsu Sinorgchem Technology Co., Ltd. (“Sinorgchem”), and Korea Kumho Petrochemical Co., Ltd. (“KPC”) announced that they have reached a global settlement to resolve all disputes among them involving Solutia’s patents for processes to produce 4-ADPA. Under the terms of the settlement, Solutia grants Sinorgchem and KPC licenses to manufacture 4-ADPA under Solutia’s patents, which do not expire until 2019. As licensees, Sinorgchem and KPC are also granted certain rights to enforce those patents.
 - viii. The Indian market for the product under consideration is highly price sensitive. The consumers decide their source with the price being the foremost consideration.
 - ix. The market share of Chinese imports is quite significant in spite of the existing anti-dumping duties.
 - x. Capacities in subject countries, domestic demand and their current exports show that the producers in subject countries are having significant export orientation.

Views of the opposing interested parties

96. The opposing interested parties made the following submissions with regard to the likelihood analysis:

- (i). The claim of the applicant that anti-dumping duty must be extended due to the fact that there existed excess capacities in Korea RP is refuted. It is submitted that the correct capacities may be verified from the questionnaire response. Additionally, it is also to be proved that any such excess capacity would be used to produce the product under consideration which would then be exported to India. Furthermore, the existence of excess capacities is not sufficient for the extension of anti-dumping duties. In this regard, the ruling of the Hon'ble CESTAT in *Indian Spinners Association v. Designated Authority* 2004 (170) E.L.T. 144 (Tri. - Del.) and the finding of the DGAD in the sunset review investigation on *Aniline from USA and Japan*, Final Findings No. 15/19/2010-DGAD dated 17th January 2012 is relied upon.
- (ii). It is submitted that since the sunset review is a futuristic examination, the relevant costs undergone by the applicant at the new plant at Dahej are required to be verified and computed accordingly. Without such an exercise, any computation of NIP will be inaccurate. It is submitted that the Authority must undertake a verification of the new manufacturing plant at Dahej and accordingly clarify (a) at which plant the verification was conducted; (b) whether NIP was determined taking into account cost of production at new plant, old plant or both; and (c) whether at the new plant the applicant was able to achieve any reduction in costs or not. Additionally, it is submitted that if the Authority decides to adopt the costs undergone at the old plant, then no element of costs at the new plant should be included for the purposes of calculating NIP.

Examination by the Authority

97. The domestic industry in its submissions claimed that the requirement under a sunset review is to examine whether revocation of anti-dumping duty is likely to lead to continuance or recurrence of injury to the domestic industry and, therefore, any examination based on the factors listed for a threat analysis would be flawed. Therefore, all such factors brought to the notice of the Authority have been examined to find if there is a likelihood of continuation of injury in the event of withdrawal of the duty. The Authority has determined that the subject goods are continuing to enter the Indian market at dumped prices or are likely to be exported at dumped prices from the subject countries in the event of withdrawal of anti-dumping duties. It is pertinent to examine whether injury to the domestic industry is likely to continue or recur due to these dumped imports if the duty is removed.
98. In addition to the examination of continued injury, likelihood of continuation or recurrence of injury to the domestic industry has also been examined by the Authority on the basis of information and evidence as submitted by various interested parties during the course of the investigations. The Authority examined the likelihood of continuation or recurrence considering the parameters relating to the threat of material injury in terms of Annexure II (vii) of the Rules which states as under:

“A determination of a threat of material injury shall be based on facts and not merely on allegation, conjecture or remote possibility. The change in circumstances, which would create a situation in which the dumping would cause injury, must be clearly foreseen and imminent. In making a determination regarding the existence of a threat of material injury, the Designated Authority shall consider, inter alia, such factors and;

 - (i) a significant rate of increase of dumped imports into India indicating the likelihood of substantially increased importation.*
 - (ii) Sufficient freely disposable or an imminent, substantial increase in capacity of the exporter indicating the likelihood of substantially increased dumped exports to Indian market, taking into account the availability of other export markets to absorb any additional exports.*
 - (iii) Whether imports are entering at prices that will have a significant depressing or suppressing effect on domestic prices, and would likely increase demand for further imports and,*
 - (iv) Inventories of the article being investigated”*
99. The domestic industry has provided information regarding excessive production capacity held by producers in the subject countries, vulnerability of the Domestic Industry, price attractiveness of Indian market, price

undercutting in the absence of measures and the setting up of factories in China by foreign manufacturers in order to establish the likelihood of continuation of injury to the domestic industry.

100. In this regard, the following facts/data/trends have been noted by the Authority.

Excessive production capacity in the subject countries

101. Based on the analysis of actual capacity, consumption of the subject goods in the domestic market, the subject countries have surplus disposable capacities for production of the subject goods. Therefore, the Authority holds that in the event of withdrawal of the anti-dumping duties there is likely hood of the surplus disposable capacities being utilized by the companies to enhance the exports of the subject goods to India at dumped prices. Status of capacity, demand, of the subject countries are given below.

Country	Product	Capacity (MT/A)	Domestic Demand (MT/A)	Surplus (MT/A)
Korea	PX-13	70000	8000	62000
China	PX-13	195000+	90000	115000+
China	TDQ	78400+	60000	18400+
China	PVI	44000+	10000	34000+
China	MBT	79000+	10000	69000+
China	TMT	32240+	15000	17240+
China	CBS	54600+	25000	29000+

102. The Authority notes that the questionnaire response filed by KPC and Jiangsu Sinorgchem in the POI for PX-13 (6PPD) shows as follows: –

	KPC	Jiangsu Sinorgchem
Capacity (MT)	***	***
Production (MT)	***	***
Utilised capacity (%)	***	***

Continued dumping and continued injury to the domestic industry

103. With regard to likelihood of continuation of dumping of PX-13 from Korea RP, the Authority has relied upon the evidence available on record with regard to the price at which subject goods have been exported from Korea to a number of other countries during the POI. It is noted that subject goods have been exported from Korea RP to other countries during the POI and a statement of exports downloaded from Korea Customs Data indicates that they have exported 33,138 MT of PX-13 at a total value of US\$ 105 million at an average CIF price of US\$ 3.04 per Kg. Likelihood of dumping considering the price at which goods have been exported to third countries, individually and collectively, during the POI has been determined. It is noted that the producers in Korea have exported the subject goods to third countries at significantly lower prices than normal value of Korea determined for the POI. The dumping margin based on the export price of PX-13 to other countries during the POI is significant as can be seen below:

Particulars	Unit	
Value	US\$/million	105
Weight	MT	33,138
FOB Price	US\$/Kg	3.16
Ex-factory Price	US\$/Kg	2.96
CIF Price	US\$/Kg	3.04
Landed Price	US\$/Kg	3.27

Normal Value	US\$/Kg	***
Dumping Margin	US\$/Kg	***

104. The Authority notes that the products under consideration have been exported at significantly dumped prices. The volume of subject imports of each of the products under consideration were significant in absolute terms and in relation to production and consumption in India as can be seen from the table below. Further, the domestic industry has suffered material injury in the current period. Therefore, the Authority notes that continued dumping and continued injury, coupled with the current volumes involved itself establishes the likelihood of dumping and injury to the domestic industry in the absence of anti-dumping duty. In fact, the injury to the domestic industry would intensify in the event of cessation of anti-dumping duty.

Particulars	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI
MBT					
Import volumes	MT	865	797	768	550
Share of imports in relation to					
Ø Total imports	%	99.51	97.74	91.70	67.48
Ø Production	%	***	***	***	***
Ø Consumption	%	59.63	54.00	55.46	40.07
CBS					
Import volumes	MT	929	604	1,023	1,135
Share of imports in relation to					
Ø Total imports	%	72.26	46.15	49.74	57.69
Ø Production	%	***	***	***	***
Ø Consumption	%	29.28	17.19	23.66	26.62
PVI					
Import volumes	MT	707	830	985	1,192
Share of imports in relation to					
Ø Total imports	%	38.60	42.15	29.28	46.40
Ø Production	%	***	***	***	***
Ø Consumption	%	41.15	49.01	62.78	62.50
PX-13					
Import volumes	MT	7,860	7,511	7,868	8,294
Share of imports in relation to					
Ø Total imports	%	79.97	76.94	80.82	74.78
Ø Production	%	***	***	***	***
Ø Consumption	%	54.92	50.58	49.17	46.00
TDQ					
Import volumes	MT	1,063	1,217	887	781
Share of imports in relation to					
Ø Total imports	%	45.84	54.04	98.72	71.15
Ø Production	%	***	***	***	***
Ø Consumption	%	16.16	15.27	10.91	9.86
TMT					
Import volumes	MT	572	352	324	244

Share of imports in relation to					
Ø Total imports	%	72.21	70.95	56.61	44.95
Ø Production	%	***	***	***	***
Ø Consumption	%	31.02	22.11	18.55	14.54

105. As regards the decision of the Hon'ble CESTAT in *Indian Spinners Association vs. Designated Authority* 2004 (170) E.L.T. 144 (Tri. - Del.), the Authority notes that the CESTAT found that dumping was going on and the dumped prices were not causing material injury to the domestic industry in that case and, therefore, existence of surplus production capacity could not be taken as posing a clearly foreseen and imminent threat of injury. In the instant case, however, the domestic industry is suffering injury. Price undercutting without prevailing anti dumping duty and safeguard duty is quite significant. The domestic industry would, therefore, suffer aggravated injury, should the present anti-dumping duty be revoked.
106. As regards consideration of future cost of production of the domestic industry, the Authority notes that injury margin is required to be determined considering the cost of production during the investigation period. Possible increase or reduction in cost of production in future cannot be considered for determining injury margin and quantum of anti-dumping duty that should be recommended. It is clarified in this regard that the commercial production of intermediate 4-ADPA in Dahej commenced only after the investigation period and in the month of March, 2012. Therefore, during the investigation period, the petitioner produced the product under consideration (including intermediate) at Thane plant only. The authority has done verification of expenses incurred at Thane plant. Since the petitioner has not commercially produced from the new process during the investigation period, the Authority has determined NIP considering the process followed by the domestic industry. As regards cost reduction at the new plant, since the petitioner has not commercially produced 4-ADPA at the new plant, possible cost reduction in the new plant were not examined by the authority. The authority also notes that the Rules provide for periodic review of anti dumping duty and in case an interested party establishes changed circumstances, the authority carries out period review of anti dumping duty in force. It is also clarified that no element of costs at the new plant have been included for the purposes of calculating NIP.

Price undercutting in the absence of measures

107. The Authority notes that the prices at which the each of the subject goods were entering the country from the subject countries during the period of investigation are materially lower than the respective net sales realization of the domestic industry, making the Indian market an attractive destination for exporters.
108. In the instant matter, each of the subject goods has been imported from the subject countries during the period of investigation in significant volumes. It is noted that these goods have been exported at dumped prices and are significantly undercutting the prices of the domestic industry. In case the anti-dumping duties are allowed to expire, the volume of the subject goods at dumped prices is likely to increase. This view is further buttressed, considering the unutilized capacities to produce the subject goods in subject countries as provided by domestic industry.

Conclusion on Likelihood of Continuation of Dumping and Injury

109. The Authority determines that considering the information available to the Authority, there is a likelihood of continuation of dumping and consequent injury in the event of revocation of the existing anti-dumping duties, considering in particular the current financial position of the domestic industry, significant price undercutting, significant unutilised production capacities in China PR and Korea RP and the financial position of the domestic industry in the event of revocation of duty.

Causal Link

110. It is noted that the above facts establish that injury to the domestic industry has been caused by the dumped imports. Annexure 2 to the Rules provides as follows with regard to Causal Link:

“It must be demonstrated that the dumped imports are, through the effects of dumping, as set forth in paragraphs (ii) and (iv) above, causing injury to the domestic industry. The demonstration of a causal relationship between the dumped imports and the injury to the domestic industry shall be based on an examination of relevant evidence before the Designated Authority. The Designated Authority shall also examine any known factors other than the

dumped imports which at the same time are injuring the domestic industry, and the injury caused by these other factors must not be attributed to the dumped imports. Factors which may be relevant in this respect include, inter-alia, the volume and prices of imports not sold at dumping prices, contraction in demand or changes in the patterns of consumption, trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers, developments in technology and the export performance and the productivity of the domestic industry.”

Examination of Other Known Factors

Volume and value of imports not sold at dumping prices:

111. Statement of imports from various countries shows that the imports of products under consideration from other countries are entering at below de minimis levels or at higher prices than subject country imports during the POI or are attracting anti-dumping duty. It cannot, therefore, be said that the imports from other countries have also caused injury to the domestic industry.

Contraction in demand:

112. There is no contraction in demand for any of the rubber chemicals in the POI when compared with the base year, except for TMT and MBT. It is noted that decline in demand has not caused the injury to the domestic industry.

Changes in the patterns of consumption:

113. The pattern of consumption with regard to the product under consideration has not undergone any change. Change in the pattern of consumption has not contributed to the injury to the domestic industry.

Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers:

114. There is no trade restrictive practice which could have contributed to the injury to the domestic industry.

Developments in technology:

115. Technology for production of the product has not undergone any change nor are there any likely changes in the coming future. Developments in technology are, therefore, not a factor of injury.

Export performance:

116. The Authority notes that the domestic industry has exported the product under consideration. However, the injury to the domestic industry is on account of domestic operations. The Authority has examined costing and injury information for domestic sales separately. Hence, injury to the domestic industry cannot be attributed to exports.

Performance of other products produced and sold by the domestic industry:

117. The Authority notes that the injury parameters examined pertain to the productS under consideration and the injury observed was not caused by the performance of other products produced and sold by the domestic industry.

Causal Link analysis

118. The causal link analysis is as under :

- i. **PX-13** - Imports of PX-13 were significantly undercutting the prices of the domestic industry in the market. As a direct consequence, while volume of imports increased on one hand, selling prices of the domestic industry declined on the other hand. Consequently, domestic sales, profit/loss, cash profits, return on investment declined significantly in the investigation period and inventories with the domestic industry increased.
- ii. **PVI** - Imports of PVI were significantly undercutting the prices of the domestic industry in the market. As a direct consequence, while volume of imports increased on one hand, selling prices of the domestic industry declined on the other hand. Consequently, performance of the domestic industry with regard to production, capacity utilization, inventories, profit/loss, cash profits and return on investment deteriorated over injury period. Significant price undercutting throughout the period has resulted in significant price depression in the market.

iii. TDQ - Imports of TDQ were significantly undercutting the prices of the domestic industry in the market. Consequently, performance of the domestic industry deteriorated in terms of profit/loss, cash profits and return on investment deteriorated during investigation period and inventories with the domestic industry increased. Significant price undercutting throughout the period has resulted in significant deterioration in profits, return on investment and cash profits.

iv. TMT - Imports of TMT were significantly undercutting the prices of the domestic industry in the market. Consequently, performance of the domestic industry with regard to inventories, profit/loss, cash profits, return on investment deteriorated over injury period.

v. MBT - Imports of MBT were significantly undercutting the prices of the domestic industry in the market. Consequently, performance of the domestic industry with regard to production, capacity utilization, inventories, profit/loss, cash profits and return on investment deteriorated. As a result of significant price undercutting, profits, cash profits and return on investments continued to decline in POI.

vi. CBS - Imports of CBS were significantly undercutting the prices of the domestic industry in the market. As a direct consequence, while volume of imports increased on one hand, selling prices of the domestic industry could not be increased in proportion to increase in cost. Consequently, performance of the domestic industry declined significantly in the investigation period with regard to profit/loss, inventories etc.

Indian Industry's Interest

119. The purpose of anti-dumping duties in general is to eliminate dumping which is causing injury to the domestic industry and to reestablish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. The Authority recognizes that the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the products manufactured by using the subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition on the Indian market will not be reduced by the anti-dumping measures. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of subject goods. The Authority notes that the imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from subject countries in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers. The consumers could still maintain two or even more sources of supply.

Magnitude of injury and injury margin

120. The Authority has determined the non-injurious price for the domestic industry on the basis of principles laid down in the Rules. This non-injurious price of the domestic industry has been compared with the landed values of the subject imports from subject countries to determine injury margin. The injury margins have, thus, been worked out as follows:

Injury Margin in case of cooperating exporter

Product	Name of producer	Exporter	NIP (Rs/kg)	Landed value (Rs./Kg)	Injury Margin	Injury Margin %	Injury Margin Range %
PX-13	M/s Shandong Sinorgchem Technology Co. Ltd, China PR	M/s Jiangsu Sinorgchem Technology Co. Ltd, China PR	***	***	***	***	55-65
	M/s Sinorgchem Co, Tai'an China PR	M/s Jiangsu Sinorgchem Technology Co. Ltd, China PR	***	***	***	***	55-65
	Kumho Petrochemicals Company Ltd, Korea RP	Kumho Petrochemicals Company Ltd	***	***	***	***	60-70
	Kumho Petrochemicals	Daewoo	***	***	***	***	60-70

	Company Ltd, Korea RP	International Corporation, Korea RP					
	Non cooperating exporters from Korea RP		***	***	***	***	80-90

Injury Margin in case of non-cooperating exporter

Particular	Unit	PX-13	TDQ	PVI	TMT	MBT	CBS
		China PR	China PR	China PR	China PR	China PR	China PR
Non-Injurious Price (NIP)	Rs./KG	***	***	***	***	***	***
Landed Value of imports	Rs./KG	***	***	***	***	***	***
Injury Margin	Rs./KG	***	***	***	***	***	***
Injury Margin	%	***	***	***	***	***	***
Injury margin (Range)	%	70-80	20-30	30-40	30-40	25-35	20-30

Conclusion

121. Having regard to contentions raised, information provided and submissions made by interested parties and facts available before the Authority as recorded in the paragraphs above and on the basis of above analysis of the state of continuation of dumping and consequent injury to domestic industry and likelihood of continuation of dumping and injury, the Authority concludes that:

- (i) The subject goods from the subject countries are entering the Indian market at dumped prices and dumping margin is significant. It is also seen that the subject goods continue to be exported to India at dumped prices despite the existing anti-dumping duties and there is a likelihood of its continuation should the existing anti-dumping duties be allowed to expire.
- (ii) Without the anti-dumping duties, the price undercutting and price underselling are significant from the subject countries. The Domestic Industry continues to suffer material injury on account of continued dumping of subject goods from the subject countries during the period of investigation and there is likelihood of deterioration in the operating performance of domestic industry in the event of cessation of anti-dumping duties.

J. POST DISCLOSURE STATEMENT SUBMISSIONS BY THE INTERESTED PARTIES

122. The Authority noted that the comments on the Disclosure Statement offered by the interested parties are merely repetitive. In brief, the interested parties have submitted the comments on the Disclosure Statement as under:

J1. Post Disclosure Statement submissions by the opposing Interested Parties

123. Following are in brief the post Disclosure Statement submissions made by the opposing Interested Parties:

- i) The applicant does not have the requisite standing to represent the Domestic Industry in India.
- ii) The initiation in the present case was bad in law. The anti-dumping duty on the subject goods expired on May 4, 2013 according to the sunset clause in Notification No. 92/2011–Cus dated 20th September, 2011. It was only on 5th July, 2013 that the duty was extended vide Notification No.17/2013-Customs (ADD). Therefore, because the duty had expired before the extension, the present review was infructuous inasmuch as there was no anti-dumping duty in existence to review.
- iii. The Respondent submits that firstly, as a matter of law, the Authority cannot discard the actual data on cost of 4-ADPA incurred by the Respondent in the present case. Secondly, the

Authority has offered no legitimate factual basis to reject the data on cost of 4-ADPA. In this case, it is not an issue that the Respondent's records are not in accordance with Korea GAAP. Therefore, our submission focuses on the legal error committed by the Authority in concluding that the Respondent's records do not reasonably reflect the cost associated with production and sale of the article under consideration. In particular, the Respondent submits that the Authority has committed the following legal errors in computing the Normal Value for the Respondent exporter.

- a. The Authority has rejected the Respondent exporter's procurement price of 4-ADPA without any legal basis.
 - b. The Authority has erroneously used the price of procurement of 4-ADPA by Lanxess India from Lanxess Germany.
- iv. Comparing the import price of 4-ADPA into India from Germany will not present an accurate picture and result in an incorrect analysis. This is because costs such as freight will differ considerably when considering the price from Germany to India as opposed to the correct price. Import price is subject to various adjustments and additions such as freight charges, insurance, bank charges etc. All such adjustments vary with distance between the respective ports. The price adopted will not present the true and correct picture and should not be adopted.
 - v. There is no likelihood or recurrence of dumping and injury. The Respondent reiterates the following contentions regarding injury factors and the causal link in earlier submissions:
 - a. If we were to analyse the import data of PX-13 from Korea, it can be inferred that imports from Korea RP have shown a consistent decline over the years, which has been accompanied by a consistent increase in the import of PX-13 (6PPD) from China PR. The volume of imports from Korea declined from 6030 MT in 2009-10 to 4504 MT in 2011-12.
 - b. There is no injury to the applicant on account of sales, which has undergone an increasing trend throughout the injury period as well as the POI, with an increase from 100 indexed points in 2009-10 to 118 indexed points in the POI. The inter-se competition could have been a cause of injury. The performance of the domestic industry has improved in respect of some parameters. The domestic industry is an incapable and inefficient producer.
 - vi. The exchange rate adopted by the Authority in the disclosure statement is 53.69. However, the prevailing rate of USD, as per the RBI, is currently 60.71. The Authority arrived at a price undercutting of 20-30% considering the exchange rate of 53.69. However, if the prevailing exchange rate is considered, which would present the most accurate picture, the level of price undercutting would be reduced significantly. The Authority is requested to take this factor into consideration while evaluating the likelihood of recurrence or continuance of dumping and injury.
 - vii. There exists a demand supply gap for the PUC in India and the DI in spite of enjoying duty protection for the last 8 years has not increased production to meet the demand of the user industry in India.
 - viii. All the economic indicators clearly establishes that DI is performing exceedingly well on almost all of the injury parameters and therefore no causal link exists between the claim of injury to the DI on account of import of TDQ and CBS from China PR.
 - ix. As far as PX-13 is concerned, the increase in import of PX-13 from the subject countries in the POI was miniscule and the parameters like production, domestic sales, capacity utilization, import volume, market share, CIF price etc. lead to break-in of the causal link between the claim of injury by the DI and import of PX13 from China PR and Korea RP.

- x. The DI exports significant part of its production and which clearly establishes that the decline in production of the DI is on account of export sales.
- xi. The Authority has observed in the disclosure report that a simultaneous imposition of anti dumping and safeguard duty should not lead to dual protection. However, in order to avoid dual protection, the DI cannot provide same injury figures for all the economic parameters in both the anti dumping and safeguard investigation as the same would not lead to segregation of injury.
- xii. The name of the exporter from Korea RP and product description of PX-13 should be corrected.
- xiii. The data of imports of 4-ADPA into India during POI shows that the imports of 4-ADPA have come from both China PR and Germany. While the Authority has considered the import price of 4-ADPA from Germany for the purpose of ascertaining reasonable cost of 6-PPD produced in India, it has ignored the import price of 4-ADPA from China PR, which is against the ratio of the decision of CESTAT in the case of Suzhou Dawnrays Pharmaceutical Co. Ltd., vs DGAD [2012 (282) ELT 433 (Tribunal – Delhi)].
- xiv. The Authority is requested to adopt the import price of Vulcanox, a brand of 4-ADPA from China PR instead of the import price of 4-ADPA of the same brand imported from Germany in view of the fact that the exporter of 4-ADPA is from China PR. It has been further submitted that the imports of 4-ADPA from Germany are in fact related party transactions and therefore cannot be relied upon for a true and correct picture.
- xv. The co-operating exporter vide their email dated 26.4.2014 informed the Authority that in the meantime, Director General of Safeguards has issued its findings on the imports of PX-13 and therefore, the Authority needs to examine some of its analysis made in the disclosure statement already issued by it.
- xvi. Post-disclosure of essential facts, the Korean Government has stated the following:
 - (a) It is inappropriate to reject the purchase price of the raw material by KPC on the ground that the said material has been procured from a NME country.
 - (b) The calculation of dumping margin for KPC made by the Indian Authority is not line with the provisions of Article 2.1 and 2.2 of the Agreement on Antidumping.
 - (c) There is insufficient evidence on the alleged injury to the domestic industry as the domestic sales of the domestic industry increased and its market share remained stable during POI.
 - (d) Imposition of higher duties will have a negative impact on the related industries in India.

J2. Post Disclosure Statement submissions by the Domestic Industry

124. Following are in brief the post Disclosure Statement submissions made by the domestic industry:

- i. There was no demand supply gap in the country with respect to subject rubber chemicals. The Indian industry was capable of meeting entire demand of the country. Imports have not been made for this reason. As regards CBS, the Indian industry could have catered to 80% of total demand in India, whereas the industry catered much lower demand.
- ii. Imports of the Rubber Chemicals viz. MBT, CBS, TDQ, PVI, and TMT from China and PX-13(6PPD) from China and Korea RP have increased since the base year of the original investigation.
- iii. Producers and exporters from the subject countries are continuing to export the product under consideration to India at dumped prices.
- iv. Cost of production of Korea Kumho cannot be determined considering the procurement cost of 4ADPA in view of special relationship between the two parties.
- v. Normal value in the case of Korea is required to be determined on the basis of weighted average of the imported product price and domestic supplier's price. Normal value assessed based solely

on Korea Kumho data would be highly distorted as it does not reasonably reflect cost associated with the product.

- vi. Imports from subject countries are undercutting the prices of the domestic industry in each of the subject rubber chemicals. Resultantly the imports are suppressing or depressing the prices of the domestic industry. The domestic industry is continuing to suffer material injury as a result of continued dumping. The profits, cash profits, PBIT, return on investments of each of the subject rubber chemicals have declined.
- vii. There is clear likelihood of continued dumping and injury on account of significant dumping margins found by this Authority in previous investigations, the situation of the Chinese rubber chemicals industry which has seen increased capacities and new sites, the trend in import volumes from the original period, the freely disposable capacities with the subject countries' producers and their export orientation, the price attractiveness of the Indian market evidenced by price undercutting, the vulnerability of the Indian market in terms of price sensitivity, loss in market share and the demand and supply situation in exporting markets.
- viii. This being a sunset review, what is relevant is the likelihood of continuation of dumping and consequent injury. It is submitted that this is clearly established in these and previous submissions.

J3. Examination by the Authority

125. The Authority notes that the above submissions of the interested parties are repetitive and have already been dealt with elsewhere in this finding. However, some of the major issues raised by them are examined as under:
- i) With regard to the submission of the opposite interested parties that the applicant does not have the requisite standing the Authority notes that the production of each of the subject goods of NOCIL during POI is more than 50% of the production of the domestic producers and therefore the applicant has requisite standing.
 - ii) With regard to the submission of the opposite interested parties that the domestic industry has not filed the application 90 days prior to expiry of the duty, the Authority notes that the applicant has filed a petition for initiation of the Sunset Review in January, 2013 with POI of October, 2011 to September, 2012. Subsequently, on 9th April, 2013, the applicant has filed a revised application with POI as January, 2012 – December, 2012. The Authority, therefore, holds that the applicant has filed the application within the prescribed time limit.
 - iii) The detailed reasons for not adopting the purchase price of 4-ADPA by KPC have been brought out in this present Findings. The Authority further holds that the rules oblige the Authority to ensure that the cost of production adopted reasonably reflects the costs associated with production and sale of the product under consideration. The exporter has not established that the cost of production claimed by him reasonably reflects the costs associated with production and sale of the product. With regard to rejection of procurement price of 4-ADPA from Solutia by KPC, the Authority notes that the reasons for the same have already been explained in the disclosure statement and in this findings as well.
 - iv) The Authority notes the argument of the KPC that expenses associated with import of the product vary with the distance involved. Based on the best information available, the Authority has appropriately adjusted the price for the difference in freight between freight from Germany to India and freight from China to Korea RP. The price of 4-ADPA has, therefore, been reduced by an amount of US\$ 0.06 per Kg.
 - v) With regard to the submission of KPC for consideration of duty drawback refund for determination of export price, the Authority notes that the normal value for PX-13 exported by KPC has been determined on the basis of its associated cost of production plus reasonable profit. The Authority further notes that while computing the cost of 4-ADPA,

the customs duty paid by KPC has not been considered and therefore, the question of considering the refund of customs duty as part of export price does not arise.

- vi) With regard to the argument that performance of the domestic industry has improved in respect of some parameters, the Authority notes that the rules do not provide that the domestic industry should have suffered injury in respect of each and every parameter.
- vii) With regard to the argument that the domestic industry is still earning profits in the domestic sale of some of the rubber chemicals, the Authority notes that the profits of the domestic industry had declined over the period, which clearly shows that the performance of the domestic industry has deteriorated in respect of profits.
- viii) With regard to the argument that the inter-se competition could have been a cause of injury, the Authority notes that no verifiable evidence has been provided to establish that the performance of the domestic industry deteriorated because of inter-se competition.
- ix) With regard to the arguments that the price undercutting is to be worked out based on current exchange rates as compared to the rates prevailing during POI, the Authority has determined the price undercutting as per its consistent practice by considering the exchange rate prevailing during POI.
- x) With regard to the submission that there is huge demand supply gap, the Authority notes that the demand for the product has been determined on the basis of imports from all sources and sales by all domestic producers. Further, the Indian demand is required to be met by all the domestic producers. It would, therefore, not be appropriate to compare Indian demand with the capacities of the domestic industry only.
- xi) With regard to the argument that the injury to the domestic industry is in respect of exports, the Authority notes that it has assessed the injury on account of domestic sales by appropriately excluding the profitability of exports.
- xii) With regard to the argument that there is no evidence that the surplus capacities shall be diverted to Indian market, the Authority notes that the existence of surplus capacities is more relevant in order to determine likelihood of injury. Further, the opposite interested parties have not provided any information to establish that there are no surplus capacities or the surplus capacities shall be used to cater to other markets.
- xiii) With regard to the argument that concurrent imposition of anti-dumping duty and safeguard duty is leading to dual protection, the Authority notes that while imposing safeguard duty earlier, the Government of India had reduced the same by the quantum of anti-dumping duty so that the injury already addressed by the anti-dumping duty is not addressed again by imposition of safeguard duty. It has not been established that the same injury is being remedied twice.
- xiv) With regard to the submission of KPC for adoption of import price of 4-ADPA from China PR in accordance with the ratio of the decision of CESTAT the Authority notes that the facts of the case referred to in the decision of CESTAT are different from the present one. In that case the domestic industry itself was importing the said raw material from China PR at the price comparable with the purchase price of the petitioner producer in China. CESTAT has therefore ruled that the Authority cannot discard such price while constructing normal value. The Authority further notes that in the present investigation the domestic industry has not imported 4-ADPA from China PR.
- xv) Since the price of 4-ADPA at which KPC had procured from China PR is not found to be reasonable, the Authority has considered the price at which such material was imported from Germany. The imports of 4-ADPA by Lanxess India from Lanxess Germany are between related companies situated in two different market economy countries and therefore could be presumed to have taken place at arm's length basis unless any evidence to the contrary has been brought to the notice of the Authority. Further, as per transfer

price rule prevailing in India purchase of goods from related companies outside India are to at arm's length basis.

- xvi) In view of the above, the Authority holds that the methodology adopted by it in determination of the reasonable cost of imports of 4-ADPA made by KPC is appropriate and does not require any revision as requested by KPC.
- xvii) With regard the submissions of the Korean Government, the Authority notes that issue of not considering the purchase price of 4-ADPA of KPC have been dealt with in the heading 'Determination of Normal value for Korea' in this finding. The Authority further notes that as explained elsewhere in the findings that it had made an objective analysis of various economic parameters and came to the conclusion that the dumped imports have caused significant injury to the domestic industry.
- xviii) With regard to the submission of Korean Government that imposition of duty would be against public interest the Authority notes that imposition of antidumping measure is to stop the unfair trade practice of dumping followed by the exporter and to bring a healthy completion between the domestic producers on one hand and the exporters on the other hand providing long term benefits to the consumers of the subject goods.
- xix) With regard to the review of data/analysis made by the Authority in the light of Director General of Safeguards' findings dated 24th April, 2014, the Authority notes that the antidumping investigations are conducted under different rules and the purpose of imposition of antidumping measure is to stop the unfair trade practice of dumping.

K. CONCLUSION AND RECOMMENDATION

- 126. Having regard to the contentions raised, information provided and submissions made by the interested parties and facts available before the Authority and on the basis of above analysis including analysis of likelihood of continuation of dumping and injury and post Disclosure Statement submissions made by the interested parties, the Authority concludes that the dumped imports from the subject countries are causing injury to the domestic industry and also there is likelihood of dumping and injury to the domestic industry if the existing duties on the subject goods being imported from the subject countries are allowed to expire.
- 127. It is noted that in the subject investigation the cooperating producers and exporter from China PR are related to each other and form a group of related companies. It has been the consistent practice of the Authority to consider related exporting producers or exporting producers belonging to the same group as one single entity for levy of one rate of antidumping duty. The Authority holds that grant of individual rate of antidumping duty might enable the related exporting producers to channel their exports to India through the company with the lowest rate of duty and circumvent the anti-dumping measures, thus rendering them ineffective. Accordingly, the Authority has recommended one rate of antidumping duty for the related co-operative producers/exporters belonging to the same group. Besides the above, the antidumping duty has also been recommended for a producer exporting the subject goods through various channels (through different exporters).
- 128. Having regard to the lesser duty rule followed by the Authority, the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duty equal to the lesser of the margin of dumping and the margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. Accordingly, definitive antidumping duty as per the amount specified in Column 9 of the table below is recommended to be imposed by the Central Government, on all imports of the subject goods originating in or exported from the subject countries.

DUTY TABLE

S. No.	Heading / Sub-heading	Description of goods	Specification	Country of Origin	Country of Exports	Producer	Exporter	Duty Amount	Unit	Currency
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)
1	2902, 2907, 2909, 2917, 2921, 2925, 2930, 2933, 2934, 2935, 2942, 3811, 3812, 3815	Rubber chemical PX-13	S No.1 of Table below	China PR	China PR	Shandong Sinorgchem Technology Co. Ltd.	Jiangsu Sinorgchem Technology Co. Ltd.	1.55	Per Kg	US\$
2	-do-	-do-	-do-	China PR	China PR	Sinorgchem Co. Tai'an	Jiangsu Sinorgchem Technology Co. Ltd.	1.55	Per Kg	US\$
3	-do-	-do-	-do-	China PR	China PR	Any combination of Producer and Exporter other than at S. No.1 & 2 above		1.84	Per Kg	US\$
4	-do-	-do-	-do-	China PR	Any Country	Any other than above	Any other than above	1.84	Per Kg	US\$
5	-do-	-do-	-do-	Any country other than Korea RP	China PR	Any other than above	Any other than above	1.84	Per Kg	US\$
6	-do-	-do-	-do-	Korea RP	Korea RP	Kumho Petrochemicals Co Ltd.	Kumho Petrochemicals Co Ltd.	1.33	Per Kg	US\$
7	-do-	-do-	-do-	Korea RP	Korea RP	Kumho Petrochemicals Co Ltd.	Daewoo International Corporation	1.33	Per Kg	US\$
8	-do-	-do-	-do-	Korea RP	Korea RP	Any combination of Producer and Exporter other than at S. No.6 & 7 above		1.63	Per Kg	US\$
9	-do-	-do-	-do-	Korea RP	Any Country	Any other than above	Any other than above	1.63	Per Kg	US\$
10	-do-	-do-	-do-	Any country other than China PR	Korea RP	Any other than above	Any other than above	1.63	Per Kg	US\$
11	-do-	Rubber chemical MBT	S No.2 of Table below	China PR	China PR	Any	Any	0.70	Per Kg	US\$
12	-do-	-do-	-do-	Any country	China PR	Any	Any	0.70	Per Kg	US\$
13	-do-	-do-	-do-	China PR	Any country	Any	Any	0.70	Per Kg	US\$
14	-do-	Rubber chemical TDQ	S No.3 of Table below	China PR	China PR	Any	Any	0.55	Per Kg	US\$
15	-do-	-do-	-do-	Any	China	Any	Any	0.55	Per	US\$

				country	PR				Kg	
16	-do-	-do-	-do-	China PR	Any country	Any	Any	0.55	Per Kg	US\$
17	-do-	Rubber chemical TMT	S No.4 of Table below	China PR	China PR	Any	Any	0.62	Per Kg	US\$
18	-do-	-do-	-do-	Any country	China PR	Any	Any	0.62	Per Kg	US\$
19	-do-	-do-	-do-	China PR	Any country	Any	Any	0.62	Per Kg	US\$
20	-do-	Rubber chemical CBS	S No.5 of Table below	China PR	China PR	Any	Any	0.85	Per Kg	US\$
21	-do-	-do-	-do-	Any country	China PR	Any	Any	0.85	Per Kg	US\$
22	-do-	-do-	-do-	China PR	Any country	Any	Any	0.85	Per Kg	US\$
23	-do-	Rubber chemical PVI	S No.6 of Table below	China PR	China PR	Any	Any	1.24	Per Kg	US\$
24	-do-	-do-	-do-	Any country	China PR	Any	Any	1.24	Per Kg	US\$
25	-do-	-do-	-do-	China PR	Any country	Any	Any	1.24	Per Kg	US\$

The specifications indicated in the following table shall be applicable for the specifications referred to in Column 4 of the table given above.

<i>S No</i>	<i>Generic name</i>	<i>Chemical Description/Other trade name/brand names</i>
1	6PPD	N- (1, 3-dimethyl butyl)-N' Phenyl – p –phenylenediamine, or 6C , or Pilflex 13, Antooxide 4020, Kumanox 13, Vulcanox 4020
2	MBT	2-Mercapto Benzothiazole, or Accelerator M, Accelerator MBT
3	TDQ/TMQ	Polymerized 2,2, 4-Trimethyl-1,2-dihydroquinoline, or TDQ or Antioxidant RD
4	TMT	Tetramethylthiuram Disulfide, or Accelerator TMTD, Thiuram C
5	CBS	N-cyclohexyl-2-benzothiazole sulphenamide, or Accelerator CZ. Accelerator HBS, CBS
6	PVI	N-(Cyclohexylthio)phthalimide, or Anti Scorch Agent CTP , PVI

129. Landed value of imports for the purpose of this Notification shall be the assessable value as determined by the Customs under the Customs Act and includes all duties of customs except duties under sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the said Act.

130. An appeal against the order of the Central Government shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Customs Tariff Act.

J. S. DEEPAK, Designated Authority